जाओ और
चेले बनाओ

प्रारम्भिक शिष्यता

भाग – 1

डोटा

द्वारा

नियम पुस्तिका –1

अगुवों के दल के लिए

तीसरा संस्करण

विषय सूची

दल अगुवों के लिए नियम पुस्तिका- 1
चेले बनाने का आरम्भ भाग - 1

प्रस्तावना 1. प्रस्तावना और कॉपी राईट
प्रस्तावना 3. यीशु मसीह की सेवकाई
प्रस्तावना 4. एक नए छोटे दल की स्थापना कैसे करें।

प्रशिक्षण कार्यक्रम - 1

3 महीने के लिए एक साप्ताहिक कार्यक्रम जिस में 11/2 – 2 घन्टे प्रति सप्ताह के लगभग समय दिया जाएगा। छोटा दल ही बनाना है जिस में 3 से 10 लोग हो सकते हैं। हर कार्यक्रम का आरम्भ प्रार्थना से होगा और अन्त में उत्साहपूर्वक उत्तर देने वाली प्रार्थना के साथ होना चाहिए।

अध्याय 1. आराधना (परमेश्वर असीमित है)
बाइबल शिक्षा- परमेश्वर के साथ समय बिताना, यह एक मनपसंद सच्चा तरीका है।
परमेश्वर के साथ निजि समय को व्यवहार में लाएँ। (भजन 23)

अध्याय 2. अपने निजि समय को परमेश्वर के साथ बिताएँ। (मत्ती 1:1 -7:29)
याद करना - निश्चित (यीशु में उद्धार निश्चित है) - युहन्ना 10:28)
बाइबल अध्ययन (मैं परमेश्वर के वचन पर कैसी प्रतिक्रिया दिखाऊँ?)(लूका 8:4-15)

अध्याय 3 आराधना (परमेश्वर महान है)
परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना। (मत्ती 8:1-11:24)
बाइबल शिक्षा (सुसमचार की धारणा को समझाना भाग - 1)

अध्याय 4. परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना। (मत्ती 11:25-14:36)
याद करना - निश्चित (प्रार्थनाओं में उत्तर निश्चित है) युहन्ना 16:24)
बाइबल अध्ययन (मैं कहाँ से आया हूँ।) उत्पत्ति 1:1 – 2:4अ)

अध्याय 5. आराधना (परमेश्वर एक व्यक्ति है)
परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना। (मत्ती 15:1-18:20 तक)
बाइबल शिक्षा (बाइबल को प्रयोग में लाने के 7 तरीके)

अध्याय 6. परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना। (मत्ती 18:21 - 21:46))
याद करना - निश्चित (यीशु में विजय निश्चित है) 1 कुरन्थियों 10:13
बाइबल अध्ययन (मैं कौन हूँ?) इफिसियों 2:1 -22)

अध्याय 7. आराधना (परमेश्वर पवित्र है)
परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना। (मत्ती 22:1-25:13)
बाइबल शिक्षा (प्रार्थना - प्रार्थना परमेश्वर के वचन की प्रतिक्रिया है।)

अध्याय 8. परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना। (मत्ती 25:14 -28:20)
याद करना - निश्चित (यीशु में क्षमा निश्चित है) 1युहन्ना 1:9)
बाइबल अध्ययन (मैं यहाँ पर क्यों हूँ?) इफिसियों 4:17-5:17)

© 2009DOTA

अध्याय 9 आराधना (परमेश्वर प्रेम है)
परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना (युहन्ना 1:1-4:22)
बाइबल शिक्षा (आज्ञाकारिता - बढ़ने और विकसित होने की शिक्षा है।)
अध्याय 10 परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना। (युहन्ना 4:23 - 7:52)
याद करना - निश्चित (यीशु में मार्गदर्शन निश्चित है नीति वचन 3:5-6 पद)
बाइबल अध्ययन (मैं कहाँ जा रहा हूँ? प्रकाशितवाक्य 21:1- 22:6)
अध्याय 11 आराधना (परमेश्वर मेरा सहायक है)
परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना। (युहन्ना 7:53 -11:37)
बाइबल शिक्षा (संगति - हमारी एक दूसरे के प्रति ज़िम्मेदारियाँ)
अध्याय 12 परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना। (युहन्ना 11:38-14:31)
याद करना - निश्चित (पदों के पुनरावलोकन द्वारा हर बात निश्चित है)
बाइबल अध्ययन (मैं कैसे फलवन्त हो सकता हूँ?) युहन्ना 15:1-17)

अतिरिक्त लेख 1. एक तरीका जिसके द्वारा परमेश्वर के साथ निजि समय बिता सकते हैं
अतिरिक्त लेख 2. बाइबल पठन का एक कार्यक्रम
अतिरिक्त लेख 3. बाइबल पर निशान लगाने का सही तरीका
अतिरिक्त लेख 4. बाइबल को अध्ययन करने का तरीका (5 कदमों का तरीका)
अतिरिक्त लेख 5. बाइबल मनन करने और याद करने का तरीका
अतिरिक्त लेख 6. चेलों को शिक्षा देने के निर्देश
अतिरिक्त लेख 7. घरों में पारिवारिक संगति की अगुवाई करना।

प्रस्तावना

क्या आप यीशु के चेलों के समान बढ़ना चाहेंगे?
क्या आप दूसरों को भी यीशु में बढ़ने में सहायता देना चाहते हैं?

यदि आप ऐसा करना चाहते हैं तो आप शिष्य बनाने के दल के अगुवे बन जाएँ? इस हस्त पुस्तिका को पढ़े और चेले बनाने के विषय में और उन नियमो का पालन करें। अब से हम उसे 1 से 4 भाग की नियम पुस्तिक के नाम से जानेगे।

यीशु ने अनेक चेले बनाए थे। जब चेलों ने यीशु से पूछा था, "हे रब्बी तू कहाँ रहता है।" तब यीशु ने उन से कहा था, "चलो तो देख लोगे। आओ मेरे पीछे आओ।"(युहन्ना 1:39) सभी तरफ से लोग उसके पीछे आ रहे है यह देखने के लिए कि वह कैसा जीवन जीता है और उसने अपना जीवन किस काम के लिए समर्पित किया था। संसार के हर देश के लोग यह जानने के लिए कि वह कौन है और वह क्या करता था उसके पीछे चलने लगे। यीशु ने उन सब के जीवन पूरी तरह से बदल दिए थे। और उसने हमारे जीवनों को भी पूरी तरह से बदल दिया है।

बाद में यीशु ने प्रार्थना के साथ 12 चेलों को चुना और उनको अपना चेला बनने की शिक्षा से लैस किया था। यीशु चाहते थे कि ये चेले जो विश्वास में बढ़ रहे थे उसके साथ समय बिताएँ और उसकी शिक्षाएँ सीख कर चेले के रूप में बढ़ते जाएँ। वे चाहते थे कि उनके चेले उसके द्वारा दिए वचनों को सुने और उसको अपने जीवन में उतार कर उसके समान जीवन जीना सीख लें और उसकी सेविकाई का अनुकरण करें। (मरकुस 3 के 13-15)

करीबन दो साल बाद यीशु ने अपने चेलों को एक काम दिया था। उसने कहा जाओं और सब जातियों के लोगों को शिष्य बनाओ (मत्ती 28 के 18-20) और तब चेलों ने जाकर यरुशलेम से संसार के अन्त तक चेले बनाए थे। (प्रेरितो के काम 1:8) फिर इन चेलों ने अन्य चेले बनाए (प्रकाशितवाक्य 1:8) उन स्थानों पर भी जहाँ परमेश्वर का वचन अभी तक नहीं पहुँचा था। उन्होंने जो भी ज्ञान पाया था उसे दूसरों में बाँट दिया था। (2 तिमुथयुस 2:2) इस प्रकार यीशु के चेले आज भी इस संसार के हर देश में चेले बना रहे हैं।

प्रेरित पौलूस सिखाते हैं कि यीशु मसीह ने विशेषकर मसीहों को यह कार्य सौंपा था, कि वे परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर की सेविकाई के लिए लैस करें और परमेश्वर की कलीसिया का निर्माण करें।(इफीसियों 4:11-16) नियम पुस्तिका 4 का ध्येय है कि वह मसीहों के दल के अगुवों को अन्य मसीहों को जो उनके अधीन हैं यीशु का चेला बनाने में सहायक सिद्ध हो सकें। एक व्यसक या परिपक्व मसीही ही यीशु का चेला होता है।

यह कोर्स चेलों के प्रशिक्षण को व्यवाहिक बना सकता है जब हम अगुवों को निम्न सहायता दे देते हैं।

1. इन 4 नियम पस्तिकाओं में 12 अध्याय हैं जो 3 महीनों में पूरे किए जा सकते हैं।
2. बाइबल के महत्त्वपूर्ण प्रसंग वचन विद्यार्थियों को यीशु और बाइबल को सही रीति से जानने में सहायक सिद्ध होंगे।
3. दल के अगुवे को प्रश्नों की सहायता लेनी चाहिए और विद्यार्थियों को बाइबल के लेखाँशों को पढ़ने के बाद ही उन पर विचार-विमर्श करना चाहिए।
4. जो भी नोट्स हों उन में सभी प्रश्नों के उत्तरों का साराँश होना चाहिए।
5. यह प्रशिक्षण विद्यार्थियों को तैयार करने में सहायता करेगा कि कैसे अकेले या छोटे दल में भी कैसे चेला बनाया जा सकता है।
6. हर अध्याय के साथ ग्रह कार्य भी होगा जो लिखित रूप से विद्यार्थियों को दिया जाएगा।
7. यह कोर्स दूसरों तक पहुँचाना अत्यन्त सरल है।
8. जब 12 अध्यायों को यह कोर्स समाप्त हो जाएगा तब हर विद्यार्थी को इस नियम पुस्तिका की जो दल के अगुवों की सहायता के लिए है, एक प्रति दे दी जाएगी जिससे वे नए छोटे दलों को सिखा सकें।

हमारी प्रार्थना है कि आपके क्षेत्र में चेलों की संख्या में जल्दी से बढ़ोतरी होने पाए। जिससे बड़ी संख्या में लोग अपने विश्वास के प्रति आज्ञाकारी बन जाएँ। (प्रेरितों के काम 6:7)

परमेश्वर की महिमा हो आमीन। जैसा रोमियो के 11:36 पद कहता है, "क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के

द्वारा और उसी के लिए सब कुछ है। उसकी महिमा युगानुग होती रहे।"

DOTA चेलों के प्रशिक्षण का कार्यक्रम जो बहुत पहले से रेडियों पर प्रसारित होता आया है।
1994 पहला संस्करण
2009 तीसरा संशोधित संस्करण

कॉपी राईट

चारों नियम पुस्तिकाओं को कापी-राईट द्वारा अधिकार है कि प्रशिक्षण देने के लिए स्वतन्त्र रूप से उसे मूल प्रतिलिपि से कॉपी किया जा सकता है।परन्तु उसमें परिवर्तन लाने का, या उसे बेचने या उसका किसी अन्य भाषा में अनुवाद करने का अधिकार किसी को भी तब तक नहीं होगा जब तक उसके लेखक से अनुमति प्राप्त नहीं हो।

सिफारिशी पत्र

इन तथ्यों को दूर-दूर तक फैलाना जिससे अनेक लोग आशीष पा सकें। लेकिन क्योंकि इन नियम की हस्त पुस्तिकाओं का उद्देश्य मसीहों को प्रशिक्षण देना और उन बातों से लैस करना है जिन के द्वारा वे यीशु के चेले बन जाएँ तो अगुवों को चाहिए कि वे इन नियम पुस्तिकाओं की प्रतिलिपि बना लें जिससे विद्यार्थियों को प्रतिलिपि के अनुसार ही प्रशिक्षण दिया जा सके। और 12 अध्यायों के प्रशिक्षण के बाद ही वह किसी और को या किसी छोटे दल को प्रशिक्षण दे सकते हैं।

प्रशिक्षण कार्यक्रम -2

एक गहन कार्यक्रम जिसे सप्ताह में 1 बार प्रयोग मे लाया जा सकता है (1)केवल एक दिन के लिए या (2) 6 दिन के सेमिनार के दौरान। जितने भी लोग आए हों उनको छोटे-छोटे दलों में विभाजित कर लेना। जिनके ऊपर एक प्रशिक्षित अगुवा हो। हर दल केवल 3 से 10 लोगों का ही हो।

कार्यक्रम के सुझाव

09.00 - 9.30	आराधना (दल के साथ)
9.30 - 11.00	बाइबल शिक्षा (दल के साथ)
	लघु अवकाश
11.30 - 13.00	बाइबल अध्ययन (दल के साथ)
	लघु अवकाश
14.00 - 17.00	अतिरिक्त समय - बाकी बची बाइबल शिक्षा के प्रश्नोत्तर के लिए या फिर बाइबल शिक्षा के लिए अतिरिक्त समय दिया जा सकता है।
17.30 - 17.45	चिन्तन और याद करने का समय (दो-दो लोगों के दल बना कर)
17.45 - 18.30	बाइबल पठन - हर व्यक्ति के लिए अकेले बाइबल पढ़ने का समय।
18.30 - 19.00	परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना (दो को एक साथ परमेश्वर के साथ समय बिताना होगा)
19.00 - 19.45	प्रार्थना और वचनों और गवाहियों को बाँटना (यह छोटे दलों में ही करना होगा)

प्रथम दिन अध्याय 1 और 2 प्रार्थना आराधना (परमेश्वर असीमित है।) बाइबल शिक्षा (परमेश्वर के साथ निजि समय बिताने का सच्चा मनपसंद तरीका) बाइबल अध्ययन (मैं परमेश्वर के वचन का प्रति उत्तर कैसे दूँ? लूका 8:4-15) याद करना (उद्धार निश्चित है)युहन्ना 10:28) बाइबल पढ़ना (मत्ती 1-7) परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना (दो-दो लोगों के साथ मत्ती 3:1-12) गवाही देना और प्रार्थना	**चौथा दिन अध्याय 7 और 8** प्रार्थना आराधना (परमेश्वर पवित्र है) बाइबल शिक्षा (प्रार्थना परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर देना है) बाइबल अध्ययन (मैं यहाँ पर क्यों हूँ? इफिसियों 4:17 - 5:17 याद करना (क्षमा निश्चित है)1 युहन्ना 1:9) बाइबल पढ़ना (मत्ती 22-28) परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना (दो-दो लोगों के साथ मत्ती 25:14-30) गवाही देना और प्रार्थना
दूसरा दिन अध्याय 3 और 4 प्रार्थना आराधना (परमेश्वर महान है।) बाइबल शिक्षा (सुसमाचार की धारणा) बाइबल अध्ययन (मैं कहाँ से आया हूँ?) (उत्पत्ति 1:1- 2:4अ) याद करना (प्रार्थना के उत्तरों का आश्वासन युहन्ना 16:24)	**पाँचवाँ दिन अध्याय 9 और 10** प्रार्थना आराधना (परमेश्वर प्रेम है।) बाइबल शिक्षा (आज्ञाकारिताः बढ़ने और विकसित होने की शिक्षा है) बाइबल अध्ययन (मैं कहाँ जा रहा हूँ? प्रकाशितवाक्य 21:1 - 22:6) याद करना (मार्गदर्शन निश्चित है) नीति वचन 3:5-6)

बाइबल पढ़ना (मत्ती 8-14) परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना (दो-दो लोगों के साथ मत्ती 10:16-33) गवाही देना और प्रार्थना	बाइबल पढ़ना (युहन्ना 1 - 7) परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना (दो-दो लोगों के साथ युहन्ना 5:16-30) गवाही देना और प्रार्थना
तीसरा दिन अध्याय 5 और 6 प्रार्थना आराधना (परमेश्वर एक व्यक्ति है) बाइबल शिक्षा (बाइबल इस्तेमाल करने के 7 तरीके) बाइबल अध्ययन (मैं कौन हूँ? इफीसियों 2:1-22) याद करना (विजय निश्चित है) 1 कुर. 10:13) बाइबल पढ़ना (मत्ती 15-21) परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना (मत्ती 15:1 -20) गवाही देना और प्रार्थना	**छटा दिन अध्याय 11 और 12** प्रार्थना आराधना (परमेश्वर मेरा सहायक है।) बाइबल शिक्षा (संगति : हमारी एक दूसरे के प्रति ज़िम्मेदारी) बाइबल अध्ययन (मैं फलवन्त कैसे हो सकता हूँ? (युहन्ना 15:1-17) याद करना (पदों के पुनरावलोकन द्वारा मसीही निश्चितता) बाइबल पढ़ना (युहन्ना 8-14) परमेश्वर के साथ समय बिताना (दो-दो लोगों के साथ युहन्ना 14:1-31) गवाही देना और प्रार्थना

सम्भव अतिरिक्त शिक्षाएँ

प्रस्तावना 3		यीशु मसीह की सेवकाई
प्रस्तावना 4		एक चेला बनाने का दल कैसे शुरू किया जाए
अतिरिक्त लेख	1	परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना शान्त समय का मनपसंद सच्चा तरीका
अतिरिक्त लेख	2	बाइबल पठन का कार्यक्रम
अतिरिक्त लेख	3	बाइबल में चिन्ह लगने का तरीका
अतिरिक्त लेख	5	बाइबल को मनन करने और याद करने के तरीके
अतिरिक्त लेख	6	दल के अगुए के लिए निर्देश
अतिरिक्त लेख	7	एक घर में संगति सभा की अगुवाई करना

यीशु मसीह की सेवकाई

क्या था जिसने यीशु मसीह की सेवकाई को विशेष बनाया था?
क्या है जो हमारी सेवकाई को विशेष बना सकता है?

क. नये नियम में यीशु मसीह की सेवकाई और उसके चेले

1. यीशु मसीह की सेवकाई और उसके चेलों की सेवकाई एक राज्य की सेवकाई है।

- **(1) परमेश्वर का राज्य**

परमेश्वर का राज्य दिखाई देने वाली कलीसिया है जो मसीह की देह है या सारे संसार में फैला समाज है जो मसीहों के दावे से कहीं अधिक दृष्टिगोचर है।

भजन 24:सामान्य रूप से परमेश्वर का राज्य या सबसे महान परमेश्वर का राज्य स्वर्ग में है और वह अनन्त काल से अनन्त काल तक सारे लोगों और सारी चीज़ों पर है (भजन संहिता 145:13;146:10 यर्मियाह 10:10 और 1 तिमुथियुस 6:16)

मत्ती 28:18 विशेष रूप से परमेश्वर का राज्य ही सर्वशक्तिमान का इस पृथ्वी पर महान राज्य है जो यीशु मसीह के द्वारा है। (युहन्ना 13:3, इफीसियों 1:20-21, फिलिपियों 2:9-11, कुलुसियों 1:15-20; प्रकाशितवाक्य 1:5 17:14;19:16)

प्रकाशितवाक्य 1:5-6परमेश्वर का राज्य आधारित है यीशु मसीह की पहली आमद के समय के उद्धार के सम्पूर्ण कार्य पर आधारित है। (मत्ती 21:39,42-43; 28:18; प्ररितों के काम 2:36) और उस काम को पवित्र आत्मा के द्वारा विश्वासयों में आज ही कार्यान्वित करने पर भी आधारित है। (रोमियो 14:17)

लूका 17:20-21. परमेश्वर का राज्य यीशु का सबसे महान राज्य है क्योंकियह विश्वासियों के दिलों पर राज्य करता है और उनके जीवनों में दिखाई देता है। (मत्ती 6:10, 33; 25:34-40)

- **(2) परमेश्वर का राज्य का प्रतिफल 4 क्षेत्रों मे दिखाई देता है**

मरकुस 10:25-26 परमेश्वर का राज्य तो विश्वासी के उद्धार के द्वारा शुरू होकर अन्त तक रहता है। उसका चुनाव तो अनन्तकाल का है। (इफीसियों 1:4-5) उनका पुनर्जन्म समय भी सही हुआ था।(युहन्ना ३:३-८) उसके जीवन का परिवर्तन (1 कुरन्थियों 6:9-11) और यीशु के शरीर का पुनरुत्थान जब यीशु की दोबारा आमद होगी (१ कुरन्थियों 15:24-26) परमेश्वर द्वारा दिए इस उद्धार में सारी आत्मिक और भौतिक आशीषें शामिल हैं जो आत्मा और शरीर दोनों के लिए हैं। और उसका प्रतिफल जो परमेश्वर के राजा होने को दर्शाता है और आज्ञाकारिता से पूरा करता है। (इफीसियों 1:3)

मत्ती 16:18-19परमेश्वर का राज्य उस संविधान के अधीन बनी विश्वासियों की उस एककलीसिया में प्रकट होता है जो इस पृथ्वी पर तैयार की जाएगी। (इफिसियों 1:20-23; 1 पतरस 2:4-5, 9-10) कलीसिया लोगों का वह समाज है जिन के दिलों में परमेश्वर के राज्य का शासन दिखाई देता है क्योंकि वे उसकी आज्ञाओं का पालन करती है।

मत्ती 25: 34-40परमेश्वर के राज्य को हम विश्वासियों के भले कामों में देख सकते हैं। इसके साथ साथ हम उसे समाज में मनुष्य के हर मानवीय पहलु में भी देख सकते हैं जैसे कि वह लोगों के दिमाग़ पर, शरीर पर, भावनात्मक क्षेत्र में, समाज और आध्यात्मिक क्षेत्रों में जैसे शिक्षा, न्याय, करुणा, प्रेममें कैसा प्रभाव डालता है। (रोमयो 14:17)

1 कुरन्थियों 1:24-26 और अन्त में परमेश्वर का राज्य उस छुटकारा पाई हुई सृष्टि में प्रकट है जो भविष्य में नई पृथ्वी और नया आकाश कहलाएगा जिस में परमेश्वर की महिमा प्रकट होगी और तब उसके बुलाए हुए लोगों पर प्रकट

होगी परमेश्वर के उद्धार के कार्य की सही अनुभूति। (मत्ती 25:34; 2 पतरस 1:11; प्रकाशित वाक्य 11:15)

- **3. परमेश्वर के राज्य के 5 गुण**

क) **मत्ती 12:28** परमेश्वर का राज्य तो तभी शुरू हो गया था जब यीशु मसीह पहली बार इस पृथ्वी पर आए थे।(मत्ती 21:41)

ख) **युहन्ना 18:36** यीशु मसीह का राज्य इस संसार में है परन्तु इस संसार का नहीं है। (लूका 17:21)

ग) **मत्ती 13:11-17** परमेश्वर का राज्य विश्वासियों के लिए एक प्रकाशन है परन्तु अविश्वासियों के लिए एक पहेली है।

घ) **मत्ती 13:24-26; 36-43** परमेश्वर के राज्य का वर्तमान में एक रूप है लेकिन भविष्य में परमेश्वर के राज्य एक अन्य रूप है जिसे हम नई पृथ्वी पर देखेंगे।

ङ) **मत्ती 13: 31-33** परमेश्वर का राज्य एक छोटे से रूप में शुरू होता है और धीरे धीरे बढ़ता जाता है और अन्त में सब जगह फैल जाता है। (दानिएल 2:34-35; 44-45)

2, यीशु मसीह और उसके चेलों की सेवकाई विशेषकर घरों में की जाने वाली सेवकाई है

मरकुस 2:1-5 यह ज़रूरी नहीं है कि यह सेविकाई किसी कलीसिया के भवन में ही की जाए।
यीशु मसीह ने लोगों के घरों में प्रचार किया, शिक्षा दी, और लोगों को चंगा भी किया था। (मरकुस 3:20, 32-35)

प्रेरितों के काम 5:42 प्रेरित लोग घर-घर जाकर प्रचार करते थे और उन्होने कभी भी शिक्षा देना बन्द नहीं किया था। (प्रेरितों के काम 20:20-21) वे अपने ही घरों में मित्रों और रिश्तेदारो के बीच सुसमाचार का प्रचार करते थे।

मरकुस 2:15-16 यीशु ने आम लोगों के साथ घरों में खाना खाते समय भी संगति की थी। मसीही लोग एक साथ प्रभु भोज के लिए रोटी तोड़ने को इक्ट्ठे होते थे। (प्रेरितों के काम 5:42; 20:7-9)

प्रेरितों के काम 12:12 मसीही लोग एक साथ घरों में प्रार्थना करते थे।

प्रेरितों के काम 16:31-33 लोग बदल कर घरों मे ही बपतिस्मा ले रहे थे। (प्रेरितों के काम 9:17-18; 18:7-11; 22:16)

1 कुरन्थियों 16:19 मसीही कलीसियाएँ एक साथ घरों में इक्ट्ठी होती थीं (रोमियो 16:5; कुलुसियों 4:15; फिलेमोन

3. यीशु मसीह की और चेलों की सेवकाई प्रशिक्षण देकर लैस करने की सेवकाई थी।

यह ज़रूरी नहीं है कि प्रशिक्षण नियमित रूप से धर्म के अनुसार सप्ताह में एक बार ही आयोजित की जाए। सेविकाई के लिए प्रशिक्षित करने के लिए रिश्ता और वह चेले गुरू के सम्बन्ध के आधार पर किया जाता था। इसके लिए शब्दों की कुँजी है:

- सच्चाई की शिक्षा
- कौशल का प्रशिक्षण
- हर प्रशिक्षण प्रसारण में एक उदाहरण होना ज़रूरी है।
- जो प्रशिक्षण पा चुके हैं, उन चेलों को बाहर भेजना।

- **(1) यीशु ने चेले बनाए (जो परिपक्व मसीही थे)**

युहन्ना 1:39 यीशु ने अपने चेलों को शिक्षा दी और उसके साथ एक उदाहरण भी दिया था। वे कहते थे "आओ और देखो"वे जीवन में लोगों को अपने साथ शामिल कर लेते थे और स्वयं भी उनके जीवन में शामिल हो जाते थे।

मरकुस 3:14 तब उसने उनको बुला कर कहा था,"मेरे साथ बने रहो और मेरे पीछे चलो।" जिससे वह उनको शिक्षा दे सकें कि वे कैसे मनुष्यों के मछुवारे बन सकते हैं। (मत्ती 4:19) उसने लोगों को प्रशिक्षण दिया कि वे उसकी शिक्षाओं को अपने जीवन में लागू कर सकें। (मत्ती 7:24-27)

मत्ती 4:23 यीशु और उसके चेले सारे प्रान्त में फिरते हुए उपदेश करते, सुसमाचार का प्रचार करते और लोगो की हर तरह की बिमारी को दूर करते रहे।

- **(2) यीशु ने प्रशिक्षण देकर कार्य करने वालो को लैस किया था**

मत्ती 9:10-13: उन्होंने सिखाया कि वे उनके पास जाएँ जो दया और भलाई के लिए ज़रूरतमन्द हैं। (मत्ती 11:19; लूका 19:10)
मत्ती 9:17: उनको नएजीवन के संदेश को नए रूप में लोगों पर उँडेलना पड़ा था। (मत्ती 15:1-9)
मत्ती 10:5-8: उन्होंने प्रचार करने का अभ्यास किया, और लोगों को चंगा किया और वह सब जो उन्होंने पाया था उसे मुफ्त में दूसरों में बाँट दिया था। (1 कुर. 9:18-27)

(3) यीशु ने अगुवों को भेजा थाः

युहन्ना 20:21: अन्त में यीशु ने अपने चेलों को भेजा था कि वे जाकर वह करें जो वह स्वयं करता था।
मत्ती 28:18-20: उनको सभी राष्ट्रों में जाना था और उनको सुसमाचार के प्रचार के द्वारा, विश्वासियों को बपतिस्मा देकर, और उसकी शिक्षा सिखा कर उनका पालन करने के लिए वह सब करना जिस की उसने आज्ञा दी थी। उनको यीशु मसीह का चेला बनाना था।

(1) यीशु मसीह और उसके चेलों की सेवकाई बड़ी संख्या में चेले बनाना था

यह सेवकाई किसी तरह की परम्परा को स्थापित करना नहीं था।

- **(1) तीन अति महत्तवपूर्ण कुँजियाँ**

<u>एक बड़ा दलः</u> समाज की भीड़
<u>चेलों का एक छोटा दलः</u>घर पर संगति या वह कलीसिया जो नियमित रूप से घरं पर मिलती है।
<u>व्यक्तिगतः</u> एक अकेला व्यक्ति जब एक अकेले व्यक्ति से मिले और उसका एक ही विशेष लक्ष्य हो जैसे(शिक्षा देना या परामर्श देना)

- **(2) तीन भिन्न बातों पर विशेष ज़ोर देना**

<u>एक बड़े दल में हम शिक्षा और प्रचार पर ज़ोर देते हैं-</u>ज्ञान, समझ और प्रोत्साहन जिससे कि वे कुछ अच्छा करें।(प्रेरितों के काम 10:38; 20:18-20)

<u>एक छोटे दल में हम प्रशिक्षण पर अधिक ज़ोर देते हैं। -</u> इसमें शिक्षा, पारस्परिक बातचीत और व्यवहार, एक दूसरों को उकसाना कि वे भले काम से प्रेम रखें। (इब्रानियों 10:24-25)

<u>व्यक्तिगत रूप में हम ज़ोर देते है किसी एक के उदाहरण काः</u> निजि रूप से संगति करना, चरित्र और आदतों में बदलाव, (कुलुसियों 1:28-29; 2 तिमुथियुस 3:10-11, 16) वास्तव में कुछ भला करना (प्रेरितों के काम (20:34-35), विशेष कार्यों के लिए लैस करना और एक साथ परमेश्वर के राज्य में सेवकाई करना। (इफिसियों 4:12; 2 तिमुथियुस 3:17)

• **(3) बाइबल की व्याख्याओं का मूल्य बड़े दलों के लिए, छोटे दलों के लिए, और एक व्यक्तिगत के लिए भी (तिमुथियुस के लिए)**

यीशु -
➚ (एक बड़े दल के लिए) भीड़ (मत्ती 9:36)
➙ (छोटे दल के लिए) 12 चेले (मत्ती 10:12
➘ (अकेला व्यक्ति) पतरस (युहन्ना 1:42; मत्ती 16:18)

⬇

पतरस -
➚ भीड़ (5000, प्रेरितों के काम 4:4)
➙ प्रेरितों का दल (प्रेरितों के काम 2:14)
➘ बरनाबास (प्रेरितों के काम 4:36-37)

⬇

बरनाबास -
➚ एक बड़ी संख्या (प्रेरितों के काम 11:24
➙ पौलूस (प्रेरितों के काम 11:25-26)
➘ पूरी कलीसिया (2 कुर. 11:28)

⬇

पौलूस -
➚ पूरी कलीसिया (2 कुर. 11:28)
➙ उसका दल जिस में साथी मज़दूर भी थे।
➘ तिमुथियुस (फिलिपियों 2:19-23; 2 तिमुथियुस 3:10-11)

⬇

तिमुथियुस-
➚ इफिसुस की कलीसिया (1 तिमुथियुस 1:3; 2 तिमुथियुस 4:1-5)
➙ पुरनिये, डीकन, विधवाएँ, बूढ़े, जवान, गुलाम, मालिक, धनी इत्यादि
➘ उस पर भरोसा रखें जो आपने विश्वस्त और योग्य व्यक्तियों से सीखा है (2 तिमुथियुस 2:2)

⬇

भरोसेमन्द+ योग्यव्यक्ति -
➚ दूसरे (2 तिमुथियुस2:2) उदाहरण के लिए किसी अन्य कलीसिया की अगुवाई
➙ एक अन्य छोटे दल के भरोसेमन्द और योग्य व्यक्ति को प्रशिक्षण देना।
➘ किसी शिक्षित और योग्य व्यक्ति के द्वारा शिक्षा देना, प्रशिक्षण देना, और एक उदाहरण को प्रस्तुत करना।

⬇

तुम और मैं - इस रीति से हम जो आज के युग में जीते हैं हमें छोटे दलों में शिक्षित किया गया है शायद जैसे तिमुथियुस को तैयार किया गया था।और हमें केवल लैस करने का प्रयास किया गया था।

क. यीशु और उसके चेलों की सेवकाई आज भी जारी है

1. छोटे दलः घरों में आयोजित संगति की सभाएँ।

घरों मे आयोजित सभाएँ सप्ताह में एक बार होने वाली सभाएँ होती हैं। जहाँ पर आस पास के लोग एक छोटे दल में लोग इकट्ठे होते है। जहाँ भी वे रहते हैं वहाँ से वे पैदल चल कर या फिर यात्रा कर के सभा के स्थान पर पहुँच जाते हैं।

• **(1) यीशु अपनी सेवकाई जारी रखते हैं।**

आज यीशु अपनी सेवकाई को साधारण विश्वासियों के द्वारा जारी रखते हैं।
-समाज में बड़े दलो की सेवा करके।
-विश्वासियों को प्रशिक्षण देकर जिससे वे घरों में संगति कर सकें।
-या फिर तिमुथियुस के समान किसी एक का परामर्शदाता या शिक्षक बन जाना।

विश्वासी अपने समाज में कुछ भला करने की कोशिश करते हैं। विश्वासियों के छोटे दल हर हफ्ते विश्वासियों के घरों में मिलते हैं कि यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर क स्तुति कर सकें। जिससे वे यीशु के प्रति ज्ञान, और आज्ञाकारिता में बढ़ते रहें और बहुत से अन्य चेले बनाने में सफल हो जाएँ। परिपक्व विश्वासी व्यक्ति मिलते रहते हैं और वे उनके जीवन मे तिमुथियुस के समान अन्य दल के अगुवों को लैस करेंगे।

- **(2) चेले बनाने और उनको अनुशासित करने के लिए सात मुख्य बातें जो छोटे दल में सिखानी हैं।**

इस कोर्स में नए विश्वासियों को अनुशासन की 7 बातें सिखाई जाती हैं जो उनको निरन्तर अनुशासित रखती हैं।आराधना स्तुति के साथ वे अपना निजी अनुभव लोगों को बताते हैं फिर वे चेले बनने के विषय में, वचन पर मनन करने, और वचनों को याद करने के विषय में बात करते हैं। फिर वे उनके साथ बाइबल का अध्ययन करते हैं और उन को घर पर एक तैयारी करने और प्रार्थना करने के लिए बताते हैं।

- **(3) चेले बनाने का कार्स और घरों में कलीसिया की सभा को छोटे झुंड में करना।**

इसमें एक छोटे दल में 2 से 15 लोग हर सप्ताह एक घर में मिलते हैं।

केवल चेले बनाने के लिएः (क) हर पहले और तीसरे हफ्ते चेले बनाने की सभा होगी। (ख) महीने के हर दूसरे और चौथे हफ्ते वे विशेष रूप से आराधना और शिक्षा देने का कार्यक्रम होगा। महीने के अन्य हफ्तों में बाइबल अध्ययन और वचनों को याद करने का अभ्यास किया जाएगा।

या फिर चेले बनाने के साथ-साथ सभा भी की जाएगी। हर तीन हफ्ते बाद चेले बनाने की सभा (क और ख) और कलीसिया की सभा होगी। पहले हफ्ते के दौरान विशेष रूप से आराधना और शिक्षा के लिए होगा। दूसरा हफ्ता बाइबल के वचनों को याद कराने के लिए और बाइबल का अध्ययन करनाने के लिए होगा। और तीसरा हफ्ता विशेष रूप से स्तुति गीत गाने, प्रार्थना करने, बपतिस्में और प्रभु भोज के लिए होगा।

(क) चेले बनाना	**(ख) चेले बनाना**	**(ग) घरों में सभा**
आराधना (+एक गीत)(20 मिनट)	मुखस्त करना (20 मिनट)	गीत गाना (45 मिनट)
शान्त समय (20 मिनट)	शान्त समय बाँटना (20 मिनट)	प्रचार (15 मिनट)
बाइबल की शिक्षा देना (70 मिनट)	बाइबल अध्ययन (70 मिनट)	प्रार्थना (30 मिनट)
अनुकूल उत्तर की प्रार्थना (8 मिन.)	मध्यस्थ की प्रार्थना (8 मिनट)	प्रभु-भोज या बपतिस्में की सभा
घर पर तैयारी का समय(2 मिनट)	घर पर तैयारी का समय (2 मिनट)	साथ भोजन करना जब ज़रूत हो (30 मिनट)

2. व्यक्तिगतः अपने तिमुथियुस को प्रशिक्षण दें

हर घर में होने वाली सभा से या किसी छोटे दल से 2 तिमुथियुस के 2:2 के आधार पर एक व्यक्ति को चुन लें। वह स्त्री या पुरुष भरोसेमन्द, विश्वासयोग्य और शिक्षा देने के लिए योग्य होना चाहिए। इस व्यक्ति से हफ्ते में एक बार ज़रूर मिलें और उसे प्रशिक्षण से लैस करे और उसे उत्साहित करें। उनको इस बात से अवगत कराएँ। एक उदाहरण पेश करना कितना ज़रूरी है विशेष कर इन क्षेत्रों मेः पहले स्वयं वह करना जो हम सिखा रहे हैं, अपने चरित्र और आदतों में बदलाव। उस व्यक्ति को उत्साहित करें कि वह एक दल का अगुवा बन जाए। तब उसे परामर्श दें कि जब वे किसी सभा की अगुवाई करता हैं तब वे भी एक तिमुथियुस को तैयार करे।

3. तरीकाः दल के अगुवों के लिए नियम पुस्तिका।

- **(1) डोटा द्वारा रचित नियम पुस्तिका 1-4 का इस्तमाल करें जिस का नाम है “जाओ और चेले बनाओ।”**

आपका लक्ष्य चेलों और दल के अगुवों को प्रशिक्षण देना है।
नियम पुस्तिका 1 और 2 चेलों की नींव को विकसित करती है।
नियम पुस्तिका 3 और 4 चेलों की उच्चतर प्रगति को वकसित करती है।
बाइबल अध्ययन के पाँच कदम और मसीही जीवन के मुख्य क्षेत्रों के विषय में शिक्षा दी जाती है।
हर नियम पुस्तिका में 12 अध्याय हैं और लगभग दो घंटे का काम हर अध्याय के लिए ज़रूरी है।

- **(2) फिर प्रयोग में लाएँ डोटा द्वारा रचित नियम पुस्तिका 5 से 8 तक जिसका नाम “जाओ और मसीह की कलीसिया का निर्माण करो।”**

आपका लक्ष्य है एक मसीही कलीसिया का निर्माण करना।
नियम पुस्तिका 5 और 6 कलीसिया में सेविकाइयों का विकास करते हैं।
नियम पुस्तिका 7 और 8 भी कलीसिया में स्थापित सेवकाई की उन्नति के लिए कार्य करते हैं। वे युहन्ना रचित सुसमाचार की शिक्षा देते हैं।
हर नियम पुस्तिका में 12 अध्याय होते हैं और हर अध्याय के लिए अपने लक्ष्य को पाने के लिए 2 घँटे ज़रूरी हैं।

- **(3) अन्त में हम डोटा रचित नियम पुस्तिका के 9 से 12 अध्याय का इस्तेमाल करते हैं। जिसका नाम है, “जाओ और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करो।”**

आपका लक्ष्य है एक मसीही कलीसिया के लिए अगुवों और मसीही सेवकाई का निर्माण करना।
वे कलीसिया के अगुवो को और छोटे दल के अगुवों को प्रचार करना सिखाते हैं और विशेष रूप से यीशु मसीह के दृष्टान्तों और रोमियों की पत्री का प्रचार करना सिखाते हैं।

हर नियम पुस्तिका में 12 अध्याय है जिस में से हर अध्याय को 2 घँटे का समय़ देना ज़रूरी है।

- **(4) इसके लिए रेडियो, टेलीविज़न, सी.डी., इन्टरनेट, और वेब इन सब का प्रयोग करें क्योकि वे सब डोटा कहलाते हैं।**

उन चीज़ों क साथ इस्तेमाल करके बाइबल की सच्चाईयों को समझ लेना, और मसीही अनुशासन पर चलना और व्यवहारिक हुनर से मसीही सेवकाई करना।

4. दर्शनः एक बढ़ती कलीसिया की सेवकाई की विस्तृत रूप रेखा।

- **(1) एक दल की विस्तृत सेवकाई वह कुँजी हैजिसके द्वारा अगुवे एक घर की संगति के लोगों को या एक दल को तैयार करते हैं।**

यदि एक प्रशिक्षण प्राप्त संगति के लोग एक नए घर में संगति शुरू करते हैं तो 10 साल में कम से कम 256 घरों में या छोटे दलों में सेवकाई बढ़ाई जा सकती है।

- **(2) दूसरी कुँजी यह है कि दल के अगुओं की गिनती बढ़ाने के लिए दल के नए अगुवों को प्रशिक्षण देना होगा।**

शुरूआत करें हर घर की संगति या छोटे दल में एक नए पुरुष या एक नई स्त्री को अगुवा बनने के लिए तैयार करें। जिससे वे आपके देश में और अधिक अगुवे तैयार कर सकें। बाद में हर कलीसिया एक पुरुष और एक स्त्री को नियुक्त करे कि वे नए अगुवों के प्रशिक्षण दें।

- **(3) परमेश्वर की आज्ञाएँ और वायदे**

परमेश्वर की आज्ञा थी आदम और हव्वा के लिए जो और सारे संसार को परमेश्वर के स्वरूप के लोगों से भर दो। और फिर यीशु की कमिशन "जाओं और मेरे नाम से चेले बनाओ।"

(परमेश्वर की योजना कभी भी असफल न होगी। क्योंकि परमेश्वर ने यशायाह 14:24,27 और भजन 138:8 में कहा था, "मैं ने योजना बनाई है, और ऐसा ही होगा।" अन्त में हर देश से, हर जाति से, हर भाषा को बलने वाले लोगों की एक बड़ी भीड़ होगी जिसकी गिनती नहीं की जा सकेगी जब वे परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े होंगे। (प्रकासित वाक्य 7:9)

एक चेलों का दल शुरू करने के लिए आप क्या करेंगे?

(क) एक लक्ष्य निरधारित करें

1) वे चार नियम पुस्तिकाएं जो चेले बनाने के लिए रची गई हैं उनके निम्न लक्ष्य हैः

- **एक व्यक्ति को मसीही बनने के लिए सहायता कर सके।**
- **दूसरे युवा मसीहों को मसीह में परिपक्व बनने में सहायता कर सके।**
- **मसीही अगुवों को प्रशिक्षण देकर लैस कर सके कि वे सफल अगुवे, कार्यकर्ता और कलीसिया के अगुवे बन कर सेवा करें।**

चेतावनीः इन पुस्तिकाओं में जो है केवल उसके द्वारा वह किसी को मसीह का चेला नहीं बनाता है। आत्मिक उन्नति केवल किसी व्यक्ति के सच पर विश्वास करने और उस सच को जीवन में लागू करना। “परमेश्वर ने हम को बाइबल दी है केवल इस लिए नहीं कि हम अपने ज्ञान को बढ़ा सकें वरन इसके लिए अपने जीवन को बदल सकें।”

2) चेले बनाने के इस पाठ्यक्रम में निम्न विशेषताएँ

- **यह सहभागिता का कार्यक्रम है।**
  दल का हर व्यक्ति इस में भाग लेगा।
- **आप इस पर खर्च उठा सकते हैं।**
  विद्यार्थी को केवल एक बाइबल, एक कापी, और एक पेन की ज़रूरत होती है।
  दल के अगुवे ही केवल इस नियम पुस्तिका को इस्तेमाल करेंगे।
- **यह परिस्थिति के अनुसार अपने को ढाल लेता है।**
  दल के अगुवे इस पाठ्यक्रम को किसी भी रूप में ढाल कर इसे अपनी योजना के अनुसार इस्तेमाल कर सकते हैं। उनको किसी भी अन्य वस्तु को इस्तेमाल करने की ज़रूरत नहीं होगी।
- **यह रचनात्मक है।**
  विद्यार्थियों को उत्साहित किया जाता है कि वे सोचें और कायल होकर कुछ करें। वे अपने हुनर का इस्तेमाल करके कुछ नया बनाएँ।
- **वह प्रयोगात्मक है।**
  यह नियम पुस्तिका ऐसे रास्ते सिखाती है जो प्रयोग में लाए जा सकते हों और विद्यार्थी उसे इस्तेमाल करके कुछ सीख सकें।
- **इस का हस्तांतरण किया जा सकता है।**
  वे विद्यार्थी जिन्होंने अपना कोर्स समाप्त कर लिया है तो वह इस नियम पुस्तिका को किसी दूसरे को प्रशिक्षण देने के लिए इस्तेमाल कर सकता है।

ख. एक योजना बनाएँ

1. परमेश्वर

परमेश्वर क्या कहते हैं कि आप को क्या करना चाहिए? परमेश्वर को अनुमति दें कि वह बाइबल, पवित्र आत्मा और प्रार्थना के द्वारा आप का मार्गदर्शन करें।

2. ज़रूरतें

उन लोगों की ज़रूरतें क्या हैं जिनको आप प्रशिक्षण देना चाहते हैं? उनके जीवन का ध्यान से अवलोकन करें।

3. अवसर

आपके पास कौन-कौन से अवसर हैं और आपकी क्या योग्ताएँ है, आपके पास कितनी धन-सम्पदा है और आपकी क्या मुश्किलें हैं।

4. सामंजस्य

आप अपनी योजनाओं को कैसे अनुकूल बना सकते हैं? आप कितने लोगों को प्रशिक्षण देना चाहते हैं? हर विद्यार्थी कितना परिपक्व और योग्य है? एक विद्यार्थी के पास आपके लिए और आप के पास एक विद्यार्थी के पास कितना समय है?

5. स्थान

एक उपयुक्त स्थान का चुनाव करें जहाँ पर दल के लोग अगुवे से मिल सके। पता करें कि क्या हर विद्यार्थी मिलने के स्थान पर पहुँच सकता है? क्या उस स्थान पर भटकाने वाली कोई तो चीज़ है?

ग. समर्पित लोगों का पंजीकरण करें

1. **पंजीकरण**

- **ज़रूरतें**

प्रार्थना के साथ नए विद्यार्थियों को खोजें। उन्हें जो विश्वास योग्य है और जो सीखना चाहते हैं। केवल उन्ही का पंजीकरण करें।

- **सूचित करना**

एक निमन्त्रण भेजें कि लोग आकर भाग लें। जिन्हें निमन्त्रण भेजें उन को सूचित कर दें कि यह एक अनुशासन का कार्यक्रम है।

2. **विद्यार्थियों से कहे कि वे स्वयं को निम्न 5 जीवन-स्तरों के प्रति समर्पित करें।**

- **विश्वासयोग्य बने रहना।**

मैं छोटे दल की हर सभा में उपस्थित रहूँगा।

- **सदा तैयार रहना।**

मैं ग्रह कार्य को सभा में आने से पहले अपना काम समाप्त करके आऊँगा।

- **शिक्षा ग्रहण करने को तैयार रहना।**

मैं सीखने को तैयार हूँ और जो कुछ सीखता हूँ उसे अपने जीवन में लागू करूँगा।

- **प्रेम से रहना।**

मैं प्रेम से दल के अन्य विद्यार्थियों की मदद करूँगा।

- **ज़िम्मेदार रहना।**

मैं अपनी उन्नति और संघर्ष को दल के दूसरे लोगों के साथ बाँटूँगा।

दल के अन्य लोगों को इस विषय पर प्रार्थना करने दे और तब मिल कर अपना निजि निर्णय लें जो इस बात के विषय में हो कि वे क्या करने वाले हैं।

घ. चीज़ों का प्रयोग करें

1. **बाइबल**

शिक्षा और प्रशिक्षण देने के लिए बाइबल आपका सबसे महत्त्वपूर्ण स्रोत है।

2. नियम पुस्तिका

डोटा की 4 नियम पुस्तिकाओं को अपने कार्यक्रम के अनुसार शिक्षा और प्रशिक्षण देने के लिए प्रयोग करे।

3. श्वेत-पट

शिक्षा देते समय श्वेत-पट का प्रयोग करें।

4. नोट्स

विद्यार्थियों को उत्साहित करें कि वे निजि नोट्स बनाएँ और जितना हो सके उन्हें हर रीति से पूरा करें।

5. इन्टरनेट, रेडियो, और टेलीविज़न

दल के अगुवे और विद्यार्थी फायदा उठा सकते हैं उन सब कार्यक्रमों से जो सैटेलाइट टी.वी. पर दिखाए जाते हैं और सी.डी और इन्टरनेट की वेब साइट से भी लाभ उठा सकते हैं।

ङ. छोटे दलों की संख्या बढ़ाते रहें

1. विद्यार्थियों को अपना एक छोटा दल शुरू करने को कहें

जब आपके एक छोटे दल का प्रशिक्षण समाप्त हो जाए तब विद्यार्थियों को चुनौती दें कि वे अपना निज का एक नया दल बना लें। और अपनी 4 नियम पुस्तिका का प्रयोग करें। या फिर पहले केवल दो ही विद्यार्थियों के साथ नया दल शुरू कर लें। (लूका 10:1-2)

2. नियम पुस्तिका केवल दल के अगुवों के लिए है।

एक नियम पुस्तिका प्रशिक्षण समाप्त होने के बाद उन विद्यार्थियों को नियम पुस्तिका की एक प्रति उन प्रशिक्षित अगुवे को दे दी जाएगी जो एक नए दल की अगुवाई करेगा।

3. निरन्तर नए दल के अगुवों से मिलते रहें।

नए अगुवों से निरन्तर मिलते रहें जो नए चेले बनने के लिए आए विद्यार्थियों का प्रशिक्षण कर रहे हैं। उनको अवसर दे कि वे आपके साथ बाँट सकें कि वे अपने दल के साथ क्या कर रहे हैं। उनके प्रश्नो और समस्याओं के विषय पर बातचीत करें। दल के साथ मिल कर प्रार्थना करें और उन को आगे का प्रशिक्षण दें। नए दल के अगुवो को ज़रूरत है परामर्शदाता और शिक्षक की।

अध्याय 1

1.	**प्रार्थना**

दल के अगुवे प्रार्थना कर के अनुयायी बनने के लिए आए दल और इस पाठ्यक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौंप दें।

2.	**आराधना** (20 मिनट) ***(परमेश्वर के विशिष्ट गुण)*** **परमेश्वर असीमित है**

परिभाषा

आराधना क्या है? "आराधना" की परिभाषा है:
आराधना वह अभिव्यक्ति है जो हमारी परमेश्वर के प्रति उपासना, समर्पण और निष्ठा को प्रकट करती है। जो हम अपनी भिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं और अपनी प्रति दिन की जीवन शैली से प्रकट करते हैं।

परमेश्वर की आराधना करने के लिए, हमें ज़रूरत है कि हम अपने परमेश्वर को जान लें कि हमारा परमेश्वर कौन है। हर आराधना के समय हम परमेश्वर के केवल एक ही विशिष्ट गुण को जान सकते हैं।

मनन करना

"परमेश्वर असीम है" इस विषय पर मनन करना और सिखाना।

1. परमेश्वर की सीमाएँ असीम है पर फिर भी हम उसे जान सकते हैं।

अय्यूब 11:7-8. क्या तू परमेश्वर के गूढ़ भेद को पा सकता है? क्या तू सर्वशक्तिमान की असीमित सीमा को पूरी रीति से जाँच सकता है? वह आकाश से ऊँचा है तू क्या कर सकता है? वह कब्र से भी गहरा है - तू क्या जान सकता है?

कोई भी सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सीमाओं की परख नहीं कर सकता है। कोई भी परमेश्वर के विषय में सब कुछ समझ और जान नहीं सकता है। किसी भी चीज़ की परिभाषा बताने का अर्थ है उसकी सीमाएँ बताना ज़रूरी हैता है। परमेश्वर की परिभाषा देने का अर्थ है उसकी सीमाओं को जान लेना। यदि कोई परमेश्वर की परिभाषा दे सकता है तो वह उसकी सीमाओं को जान लेगा और तब वह परमेश्वर से बड़ा बन जाएगा। बाइबल सिखाती है कि उसने लोगों को सीमित बनाया है। वह हमारी सीमाओं की परिभाषा देता है और वह हमारे विषय में सब कुछ जानता है। इस सत्य से हमें इस बात से परिचित हो जाना चाहिए कि इस सृष्टि में हमारा स्थान कहाँ है। यहीं हमें परमेश्वर की नज़र मे और भी नम्र बना देता है।

लेकिन यदि कोई भी परमेश्वर के असीमित होने को परख नहीं सकता है तो क्या परमेश्वर की सारी जानकारी पाना असम्भव है? क्या हम लोग परमेश्वर को जान सकते हैं? हाँ, हम परमेश्वर को जान सकते हैं लेकिन केवल उतना ही जितना परमेश्वर हम पर प्रकट कियाथा।"गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में है, परन्तु जो प्रकट हैं वह सदा के लिए हमारे और हमारे वँश के वँश में रहेगी, इसलिए कि इस व्यवस्था की सब बातें पूरी की जाएँ।"

2. परमेश्वर तो अदृश्य है, फिर भी परमेश्वर स्वयं को लोगों पर प्रकट करता है।

कुलुसियों 1:15 वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप है।

परमेश्वर आत्मा है। (युहन्ना 4:24) इसलिए वह मनुष्य की आखों से ओझल रहता है। किसी भी मनुष्यने परमेश्वर को नहीं देखा है और न ही देख सकता है। कोई भी व्यक्ति परमेश्वर का वर्णन नहीं कर सकता है कि वह है या नहीं या उसकाव्यक्तित्व कैसा है और न ही कोई मनुष्य परमेश्वर को देख सकता है जब तक परमेश्वर स्वयं अपने व्यक्तित्व के कुछ पहलु उस पर प्रकट न करे।

क्या हम लोग परमेश्वर को देख सकते हैं? हाँ यीशु मसीह अदृश्य परमेश्वर का प्रत्यक्ष स्वरूप है जिसे हम देख सकते हैं। सर्वशक्तिमान अदृश्य आत्मा यीशु मसीह के रूप में मनुष्य के स्वभाव को लेकर मनुष्यों के बीच रहने को आया था जिससे लोग उसे देख सकें। यीशु ने कहा, "जिसने मुझे देख लिया उस ने पिता को देखा है।"(युहन्ना 14:9) हज़ारों लोगों ने यीशु को मानव व्यक्तित्व को देखा था और उसके जीवन को भी देखा था जो अदृष्य परमेश्वर का रूप था।उन्होंने जो कुछ भी बाइबल में लिखा है वह आज हमारी सहायता करता है कि हम यीशु मसीह को देख सकें और उसे जान लें। मसीह यीशु में हम अदृश्य परमेश्वर को जान सकते और देख सकते हैं।यीशु मसीह में हम परमेश्वर के प्रेम और दया, परमेश्वर की पवित्रता और धार्मिकता, उसके चरित्र के परम गुणो को या फिर उसकी सर्वगुण सम्पन्नता को, परमेश्वर की सर्वोत्तम सामर्थ और नम्रता, उसकी सच्चाई और बुद्धिमत्ता को देख सकते हैं। संक्षेप में परमेश्वर की महिमा को। परमेश्वर की महिमा में उसके सारे गुण या सम्पूर्णताएँ उसकी उपस्थिति जो परमेश्वर की महिमा की ज्योति भी सम्मिलित हैं जिसे हम मसीह यीशु में देख सकते हैं, संक्षेप में परमेश्वर की महिमा को। परमेश्वर की महिमा में वे सभी गुण हैं जो परमेश्वर के सर्वगुण समप्न्न होने के और उसकी उपस्थिति को दर्शाते हैं। यीशु मसीह परमेशवर की महिमा की चमकती ज्योति है जो पूरी रीति से परमेश्वर के व्यक्तित्व का चित्रण करती है। (इब्रानियों 1:3) वह अदृश्य परमेश्वर जो स्वर्ग में है जिसने स्वयं को मसीह यीशु में इस पृथ्वी पर प्रकट किया था। मसीह यीशु तो इस पृथ्वी पर अपने सम्पूर्ण दैविक रूप की पूर्णता के साथ एक शरीर में ढाल कर स्वयं मनुष्य रूप में प्रकट किया था। (कुलुसियों 2:9)

3. हम परमेश्वर तक नहीं पहुँच सकते हैं फिर भी परमेश्वर स्वयं हम तक पहुँच जाता है।

1 तिमुथियुस 6:16 परमेश्वर.....और अमरता केवल उसी की है और वह अगम्य ज्योति में रहता है जिसे न किसी ने देखा है और न ही देखेगा।

परमेश्वर एक ऐसी ज्योति में रहता है जिस तक पहुँचा नहीं जा सकता है। परमेश्वर तक कोई भी पहुँच नहीं सकता है। कोई भी किसी भी रीति से चढ़ कर स्वर्ग में परमेश्वर को देखने या उससे मुलाकात करने नहीं जा सकता है। परमेश्वर न केवल अदृश्य वरन मानवीय प्रयास करने पर भी उस तक पहुँचा नहीं जा सकता है।संसार का कोई भी धर्म उस जीवित परमेश्वर तक पहुँचने में हमारी सहायता नहीं कर सकता है जिसने स्वयं को बाइबल में हम पर प्रकट किया है।

बाइबल हमें सिखाती है कि वह हम नहीं है जो परमेश्वर तक पहुँच सकते हैं लेकिन परमेश्वर स्वयं ही हम तक पहुँच जाता है। परमेश्वर स्वयं इस पृथ्वी पर आये थे कि हम पर स्वयं को प्रकट कर सकें। परमेश्वर ने एक कमज़ोर मनुष्य के स्वभाव का लिबास पहना और वह हमारे बीच रहने को आए थे। (युहन्ना 1:14; फिलिपियों 2:6-8) परमेश्वर हम तक पहुँचे थे कि हम उसे जान लें, उसे ग्रहण कर लें और उसके साथ एक निजि सम्बन्ध बना लें। इस संसार के अन्य धर्म के लिए जीवित परमेश्वर तक पहुँचना समभव नहीं है। लेकिन यीशु मसीह में अतीत के इतिहास के अनुसार जीवित परमेश्वर स्वय हम तक पहुँचे थे और आज भी वह हम तक पहुँच जाते है। केवल यीशु मसीह में ही परमेश्वर तक पहुँचना सम्भव है।

<u>आराधना</u>
परमेश्वर की इस रूप में आराधना करें कि वह असीम है। तीन-तीन लोगों के दल बना कर आराधना करें।

3.	बाइबल शिक्षा (70 मिनट) [शान्त समय] मनपसंद सच्चा तरीका

क. प्रेरणा

मसीह यीशु के साथ दैनिक संगति क्यों महत्त्वपूर्ण है?

1. एक साथ भोजन करने की तस्वीर।

लोग एक साथ भोजन क्यों करना चाहते हैं?
पढ़े प्रकाशितवाक्य 3:20
नोट्स. लोग एक साथ खाना इसलिए पसंद करते हैं क्योंकि इस रीति से वे एक दूसरे के साथ संगति करते हैं। बाइबल में, एक साथ भोजन करना संगति की एक तस्वीर है। यीशु मसीह नहीं चाहते हैं कि वे कलीसिया की संगति के बाहर खड़े रहें परन्तु वे तो भीतर आना चाहते हैं और लोगों के साथ संगति करना चाहते हैं। इसी रीति से जब आपने अपने दिल और जीवन में यीशु मसीह को ग्रहण कर लिया है तो पहली चीज़ जो यीशु चाहते हैं कि वह आप के साथ संगति करें। जो कोई यीशु मसीह को ग्रहण करता है वह परमेश्वर को ग्रहण करता है। (मत्ती 10:40; कुलुसियों 1:15) और जो कोई यीशु मसीह के साथ संगति करता है वह पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर के साथ संगति करता है। (युहन्ना 16:13-15)

2. यीशु मसीह के साथ संगति करने के उपाय:

आप क्या करते हैं जब आप दूसरों के साथ मिल कर खाना खाते हैं?
नोट्स. जब आप एक दूसरे के साथ खाना खाते हैं तब आप भोजन को अपने शरीर में डालते हैं पर आप एक दूसरे से आत्मिक बातें नहीं करते हैं। लेकिन जब आप यीशु मसीह से संगति करते हैं तो आप आत्मिक भोजन खाते हैं जो आपके दिल और मन में जाता है। और आप प्रार्थना में यीशु मसीह से बातें करते हैं।

यीशु किसे आत्मिक भोजन कहता है?
पढ़ेः मत्ती 4:4, युहन्ना 4:34; 1 पतरस 2:2
नोट्स. वास्तविक आत्मिक भोजन परमेश्वर का वचन है जिस को परमेश्वर ने बाइबल में प्रकट किया है। (पवित्र बाइबल या धर्मशास्त्र) एक व्यक्ति तब जीना शुरू करता है जब वह वही करता है जैसा बाइबल में लिखा है। इस लिए यीशु मसीह से अर्थात परमेश्वर के साथ संगति करने के लिए आपको सीखना है कि कैसे परमेश्वर के वचनों से स्वयं को भर लें। आपको सीखना है कि कैसे परमेश्वर के वचन को “खाना और “हज़म करना है।”,और “उसके अनुसार जीना होगा”जो बाइबल में परमेश्वर आप से कहता है।

आप परमेश्वर से कैसे बातें करते है?
भजन संहिता 62:8; और लूका 11:1-4 को पढ़ें।
नोट्स. आप परमेश्वर से प्रार्थना के द्वारा बातें करते हैं। परमेश्वर से संगति करने के लिए आप को प्रार्थना करना सीखना होगा। प्रार्थना कोई धार्मिक प्रक्रिया नहीं है। इसके शब्द निश्चित नहीं होते है और न ही इसे किसी विशेष रूप से बैठ कर या खड़े होकर करना होता है। प्रार्थना तो वह समय है जिस में आप खुद से, अपनी खुशी से, एक मात्र सच्चे और जीवित परमेश्वर के साथ आत्मिक संगति करते हैं। प्रार्थना में परमेश्वर आप से व्यक्तिगत रूप से बातें करता है और आप उसका प्रतिउत्तर भी देते हैं। या फिर प्रार्थना में आप परमेश्वर के सामने अपना दिल उँडेल कर रख देते हैं और वह उसका उत्तर अपने समय से अपनी रीति से देता है। सीख लें कि परमेश्वर वचन से आप से क्या कह रहे है, और आप उसका प्रति उत्तर कैसे देंगे। अपने दिल को परमेश्वर के सामने खोल कर रखना सीख लें और वह सब कुछ जो आपके दिल में है वह सब परमेश्वर के सामने ले आएँ।

3. यीशु मसीह के साथ संगति करने की ज़िम्मेदारी

सिखाएँ - प्रकाशितवाक्य 3:20 पहले कहता है कि यीशु आपके साथ भोजन में संगति करेंगे और फिर कहता है कि आप यीशु के साथ खाना खाने में संगति करेगे।
इस उदाहण में मेज़बान कौन है?

मेज़बान के रूप में एक विश्वासी की क्या ज़िम्मेदारियाँ होती हैं?
नोट्स -जब यीशु आपके साथ खाते हैं तब आप मेज़बान हैं और यीशु मेहमान हैं।
यीशु के प्रति मेरी क्या ज़िम्मेदारियाँ हैं?
जब मैं मेज़बान हूँ तो मेरी ज़िम्मेदारी है कि मैं वह सब कुछ उसे दे दूँ जो मेरे पास है। इसमें विशेष रूप से मेरा दिल, मेरा समय, और मेरी उत्सुक्ता भी कि मैं उसके साथ संगति करूँ, लेकिन इसके साथ-साथ मुझे अपने पाप, परेशानियाँ और भय भी उसे सौंपने होंगे।

मेज़बान बन कर यीशु की क्या ज़िम्मेदारियाँ हैं?
नोट्स- जब आप यीशु के साथ भोजन खाते हैंतब यीशु मेज़बान है और आप एक मेहमान हैं।यीशु की आपके प्रति क्या ज़िम्मेदारियाँ हैं?
जब यीशु मेज़बान हैं तो मैं बहुत सी आशाएँ रख सकता हूँ। मैं चाह सकता हूँ और आशा कर सकता हूँ कि परमेश्वर मेरी संगति के समय मुझ से व्यक्तिगत रूप से बात करें या मैं ऐसी भी आशा कर सकता हँ कि परमेश्वर मुझे वह सब कुछ दे देंगे जिस की मुझे उस दिन वास्तव में ज़रूरत होगी। (इब्रानियो 4:15-16)

4. यीशु मसीह के साथ संगति प्राय: कितनी बार होनी चाहिये।

आप एक सामान्य दिन में कितनी बार भोजन खाते हैं?
नोट्स - हर दिन नियम से खाना क्यों ज़रूरी है? परमेश्वर के साथ संगति करते समय प्रकाशितवाक्य 3:20 का इससे क्या सम्बन्ध है? अधिकतर लोग दिन में दो या तीन बार भोजन करते हैं। स्वस्थ रहने के लिए और काम करने के लिए शक्ति पाने के लिए हमें केवल केवल अच्छा भोजन ही नहीं वरन नियमित रूप से भोजन करना चाहिए। इसलिए प्रकाशितवाक्य 3:20 में दशाई तस्वीर के अनुसार यह बहुत ही विवेकशील होगा कि हम प्रतिदिन परमेश्वर के साथ संगति करें।

यीशु मसीह के मानव अवतार के समय में उनकी नियमित आदत क्या थी?
पढ़े यशायाह 50:4-5; मरकुस 1:35
नोट्स -पुराने नियम में यीशु मसीह को "प्रभु का सेवक"कहा गया है। यशायाह 50 तो यीशु के विषय में भविष्यद्वाणी की गई है जो उसके पृथ्वी पर प्रथम आगमन से 700 साल पहले की गई थी। प्रतिदिन सवेरे यीशु मसीह अपने परमेश्वर पिता की सीख को सुना था और वे परमेश्वर से प्रार्थना करते रहे। इस रीति से जब यीशु इस पृथ्वी पर थे तब उनका पिता परमेश्वर के साथ संगति करने का भोर सवेरे एक नियमित समय था।

राजा दाउद की नियमित आदत क्या थी?
पढ़ें भजन 143:8,10) भजन 1:1-2, भजन 5:3
नोट्स -भोर सवेरे दाउद आशा रखता था कि वह परमेश्वर के शब्दों को सुनने पाए। और वह आशा करता था कि परमेश्वर उसे अपनी वह राह दिखाएगा जिस पर उसे जाना है। यह तभी होता था जब वह परमेश्वर के वचनों पर मनन करता था।
अपनी प्रार्थनाओं में वह अपने निवेदन परमेश्वर के सामने रखता था तब वह भरपूर आशा के साथ प्रतीक्षा करता था यह देखने को कि परमेश्वर क्या करने वाले हैं। इस प्रकार दाऊद का भी प्रतिदिन सवेरे परमेश्वर के साथ संगति करने का नियमित समय होता था।

साराँश:हम इसे परमेश्वर के साथ प्रति दिन का व्यक्तिगत समय कह सकते हैं इसे अकेले में शान्त समय या भक्ति **पूर्ण** समय भी कह सकते हैं। अपने इस निजि समय में जो आप परमेश्वर के साथ बिताते हो आप परमेश्वर के वचन को खाते हो अर्थात ग्रहण करे जो बाइबल में लिखे हैं और प्रार्थना में आप परमेश्वर के साथ बातें करते हो।

ख.विधि

परमेश्वर के साथ रोज निजि संगति का समय कैसे बिताएँ?

सिखाएँ: नीचे दी विधि जो परमेश्वर के साथ समय बिताने के लिए प्रयोग करते हैं उसे कहते हैं:

मनपसंद सच्चाई (या चुने हुए बाइबल के वचन) की विधि

इस विधि में पाँच तरीके हैं।इस अन्तर को ध्यान में रखें जो परमेश्वर के साथ निजि समय बिताया (वह विधि जिस में हम सच्चा मनपसन्द तरीका या वचन को चुन लेते हैं। और बाइबल अध्ययन की इस विधि के 5 तरीके हैं।)

एक घर में संगति करने के बाद एक अगुवे ने बाइबल से 7 प्रसंग वचन देता है, जिन को ध्यान में रखते हुए हर छोटे दल का सदस्य घर पर हफ्ते के दौरान अपने निजि समय में परमेश्वर के साथ संगति करने को कहा जाता है। ।

तरीका 1 प्रार्थना.

अपने निजि समय की शुरूआत मे पूरे होश में परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करें। आप एक प्रार्थना में परमेश्वर से कहें कि वह आप से निजि रूप से परमेश्वर के वचन से जो बाइबल में लिखे हैं, उनको अपनी आत्मा से आप पर उजागर करे। उससे माँग लें कि वह आपके जीवन को अपने वचनों के द्वारा और भी शक्तिशाली बना दे। उदाहरण के लिए आपको ऐसे प्रार्थना करनी चाहिए। "परमेश्वर मेरी आँखों को खोल दे कि मै उन अदभुत चीज़ो को देखने पाऊँ जो आपके वचन में लिखी हैं।(भजन 119:18)"

तरीका. 2 - पढ़ें

हर दिन चुने हुए 7 प्रसंगों का जो बाइबल में से पूरे हफ्ते के लिए दिए गए हैं उन को पढ़ें।

तरीका 3. - अपना मन पसंद सत्य का प्रसंग चुन लें

आपका मनपसंद प्रसंग एक सत्य वचन हो सकता है या बाइबल के प्रसंग से कुछ चुने हुए वचन हो सकते हैं जो आपने पढ़े हैं। सत्य का वह विचार जिसके विषय में परमेश्वर आप से बातें कर रहा है जिस सत्य ने आपके विचारों को प्रेरित किया है और जिन वचनों ने आपके दिल को छू लिया है।

तरीका 4.अपने चुने हुए सत्य वचन को जो आपने बाइबल से चुना है मनन करें।

आप परमेश्वर के वचन पर मनन करते हैं क्योंकि आप उस वचन की सच्चाई को समझना चाहते हैं, और उसके द्वारा अपनी सामर्थ को नया बना लें। और उसे जीवन में लागू कर सकें। मसीही व्यक्ति को मनन करते समय निम्न 4 बातों को ध्यान में रखना है।

- **विचार करो** -आपके मनपसंद प्रसंग के वचनो के अर्थ, जो उस में प्रयुक्त अलग-अलग शब्दों के हैं उन पर प्रश्न उठाएँ जैसे कौन? क्या? कहाँ? कब? क्यों? और कैसे?

• **प्रार्थना करो** - जब आप मनन कर रहे हैं तब परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आप के दिल से बातें करे। और शब्द के सही अर्थ को समझा दे। और प्रकट कर दे कि वह आपको क्या समझाना चाहता है और वह आप से क्या करने को कह रहा है। विश्वास करो, वैसे बन जाओ, और वैसा ही करो जो परमेश्वर आप से कह रहा है उसका प्रतिउत्तर दो।

• **समबन्ध बनाओ** - अपने मन पसंद सत्य से अपने जीवन का सम्बन्ध बनाएँ या फिर उस संसार से सम्बन्ध बनाएँ जिस में आप रहते हैं। खुद से ये प्रश्न पूछें। "इस सच की ज्योति में मेरी ज़रूरत क्या है?" या "यह सत्य कैसे मेरी ज़रूरत को पूरा कर सकता है और मेरे जीवन को पुनः शक्ति से भर सकता है?""परमेश्वर मुझे इस से क्या ज्ञान देना चाहता है" याकिस पर विश्वास कराना चाहता है, क्या बनाना और मुझ से क्या कराना चाहता है.?"

• **लिखो** -आपके मनन करते समय जो विचार सब से महत्त्वपूर्ण थे उन्हें अपनी कॉपी में लिखें जिस में आप परमेश्वर के साथ बिताए गए समय के विषय मेंजो सीखा है उसे लिखते हैं।

5. अपने मनपसंद सत्य वचनों के लिए प्रार्थना करें

अपने मन पसन्द सत्य वचनों को परमेश्वर को बता कर उनके विषय में प्रार्थना करे विशेषकर उन पर जिन पर आप ने मनन किया है) फिर 4 भिन्न लोगों के लिए प्रार्थना करें।

- इन मनपसंद वचनो के अनुसार अपने विषय में प्रार्थना करें।
- इन मनपसंद वचनों के अनुसार परिवार के किसी जन के लिए प्रार्थना करें।
- इन मनपसंद वचनों के अनुसार किसी पड़ोस के जन के लिए प्रार्थना करें।
- इन मनपसंद वचनों के अनुसार किसी ऐसे व्यक्ति के लिए प्रार्थना करें जो बहुत दूर रहता हो।

ग. सुझाव

परमेश्वर के साथ निजि समय बिताने के लिए

1. हर दिन परमेश्वर के साथ अपना निजि समय बिताएँ

सिखाओ :प्रति दिन परमेश्वर के साथ निजि समय बिताएँ।
हर दिन परमेश्वर के साथ अकेले या दूसरों के साथ निजि समय बिताएँ।
यह निजि समय सवेरे, दोपहर, शाम या रात को किसी समय भी बिताया जा सकता है।
बाइबल को पढ़ने के लिए अपने चुने हुए सत्य प्रसंगों का प्रयोग करें।
बाइबल पढ़ने के लिए एक नियमित योजना के साथ बाइबल पढ़े (देखिए नियम पुस्तिका 1 का अतिरिक्त भाग 2)
बाइबल पढ़ने के लिए बाइबल पर चिन्ह लगाना सीख लें। (देखिए नियम पुस्तिका 1 का अतिरिक्त भाग 3)

2. परमेश्वर के साथ निजि समय के लिए एक कॉपी बनाएँ

सीखना परमेश्वर के साथ संगति करते हुए एक अलग कॉपी रखें ।

- तिथि लिखें
- बाइबल के प्रसंग का लेख का अँश जो आप ने परमेश्वर के साथ अपने निजि समय में पढ़ा था।
- बाइबल का वह प्रसंग जो आपके मनपसन्द सत्य के विषय में है।
- वे सभी बाइबल के महत्त्वपूर्ण सत्य जो परमेश्वर चाहता है कि आप याद रखें और दूसरों को भी बताएँ।

आपकी कॉपी - परमेश्वर के साथ आपके निजि समय में आपकी सहायता करेगा क्योंकि जो कुछ आपने सीख कर

अपनी कॉपी में लिखा है उसे आप दूसरों के साथ बाँट सकते हैं। यह आपकी सहायता करेगा कि आपको याद दिला सके कि परमेश्वर ने आप से अतीत में क्या कहा था। जब आप बार बार अपने लिखी बातों को पढ़ेंगे तो बाद में आप देखने पाएँगे कि परमेश्वर किस रीति से आप की अगुवाई कर रहा है।

3. एक दल में परमेश्वर के साथ निजि संगति करना

सिखाओ -परमेश्वर के साथ एक दल में निजि संगति में कैसे समय बिताएँ।

- **एक छोटा दल बनाएँ** एक छोटा दल बनाएँ जो चाहता है कि परमेश्वर के साथ, एक साथ मिल कर निजि समय बिताए। उस छोटे दल में परिवार के सदस्य, मित्र, विश्वासी या पड़ोसी भी हो सकते हैं। एक ऐसा समय चुन ले जो सब के लिए उपयुक्त हो। कुछ मसीही लोग भोर सवेरे मिलते हैं जिससे परमेश्वर के साथ निजि समय बिता सकें। और काम पर जाने से पहले प्रार्थना में समय बिताएँ।
- **शान्त समय** -अपने छोटे दल को और छोटे दलों में बाँट लें जिस में एक दल में केवल दो ही लोग हों। और फिर अपना मनपसंद सच का विषय चुन कर संगति करें। आप 3 या 4 लोगों के झुण्ड भी बना सकते हैं।
- **गवाही का समय** -समय के अन्त में सभी लोग बारी बारी से अपनी गवाही देंगे और बताएँगे कि उन्होंने क्या महत्त्वपूर्ण सीखा था।
- **प्रार्थना का समय** -अन्त में सब बारी बारी से प्रार्थना करें और जो कुछ उन्होने पाया है उसके विषय में प्रार्थना करेंगे।

4. एक ऐसा समय जब अपना निजि समय आप को परमेश्वर के साथ बिताना होगा।

सिखाओ -हर हफ्ते परमेश्वर के साथ निजि समय बिताएँ और निजि समय की गवाही दें।

यदि आप का दल केवल हफ्ते में एक ही बार मिलता है तो उस संगति के समय में से थोड़ा समय गवाही का रख लें। (इसके लिए देखें नियम पुस्तिका 1 का - दल के मुखिया का भाग।) हर व्यक्ति पूरे दल के साथ केवल एक ही गवाही बाँटेगा जो उसने पिछले हफ्ते में अनुभव किया था। अन्त में सब लोग छोटी-छोटी प्रार्थनाओं में जो उन आशीषों के विषय में होगी जो हमने इस गुज़रे हफ्ते में पाई थीं, सम्मिलित होंगा।

उदाहरण कि आप किस रीति से अपनी कापी में लिखेंगे

> 2010-07-03 – 1 थिसलुकियों 1:1-10
> चुना हुआ बाइबल का वचन या मनपसंद सत्य:
> 1 थिसलुकियों**1:3**: हम अपने परमेश्वर और पिता के सामने तुम्हारे विश्वास के काम और प्रेम और परिश्रम और हमारे प्रभु यीशु मसीह में आशा की धीरता को लगातार याद करते हैं।.
> ध्यान और मनन:
> मै चाहता हूँ कि मेरा यीशु मसीह पर विश्वास मेरे कर्मों के द्वारा प्रकट हो। मैं चाहता हूँ कि परमेश्वर और पड़ोसियों के लिए मेरा प्रेम और हर दिन का अनुभव हो तब मेरी आशा कभी भी हारेगी नहीं!
> मेरी प्रार्थना:
> (स्वयं के लिए)प्रभु आज मेरी सहायता करे कि मैं अपने विश्वास को अपने कर्मों के द्वारा दिखा सकूँ।
> (परिवार के एक सदस्य के लिए प्रार्थना) प्रभु मैं चाहता हूँ कि आप मेरी बहन को विश्वास के हाथ और पैर प्रदान करें।.

(पड़ोस के किसी सदस्य के लिए प्रार्थना). कृपया मेरे मित्र पतरस को अपन प्रेम से अपनी ओर खींच लें जिससे वह आप पर विश्वास करने लगे.
(किसी ऐसे सदस्य के लिए जो बहुत दूर रहता हो). अपने देश में एक छोटी सी कलीसिया के विश्वास को पड़ोसियों के लिए एक आकर्षण बना दें।

2010-07-04 थिसुलुकियों 2:1-20

<u>चुना हुआ बाइबल का पद या सत्य:</u>
1 थिसुलुकियों 2:11-12 क्योंकि तुम जानते हो कि हम तुम सब से पिता के समान व्यवहार करते हैं ठीक वैसे ही जैसे एक पिता अपने बच्चो से करता है, प्रोत्साहित करते हुए और शान्ति देते हुए। हम तुम्हें उत्साहित करते हैं कि तुम ऐसा जीवन जियो जो परमेश्वर के योग्य हो क्योंकि उसने तुम्हें अपने राज्य और महिमा के लिए बुलाया है।
<u>मनन करना</u>:
कुछ मसीहों के लिए परमेश्वर एक माँ के समान है (पद7)जो उनके विषय में चिन्ता करती है और उनकी प्रेम से देखभाल करती है।अन्य समय पर परमेश्वर एक पिता के समान है (पद 11) जो उन को उत्साहित करके प्रेरित करता है कि वे महत्त्वपूर्ण काम करें। मैं लोगों को उत्साहित करने वाला बनना चाहता हूँ।
<u>मेरी प्रार्थना</u>
-(अपने लिए प्रार्थना)प्रभु, मुझे आज ही कोई ऐसा व्यक्ति दे जिसे मैं प्रार्थना द्वारा उत्साहित कर सकूँ।.
- (अपने परिवार के किसी सदस्य के लिए प्रार्थना)मेरे भाई को प्रोत्साहित करें कि वह आज अपने कार्य स्थल में सुसमाचार को बाँटे।.
- (अपने किसी पड़ोसी के लिए प्रार्थना)मेरे सहकर्मी जॉन की सहायता करें कि वह अपने निराश पड़ोसी को प्रोत्साहित करे।. - (किसी ऐसे के लिए जो बहुत दूर रहता हो) दल के अगुवों पर अनुग्रह करें कि ने अपने देश में प्रेरित होकर सताव के बीच भी सदस्यों को 6 प्रोत्साहित करते रहें।

4. अभ्यास (20 मिनट) *[शान्त समय]* व्यवहारिक अभ्यास का समय मत्ती 1:1 - 4:11

अपने चुने हुए बाइबल के पद या मनपसंद सत्य का प्रयोग करें और एक दल के रूप में लेखाँश मत्ती 1:1 - 4:11 पर मनन करें।

- दल का अगुवा एक छोटी प्रार्थना करे।
- दल का अगुवा किसी से मत्ती 3:1-12 पढ़ने को कहे।
- इस लेखाँश में से हर कोई अपना मनपसंद सत्य पद चुन लें और फिर उस पर 2 मिनट तक मनन करे और उस पर कम से कम एक विचार लिखे।
- बारी-बारी हर एक को अवसर दें कि वह अपने उस विचार को सब को बताए जो उसने लिखा है।
- फिर दो-दो करके अपने चुने मनपसंद वचन को ध्यान में रखते हुए प्रार्थना करें जो उसके लिए सच है, या किसी परिवार के जन के लिए सच है या किसी पड़ोसी या किसी दूर रहने वाले व्यक्ति के लिए सच है।

1. प्रति दिन परमेश्वर के साथ निजि समय बिताएँ।

अपने मनपसंद सत्य के तरीके का प्रयोग करके जो भी बाइबल का लेखाँश दिया गया है (या फिर बाइबल के पढ़ने की सारिणी) उसके अनुसार प्रतिदिन परमेश्वर के साथ संगति करें। हर दिन की बातों को लिख लें जो भी आपको लगता है कि परमेश्वर ने आप से इस विषय में बातचीत की है। आप यह समय केवल निजि रूप से या फिर एक दल के साथ कर सकते हैं।

2. दल बना कर परमेश्वर के साथ निजि समय बिताएँ

एक दल में आप प्रतिदिन मिलें या फिर हफ्ते में एक बार उसमें गवाही बाँटने का समय अवश्य रखें। जिस में लोग जो कुछ उन्होंने अपने निजि समय में सीखा है उसे सब के साथ बाँट सकें।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट की) ***(प्रतिक्रियाएँ)*** **परमेश्वर के वचन के अनुसार प्रार्थना में प्रतिउत्तर**

दल में सब बारी बारी से प्रार्थना करें। (प्रार्थनाएँ छोटी होनी चाहिए।) और उस विषय के प्रतिउत्तर में होनी चाहिए जो आपने आज सीखा है। या फिर आप दल को दो या तीन भागों में बाँट कर भी प्रतिउत्तर खोज सकते हैं।

6	**तैयारी** (2 मिनट) ***नियुक्त कार्य*** **अगले पाठ के लिए**

(दल के अगवे अपने दल के हर सदस्य को लिखित रूप से तैयारी करने की सामग्री दें। या उसे कॉपी पर लिख कर घर ले जाएँ।

1.प्रणः वायदा करें कि सब लोग नियमित समय पर परमेश्वर के साथ निजि समय बिताएगे। और उसे दिन के सबसे अच्छे समय पर करेंगे।

2.परमेश्वर के साथ निजि समय बितानाः परमेश्वर के साथ आधा मत्ती अध्याय 4:12 -7:29 पढ़ने में समय बिताएँ। उससे सत्य वचन के चुनाव के आधार पर जो कुछ समझा है और सीखा है उसकोकापी में लिख लें।

3. बाइबल अध्ययनः बाइबल का पहला अध्ययन पाठ लूका 8:4-15 के आधार पर घर पर तैयार करें। जिसका विषय है, “मैं परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर कैसे दूँ?”

4. प्रार्थनाः इस हफ्ते किसी विशेष व्यक्ति के लिए या किसी विशेष बात के लिए प्रार्थना करें।

5. अपने नोट्स पूरे करेः चेले बनाने के विषय में, और जो भी आपने सीखा है उसके नोट्स तथा जो9आपने तैयारी की है उसके विषय में नोट्स पूरे करें।

अध्याय 2

1.	**प्रार्थना**

दल के अगुवे अपने दल तथा इस पाठ्यक्रम के लिए प्रार्थना करे कि परमेश्वर चेले बनाने में सहायता करें।

2.	**गवाही देना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **मत्ती 4:12 – 7:29**

बारी-बारी से अपनी गवाही दें (या अपने नोट्स में से पढ़े) संक्षेप में जो कुछ आपने परमेश्वर के साथ बिताएँ अपने निजि समय में बाइबल के उस संदर्भ वचन (मत्ती 4:12-7:29) से सीखा है उसे दूसरों के साथ बाँटें।
जो भी गवाही दे रहा है उसकी बातों को ध्यान से सुने और उन्हें गम्भीरता से लें। उस समय कोई वाद-विवाद न करें।

3.	**याद कर लेना** (20 मिनट) *निश्चितता* **उद्धार निश्चित है; युहन्ना 10:28**

क.प्रेरित करना (मनन करने के लिए)

पढ़े इफिसियों 6:11,17; मत्ती 4:2-4; (व्यवस्थाविवरण 8:3)
खोज निकालें विचार-विमर्श करें।फिर याद करने के लिए दिया गया वचन, लेखाँश या अध्याय क्यों महत्त्वपूर्ण है।
नोट्स:याद किए वचन आपको दुष्ट की शक्तियों पर विजय पाने में आपकी सहायता करेंगे।

क. मनन करना (बाइबल के लेखाँश पर)

याद करने का सबसे पहला वचन सम्बन्धित है, "निश्चितता से"
बाइबल के याद करने वाले पाँच मुख्य शीर्षक है उद्धार निश्चित है, प्रार्थना के उत्तर मिलना निश्चित है, विजय निश्चित है, क्षमा निश्चित है, और परमेश्वर का मार्गदर्शन निश्चित।
उद्धार की निश्चितता के लिए याद करने का वचन - युहन्ना **10:28** जो कहता है, "मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ। वे कभी नष्ट न होंगे और कोई भी उनको मेरे हाथों से छीन नहीं सकता है।"

1. अनन्त जीवन का अर्थः

अनन्त जीवन क्या है? अनन्त जीवन एक नए प्रकार का जीवन है। वह एक अदभुत जीवन है, एक अर्थपूर्ण जीवन है, एक चुनौतियों से भरा जीवन है, एक स्थापित जीवन है और एक संतुष्ट जीवन है!!! वह एक ऐसा जीवन है जो कभी खत्म नहीं होता है। और इन सब से ऊपर अनन्त जीवन यह है कि हम एकमात्र सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को गहराई और निजि रूप से जान लें।। (युहन्ना 17:3)

2. अनन्त जीवन को कैसे प्राप्त करेः

यह तो एक परमेश्वर का करुणामय उपहार है। परमेश्वर केवल एक ही व्यक्ति के द्वारा उद्धार देता है जिस का इतिहास में नाम है और वह है यीशु मसीह। अनन्त जीवन को कमाया नहीं जा सकता है उसे तो केवल उपहार के रूप में ग्रहण किया जा सकता है। जब आप यीशु मसीह को अपने दिल और जीवन में ग्रहण करते हैं उसी घड़ी आप अनन्त जीवन प्राप्त कर लेते हैं। लेकिन यदि कोई यीशु मसीह को ग्रहण नहीं करता है तो उसे अनन्त जीवन भी प्राप्त नहीं

होता है।

3. विश्वासियों के लिए तीन आश्वासनः

उसे अनन्त जीवन मिल चुका है और उसका अन्त नहीं है।
अन्तिम न्याय के दिन उसका तिरस्कार नहीं होगा। वह नरक में नाश नहीं किया जाएगा।
कोई भी वस्तु या व्यक्ति उसे यीशु मसीह के हाथों से छीन कर नहीं ले जा सकता है।

क. याद करना

1. लिखो

बाइबल के वचन को किसी गत्ते के कार्ड पर लिख लें या फिर अपनी कॉपी के किसी खाली पन्ने पर जैसा नीचे दर्शाया गया है। पहली पंक्ति में विषय का शीर्षक लिखें। फिर दूसरी पंक्ति मे बाइबल का पद का संदर्भ लिखें। फिर एक लकीर खींच कर जो भी पद है उसे पंक्ति अनुसार लिख दें। फिर सबसे नीचे अन्य संदर्भ वचन लिख दें। ये संदर्भ वचन उस पन्ने के पीछे भी लिख दें।

उदाहरण:

उद्धार निश्चित है युहन्ना 10:28	
मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नष्ट न होंगे; और कोई भी उन्हें मेरे हाथों से छीन नहीं सकता है. युहन्ना 10:28	युहन्ना 10:28

2. याद करें

बाइबल के वचन को सही रीति से याद करें।
हमेशा विषय के शीर्षक से शुरू करें। बाइबल के वचन का संदर्भ और पद की पहली पंक्ति लिखें।
जब आप इस पद को बिना किसी गलती के बोल सकते हैं तब दूसरी पंक्ति को जोड़ दें। और फिर पहली और दूसरी पंक्ति को एक साथ बोलें।
इसी रीति से फिर तीसरी पंक्ति को जोड़ कर एक साथ बोलें। अर्थात विषय, संदर्भ और तीनों पंक्तियाँ एक साथ बोले।
किसी भी बाइबल के वचन को तोड़-तोड़ कर याद न करें। क्योंकि इस रीति से आप उस सामन्जस्य को भूल जाते हैं जो उसके पूरे अर्थ के लिए ज़रूरी होता है।
हर बार किसी भी पद को शुरू से आखिर तक पढ़ें।
हमेशा पद को पढ़ने के बाद उसका संदर्भ याद रखना सबसे कठिन होता है इसलिए पद के अन्त में सदा संदर्भ वचन भी साथ ही लिखें।
इस रीति से किसी भी वचन को याद करने का अनुक्रम इस तरह से होना चाहिए - शीर्षक, बाइबल का वचन संदर्भ वचन का लेखाँश और फिर दोबारा से वचन का संदर्भ वचन.

4.	**बाइबल अध्ययन** (70 मिनट) ***(जीवन सम्बन्धी प्रश्न)*** **परमेश्वर के वचन के प्रति मेरी प्रतिक्रिया कैसी हो ? लूका 8:4-15**

बाइबल का, एक दल के साथ अध्ययन करने का उद्देश्य यही है कि हम सब एक साथ यीशु मसीह के साथ और एक दूसरे के साथ भी एक सम्बन्ध स्थापित कर सकें। यह एक सहायता है जिसके द्वारा बाइबल के ज्ञान को समझने में और अपने जीवन में उसकी सच्चाईयों को प्रयोग में लाने में सहायता मिलती है। इस लिए यह महत्त्वपूर्ण बात है कि दल में हम एक दूसरे को उत्साहित करें कि वे बाइबल अध्ययन के विचार-विमर्श में भाग लें। हर व्यक्ति जो इस में भाग लेता है और अपने विचार प्रकट करता है बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। किसी को भी दूसरे के विचारों को सुन कर दुखी नहीं होना है और न ही विरोध करना है। हो सकता है बाइबल के शिक्षकों के अनुसार जो कोई कहता है वह बिलकुल गलत हो सकता है। दल के अगुवे को सब को प्रोत्साहित करना है कि वे एक साथ सत्य वचन को खोज कर और उसपर बातचीत करके बाइबल के सत्य वचन सीख लें। दल के हर सदस्य को अनुभव होना चाहिए कि जब वे बोलते हैं तब दल के अन्य सदस्य उनकी बात सुन रहे हैं। जो कुछ भी एक सदस्य बोलता है उसे गम्भीरता से लें और उसे मान लें। याद रहे दल के सदस्य एक दूसरे के साथ बाइबल ज्ञान की किसी प्रतियोगिता में भाग नहीं ले रहे हैं। उनको प्रेम के साथ एक दूसरे को उत्साहित करना है कि वे इस ज्ञान को प्राप्त करके उन्नति करें और जो सीखते हैं उसे दूसरों को विश्वास के साथ बताने पाएँ।
बाइबल की शिक्षा देने के लिए नीचे दिया गया उदाहरण इस रीति से तैयार किया गया है कि वह दल के अगुवे को तैयारी करनें में उस समय उनकी सहायता कर सके जब वे किसी विषय पर बातचीत कर रहे हों या किसी कठिन प्रश्न का उत्तर देने की कोशिश कर रहे हों। आप के बाइबल के सोच-विचार के समय में बहुत सी बातें उभर कर आ सकती हैं। तब दल के सदस्य अच्छी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और इसके लिए प्रश्न भी पूछ सकते हैं।

बाइबल अध्ययन के पाँच तरीकों की विधि का इस्तेमाल करें और एक साथ लूका 8:4-15 का अध्ययन करें।

कदम 1. पढ़ें **परमेश्वर का वचन**
पढ़ें -आईए हम लूका 8:4-15 के वचन एक साथ पढ़ें।
आईए हम एक-एक करके सभी वचनों को पूरे लेखाँश के समाप्त होने तक पढ़े।

<u>अवलोकन</u>
<u>कदम. 2 खोज करें</u>
ध्यान दें- इस लेखाँश में कौन सी सच्चाई महत्त्वपूर्ण है? या इस लेखाँश में क्या ऐसा है जिसने आपके दिल को छू लिया है?
लिख ले - इस लेखाँश में ऐसे एक या दो सत्य खोज कर निकालें जो आपके समझ आ रहे हैं। उन पर मनन करें और उनके विषय में आप क्या सोचते हैं उसे अपनी कापी पर लिखें।
गवाही दें - (जब दल के सदस्यों ने 2 मिनट तक मनन कर लिया हो और फिर जो जिसको लगा कि उनकी समझ में आया था उसे लिख लिया है तब बारी-बारी से वे उसे सब के सामने कहें।)
आइए हम एक दूसरे के साथ उसे बाँट ले जो कुछ हम ने खोज निकाला है। नीचे कुछ उदाहरण दिए गए हैं जो भिन्न सदस्यों ने बाँटा था। याद रहे कि उस छोटे दल में हर सदस्य ने कुछ अलग बाँटा है। यह ज़रूरी नहीं है कि सब की गवाही एक सी हो।

<u>खोज 1. वहाँ पर 3 व्यक्ति थे जो चाहते थे कि वह परमेश्वर के उस वचन के साथ कुछ करे, जो कि मेरे दिल में बोया गया है।</u>

सबसे पहली बात वह **मसीह** है, जो हमारे दिलों में वचन का बीज बोता है। वह चाहता है कि उसका वचन मेरे जीवन में फलदायी हो। दूसरी बात है कि **शैतान** भी है। जो चाहता है कि किसी भी तरह से परमेश्वर के वचन को हमारे दिल से निकाल कर दूर ले जाए। वह नहीं चाहता है कि परमेश्वर का वचन मेरे जीवन पर किसी भी तरह का प्रभाव डाले। और तीसरी बात है **मैं।** मुझ पर इस बात की ज़िम्मेदारी है कि मैं परमेश्वर के वचन के साथ जो मसीह ने मेरे दिल में बोया है

कुछ करूँ। यदि मैं उस वचन को सुनता हूँ और उसे अपने भले के लिए दिल में संजो कर रखता हूँ और यदि उस पर कठिन समय होने पर भी दृढ़ता से चलता रहूँ तो निश्चय ही मैं एक फसल उत्पन्न कर सकूँगा। लेकिन यदि मैं मसीह के उस वचन के साथ कुछ भी नहीं करता हूँ तो मैं उसे पूरी तरह से खो देता हूँ। इस लेखाँश में मेरे लिए एक महत्त्वपूर्ण सच्चाई है और वह यह है कि मुझे परमेश्वर के वचन के साथकुछ करना है। और यह मेरी ही ज़िम्मेदारी है कि मैं उसे अपने जीवन में लागू करूँ।

8:12

<u>खोज 2. - इतना ही नही शैतान परमेश्वर के वचन को मेरे दिल से निकाल देना चाहता है।</u>

14 पद परमेश्वर का वचन हमें हर शत्रु के विषय में बताता है। यहाँ पर वचन कहता है चिन्ताओं के कारण या धनी हो कर ऐश का जीवन बिताने की इच्छा के कारण, परमेश्वर के वचन का गला घोंट दिया जाता है। बाहर जो पापी संसार है और मेरे अन्दर का पापी स्वभाव मसीह के वचन के अन्य बड़े शत्रु हैं। वे नहीं चाहते हैं कि परमेश्वर का वचन मेरे जीवन में फलवन्त हो। इसलिए वे परमेश्वर के वचन का गला दबा कर मार डालते हैं। मैं जान गया हूँ कि मेरी एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है कि मैं चौकस रहूँ कि किसी भी तरह की चिन्ता धन-दौलत, या ऐश मेरे अन्दर बसे परमेश्वर के वचन का गला न घोट सके।

<u>तरीका 3. प्रश्न</u> **व्याख्या**

ध्यान दें -

इस दल से आप इस लेखाँश से किसी भी विषय पर क्या प्रश्न करना चाहेंगे?

आईए हम सम्पूर्ण सच को जानने की कोशिश करें जो लूका के 8:4-15 में निहित है। और जिसे हम अब तक पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं।

लिख लें-अपने प्रश्न को जितना भी सम्भव हो सके स्पष्ट रूप से कहें। फिर उस प्रश्न को अपनी कापी में लिख लें।

गवाही दें- (जब सारे दल के सदस्यों ने दो मिनट तक मनन करके अपना प्रश्न कापी पर लिख लिया है तब एक-एक करके वे अपने वचन को सब के सामने बोले।)

विचार-विमर्श- (फिर उन प्रश्नों मे से कुछ प्रश्न चुन ले और अपने दल के साथ मिल कर उन पर विचार विमर्श करके उन का उत्तर खोज निकालें।)

(नीचे कुछ ऐसे ही प्रश्नो का उदाहरण दिया गया है जो विचार विमर्श के दौरान विद्यार्थी पूछ सकते हैं।

8:5

<u>प्रश्न 1. बीज किस का प्रतीक है।</u>

नोट्स -बीज परमेश्वर के वचन का प्रतीक है। (लूका 8:11) विशेषकर उस संदेश में जहाँ पर परमेश्वर के राज्य का वर्णन है। (मत्ती 13:19) जो शुरू होता है सुसमाचारों से। (उदाहरण के लिए मरकुस 1:14-15; और प्रेरितों के काम 20:24-25; 28:23)

परमेश्वर का राज्य वह है जहाँ पर परमेश्वर का राज्य यीशु मसीह के द्वारा होगा, विशेषकर उन लोगों के दिलों पर और उनके जीवनों पर जो उसके लोग हैं। (लूका 17:20-21) इसका परिणाम है सम्पूर्ण उद्धार, शुरू से आखिर तक। (मरकुस 10:25-26) उनका इस पृथ्वी पर एक कलीसिया के रूप में निर्माण होगा, (मत्ती 16:18-19) उनके मानव समाज के हर पक्ष में किए गए भले काम (मत्ती 25:34-36; रोमियो 14:17) और अन्त में नए स्वर्ग और नई पृथ्वी की स्थापना करना। (1 कुर. 15:24-26; प्रकाशितवाक्य 11:15)

8:5-8

<u>प्रश्न 2. चार तरह की मिट्टी किस का प्रतीक है?</u>

नोट्स -यीशु के दिनों में किसानों के पास कोई मशीने नहीं होती थीं जिसके द्वारा वे बीज बोते। इसके लिए वे अपने हाथों का इस्तेमाल करते थे और चलते-चलते अपने दाहिने और बाएँ ओर बीजों के बिखेर देते थे। सो तब कुछ बीज उस पखडण्डी पर भी गिर जाते थे जिस पर वह चल रहा होता था। फिर कुछ बीज खराब भूमि पर गिर जाते थे जहाँ पर ज़मीन पथरीली होती थी। और ऊपर की भूमि बहुत ही उथली होती थी। कुछ बीज ऐसे स्थान पर गिर जाते थे जहाँ काँटे होते थे। और कुछ अच्छी और साफ भूमि पर गिरते थे।

सो ये चार तरह की भूमि हमारी भिन्न परिस्थितियों की और हमारे दिल के व्यवहार काप्रतीक है (लूका 8:12; मत्ती 13:19) और जान ले कि इस संसार में चार तरह के लोग होते हैं।

8:10

<u>प्रश्न 3. परमेश्वर के रहस्यों की जानकारी केवल चेलों को ही क्यों दी जाती है?</u>

नोट्स -यह न्यायसंगत लगता है पर ऐसा नहीं है। परमेश्वर के राज्य का रहस्य तो पूरे नए नियम के सुसमाचार का है। यीशु मसीह की पहले आगमन के बाद से यह कोई अनजाना रहस्य नहीं रहा है बल्कि अब तो यह एक प्रकट किया हुआ सत्य है।

पर एक बात तो है कि यीशु मसीह इस सत्य के संदेश को सब के सामने प्रकट नहीं करता है। हालाँकि अनेक लोग नए नियम के सुसमाचार की शिक्षाओं को सुनते हैं। पर वे सच में उन्हें सुनते नहीं है क्योंकि उन्होने अपने हृदय को कठोर कर लिया है और मसीह ने उन्हीं शब्दो को दुबारा से नए नियम में कहा है जो य़शायाह नबी ने कहा था।

पुराने नियम में- यशायाह के **1:2-15** में हम पढ़ते हैं कि इस्राएल के बच्चों ने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया था और वे भ्रष्ट हो गए थे। यशायाह6:9-10 परमेश्वर उनका न्याय करता है और कहता है, “जाकर उन से कह दे, सुनते ही रहो परन्त न समझो, देखते ही रहो पर परन्तु न बूझो। तू इन लोगों के मन को मोटा कर और इनके कानों को भारी कर और उनकी आँखों को बन्द कर दे। कहीं ऐसा न हो कि वे सुनने लगे, मन से बूझें और मन फिरा कर चंगे हो जाएँ।” इस्राएलियों ने इतने चमत्कार देख लिए थे और भविष्यद्वक्ताओं के इतने अधिक भले वचन सुन लिए थे पर अपने चुनाव के कारण अपने दिलों को परमेश्वर के विरुद्ध सख्त कर लिया था। इसलिए परमेश्वर ने उन को वहीं बन जाने दिया जो वे बनना चाहते थे। उन्होंने अपने कान और आखें बन्द कर ली थीं इस लिए परमेश्वर ने उनके कानों और आँखों को और भी कस कर बन्द कर दिया था। और तब उन्होंने वही काटा जो उन्होंने बोया था। (गलातियों 6:7-8)

नए नियम में- मत्ती के 12 अध्याय में हम ने पढ़ा था कि फरीसियों और अन्य यहूदियों ने भी यीशु मसीह के विरुद्ध खड़े होकर उसका विरोध किया था। उन्होंने यीशु मसीह की आलोचना की थी और उनको दोषी ठहराया था। (मत्ती 12:2) उन्होंने मासूम लोगों की निन्दा की थी। (मत्ती 12:7) उन्होंने यीशु के लिए जाल बिछाए थे। (मत्ती 12:10) उन्होंने यीशु को मार डालने की योजनाएँ भी बनाई थी। (मत्ती 12:14) उन्होने यीशु के विरुद्ध परमेश्वर की निन्दा करने वाले का दोष लगाया था। यह कह कर कि यीशु दुष्ट आत्माओं को शैतान की सामर्थ से निकालता है। (मत्ती 12:24, मत्ती के 13:10-15; और लूका के 8:10) यीशु ने यह सब उसी पुराने नियम के न्याय के द्वारा साबित कर दिया। उन्होंने यीशु के अनेक चमत्कारों के विषय में सुना था और उसकी अनेक शिक्षाओं के विषय में भी सुना था पर उन्होंने यीशु मसीह पर विश्वास करने से इन्कार किया था। इसलिए यीशु ने कहा उऩका न्याय भी पुराने नियम के अनुसार किया जाएगा। उन्होंने भी यीशु के विद्रोह में अपने दिलों को सख्त किया है। इसलिए यीशु मसीह उनको भी अपने चुनाव के परिणामों के हवाले कर दिया है। वे तब भी बाइबल के संदेश और सुसमचार सुनते हैं। पर वे कभी भी उसको समझ नहीं पाएंगे उस समय तक नहीं जब तक वे पश्चाताप् न कर लेते थे।

आज भी वैसा ही है - हर व्यक्ति के पास ज़िम्मेदारी है कि वह बाइबल और परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर दे। यदि आपका व्यवहार फरीसियों के समान है कि आप हर समय यीशु मसीह की आलोचना करते रहते हैं तो आपका दिल भी कठोर हो जाएगा। और तब आप परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नही कर पाएँगे।

फिर भी जो लोग मन से परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर देते हैं उनको डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। हर अच्छा और साफ दिल हमेशा परमेश्वर के वचन को समझेगा वह उसमें बढ़ कर फलवन्त हो जाएगा।

साराँश - हर एक जो अपने दिल को बाइबल के परमेश्वर और परमेश्वर के वचनों के प्रति सख्त करेगा वह अन्त में इतना सख्त दिल हो जाएगा कि उसे परमेश्वर का वचन सुनाई ही नहीं देगा।
लेकिन हर वह व्यक्ति जो पूरे दिल से परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर देगा और उसे समझेगा वह फलवन्त होगा। परमेश्वर की दिल से खोज करने वाले का कभी भी तिरस्कार नहीं होगा। (युहन्ना 6:37)

8:12
प्रश्न 4 - वह भूमि जो पगडण्डी के समान सख्त है वह किस का प्रतीक है?
नोट्स -पगडण्डी तो उस कठोर दिल की तस्वीर है जिस पर कोई असर नहीं होता है और जिससे कोई प्रतिउत्तर नहीं मिलता है वह खेत का किनारा है।
जब भी मेरे दिल की कोई ऐसी हालत होती है या वह कुछ ऐसे व्यवहार को दर्शाता है जो कहता है,मैं परमेश्वर के वचन का कोई प्रतिउत्तर नहीं देता हूँ। तब मैं सोचता हूँ कि परमेश्वर के वचन में मेरे लिए कुछ भी महत्त्वपूर्ण नहीं है। मैं बाइबल के संदेश को समझने का कोई प्रयास नहीं करता हूँ। (मत्ती 13:19) या फिर मैं उसके प्रति कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करता हूँ। अन्त में मेरा दिल वचन को नज़रअन्दाज़ करने लगता है और उसके प्रति कठोर हो जाता है। शैतान परमेश्वर के वचन की सामर्थ को जानता है और वह सदा इस कोशिश में लगा रहता है कि कैसे परमेश्वर के उस वचन को जिसे हमे ने कबूल नहीं किया है उसे खींच कर हम से दूर ले जाए।
इसके लिए हमें जो मुख्य पाठ हमें सीखना है वह यह कि हम हर वह प्रयास करें जिससे हम बाइबल के वचनऔर उसमें छुपे संदेशको समझ जाएँ और उसे ग्रहण कर लें। (मरकुस 4:20)जब भी मैं वचन को सुनता हूँ, पढ़ता हूँ या फिर उसका अध्ययन करता हूँ तब मुझे उसी समय अपने वचन के प्रति व्यवहार से निबटना होगा जो मुझे वचन के प्रति विरोधी बना देता है।

8:12
प्रश्न 5. शैतान परमेश्वर के वचन को हमारे दिलों से दूर क्यों ले जाना चाहता है?
नोट्स -शैतान परमेश्वर के वचन को हम से इस लिए दूर ले जाना चाहता है क्योंकि वह एक सामर्थी ज़रिया है जो हमें सुरक्षित रखता है और बदलने नहीं देता है। हर वह व्यक्ति जो परमेश्वर के वचन पर विश्वास रखता है वह बचाया जाता है (रोमियो 10:17) इसका अर्थ यह है कि उसे शैतान के चंगुल से बाहर खींच लिया गया है। और वह उसके राज्य से भी बाहर है। प्रभु यीशु मसीह ने उस सामर्थी व्यक्ति शैतान को उसकी सारे कब्ज़ा किए अधिकारों को लूट लिया है। (मत्ती 12:28-29; युहन्ना 12:31-32) बाइबल बताती है कि यीशु मसीह ने हमें अँधकार के राज्य से छुड़ा लिया है और परमेश्वर के पुत्र के राज्य में जिससे वह बहुत प्रेम करता है ले आया है। (कुलुसियो1:13) क्योंकि परमेश्वर के वचन का अर्थ है लोगों को बचाना और उनके मनों को बदल डालना। शैतान तो हर कोशिश करेगा कि किसी तरह से परमेश्वर के वचन को लोगों के दिलों से छीन कर ले जाए इस लिए चौकस रहें यीशु मसीह ने आपको चेतावनी दी है।

8:13

प्रश्न 6. पथरीली भूमि किस का प्रतीक है?

नोट्स -पथरीली ज़मीन उस हृदय की तस्वीर है जो उथली, जिसमें जड़ पकड़ना मुश्किल है और जो बहुत ही मनमौजी, बिना विचारे कुछ करने वाले होते हैं।

जब भी मेरे दिल कि परिस्थिति कुछ ऐसी होती है और मेरा स्वभाव कुछ ऐसा ही होता है तब मैं बड़े ही आवेग से परमेश्वर के वचन के प्रति कोई प्रतिक्रिया कर बैठता हूँ। सभाओं के दौरान मैं बहुत ही उत्साहित हो जाता हूँ। मेरी मनोभावनाएँ भी बहुत उत्साहित हो जाती हैं। मुझ पर जो भी वक्ता बोल रहा होता है उसकी गहरा प्रभाव पड़ता है। और मैं उसी क्षण कूद कर खड़ा हो जाता हूँ और यीशु को ग्रहण करने के लिए उसके वचन को ग्रहण करने के लिए और कोई भी निर्णय लेने के लिए तैयार हो जाता हूँ।

फिर मैं उन वचनों के शब्दो के अर्थ के विषय में सोचने लगता हूँ। लेकिन मैं उनके परिणाम के विषय में कभी नहीं सोचता हूँ। जब संसार के लोग मुझे बाइबल के वचनों के कारण धमकी देने लगते हैं या मुझे सताने लगते हैं तब मैं बाइबल और उसके वचनों में अपनी रुचि को खो देता हूँ। और यीशु मसीह के पीछे चलना छोड़ देताहूँ और उससे दूर चला जाता हूँ। तब मेरी कोई जड़ नहीं रहती है। इसका अर्थ यह है कि मैं ने वचन को तो ग्रहण किया था परन्तु अपनी दोषभावना का अंगीकार किए बिना। मेरा अंगीकार मेरे अन्दर से निकले विश्वास के द्वारा नहीं होता है। इसलिए मैं परमेश्वर के वचन को थामें रहने के लिए कोशिश भी नहीं करता हूँ। मैं भूल जाता हूँ कि सच्चा चेला बनने के लिए पूर्ण समर्पण, और अहम का त्याग करना, बलिदान, सेवा और दुख उठाना है। मैं ने कभी भी उस कीमत को नहीं गिना जो एक विश्वासी बनने और विश्वासी बने रहने के लिए दी जाती है। मैं भूल जाता हूँ कि परमेश्वर तक पहुँचने का रास्ता केवल क्रूस से होकर जाता है। और क्रूस तो दुखों का प्रतीक है। और यही कारण है कि मैं केवल कुछ समय के लिए ही विश्वास में बना रहता हूँ।

मुख्य शिक्षा जो ज़रूरी है वह है, "परमेश्वर के वचन को अपने अन्दर संजोए रखना।" (लूका 8:15) और साथ ही उस पर विश्वास रखना और उसकी हर आज्ञा को हर परिस्थिति में मान लेना। मुझे तुरन्त अपनी इस प्रवृत्ति से निबटना होगा जो मुझे वचनों को सुनते समय मुझे केवल मानसिक रूप से छूती है।

8:14

प्रश्न 7. काँटों से भरी भूमि किस का प्रतीक है?

नोट्स -काँटो से भरी भूमि तस्वीर है, उस भूमि की जो उस दिल के समान है जो पहले से किसी बात में उलझा रहता है। जब भी मेरा दिल ऐसी मानसिक परिस्थिति में होता है,तब मैं परमेश्वर के वचन को छोड़ अन्य चीज़ों पर अधिक ध्यान देता हूँ। तब मेरा दिल परमेश्वर की चीज़ों और संसार की चीज़ों में बँटा हुआ होता है। मैं अपने दिल मे अपने प्रतिदिन के काम और जीवन के विषय में चिन्ता को इतनी अधिक जगह दे देता हूँ या फिर किसी रीति से अधिक धन कमाया जा सकता है, या किस तरह से जीवन के सुख विलास का और अधिक आनन्द लिया जा सकता है, जिससे मेरे पास परमेश्वर के वचन के लिए स्थान ही नहीं रहता है। उस समय मैं निरन्तर संसार की चीज़ों द्वारा ध्यान हटाने वाली स्थिति में होने के कारण अपनी प्राथमिकताओं का गलत चुनाव कर लेता हूँ। तब मैं दुनियाँ की चीज़ो में इस रीति से पहले से ही फँसा होता हूँ कि मेरे पास न तो परमेश्वर के वचन के लिए समय होता है और न ही उसे अपने जीवन में लागू करने का। नतीजा यह होता है कि परमेश्वर के वचन का मेरे दिल के अन्दर ही गला घोंट दिया जाता है। अन्त में कभी भी रीति से परिपक्व नहीं बन पाता हूँ और न ही किसी भी रीति से फलवन्त हो पाता हूँ।

इससे मुख्य शिक्षा यही मिलती है,अपनें हृदय को साफ, इमानदार और अच्छा बनाए रखें। (लूका8:15) मुझे उसे संसार कि चिन्ताओं से, धन के धोखे, संसार के सुख-विलास और गलत इच्छाओं से मुक्त रखना है। मुझे तुरन्त अपनी चिन्ताओं से, अपनी धन के प्रति लालसा से और गलत इच्छाओं को प्राथमिकता देने से निबटना होगा।

8:15

<u>प्रश्न 8. अच्छी भूमि किस का प्रतीक है?</u>

नोट्स -अच्छी भूमि प्रतीक है एक ऐसे दिल की जो प्रतिउत्तर देता है और जो कुछ कहा जाता है उसे अपने अन्दर रखता है। यह वह दिल है जो पूरी तरह से तैयार है और जो फलवन्त है। जब भी मेरा दिल इस तरह की मानसिक स्थिति में होता है तब मैं,परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर ऐसा देता हूँ जैसा यीशु मसीह चाहते हैं कि मैं प्रतिउत्तर दूँ। जब मेरी मानसिक स्थिति ऐसी होती है तब मेरा दिल उन तीन मानसिक स्थितियों के विपरीत होता है।

इससे 3 मुख्य शिक्षाएँ मिलती हैः

- **<u>पहली भूमि की मिट्टी से विपरीतः</u>** जब भी मैं परमेश्वर के वचन को पढ़ता, सुनता या उसका अध्ययन करता हूँ तब मैंउसे ध्यान से सुनता हूँ, उसे समझता हूँ और उसे ग्रहण कर लेता हूँ।) (मत्ती 13:23; मरकुस 4:20)मैं ऐसा इसलिए करता हूँ क्योंकि ऐसा करने से परमेश्वर का वचन मुझे बचा ले और मुझे बदल डाले। (लूका 8:12)
- **<u>दूसरी भूमि की मिट्टी के विपरीतः</u>** जब कभी मैं परमेश्वर का वचन सुनता हूँ मैं इस विषय पर सोचने लगता हूँ कि मुझे इसपर विश्वास करने की और इसका पालन करनें के लिए क्या कीमत चुकानी होगी। मैं कीमत का अन्दाज़ा इस लिए लगाता हूँ क्योंक मैं विश्वासी बना रहना चाहता हूँ। उस समय पर भी जब मेंकठिनाइयों और सताव का सामना कर रहा होता हूँ।मैं परमेश्वर के वचन को गहराई से अपने दिल में संजोए रखता हूँ। और मैं उसी वचन से हर कठिन परिस्थिति में लिपटा रहता हूँ। (लूका 8:15)
- **<u>तीसरी भूमि की मिट्टी के विपरीतः</u>** मैं अपने दिल कोसाफरखता हूँ, और उसे उन सब बातों से मुक्त रखता हूँ जो मेरे अन्तर बसे परमेश्वर के वचन का गला घोंट सकती हैं। (लूका 8:15) उदाहरण के लिए मैं उसे चिन्ताओं से, धन से, और संसार के भोगविलास से दूर रखता हूँ।

परमेश्वर का वचन मेरे दिल में तभी काम करता है जब मैं उसका सही प्रतिउत्तर देता हूँ, और जब मैं उसे दिल में दोष को समझ कर धारण करता हूँ और अपने दिल को साफ रखता हूँ। इस रीति से मैं परमेश्वर के लिए पूरे प्रयास और मेहनत के साथ फल उत्पन्न करता हूँ। (लूका 8:15)और इस रीति से मैं कभी 30 गुणा, कभी 60 गुणा और कभी 100 गुणा उत्पन्न कर सकूँगा। (मत्ती 13:23; मरकुस 4:20)

8:15

प्रश्न 9. <u>इस दृष्टान्त (उदाहरण में कही कहानी जिसमें शिक्षा छिपी है) क्या वह प्रचारकों के लिए परमेश्वर के वचन में एक संदेश छिपा है या यूँ कहें एक सन्देश उन के लिए है जो उस वचन को ग्रहण करना चाहते हैं?</u>

नोट्स -पहली बात यह है कि परमेश्वर के वचन का इस दृष्यानत की कहानी के उदाहरण केवल प्रचारकों के लिए नहीं है परन्तु यह तो हर उस व्यक्ति के लिए है जो परमेश्वर के वचन को ग्रहण करता है। यह भूमि की इस कहानी द्वारा प्रचारकों को यह भी बताता है कि वे इस संसार में चार भिन्न तरह के लोग पाएँगे और उनकी परमेश्वर के वचन के संदेश के प्रति चार भिन्न तरह की प्रतिक्रिया होगी।यह दृष्टान्त (बीज की कहानी) इससे कहीं अधिक बताता है।

इस दृष्टान्त की कहानी का प्रयोग हमें सिखाता है कि संसार के लोगों में, जिस में याजक भी शामिल हैं, उन में परमेश्वर के वचनके प्रति जीवन के भिन-भिन्न समय पर चारों तरह के व्यवहार पाए जाते हैं। श्रोता का व्यवहार और उसके दिल की अवस्था किसी भी नियत समय पर परमेश्वर के वचन का क्या असर होगा इस बात को सिद्ध करती है। यीशु नें हमे यह नीतिकथा हमें इस लिए सुनाई थी कि हम परमेश्वर के वचन के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी क्या है उसे पहचान लें।

उसके प्रति हमारी प्रतिक्रिया जैसे किउसे सुनना कि उसे समझ जाएँ और फिर उसे ग्रहण कर लेना होगा। हर बार जब मेरा दिल अनुकूल प्रतिक्रिया के साथ गम्भीरता से, पूरी तैयारी के साथ तैयार होना तब मैं परमेश्वर के वचन को सुनने

और समझने के लिए उत्सुक रहूँगा। तब मैं दृढ़ संकल्प के साथ परमेश्वर के वचन को कठिन परिस्थितियों में भी थामें रहूँगा। तब(मत्ती 13:19, मरकुस 4:20), ग्रहण करने का अर्थ है कि उसे सही जान कर मान लेना। (प्रेरितों के काम 16:21) उसे अनुकूल जान कर प्रेम से स्वीकार करना। (इब्रानियों 12:6)

उसके प्रति हमारी प्रतिक्रिया गम्भीर रूप से दोषसिद्ध और कठिन परिश्रम के साथ होनी चाहिए जिससे हम उसे अपने पास रख सकें। (लूका 8:15) अपने पास रखने का अर्थ है उसे याद रख सकें। (1 कुर.15:2) उसे कभी भी छोड़े नहीं (लूका 8:15, 1 थिसलुकियों 5:21) उसकी इस रीति से रक्षा करना कि वह कभी भी खो न जाए। (1 कुर.11:2)

उसके प्रति हमारी प्रतिक्रिया साफ दिल से और एक मन से हो। (लूका 8:15)

और फिर हमारी प्रतिक्रिया ऐसी होनी चाहिए कि अधिक कोशिश के साथ फलवन्त होने पाएँ। (लूका 8:15)

हर बार जब मैं सुनता हूँ, पढ़ता हूँ या फिर बाइबल का अध्ययन करता हूँ उस समय मेरे दिल की अवस्था ही इस बात का फैसला करेगी कि परमेश्वर के वचन का मुझ पर और मेरे जीवन पर कैसा प्रभावहै औरमैं समय लेकर फलवन्त बनूँगा।

साराँशः मेरे दिल की अवस्था मेरे जीवन के किसी भी दिन के लिए यह निर्धारित करेगी कि परमेश्वर के वचन का मेरे जीवन पर कैसा प्रभाव पड़ा है। किस मन से मैं ने परमेश्वर के वचन को सुना है, पढ़ा है, या अध्ययन किया है यही सिद्ध करेगा कि मैं प्रभु में आगे बढ़ूँगा, बदल जाऊँगा या फलवन्त बनूँगा।

प्रश्न 10. इस दृष्टान्त का साराँश क्या है?

नोट्स -इस दृष्टान्त का साराँश यह है कि मेरे मन की स्थिति ही निर्धारित करती है कि परमेश्वर के वचन के प्रति मेरी क्या प्रतिक्रिया होगी। और जो भी मेरी प्रतिक्रिया होगी वही निर्धारित करेगी कि मैं परमेश्वर को ले कर कितना फल लेकर आऊँगा।

इस दृष्टान्त का साराँश यह है कि मेरे मन की स्थिति ही निर्धारित करती है कि परमेश्वर के वचन के प्रति मेरी क्या प्रतिक्रिया होगी। और जो भी मेरी प्रतिक्रिया होगी वही निर्धारित करेगी कि मैं परमेश्वर को ले कर कितना फल लेकर आऊँगा।

जीवन में मेरे भले कामों का प्रभाव इस बात पर निर्धारत है कि परमेश्वर के वचन के प्रति मेरा व्यवहार और मेरी प्रतिक्रिया कैसी है।

यह उन लोगों के लिए एक चेतावनी है जो मन को बदलने की इच्छा नहीं रखते हैं। पर उन लोगों के लिए उत्साहजनक और आशापूर्ण बात है जो अपने दिल के व्यवहार को बदलना चाहते हो। हर बार जब मैं वचन को सुनता, पढ़ता या अध्ययन करता हूँ तब मैं तुरन्त ही अपने व्यवहार को बदल कर सुनता हूँ, समझता हूँ और उसे संजो कर रख लेता हूँ और फिर कठिन परिश्रम से फलवन्त हो जाता हूँ।

8:15
प्रश्न 11 मैं कैसे कठिन परिश्रम करके एक अच्छी फसल उगा सकता हूँ?

नोट्स -शैतान तो मेरे चारों तरफ घूमता रहता है। भौतिक संसार मुझ से बाहर है लेकिन मेरा पापमय स्वभाव मेरे अन्दर है। क्योंकि वे सब मेरे विरुद्ध लड़ना चाहते हैं। इसलिए मेरे लिए भी निरन्तर लड़ने की ज़रूरत है। सो मैं किस रीति इस परिस्थिति के विरुद्ध कैसे कठिन परिश्रम करूँ?

- जब भी मैं वचन को सुनता, पढ़ता, उसका अध्ययन करता, उस पर मनन करता हूँ या बाइबल के वचनों को अपने जीवन में लागू करता हूँ और जब मैं उन वचनों को दूसरों को बताता रहूँगा तब मैं निरन्तर कठिन परिश्रम करता

रहूँगा। मैं इन अनुशासन के नियमों पर चलता रहूँगा तब भी जब मैं कठिन परिस्थितियों और सताव से गुज़रूँगा।

- मैं सही परिस्थितियों में और सही मनोस्थिति से भी कठिन परिश्रम करूँगा। इसका अर्थ है कि जब मेरा दिल साफ और बँटा हुआ न होगा।
- जब मैं परमेश्वर के वचन को अनुमति दे दूँगा कि वह मेरे विचारो, भावनाओं और व्यवहार को बदल डाले तब भी मैं कठिन परिश्रम करूँगा।
- मुझे निर्णय लेना है कि मैं कभी भी हार नहीं मानूँगा। मैं कठिन परिश्रम करता रहूँगा क्योंकि परमेश्वर का वायदा है कि वह मेरे साथ है।

<u>**तरीका 4**</u>   **लागू करना**
मनन करें - इस लेखाँश में कौन सा सत्य ऐसा है जिसे जीवन में लागू किया जा सकता है?
गवाही देकर उसे लिख कर रख लेंः आईए हम एक दसरे के साथ एक ऐसी सूची तैयार करें जिन्हें हम अपने जीवन में लागू कर सकते हैं।
मनन करें -ऐसी कौन सी सूची है जिसे परमेश्वर चाहते हैं कि हम अपने निजि जीवन में लागू कर सकते हैं? इस बात पर विचार करें।
संजो कर रख लेंः अपनी निजी सूची को अपनी कॉपी में लिख कर रख लें। और आज़ादी से अपनी निजि गवाही दें। (याद रहे कि हर दल में भिन्न-भिन्न लोगों की सूची भी भिन्न ही होगी। वे भिन्न नियम बनाएँगे और भिन्न रीति से उसे अपनाएँगे। जो सच्चाई उनको समझ आएगी वह भी भिन्न होगी। और वे उसे अपने जीवन में उसी सच्चाई को भिन्न रूप से लागू करेंगे।)

1. <u>सत्य को लागू करने के सम्भव उदाहरण लूका 8: 4-15</u>

8:8b-10.बाइबल के प्रचार को बहुत ही ध्यान से सुनिए। कोशिश करें कि आप बाइबल के उस लेखाँश के अर्थ को गम्भीरता से समझने का प्रयास करें। (मत्ती 13:19-23; मरकुस 4:13)
8:11.बाइबल के संदेशों को बड़ी गम्भीरता से ले और उसी रीति से आपकी प्रतिक्रिया भी प्रकटहो।
8:12 बाइबल के संदेशों पर विश्वास करें जिससे आप उद्धार पा सकें।
8:13.बाइबल के संदेशों के द्वारा स्वयं की दोषसिद्धि को विकसित करें केवल बाइबल का ज्ञान काफी नहीं है।
8:15.बाइबल के पदों को याद करें जिससे आप उनको जीवन में संजो कर रख सकें।
8:15. आश्वस्थ हो जाए कि आप का हृदय साफ है और बाइबल पढ़ते, या उसका अध्ययन करते समय आपका ध्यान अन्य बातों में बँटा हुआ नहीं है।
8:15.नियमित रूप से बाइबल का वचन जीवन में लागू करके फलवन्त हो जाएँ।

2. <u>निजि रूप से सत्य को लागू करने के उदाहरण लूका 8: 4-15</u>

परमेश्वर चाहते हैं कि हर बार जब मैं बाइबल के वचन को सुनुँ तो मैं उसे समझ जाऊँ और शैतान उसे मेरे दिल से दूर न ले जा सके। इसलिए मैं सप्ताह में एक बार बाइबल का अध्ययन करना चाहता हूँ। सप्ताह में एक बार बाइबल का अध्ययन मुझे वचन को और अधिक समझने में सहायता देगा।

परमेश्वर चाहते हैं कि मैं बढ़ूँ और फलवन्त हो जाऊँ। इसलिए मैं चाहता हूँ कि जब भी मैं बाइबल का वचन पढ़ूँ या उसका अध्ययन करूँ, मैं स्वयं से एक प्रश्न करूँ, "यह वचन किस रीति से मुझे बदल सकता है और किसी रीति से दूसरों पर प्रभाव डाल सकता है।" और तब मैं इस को अपने जीवन पर लागू करूँगा।

तरीका 5.	**प्रतिक्रिया**

आईए हम एक सत्य के विषय में प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें सिखाया है। और जो लूका 8:4-15 में लिखा है। (अपनी प्रार्थना में उस बात का प्रतिउत्तर जो आपने बाइबल अध्ययन करते समय सीखा है। कोशिश करें कि आपकी प्रार्थना केवल एक या दो वाक्यों की हो। याद रहे पूरे दल के अन्य सदस्य भी भिन्न सत्यों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (5 मिनट) *मध्यस्थता* **दूसरों के लिए प्रार्थना**

दो के दल में प्रार्थना करना जारी रखें। एक दूसरे के लिए प्रार्थना करें और फिर संसार के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *निर्धारित कार्य* **अगले पाठ के लिए**

दल के अगुवे के लिए निर्देश: दल के सदस्यों को घर पर नए अध्याय की तैयारी के लिए काम दें और उसे कापी पर नोट करने को कहें।

1. समर्पण दल के सदस्य समर्पण करें कि वे परमेश्वर के वचन जो बाइबल में लिखे है उनके प्रतिउत्तर में जो बाइबल से सीखा है वही नियमित रूप से करेंगे। बाइबल का अध्ययन भी नियमित रूप से करेंगे।
2. परमेश्वर के साथ समय बिताना: परमेश्वर के साथ 1 घंटे का समय बिताएँ और मत्ती 8:1-11:24 हर दिन पढ़ेंगे । यहाँ पर अपने मनपंस्द सच के तरीके का प्रयोग करें। (उनको लिख कर नोट्स भी बनाएँ।)
3. याद करना: वचनों पर मनन करें और उन को याद कर लें। इसके लिए युहन्ना 10:28 पढ़ें। और हर दिन जो भी पद याद करते हैं उस पर फिर से नज़र डालें।
4. प्रार्थना: विशेष प्रार्थना करें किसी एक व्यक्ति के लिए या किसी विशेष चीज़ के लिए जो परमेश्वर आपके लिए कर रहा है। (भजन 5:3)

5 अपनी चेले बनाने की कॉपी को पूरी तरह से तैयार कर लेः आपने इस हफ्ते में कितनें नए चेले बनाए हैं। उसमें आपके परमेश्वर के साथ निजी नोट्स भी तैयार हों, आपने कितने पद याद किए हैं, बाइबल अध्ययन के नोट्स और इस कार्यक्रम की तैयारी के नोट्स।

अध्याय - 3

1.	**प्रार्थना**

दल के अगुवेः प्रार्थना के साथ दल और चेले बनाने के पाठ्यक्रम को परमेश्वर को समर्पित करें।

2.	**आराधना** (20 मिनट) ***(परमेश्वर के विशिष्ट गुण)*** **परमेश्वर शक्तिशाली और महान है**

परिभाषा
आराधना क्या है? "आराधना" की परिभाषा है:
आराधना वह अभिव्यक्ति है जो हमारी परमेश्वर के प्रति उपासना, समर्पण और निष्ठा को प्रकट करती है। जो हम अपनी भिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं और अपनी प्रति दिन की जीवन शैली से प्रकट करते हैं।
परमेश्वर की आराधना करने के लिए, हमें ज़रूरत है कि हम अपने परमेश्वर को जान लें कि हमारा परमेश्वर कौन है। हर आराधना के समय हम परमेश्वर के केवल एक ही विशिष्ट गुण को जान सकते हैं।
मनन करना
पढ़े या शिक्षा देः परमेश्वर महान और शक्तिशाली है।

पढ़ें - अय्यूब 38:4-5 (पथ्वी) 38:8-11(समुद्र) 38:31-33(तारा मंडल); यशायाह 40:12 (मापना), 25-26 (तारागण)

परमेश्वर लोगों को चुनौती देते हैं कि वे कोशिश करें यह जानने की कि वह कितना महान और शक्तिशाली है। संसार में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसके साथ परमेश्वर की महानता की तुलना की जा सके। हिमालय पर्वत और प्रशान्त महा सागर उसके सामने बहुत छोटे हैं। आकाश के सौर मंडल में कुछ भी इतना बड़ा नहीं है जिसके साथ परमेश्वर की महानता की तुलना की जा सके। यहाँ तक कि सूरज भी बहुत छोटा है। तो फिर लोग परमेश्वर की महानता और शक्ति की तुलना किस के साथ कर सकते हैं? लोग ऐसी किसी भी चीज़ के विषय में नहीं जानते हैं जो इतना बड़ा है कि उसकी तुलना परमेश्वर से की जा सके। इस लिए सभी लोग शान्त हैं। तब परमेश्वर लोगों को आमन्त्रित करता है कि ऊपर देखें और इस बात पर ध्यान दें कि किस ने तारे बनाए? और तारों के विषय में कुछ सच्चाईयों के बारे में ध्यान दें।

1. सितारों की गिनतीः

एक साफ और अँधेरी रात के समय आपकी आँखें हज़ारों सितारों को टेलीस्कोप (दूरबीन) के बिना भी देख सकती हैं। इस में से अनेक तारे तो हमारी छायापथ के हैं जिसका नाम आकाश गंगा है। आकाश गंगा में लगभग 100 हज़ार करोड़ सितारे पाए जाते हैं। (100000000000) (11 शून्य)
जो खगोल विशषज्ञ टेलीस्कोप का प्रयोग करते हैं उनका कहना है कि पूरे ब्रहमांड में लगभग
10 हज़ार करोड़ खरब तारे पाए जाते हैं। (10000000000000000000000) (22 शून्य) और आकाश में लगभग 100 हज़ार करोड़ छाया पथ पाए जाते हैं। (100000000000) (11शून्य)
आकाश में इतने तारे हैं कि कोई भी मनुष्य अपने जीवन काल में भी उन्हें गिन नहीं सकता है।

2. सितारों की पृथ्वी से दूरीः

हमारे सौर मण्डल में केवल एक ही तारा है और उसका नाम सूरज है। सूरज पृथ्वी से 150 मिलियन किलो

मीटर (150000000) दूर है। यह कितना दूर है? यदि आप किसी हवाई जहाज़ से 1000 किलो मीटर प्रति घंटे की तेज़ी से यात्रा करें आपकोसूरज तक पहुँचने में 17 साल लग जाएँगे।

सितारों और पृथ्वी के बीच की दूरी इतनी अधिक है कि वैज्ञानिक इसे नापने के लिए ज्योति की दर से यात्रा करने की दूरी को नापते हैं। प्रकाश की यात्रा की गति कम से कम 3000,000 कि.मी. प्रति घंटा है। ज्योति गतिशील चीज़ों में सबसे अधिक है जिनको मनुष्य जानता है। इसका अर्थ है कि पृथ्वी के चारों ओर 1 सेकन्ड मे 7 ½ बार एक चक्कर लगा लेती है। एक प्रकाश वर्ष का अर्थ है कि एक साल में प्रकाश किरण कितनी दूर तक पहुँच जाती है और यह दूरी लगभग 9,454 बिलियन कि. मी. है, (9,454,000,000,000) या आधुनिक हवाई जहाज़ की 1 मिलियन सालों की उड़ान के बराबर होगी।

चन्द्रमा हम से 1 1/3 प्रकाश सेकन्ड दूर है। मंगल ग्रह हम से 5 प्रकाश वर्ष दूर है। सूर्य हम से 8 प्रकाश वर्ष दूर है। नक्षत्र प्लूटो हम से 5 प्रकाश वर्ष दूर है पृथ्वी से सबसे नज़दीक तारा 4.3 प्रकाश वर्ष दूर है। आधुनिक हवाई जहाज़ से वहाँ तक पहुँचने में उसे 4½ मिलियन साल लग जाएँगे।

हमारे आकाश मे छाया पथ का नाम आकाश गंगा है। उसका व्यास 120,000 प्रकाश वर्ष है। एक अन्य छाया पथ भी है जिस का नाम स्पायरल नेब्यूला एन.1 है उसमे भी मिलियन से भी अधिक तारे हैं और वह 1 मिलियन प्रकाश वर्ष की दूरी पर है। खगोल विशेषज्ञ का अनुमान है कि सब से दूर जो भी नक्षत्र है वह 17 हज़ार मिलियन प्रकाश वर्ष की दूरी पर है। (1700,000,000) कम करे या बढ़ा लें मनुष्य कभी भी सौर मण्डल पर विजय नहीं पा सकेगा।

3.सितारों के आकार और नापः

हमारे ग्रह "पृथ्वी" का व्यास12,756 किलोमीटर है। सूर्य का व्यास पृथ्वी से 109 गुणा अधिक है। लेकिन ऐसे भी सितारें है जिन का व्यास सूर्य से 100 गुणा या 1000 गुणा अधिक है। इन नापें में उत्कृष्ट ग्रहों के कारण ही हमारा सौर मण्डल इतना बड़ा है कि उसका एक भाग जिसका नाम सूर्य है और बाकी के ग्रह भी जैसे बुद्व, शुक्र, पृथ्वी और मंगल ग्रह उस भाग के अंदर ही सूर्य के गिर्द चक्कर लगाते रहते हैं।

यदि पृथ्वी का व्यास 1 मिलिमीटर मान कर लिया जाए तो सूर्य का व्यास 11 मिली मीटर होगा और बड़े ग्रहों का व्यास 100 मीटर हो सकता है।

हम सितारो के विषय में बड़े-बड़े टेलिस्कोप के द्वारा जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन इन ग्रहों की रचना किस ने की थी जो कि इस संसार की नाम में सबसे बड़ी चीज़ें है? बाइबल हमें बताती है कि वह परमेश्वर ही है जिसने सितारों की सृष्टि की थी। वही इन सब के चलन पर नियन्त्रण रखता है और उसी ने हर सितारे को नाम भी दिया है। यदि मनुष्य उसकी गिनती भी नहीं कर सकता है और न ही उसकी दूरी का और उसके नाप का अनुमान कर सकता है तो वह उस परमेश्वर की महानता को कैसे माप कर समझ सकता है जिस ने उनकी रचना की है? इन अदभुत सितारों का अस्तित्व इस बात की ओर संकेत करता है कि परमेश्वर का अस्तित्व कितना अदभुत और महान है।

आराधनाः परमेश्वर की आराधना उसकी महानता और सामर्थी होने को ध्यान में रख कर करें। उसकी आराधना 2 या 3 लोगों के दल बना कर करें।

3.	**गवाही बाँटना** (20 मिनट)	***[शान्त समय]*** **मत्ती 8:1 - 11:27**

बारी बारी से गवाही बाँटेः या अपने नोट्स में से पढ़ेः सक्षेप में बताएं कि आपने परमेश्वर के साथ दिए गये बाइबल के वचनों से (मत्ती 8:1 – 11:27 से अपने निजि समय में क्या सीखा है।)
हर व्यक्ति की गवाही को ध्यान से सुनें। उसे गम्भीरता से लें और उसे ग्रहण करें। कोई भी व्यक्ति कुछ भी

कहता है उस पर वाद-विवाद न करें।

4.	**बाइबल शिक्षा** (70 मिनट) ***सुसमाचार*** **सुसमाचार की धारणा**

जब हम लोगों के साथ सुसमचार को बाँटते हैं तब हमें इस योग्य होना ज़रूरी है कि हम जो शब्द इस्तेमाल करते हैं हमें उनको समझाना आना चाहिए। लोगों की सहायता करें कि वे समझ सकें कि पाप, मृत्यु और और न्याय की धारणा क्या है? क्यों केवल यीशु मसीह ही वह मार्ग है जिसके द्वारा हम परमेश्वर पिता के पास पहुँच सकते हैं? और इसके लिए मसीह पर विश्वास रखने का क्या है अर्थ है?

क.सुसमाचार का संदेश

सुसमाचार का अर्थ है शुभ समाचार, उस महान उपहार के विषय में जो परमेश्वर पिता ने दी है। सुसमाचार का सदेश अनेक तरह से दिया जा सकता है। घोषणा करके, गीत गा कर, नाटक के द्वारा, चित्रों को दिखा कर या फिर उदाहरण दे कर। (नीचे दिए उदाहरण को ध्यान से देखे।)

दल का अगुवा इसे समझाने में सहायता करेगा और इसे सिखाएगा।

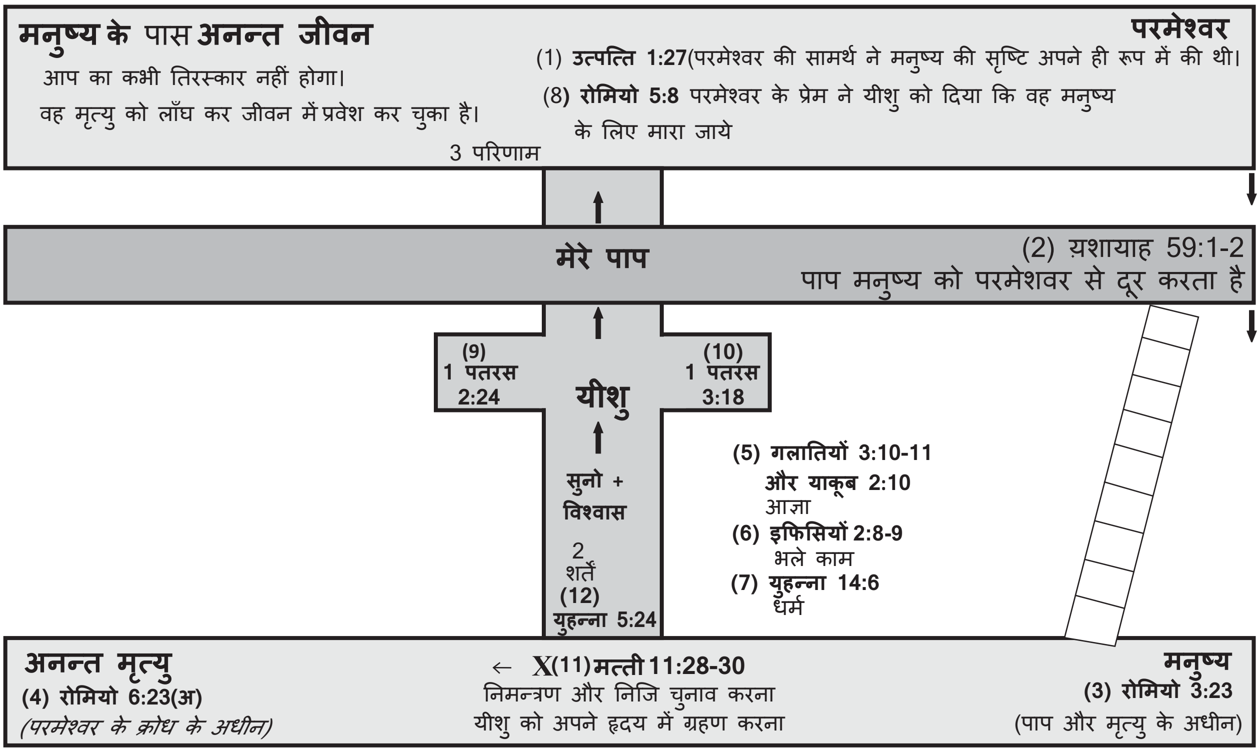

परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की

(1) उत्पत्ति 1:27 -सब से पहले परमेश्वर ने एक मनुष्य और स्त्री की रचना अपने ही स्वरूप में की थी। इस का अर्थ यह है कि वे परमेश्वर के प्रेम को जानते थे और प्रेम के कारण उससे उनका सम्बन्ध था। वे निष्पाप थे और उनके पास अनन्त जीवन था। फिर परमेश्वर ने उनकी आज्ञाकारिता की परीक्षा की (उत्पत्ति 2:15-17) लेकिन उन्होने आज्ञा को नहीं माना था और उस परीक्षा में फेल हो गए। तब वे पाप में गिर गए। इसलिए परमेश्वर ने उन्हे उस स्वर्ग से बाहर निकाल दिया (अदन वाटिका से जो स्वर्ग के समान थी) और फिर उनको जीवन के पेड़ से भी दूर कर दिया। (उत्पत्ति 3:24)

मनुष्य का पाप में गिरनाः

(2) यशायाह 59:1-2 पाप मनुष्य को परमेश्वर से अलग कर देता है लेकिन वह पवित्र परमेश्वर को पापी मनुष्य को भी अलग कर देता है। यही कारण है कि परमेश्वर उनकी प्रार्थनाओं को नहीं सुनता है और न ही उनको बचाता है। आदम सारे सारे मानव जाति के पापमय हे का प्रतिनिधि है। सारे आदम के वँश के लोग इस पापमय स्वभाव के भागी है और अन्त में मृत्यु के भी भागी हैं। (रोमियो 5:12, 17-19)

(3) रोमियो 3:23 सब ने पाप किया है और परमेश्वर के पवित्र चरित्र और उपस्थिति से रहित हैं।

(4) रोमियो 6:23(अ) हर प्राकृतिक व्यक्ति अब नियमों और मृत्यु के अधीन है (रोमियो 8:2-3) वे परमेश्वर के कोप के अधीन है (रोममियो 1:18) वे पूरी तरह से खोए हुए हैं और अनन्त मृत्यु (अर्थात नरक) की राह पर चल रहे हैं।

मनुष्य का स्वयं को बचाने का प्रयासः लेकिन लोग सोचते हैं कि वे स्वयं को बचा लेंगे। वे विश्वास करते हैं कि नीचे दिए उपायों से वे ऊपर चढ़ कर परमेश्वर के पास पहुँच सकते हैं।

(5) गलातियों 3:10-11 और याकूब 2:10कुछ लोग विश्वास करते हैं कि परमेश्वर उनको बचा लेगा जब वे सारी आज्ञाओं को मान लेते हैं। लेकिन बाइबल का वचन कहता है कि कोई भी सभी आज्ञाओं को नहीं मान सकता है। और कोई भी आज्ञाओं का पालन करने के योग्य नहीं है। (**रोमियो 8:7-8)**

(6) इफिसियों 2:8-9कुछ लोग विश्वास करते हैं कि परमेश्वर उनको बचा लेगा जब वे भले काम करेंगे। लेकिन बाइबल कहती है कोई भी परमेश्वर के सामने अपने भले कामों के लिए परमेश्वर की उपस्थिति में डींगे नही मार सकता है क्योंकि लोग केवल परमेश्वर के अनुग्रह और उनके विश्वास के द्वारा ही बचाए जा सकते हैं।

(7) युहन्ना 14:6 -अन्य लोगों का विश्वास है कि किसी भी अन्य धर्म के अनुसार चलने से उनका सही न्याय होगा। लेकिन यीशु ने कहा, "मार्ग सत्य और जीवन मैं हूँ। कोई भी मेरे बिना पिता के पास नही पहुँच सकता है।" कोई भी धर्म वास्त्विक समस्या से नहीं निबटता है जो कि पाप है। इसलिए परमेश्वर की पवित्रता और धार्मिक्ता निश्चय ही लोगों को सज़ा देगी क्योंकि यह अनिवार्य है। और यह सज़ा अनन्त मृत्यु है यह तभी नहीं मिलेगी जब यीशु मसीह के द्वारा बचा लिए जाते हैं।

परमेश्वर का मनुष्य को बचाने का प्रयासः

(8) रोमियो 5:8 -परमेश्वर का प्रेम ही एकमात्र मार्ग है जो उद्धार को सम्भव करता है। अपने दैविक स्वभाव बिना छोड़े परमेश्वर मनुष्य के स्वभाव को ले लेता है और यीशु मनुष्य के समान बन जाता है। वह अपनी रचित सृष्टि में मानव इतिहास में खोए हुए लोगो के बीच इस पृथ्वीपर वास करता है और इस पृथ्वी पर खोए हुए लोगों के मध्य में रहता है और उनके पापों के लिए वह स्वयं उनके स्थान पर मर जाता है। (युहन्ना 1:1,14,18, फिलिपियों 2:5-8) अपने प्रेम के कारण उसने स्वयं को क्रूस पर बलिदान कर दिया जिससे हमारे पापों की कीमत चुका कर उनके लिए पश्चाताप करके हमें क्षमा प्राप्त करा सके।

(9) 1 पतरस 2:24 क्रूस पर मरने के कारण यीशु मसीह ने परमेश्वर के पवित्र और धार्मिक क्रोध को जो वह हमारे पापों से करता था उसे शान्त कर दिया है। और वह सब कुछ उसने अपने ऊपर ले लिया था।

(10) 1 पतरस 3:18 क्रूस पर मर कर यीशु मसीह ने हमारे पापो के सारे परिणामों को हम से दूर कर दिया है और परमेश्वर से हमारा मेल करा दिया है। यीशु मसीह वह पुल या मार्ग है जिसके द्वारा हम एक बार फिर से परमेश्वर पास पहुँच सकते हैं।

(11) मसीह का निमन्त्रण और मनुष्य का चुनावः

मत्ती 11:28-30 यीशु ने कहा, हे बोझ से दबे लोगो मेरे पास आओ मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। यह तो मनुष्य की ज़िम्मेदारी है कि वह सही चुनाव करें।

पाप की समस्या और उसके परिणाम (अलग कर देना) या सदा के लिए हटा देना

(12) युहन्ना 5:24 यीशु ने कहा, "जो कोई मेरे वचन को सुनता है और उस पर विश्वास करता है जिसने मुझे भेजा है

उसके पास अनन्त जीवन है और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होगी, परन्तु वह मृत्यु को पार करके जीवन में प्रवेश करेगा।” इस की दो शर्तें हैं और तीन परिणाम। हर व्यक्ति जो वचन को सुनता है उसे एक निजि निर्णय लेना होगा कि वह परमेश्वर पर विश्वास करेगा जिसने उस पर स्वयं को यीशु मसीह के रूप में प्रकट किया है। या फिर वह स्वयं को यीशु मसीह से स्वतन्त्र रखे और निरन्तर अनन्त मृत्यु की ओर बढ़ता जाए। (2 थिस 1:8-9) हर विश्वासी के लिए तीन परिणाम निहित हैं, 1.वह तुरन्त अनन्त जीवन प्राप्त कर सकता है, 2, उस पर कभी भी दण्ड की आज्ञा नहीं होगी, और न ही उसे नरक में जाना होगा। 3. वह अनन्त मृत्यु को पार करके अनन्त जीवन के मार्ग पर चल पड़ा है। और यीशु मसीह का वायदा है कि कोई भी उनको उसके हाथ से छीन कर नहीं ले जा सकता है। (युह.10:28)

साराँशः

युह. 3:16 बाइबल का निष्कर्श कहता है, “परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर विश्वास लाए, नाश न हो वरन अनन्त जीवल पाए।”

ब. बाइबल में पाप शब्द का अर्थ

सुसमाचार कहता है, “सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।” (रोमियो 3:23)

शिक्षा देः भजन 51:1-4 मूल रूप से भाषाएँ जिन शब्दों का प्रयोग करती हैं वे हैं - पाप, अपराध और दुष्टता।

1 पाप शब्द का अर्थ

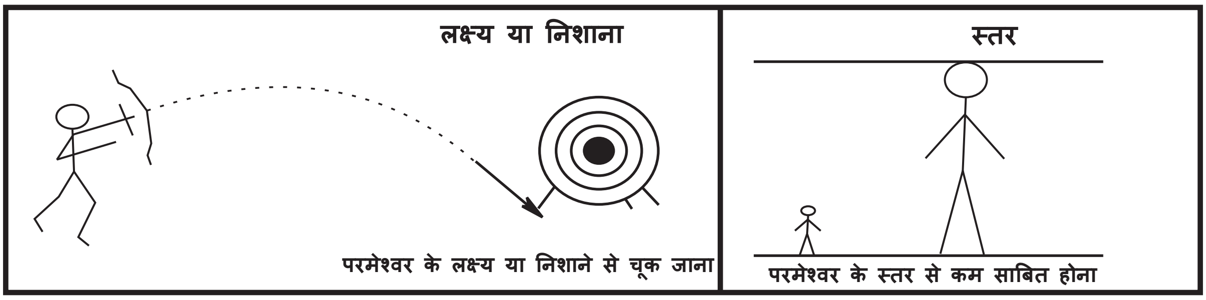

पाप का अर्थ है कि आप अपने जीवन में परमेश्वर के लक्ष्य से चूक गए हैः परमेश्वर का लक्ष्य जो उसने स्वयं को बाइबल के द्वारा प्रकट कर के दिया है वह यह है कि सब लोग जो इस पृथ्वी पर हैं उनको परमेश्वर के साथ एक सही सम्बन्ध बनाने की ज़रूरत है। अन्तिम नतीजा यह होगा कि वे दूसरे लोगों के साथ भी एक सही सम्बन्ध बनाने पाएँगे और केवल वहीं चीज़े करेंगे जो परमेश्वर की नज़रों में सही हैं। एक पापी वही है जो अपने जीवन में परमेश्वर के लक्ष्य तक पहुँचने में चूक जाता है। अर्थात उसका न तो परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध होता है और न ही दूसरे लोगों के साथ।

पाप का अर्थ यह भी है कि परमेश्वर के स्तर से कम साबित होनाः परमेश्वर का सर्वोत्त्म स्तर है, परमेश्वर के साथ सही रीति से रहना और यीशु मसीह में सब कुछ सही करना जैसा यीशु मसीह ने अपनी शिक्षाओं में बताया है। इससे कोई फरक नहीं पड़ता है कि आप कौन सी भाषा बोलते हैं या कौन से धर्म को मानते हैं। आपके कर्म तो परमेश्वर के स्तर से मापे जाते हैं।

लेकिन क्योंकि सभी लोग परमेश्वर के सर्वोच्च स्तर से कम साबित होते हैं वे सभी खोए हुए गिने जाते हैं और उनको एक उद्धारकर्ता की ज़रूरत है। उनको भी जो एक आदर्श जीवन जीते हैं और बहुत से भले काम भी करते हैं। वे भी परमेश्वर के सर्वोत्त्म स्तर से कम पाए जाते हैं। (रोमियो 3:10-12, 23) कोई भी योग्य नहीं है, और कोई भी अपने धर्म के द्वारा नहीं बचाया जा सकता है, न आज्ञाओं का पालन करने से ऐसा हो सकता है और न ही भले कामों से। एक भी भला नहीं है। पाप का केवल यह अर्थ नहीं है कि आपने कोई अपराध किया है, या कुछ दुष्टता की है, इसका अर्थ केवल इतना ही है कि आप परमेश्वर के लक्ष्य से चूक गए हैं और इस लिए उसके सर्वोच्च स्तर से कम पाए गए हैं।

2. अपराध शब्द का अर्थः

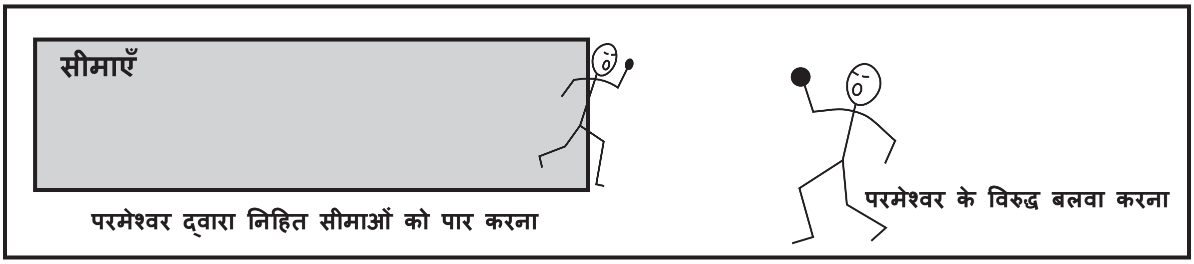

अपराध का अर्थ है परमेश्वर द्वारा निहित सीमाओं को लाँगनाः वे सीमाएँ जो परमेश्वर ने मनुष्य के जीवन और उसके व्यवहार के लिए निहित की है उनका प्रकटीकरण परमेश्वर की आज्ञाओं, उसकी शिक्षाओं और उसकी निषेध आज्ञाओं में है जो बाइबल में लिखी हुई हैं। क्योंकि कभी-कभी लोग वह करते हैं जिस के लिएपरमेश्वर मना करता है और कभी-कभी वह परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के प्रति लापरवाह हो जाते हैं इसलिए वे अपराधी कहलाते हैं। अपराध केवल सामान्य रूप से धार्मिक शिक्षको की आज्ञाओं को न मानना नही है। वरन उन आज्ञाओं को और सीमाओं को न मानना है जो परमेश्वर ने स्वयं बाइबल में निहित की हैं।

अपराध का अर्थ यह भी है कि जानबूझ कर परमेश्वर के विरुद्ध बलवा करनाः पहले से ही पुराने नियम में लोगों ने परमेश्वर के विरुद्ध बलवा किया था और वह किया जो उनकी नज़रों में सही था। (न्यायियों 21:25) आज लोग जानबूझ कर परमेश्वर के विषय में झूठी बातें फैलाते रहते हैं जिसने स्वयं को बाइबल में प्रकट किया था। वे आज्ञा न मानते हुए परमेश्वर के उस संदेश का तिरस्कार करते हैं जो बाइबल में लिखा है। वे परमेश्वर के उन नैतिक मूल्यों, ज्ञान, चरित्र को ठुकरा देते हैं जो उसने बाइबल में दिए हैं जहाँ पर उसने स्वयं को प्रकट किया है। मनुष्य इस पृथ्वी पर बलवा करके भ्रष्टाचार और अस्वाभाविक दुष्ट आचरण को फैलाता है। वह स्वयं को परमेश्वर और बाइबल के प्रति कठोर बना लेता है। यही बलवा है। अपराध और बलवा दोनों ही प्रकट में गलते कार्य हैंजिन्हें देखा जा सकत है।

3.दुष्टता शब्द का अर्थः

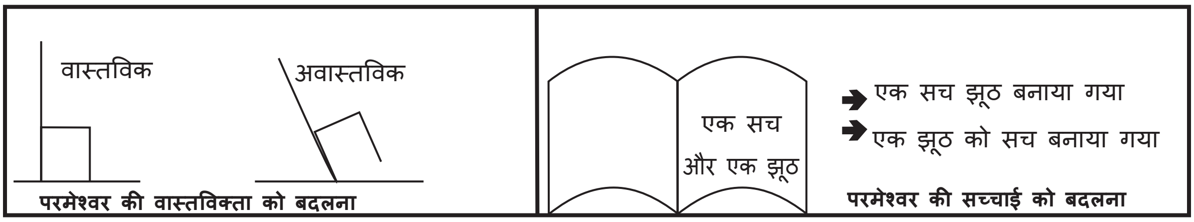

दुष्टता का अर्थ है अचानक से सच्चाई को जैसा परमेश्वर उसे देखता है उसे बदल डालनाःसारे संसार के लोगों की अपनी राय और नज़रिया है। संसार का दृष्टिकोण उस सच्चाई के अस्तित्व को स्वयं अनुभव करना और उसकी सच्चाई और वास्तविक्ता को वे क्या समझते हैं, उसके प्रति उनका व्यवहार कैसा है वे उसे कितना तूल देते हैं और उनका विश्वास और मूल्य कैसा हैं। उनकी सभ्यता और संस्थाएँ कैसी हैं। बाइबल के परमेश्वर ने बाइबल में यीशु मसीह के विषय में सही साँसारिक अवलोकन कर के उसे प्रकट किया है। इस साँसारिक दृष्टिकोण को परमेश्वर की सभ्यता का राज्य कह सकते हैं। परमेश्वर के राज्य के विषय में अनेक मत हैं पर ये मत मसीह और बाइबल के सही दर्शन को प्रकट करते हैं। बाइबल के परमेश्वर चाहते हैं कि सभी लोग परमेश्वर के राज्य की सभ्यता को जान लें। उस पर विश्वास करें और उसी के अनुसार जीवन बिताएँ। लोकिन फिर भी जब लोग आपना दृष्टिकोण बनाते हैं और अपने ही विश्वास और मूल्य बना लेते हैं तब वे परमेश्वर की वास्त्विकता के दृष्टिकोण को बदल देते हैं. यही दुष्टता है।

दुष्टता का अर्थ यह भी है कि हम परमेश्वर की सच्चाई को जो बाइबल में है उसे तोड़-मोड़ कर प्रस्तुत करे

परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से सच को बाइबल में प्रकट किया है। लेकिन लोग जानबूझ कर उस सच का गलत

अर्थ निकालते हैं (यशायाह 5:20) अनेक बार लोग बाइबल से वह सब कहलवाना चाहते है जो वे मानना चाहते या कहना चाहते हैं। (2 कुर. 2:17; 4:2) ऐसे में अन्य लोग अनेक बाइबल की सच्चाईयों को जिन को उन्हें मानना चाहिए उन्हें नज़र अन्दाज़ कर देते हैं। (मत्ती 15:6-9, प्रकाशितवाक्य 22:18-19. इसके परिणाम स्वरूप अनेक झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होते हैं और अनेक लोग उन के द्वारा गलत मार्ग पर चले जाते हैं। (मत्ती 24:11) यह भी दुष्टता है। दुष्टता एक बहुत ही चतुर बुद्धि द्वारा लिया गया कदम है जो चोरी से चुपके-चुपके गलत काम करता रहता है। यह एक छुपा हुआ या कहें तो आवरण में छिपा तरीका है जो धर्म के अधीन बहरूपिया बन कर गलत कार्य करता है।

<u>सारॉंश</u> - <u>पाप का बीज और फल</u>

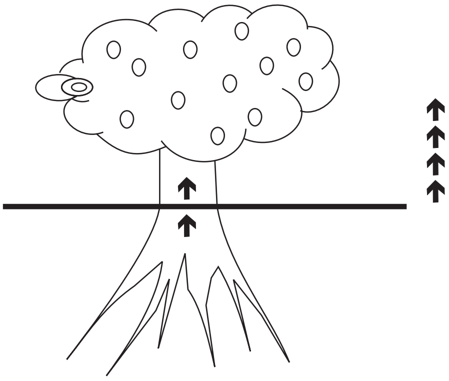

<u>पाप का फल</u>

= वह करना जो परमेश्वर ने मना किया है

= वह न करना जिस की परमेश्वर ने आज्ञा दी है।

<u>पाप की जड़</u>

= परमेश्वर से आज़ादी, स्वयं पूरक, आत्मकेन्द्रित

= बाइबल के परमेश्वर से प्रेम न करना

= परमेश्वर के साथ एक टूटा हुआ रिश्ता

= परमेश्वर के लक्ष्य से चूक जाना

= परमेश्वर की सीमाओं को लाँघना

= परमेश्वर के विरुद्ध बलवा करना

= परमेश्वर के वचन को तोड़-मोड़ कर उसका अर्थ निकालना

आत्मकेन्द्रित, आत्मनिर्भर, या स्वतन्त्र होना या स्वार्थी होना और परमेश्वर से आज़ाद होना ही पाप की जड़ है। पाप की जड़ उस परमेश्वर से अलग होने और उससे कोई सम्बन्ध न रखना है, जिसने बाइबल में स्वयं को प्रकट किया है। पाप की जड़ यह भी है कि हम परमेश्वर के लक्ष्य से अलग अपना कोई लक्ष्य निर्धारित कर लेना और अपने स्तर पर उसे प्राप्त करने की कोशिश करें। वह अपने ही नियमों के अनुसार और अपनी निर्धारित सीमाओं में जीना भी है जो उन सीमाओं से अलग है जो परमेश्वर ने निर्धारित की हैं या फिर किसी भी सीमा में नही जीना। अपने लिए एक अपना ही विश्वास और दृष्टिकोण निर्मित करना और उस के अनुसार जीना जिसमें उस परमेश्वर को कोई तूल नहीं देते हैं जिसने स्वयं को बाइबल में प्रकट किया है। हो सकता है कि कोई व्यक्ति ऐसा सोचता हो कि वह कुछ भी गलत नहीं कर रहा है और वह तो सब भले काम कर रहा है, पर वह फिर भी परमेश्वर की नज़रों में पापी गिना जाएगा क्योंकि वह उस एकमात्र सच्चे और जिवित परमेश्वर से अलग जीवन बिता रहा है। पाप की जड़ यह भी है जब एक व्यक्ति वही बनता जा रहा है जो वह बनना चाहता है और वही करता है जो वह करना चाहता है बजाए इसके कि वह बने जो और वही करे जो परमेश्वर चाहते हैं। पाप की जड़ आत्मकेन्द्रित होना और उस परमेश्वर से आज़ाद रहना भी है, जिस ने बाइबल में स्वयं को प्रकट किया है।

जो नहीं करना उसे करना है तथा जो सही है उसे न करना भी पाप का फलः पाप का फल पाप की ज़ड़ से ही निकलता है। पाप का फल यह है कि हम वह करें जिस के लिए परेश्वर ने मना किया है और वह न करें जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने दी है। जिन पापों को परमेश्वर ने करने से मना किया है उन पापों की सूची पाई जाती है (मरकुस 7:20-23; रोमियो 1:28-32; गलातियों 5:19-21; तीतुस 3:3; और प्रकाशितवाक्य 21:8 जो आज्ञाएँ परमेश्वर ने दी है उनकी सूची युह. 13:34-35; लूका 6:27-28; कुलु. 3:18-4:1; इब्रानियों 3:12-13; 12:14-17; याकूब 1:27; 1 पतरस 2:11-12

क. बाइबल में मृत्यु का अर्थ

सुसमाचार कहता है, - पाप की मज़दूरी मृत्यु है।(रोमियो 6:23)

शिक्षा दे. शब्द मृत्यु के बाइबल में तीन अर्थ हैं। आत्मिक, भौतिक(साँसारिक) और अनन्त कालीन।

1.आत्मिक मृत्युः

आत्मिक मृत्यु क्या है?

पढ़ेः युह. 8:24; इफि. 2:1-3

नोट्सः आत्मिक मृत्यु वह है जहाँ पर मनुष्य की आत्मा मर जाती है। आत्मिक मृत्यु तब होती है जब आप उस एकमात्र सच्चे और जीवित परमेश्वर से स्वयं को अलग कर लिया है जिसने बाइबल में स्वयं को प्रकट किया है। हर मनुष्य एक जीवित आत्मा है। (उत्पत्ति 2:7)जो स्वयं को व्यक्त करती है एक शरीर में जिसे आप देख सकते हैं और उसमें एक अदृष्य आत्मा जिसे आप अनुभव कर सकते हैं। आत्मा का एक बड़ा कार्य यह है कि उसके पास योग्ता है कि वह परमेश्वर को जान सकती है और उस एकमात्र, सच्चे और जीवित परमेश्वर के साथ संगति कर सकती है।

जब तक लोग पवित्र आत्मा से नया जन्म नहीं लेते हैं तब तक वे आत्मिक रूप से मृत हैं। वे सोचते हैं कि परमेश्वर का कोई अस्तित्व नहीं है। और यदि वे विश्वास करते हैं कि परमेश्वर का अस्तित्व है तो वे मानते हैं कि वह बहुत ऊँचाई पर और बहुत दूर रहता है। वे नहीं जानते हैं कि परमेश्वर बहुत ही निजि है और उन से बहुत ही घनिष्ट सम्बन्ध रखता है, इसीलिए वे कभी भी परमेश्वर के साथ वह घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित कर के उसके साथ संगति नहीं कर पाते हैं।

लेकिन जब वे सुसमाचार को सुनते हैं, और विश्वास करते हैं और वे यीशु को अपने दिल, और जीवन, में ग्रहण कर लेते हैं तब पवित्र आत्मा (परमेश्वर की आत्मा) आ कर उन में वास करती है। (इफि. 1:13; रोमियो 8:9-10) तब पवित्र आत्मा उनकी मानवीय आत्मा को जीवित कर देती है। जिससे वे परमेश्वर को जान पाते हैं और उसके साथ घनिष्ठ संगति करते हैं।

2. शारीरिक मृत्युः

शारीरिक मृत्यु का क्या अर्थ है?

पढेः भजन 49:10, 17; (सभोपदेशक 9:5-6,10; 12:7)

नोटसः शारीरिक मृत्यु मनुष्य के शरीर की वह स्थिति जब उसका शरीर मर जाता। जब मनुष्य की आत्मा उसके शरीर से अलग हो जाती है। और जब एक मनुष्य इस पृथ्वी के जीवन से अलग हो जाता है। यह अलग होना अपने प्रिय परिवार से, मित्रों से, और जो कुछ आपने इस संसार में उपलब्ध किया

3. अनन्त मृत्युः

अनन्त मृत्यु क्या है?

पढ़ेः प्रकाशितवाक्य 21:8 (लूका 16:22-23; मत्ती 10:28; 25:46; प्रकाशितवाक्य 20:14-15; 2 थिसु.1:8-9)

नोट्सः अन्तिम न्याय के दिन से पहले अनन्त मृत्यु का अर्थ है अविश्वासियों की आत्मा में अनन्त दुख (मनुष्य की आत्मा में) जो नरक में होगी। अन्तिम न्याय के दिन के बाद अनन्त मृत्यु का अर्थ है अनन्त काल का दुख और पीड़ा जो आत्मा की (सज़ा) होगी। उस हर अविश्वासी व्यक्ति के शरीर को मिलेगी क्योंकि अब वह सदा के लिए परमेश्वर की उपरस्थिति और देखभाल से दूर हो चुका था।

घ. बाइबल में न्याय शब्द का अर्थ

सुसमाचार कहता है, "जो सुसमाचार पर विश्वास नहीं करता है वह दोषी ठहर चुका है।" (युहन्ना 3:18) और फिर मनुष्य का एक बार मरना निश्चित है और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है। (इब्रानियो 9:27)

शिक्षा दोःबाइबल में न्याय दो भिन्न तरह का होता है, परमेश्वर द्वारा किया गया इस वर्तमान युग का अस्थाई न्याय और भविष्य में होने वाला अन्तिम न्याय। परमेश्वर का आज के युग का न्याय भी दो तरीके से होता है एक जो वर्तमान में अस्थाई रूप से लोगों पर किया जाता है और दूसरा जो कभी कभी वर्तमान में ही स्थाई रूप से कर दिया जाता है।

<u>वर्तमान में परमेश्वर के द्वारा किए गए अस्थाई न्यायः</u>

परमेश्वर क्यों वर्तमान में कुछ न्यायों को अस्थाई रूप से क्यों कर देता है?

पढ़ेः (गलातियों 6:7-8 और रोमियो 1:28-32)

नोट्सः क्योंकि परमेश्वर ने इस पृथ्वी और लोगों की की रचना की है, तो उसे अधिकार भी है कि वह तय करे कि यहाँ पर लोग कैसे जीएँगे। परमेश्वर ने उदाहरण के लिए कुछ भौतिक(सांकारिक) नियम बनाएं हैं उदाहरण के लिए यदि हम गुरुत्वाकर्षन के नियम को भूल जाएँ तो हम बुरी तरह से गिर सकते हैं। उसी रीति से परमेश्वर ने कुछ धार्मिक या आत्मिक नियम भी बनाए हैं। और जब कभी मनुष्य इन नियमों को तोड़ता है तो वह अपने ही पापों के परिणामों को स्वयं भोगता है। "वे जो बोते हैं वही काटते भी हैं।"जो कोई पाप करता है वह पाप की फसल काटता है। उदाहरण के लिए यदि कोई आलसी है तो वह गरीबी की कटनी काटेगा। जो व्यक्ति नफरत का बीज बोएगा, वह टूटे रिश्ते ही काटेगा। एक व्यक्ति जो अत्याचार और ज़ुल्म बोएगा, वह युद्ध को काटेगा। और एक व्यक्ति जो नशीले पदार्थ बोता है वह नशे की लत को काटेगा।

रोमियो 1:18-27 सिखाते हैं कि नास्तिक जीवन होना हमें नैतिक भ्रष्टाचार और अनेक प्रकार की दुष्टता की ओर ले जाता है। अनेक अवसरों पर किसी मनुष्य के पापों के परिणाम उस के इसी पृथ्वी के जीवन के दौरान ही उस तक पहुँच जाते है। दुख उठाना तो शायद उसके बुरे निर्णयो या क्रिया-कलापों का सामान्य परिणाम होता है।

परमेश्वर क्यों कुछ ऐसे न्याय वर्तमान काल में ही ले आता है?

पढ़े यहेजेकेल 14:21 और (लैव्यवस्था 26:14-25; आमोस 4:6-12; हगै 1:3-11; मत्ती 24:4-14; प्रकाशितवाक्य 9:20-21, 16:9)

नोट्सः परमेश्वर पूरे संसार पर राज्य करता है। वह सभी प्राकृतिक शक्तियों और मानव इतिहास की घटनाओं पर नियन्त्रण रखता है। ऐसे समय जब मनुष्य जीवित परमेश्वर की आज्ञा को नहीं मानता है या जब लोग परमेश्वर की ओर से मुख फेर लेते हैं तब परमेश्वर अपनी सुरक्षा को उन पर से हटा लेता है और अस्थाई न्याय को प्रकट करता है। उदाहरण के लिए उनके खेत की कटाई सफल नहीं होती है, लड़ाईयाँ उनके घरों को नष्ट कर देती हैं। और लोग भारी नुकसान उठाते हैं। और तब उनको जीवन में कहीं भी संतोष नज़र नहीं आता है। परमेश्वर अनेक प्राकृतिक विनाश के तरीके प्रयोग में ले आता है। जैसे, भूचाल, बाढ़, सूखा, भूख और महामारियाँ। ऐसा इस पृथ्वी पर इतिहास में हर युग में देखा गया है। जब भी परमेश्वर मनुष्य के कामों और पापों के कारण खुश नहीं होता है वह ऐसा ही करता है जिससे मनुष्य पश्चाताप् करे और उसकी ओर फिर जाए।

परमेश्वर के लोगों के प्रति अस्थाई न्याय प्रकट करने का वास्त्विक कारण क्या है?

पढ़ेः 1 कुर.11:32 और इब्रानियों 12:4-11

नोट्सः परमेश्वर अस्थाई न्याय इसलिए करता है कि लोग अपने भविष्य के अनन्तकाल के कष्टों से सुरक्षित रहें। इस

चेतावनी देना चाहता है और लोगों पर उऩके पाप प्रकट करके से उन को डाँट तक उन से छुटकारा दे सके। परमेश्वर का एक ही लक्ष्य है कि वह लोगों के लिए सबसे उत्तम कर सके। लोगों को अनुमति देना कि वे पाप करते रहें अन्त में उनको पाप का गुलाम बना देगी। और साथ ही उन्हे उस सज़ा तक पहुँचा देगी जो परमेश्वर उनको खुल्लमखुल्ला देगा। वर्तमान में अस्थाई न्याय करके सज़ा देने का अर्थ है कि परमेश्वर कारण दे रहे हैं लोगों को कि वे अपने पापों और बुराई से फिर जाएँ और उसके स्थान पर परमेश्वर की पवित्रता और धार्मिक्ता में जीवन बिताएँ।

2.परमेश्वर का भविष्य में अनन्तकाल का न्याय

जब आप धर्मी और अधर्मी लोगों की जीवन शैली को देखते हैं तब आप क्यों जीवन को न्यायपूर्ण और अन्यायी कहते हैं?

पढ़ेः सभोपदेशक 12:14 और भजन 73:2-16

शिक्षा देः जीवन तो अन्याय से भरा है। भले लोग दुख उठाते हैं जो लोग निस्वार्थ होते हैं उन्ही को शोषित किया जाता है। नम्र और दीन लोगों को डराया जाता है, और गरीब लोगों को लूटा जाता है। दूसरी ओर दुष्ट लोग फलते-फूलते हैं, स्वार्थी लोग बहुत सा धन कमाते हैं, क्रूर लोग दीन लोगों का सब कुछ छीन लेते हैं। अमीर लोग गरीबों को और अधिक गरीब बना देते हैं। अत्याचारी लोग आराम से अपने बिस्तर पर मर जाते हैं जबकि धर्मी लोगों को सता सता कर मारा जाता है। अब जैसा कि हम सोचते हैं कि एक परमेश्वर है जो सर्व सामर्थी और भला है, तो फिर वह संसार में इतना सब अन्याय होते रहने की अनुमति कैसे देता है? अगर वह इस सारे संसार में होने वाले अन्याय के विषय मे कुछ भी नहीं करेगा, अभी या फिर इस जीवन के बाद भी, जिससे वह उस सारे अन्याय के विरुद्ध या फिर छुटपुट बुराई के विरुद्ध कुछ नहीं करता है तो वह सर्वशक्तिमान नहीं है, इसी लिए वह कुछ भी नहीं कर पा रहा है या फिर वह इतना भला नहीं है कि उसे किसी भी बात की परवाह हो!!

फिर भी बाइबल हमें स्पष्ट रूप से सिखाती है कि जीवित परमेश्वर तो सर्वसामर्थी, भला और न्यायी है। और उसका न्याय तो ब्रह्माण्ड के स्तर पर होगा। लोग इस पृथ्वी पर चाहे किसी भी युग में जीवित रहे हों, उस अन्तिम निर्णय के समय में सभी उपस्थिति होंगे।

भविष्य में परमेश्वर का न्याय कैसा होगा?

पढ़ेः इब्रानियों 9:27 (मत्ती 25:31-33)

शिक्षा देः बाइबल सिखाती है कि शरीर के पिंड की शारीरिक मृत्यु अन्त नहीं है, क्योंकि मनुष्य के लिए इससे भी अधिक गम्भीर और महान दुख आने वाला है। यीशु मसीह इस धरती पर वापस आएँगे और तब इस धरती पर जितने भी मनुष्य जीवित रहे थे उन सब का न्याय होगा। वह हर कर्म और हर छुपी हुई बात का जो लोगों में पाई जाती हैं उनको प्रकट करके उनका न्याय करेगा। (सभोपदेशक 12:14) वह अपने राज्य में दुष्ट कर्म करने वालों को और जो पाप को उत्पन्न करते हैं उनको चुन-चुन कर बाहर निकालेगा। (मत्ती 13:41) वह उनको अलग कर देगा जो जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं और उसे अपना उद्धारक्रता मानते हैंउस पर विश्वास नहीं करते हैं और फिर यीशु मसीह के साथ उसी सम्बन्ध के अनुसार उनका न्याय करेगा। (मत्ती 25:12) वे लोग जो यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करते हैं और जो उसे अपना उद्धारकर्ता नहीं मानते हैं, प्रभु उनका न्याय परमेश्वर के नियमों के ज्ञान के अनुसार करेगा। (रोमियो 2:10-16) इनके अविश्वास के अनुसार (युहन्ना 3:18-21,36) उनकी कमियों के अनुसार (मत्ती 25:41-46) उनके बुरा कर्मों के अनुसार (प्रकाशितवाक्य 21:8) उनके यीशु को कदमों तले कुचलने और अनुग्रह की आत्मा का अपमान करने के अनुसार (इब्रा.10:26-31) जो कोई भी यीशु मसीह के सुसमाचार का तिरस्कार करता है वह उसकी आज्ञा न मानने के कारण सज़ा पाएगा। (2 थिसु. 1:8)

फिर भी परमेश्वर तो हर मनुष्य का सम्पूर्ण रीति से न्याय करेगा। (लूका 12:47-48) वह सताए हुए लोगों का न्याय करेगा और गरीब दुखी लोगों पर दया दिखाएगा। (मत्ती 5:3-12) लेकिन वह धनी और लालची लोगों को खाली हाथ

भेज देगा। (याकूब 5:1-6) और वह सभी दुष्ट लोगों को नष्ट कर देगा। वह इस पूरे संसार का न्याय करेगा और हर जीवित व्यक्ति को उसकी दुष्टता के कारण जो उसने परमेश्वर की पृथ्वी पर की है नष्ट कर देगा। वह लोगों में हर तरह के घमण्ड और अक्खड़पन का अन्त अनन्त तबाही का स्थान (लेकिन वहाँ पर अनन्त विनाश नहीं होता है) उसे आग की जलती झील कहते हैं जहाँ पर गंधक की आग जलती रहती है। नरक उस आग यंत्रणा का स्थान है। (लूका16: 23-26) यह वह स्थान है जहाँ जलते तो हैं पर नाश नहीं होते हैं। यहाँ पर रोने, दर्दनाक पीड़ा और अत्यन्त उत्तेजित क्रोध करने का कोई अन्त नहीं होता है। (मरकुस 9:42-49) यह एक ऐसा स्थान है जहाँ से कोई बाहर नही निकल सकता है। (लूका 16:26) अधर्मी लोगों को अनन्तकाल के विनाश की सज़ा मिलेगी। और वे परमेश्वर की उपस्थिति, प्रेम और देखभाल से दूर बन्द कर दिए जाएँगे। (2 थिसु.1:8-9) हर वह व्यक्त जिसका नाम जीवन की पुस्तक में नहीं पाया जाएगा उसे इस आग की झील में फेंक दिया जाएगा। (प्रकाशितवाक्य 20:15)

मसीही लोगों को तिरस्कृत करके अनन्त काल की सज़ा नहीं दी जाएगी। (युहन्ना 5:24,29) पर उनका न्याय भी होगा पर इस बात पर कि उन्होंने अपना मसीही जीवन इस पृथ्वी पर कैसे बिताया था। (2 कुर.5:10; 1 कुर. 3:10-15)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***प्रतिक्रियाएँ*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में की गई प्रार्थनाएँ**

बारी-बारी करेः प्रार्थना दलों में जो भी वचन आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से बारी बारी छोटी-छोटी प्रार्थनाएं करें।
या पूरे दल को छोटे-छोटे दलों में बाँट कर जो भी आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***निर्धारित कार्य*** **अगले पाठ के लिए**

दल के अगुवेः अपने दल के सदस्यों को तैयारी के लिए घर का काम लिखित रूप से दें।
1.समर्पणः स्वयं को समर्पित करें कि आप लोगों को सुसमाचार स्पष्ट रूप से समझाएँगे।
2.परमेश्वर के साथ निजि समय बितानाः मत्ती के आधे अध्याय से (मत्ती 11:25-14:36) तक हर दिन परमेश्वर के साथ समय बिताएँ।
3.बाइबल अध्ययनः घर पर अगला दूसरा बाइबल अध्ययनशुरू करें। (उत्पत्ति 1:1–2:4अ) जिसका शीर्षक होगा, “मैं कहाँ से आया हूँ?” इसके लिए 5 कदम के तरीके का इस्तेमाल करें। अपने नोट्स बनाएँ।
4.प्रार्थनाः इस हफते किसी विशेष बात या चीज़ के लिए प्रार्थना करें। और देखे कि परमेश्वर क्या कर रहे हैं। (भजन 5:3)
5.अपनी नोटबुक के नोट्स पूरे करेः आपने कितने चेले बनाए, इसमें आपकी आराधना के नोट्स, अपने परमेश्वर के साथ बिताए निजि समय के नोट्स, जो शिक्षा पाई उसके नोट्स और तैयारी के नोट्स पूरे करने हैं।

अध्याय - 4

1.	प्रार्थना

दल के अगुवेः प्रार्थना करें और अपने दल को और पाठ्यक्रम दोनों को परमेश्वर को समर्पित कर दें।

2.	गवाही बाँटना (20 मिनट)	*[शान्त समय]* मत्ती 11:25 – 14:36

पढ़े और वचन बाँटे, (या अपने नोट्स में से पढ़ें) संक्षेप में वही बोले जो आपने परमेश्वर के साथ जो वचन आपको दिया गया था (मत्ती 11:25 – 14:36 तक) उससे अपने निजि समय में जो भी आपने सीखा है, उसे सब के साथ बाँटें।
जो भी वचन बाँट रहा है उसे सुने और जो वह कहता है उसे गम्भीरता से लें और उसे ग्रहण करें पर उस पर किसी तरह की बहस न करें।

3.	याद करना (20 मिनट)	*निश्चितता* प्रार्थना का उत्तर निश्चित है युह.16:24

क.प्रोत्साहित करना (याद करने के लिए)

<u>पढ़ेः</u> भजन 119:9,11
<u>**खोज करे या विचार विमर्श करेः**</u> बाइबल के वचनों को याद करना क्यों ज़रूरी है? चाहे लेखाँश हो या फिर अध्याय?
<u>**नोट्सः**</u> याद किए हुए वचन हमेशा आप की इस दुष्ट दुनियाँ में एक सच्चा और पवित्र जीवन जीने में सहायता करेंगे।

क. मनन करना (एक बाइबल के लेखाँश का)

यह वचन एक सफेद या काले कागज़ पर लिखें या फिर श्यामपट पर लिख लें।

निश्चय ही प्रार्थना का उत्तर मिलेगा युहन्ना 16:24
अब तक तुम नें मेरे नाम से कुछ नहीं माँगा है। माँगो तो तुम्हें दिया जाएगा और तुम्हारा आनन्द पूरा हो युहन्ना 16:24

बाइबल का यह संदर्भ इस कागज़ के उलटी तरफ लिख दें।

<u>**1.बाइबल में परमेश्वर के नामों का अर्थः**</u>

पुराने नियम के समय में लोग परमेश्वर को सीधे-सीधे प्रभु या यहोवा पुकारते थे।(भजन 5:1-2) वे अपनी प्रार्थना का अन्त परमेश्वर के नाम से नही कहते थे।बाइबल में नामों के अर्थ होते हैं।परमेश्वर के नाम सदा परमेश्वर के अस्तित्व और उसके चरित्र को अभिव्यक्त करते हैं। केवल परमेश्वर ही है जो अपने नाम पर खरा उतरता है। यह कटु सत्य है क्योंकि परमेश्वर के नाम है इस लिएवह स्वयं को जानता है। और यह भी सच है कि परमेश्वर स्वयं को दूसरों पर प्रकट करता है। क्योंकि वह चाहता है कि लोग जाने कि वह कौन है और वे प्रार्थना में उसके साथ समबन्ध जोड़ें।

परमेश्वर का नाम है, यहोवा एलोहीम, जिसका अर्थ है सर्वशक्तिमान जो आदर के योग्य है और जिसका भय मानना ज़रूरी है।(यशायाह 40:18 और यशायाह 46:9-11) उसका नाम प्रभु या यहोवा का अर्थ है, "मैं हूँ, मैं ही परमेश्वर हूँ और मै वही रहूँगा जो मैं रहूँगा" यही परमेश्वर की वाचा का नाम है जिस में परमेश्वर ने कहा है कि मै अपने लोगो से बाँधी वाचा के प्रति विश्वासयोग्य रहूँगा। (निर्गमन 3:14-15; 34:6-7)

यीशु मसीह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रकटीकरण है। (यशायाह 9:6; कुलुसियों 1:15; 2:9) यीशु मसीह के नाम का भी अर्थ है। यीशु का अर्थ है उद्धारकर्ता, (मत्ती 1:21)क्रीस्ट या मसीहा का अर्थ है वह जिस का अभिषेक हुआ है।उसी का यह नाम है क्योंकि उसका अन्तिम भविष्द्वाक्ता (नबी), महायाजक और अनन्तकाल का राजा होने के लिए पवित्र आत्मा से अभिषेक हुआ है।एक भविष्यद्वक्ता(नबी) होने के नाते वह हम पर परमेश्वर के वचन और खुद परमेश्वर का प्रकटीकरण करता है। वह तो एक याजक और अनन्तकाल का राजा है। याजक होने के नाते वह हम पर परमेश्वर और उसके वचनों को प्रकट करना है। एक याजक होने के नाते उसने हमारे सभी पापों का कर्ज़ चुकाया है और वह हमारे लिए प्रार्थना करता है। वहराजा बन कर वह हमारे जीवनों पर राज्य करता है। और हमारे जीवन को हर बुराई से बचाता है।

<u>2.यीशु के नाम से प्रार्थना करनाः</u>

मसीही लोग यीशु के नाम से प्रार्थना करते हैं क्योंकि यीशु मसीह परमेश्वर और हमारे बीच मध्यस्थ हैं। यीशु के नाम से प्रार्थना करने के तीन महत्त्वपूर्ण अर्थ हैं।

क्योंकि यीशु मसीह ने परमेश्वर के चरित्र, उसके शब्दों और उसके कर्मों को प्रकट किया है। मसीही लोग परमेश्वर को निजि रूप से बहुत ही निकटता से जान सकते हैं क्योंकि वे यीशु मसीह को जानते हैं। वह जिसने यीशु मसीह को देख लिया है उसने अदृश्य परमेश्वर को भी देख लिया है। (युहन्ना 14:9-10)वह जो यीशु मसीह को जानता है वह परमेश्वर को भी जानता है। (युहन्ना 8:19, मत्ती 11: 27) वह जो यीशु मसीह पर विश्वास करता हैवह परमेश्वर पर भी विश्वास रखता है। (युहन्ना 12: 44) जो कोई यीशु मसीह को ग्रहण करता है वह परमेश्वर को भी ग्रहण कर लेता है। (युहन्ना 13: 20) परमेश्वर उन मसीहों की प्रार्थनाएँ सुनता है जो यीशु के नाम से प्रार्थना करते हैं।

क्योंकि यीशु मसीह नें विश्वासियों की सम्पूर्ण और सर्वोच्च धार्मिकता पूरी की हैः एक विश्वासी की धार्मिकता परमेश्वर की ओर से आती है और यह यीशु मसीह की कुर्बानी की मृत्यु और पुनरोत्थान पर आधारित है। (2 कुर. 5:21)जब परमेश्वर एक विश्वासी की ओर देखता है जो यीशु मसीह में है तब वह केवल यीशु मसीह की धार्मिकता को देखता है। परमेश्वर उन मसीहों की प्रार्थनाएँ सुनता है जो यीशु मसीह की धार्मिकता प्राप्त कर लेते हैं। (1 पतरस 3:12)

क्योंकि यीशु मसीह ने परमेश्वर की मर्ज़ी और उसके मार्गो को प्रकट किया हैः परमेश्वर उन मसीहों की प्रार्थनाएं सुनता है जिन की प्रार्थनाए यीशु से मेल खाती हैं और जो परमेश्वर की मर्ज़ी के अनुसार होती हैं। (1 युहन्ना 5:14)

सो इस लिए यीशु मसीह के कारण ही मसीहों का परमेश्वर के साथ स्वर्ग में सीधा सम्बन्ध है(इफि. 2:18) और मसीही लोग किसी भी समय आज़ादी और आत्मविश्वास के साथ परमेश्वर के निकट जा सकते हैं। (इफिसियों 3:12; इब्रानियों 4: 14-16)

क.याद करना और पुनरावलोकन

1.लिखोः अपनी कापी के एक खाली पेज पर बाइबल का वचन लिखें।

2.याद करोः बाइबल का वचन प्रार्थना के उत्तर का आश्वासन पाने की सही राह है।

3.पुनरावलोकन दो-दो के दल बना कर एक दूसरे के आखरी याद किए वचन की जाँच करें।

4.	**बाइबल अध्ययन** (70 मिनट) ***जीवन के विषय में प्रश्न*** **मैं कहाँ से आया हूँ? (उत्पत्ति 1:1 – 2:4अ)**

बाइबल अध्ययन के पाँच तरीकों की विधि का इस्तेमाल करके उत्पत्ति 1:1 – 2:4अ का अध्ययन करें।

पहला तरीका - पढें **परमेश्वर का वचन**

पढ़ेः उत्पत्ति 1:1 – 2:4अ एक साथ पढ़ें।

आईए हम मिल कर बारी बारी से एक-एक पद करके वचन पढ़ें जब तक पूरा लेखाँश समाप्त न हो जाए।

दूसरा तरीका - खोजें **अवलोकन करें**

ध्यान देः यहाँ पर कौन सा लेखाँश आप के लिए महत्त्वपूर्ण है?

या ऐसा कौन सा सच है इस लेखाँश में जिस ने आपके दिल को छू लिया है?

लिख लेः लेखाँश में से एक या दो सत्यों को खोज निकालें। उनके विषय में सोचें और अपने विचार अपनी कापी में लिख दें।

गवाही बाँटेः (जब सभी दल के सदस्य 2 मिनट तक विचार कर चुकें और कापी में अपने विचार लिख चुके हों तब बारी-बारी सब अपने विचारों को दूसरों के साथ बाँटें।

(नीचे कुछ लोगों के उदाहरण दिए गए हैं जिन्होंने अपने विचार बाँटे थे कि उन्होंने क्या पाया था। पर याद रहे हर छोटे दल में लोग अलग-अलग बातें बाँटते हैं। पर यह ज़रूरी नही है कि सब के विचार एक समान हो।)

1:27

खोज 1. परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री दोनों को अपने ही स्वरूप में बनाया था।

मैं पशुओं से भिन्न हूँ क्योंकि वे परमेश्वर के स्वरूप में नहीं बनाए गए हैं। क्योंकि मैं परमेश्वर के स्वरूप की छाया हूँ इस लिए मुझ में परमेश्वर के व्यक्तित्व को देखा जा सकता है। मुझे भी वही विशेष गुण दिये गए हैं जो उसके पास हैं।

1:28

खोज 2. परमेश्वर ने मुझे एक विशेष कार्य के लिए बनाया था।

मुझे परमेश्वर के साथ एक सम्बन्ध स्थापित करने के लिएरचा गया था। परमेश्वर का आदर करते हुए मुझे उसके स्वरूप को एक योग्य रूप में ले कर चलना होगा। दूसरे लोगों के आदर के लिए मुझे स्त्री और पुरुष दोनों का उनके स्वभाव के अनुसार आदर करना है और नियम के अनुसार उनके अधीन भी रहना है।

तरीका 3. प्रश्न **समझाना**

ध्यान देः इस लेखाँश में कौन सा ऐसा प्रश्न है जो आप इस दल से पूछना चाहेंगे?

आईए हम कोशिश करें कि उत्पत्ति 1:1 -2:4अ के सभीसत्यों को समझ सके और प्रश्न पूछें उस सब के विषय में जो अब तक समझ नहीं आया है।

लिख लेः अपना प्रश्न पूरी स्पष्ट रीति से पूछें और उसे अपनी कापी में लिख लें।
गवाही बाँटेः (जब सभी दल के सदस्य 2 मिनट तक विचार कर चुकें और काफी में अपने विचार लिख चुके हों तब बारी-बारी सब अपने विचारों को दूसरों के साथ बाँटें।
विचार-विमर्श करेः (फिर इन में से कुछ प्रश्न चुन कर उन के उत्तर पर दल के साथ मिल कर विचार-विमर्श करें और उनका उत्तर खोजने की कोशिश करें।)
नीचे प्रश्नों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं जो विद्यार्थी पूछ सकते हैं और साथ ही कुछ आपने कापी में लिखा है उस पर भी जिन पर विचार विमर्श किया गया था।

2.4

प्रश्न 1. उत्पत्ति 1:1 – 2:4अ किस प्रकार की साहित्यिक शैली में लिखा गया है?

नोट्सः क्योंकि मनुष्य सृष्टि के रचे जाने के समय उपस्थित नहीं था, परमेश्वर उसी सृष्टि रचित मनुष्य के सामने प्रकट करता है कि यह एक वैज्ञानिक निबन्ध, दर्शन या कविता के समान नहीं वरन एक ऐतिहासिक वर्णन के रूप में दिया है। (उत्पत्ति 2:4)

1:31-2:1
प्रश्न 2. सृष्टि की रचना करने में कितना समय लगा ?

नोट्सः बाइबल बताती है 6 दिन। इन दिनो को कैसे समझ सकते हैं?

इब्रानी भाषा में दिन को **योम** कहते हैं और उत्पत्ति के 1 अध्याय में लेखक कभी भी 24 घंटे के दिन की बात नहीं कर रहा था क्योंकि समय का मापना केवल सृष्टि के चौथे दिन में ही सामने आया था। (उत्पत्ति 1:14) पद 5 में वचन में पहली बार दिन शब्द का प्रयोग किया गया था। और वह उजाले के विषय में कहा गया था और फिर सृष्टि के पूरे 24 घंटे के दिन के विषय में कहा गया था। और उत्पत्ति के 2:4 पद में जब दिन का वर्णन है तो वह पूरी सृष्टि की रचना के 6 दिन के समय के विषय में बात कर रहा है। इस रीति से दिन का प्रयोग 5 भिन्न तरह से किया गया है।

उत्पत्ति 1:27 जो सृष्टि का छटा दिन था, उससे पहले ही परमेश्वर ने पशुओं की रचना कर दी थी। उसके बाद ही परमेश्वर ने मनुष्य की रचना की थी। यही परमेश्वर की सृष्टि की रचना का अन्तिम कार्य था। लेकिन जब हम उत्पत्ति 2:15-22 को देखते हैं कि आदम और हव्वा की सृष्टि के समय में काफी अन्तर है। आदम का काम था कि वह उस विशाल अदन वाटिका की देखभाल करे। यह परमेश्वर का निर्णय था कि वह आदम के लिए एक अच्छी सहायक की रचना करे क्योंकि उसका वाटिका में काम करते काफी वक्त गुज़र चुका था और धीरे-धीरे वह उसमें रुचि खोने लगा था। आदम के काम में उसकी कमी पूरी करने के लिए और उसके अकेलेपन को दूर करने के लिए परमेश्वर ने आदम को एक बड़ा काम दिया था। उसे हर जानवर, पक्षी और जीवाणुओं की जाति नियुक्त करके उनके नाम रखने थे। जब यह काम खत्म हो गया था और आदम ने सभी पशु, पक्षियों और जीव-जन्तुओं के नाम रख दिए थे तब उसके अकेलेपन को फिर से दूर करने के लिए परमेश्वर ने उसकी पत्नी की रचना की थी। और वह भी शरीर के उस अंग से जो उसके दिल के सबसे निकट था। इस लिए उत्पत्ति का 1 अध्याय इस लिए नहीं लिखा गया था जिससे कि यह सिखाए कि सृष्टि का छटा दिन केवल 24 घण्टे का माना जाए।

उत्पत्ति 1 को लिखने का उद्देश्य यह कभी भी नही था कि हम जान सकें कि परमेश्वर ने सृष्टि या पृथ्वी की रचना कितनी शीघ्रता से की थी। या परमेश्वर ने सृष्टि को बनाने में कितना समय लगाया था। वरन इस लिए लिखा गया ता कि लोग जाने कि सृष्टि की रचना किस ने की थी, कैसे की थी और उसकी रचना करने का उद्देश्य क्या था।

1:1-2

<u>प्रश्न 3. परमेश्वर ने सृष्टि की रचना कैसे की थी?</u>

नोट्सः

<u>आदि मेः</u>

आदि में (समपूर्ण धारणा यही है) कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने सब से पहले अपनी सृष्टि में आकाश और पृथ्वी की रचना की थी। यह तो सृष्टि के जन्म के संदर्भ में है, जब परमेश्वर ने भौतिक(साँसारिक) चीज़ों की जैसे ऊर्जा, अन्तरिक्ष, और समय की रचना की थी और उन चीज़ो की भी जिन को देखा नहीं जा सकता है। (इब्रानियों 11:3) बाइबल उन बातों के प्रकटीकरण पर अधिक ध्यान देती है जो भविष्य में मनुष्य के लिए इस सृष्टि में महत्त्वपूर्ण होने वाली थीं। सूर्य, चन्द्रमा, सितारे, और पृथ्वी। ध्यान रहे परमेश्वर का अस्तित्व तो समय की सृष्टि के पहले से ही विद्यमान था। शब्द सृष्टि करना (एच: बारा) का प्रयोग केवल परमेश्वर के लिए किया गया है, मनुष्य के लिए नहीं। पृथ्वी बेडौल थी, खाली और अँधकारमय थी। उसका कोई व्यवस्थित रूप नहीं था। वह एक बाढ़ ग्रसित स्थान के समान दिखाई देती थी। उसमें कोई ज्योति भी नहीं थी। न ही उस पर कोई ज़मीन पर रहने वाले या जल में रहने वाले जीवित प्राणी था। सही छाया पथ या आकाश गंगा बनाने में बहुत समय लग गया था जो आकाश गंगा का रूप होती। और सही सितारा छायापथ के अन्दर ही सही स्थान पर पाया जाना जो सूर्य कहलाए और एक सही नक्षत्र जो सूर्य से सही दूरी पर हो और पृथ्वी कहलाए जिस पर जीवन पाया जा सकें।

उत्पत्त् 1:1-2 को 6 दिन में की गई सृष्टि की भूमिका कह सकते हैं जो पेश करती है उस प्रगति को जो परमेश्वर ने इस पूरी सृष्टि में क्रमअनुसार हर स्तर पर पृथ्वी के नक्षत्र पर उस रूप में पूरी की थी जिसे हम आज भी देख और जान सकते हैं। (उत्पत्ति 2:1)

<u>सृष्टि का पहला दिनः</u>

उत्पत्ति 1:3-5 बताता है कि सृष्टि में किस रीति से पृथ्वी पर प्राकृतिक रूप से ज्योति कैसे प्रकट हुई थी।

जीवन और ज्योति सर्वशक्तिमान परमेश्वर की विशेषताएँ हैं। जीवन और ज्येति तो मानो परमेश्वर ने विरासत में पाए हैं, ये तो उसके स्वभाव की विरासत है। जीवन तो मानो परमेश्वर की विशेषताओं या चरित्र के गुणों का साराँश है। उदाहरण के लिए उसकी धार्मिकता, पवित्रता, प्रेम, विश्वासयोग्यता, दया, अनुग्रह आदि। और वह ज्योति जीवन को स्पष्ट रूप से प्रकट करने का भाव है। (युहन्ना 1:4-5) सो देखा जाए तो धार्मिक रूप से सदा जीवन और ज्योति पाई जाती है।

इस सृष्टि के जन्म के समय में परमेश्वर ने भौतिक(प्राकृतिक) ज्योति (अर्थात ऊर्जा) की सृष्टि की थी जो सितारों के छायापथ से और जलते हुए सूर्यो की भौतिक ज्योति से उत्पन्न होती है। और वह तभी दिखाई दी जब उसका प्रतिबिम्ब अन्य नक्षत्रों और चन्द्रमाओं के रूप में देखने को मिला था। (उत्पत्ति 1:3-5) लेकिन सूर्य और चन्द्रमाओं और नक्षत्रों की ज्योतियाँ केवल सृष्टि के चौथे दिन ही पृथ्वी पर देखी जा सकीं थी। और तभी से ये समय और मौसम के बदलने का संकेत देने वाले सूचक बन गए थे। (उत्पत्ति 1:14)

नई पृथ्वी पर यीशु मसीह ही भौतिक और आत्मिक रीति से ज्योति का स्रोत होंगे। यीशु मसीह ही परमेश्वर के उस अदृष्य जीवन का प्रकटीकरण है। और इस नई पृथ्वी पर फिर कभी भौतिक रात या आत्मिक अन्धकार नहीं होगा। (प्रकाशितवाक्य 21:23; 22:5)

सृष्टि का दूसरा दिनः

उत्पत्ति 1:6-8 प्रकट में लाता है वह वातावरण की सृष्टि या कहें तो आकाश की सृष्टि जिसमें भाप के गीलापन को बादलों में ढाल दिया गया था और फिर वही नमी पृथ्वी की सतह पर भाप से पानी बन जाना। और ऐसा इस लिए हुआ था कि सूरज, चाँद, और सितारों के पृथ्वी पर से अब तक देखा नहीं जा सकता था।

सृष्टि का तीसरा दिनः

उत्पत्ति 1:9-13 यहाँ पर सूखी धरती या कहें तो महाद्वीपों और महासागरों की सृष्टि के दिन का वर्णन है। सभी समुद्रों, सागरों, और झीलों का स्तर नीचा हो गया था। और धरती के सूखे भाग उन से ऊँचे उठ आए थे। धीरे-धीरे जैसे पृथ्वी ठण्डी होने लगी तब पानी का भाप से द्रव्य बन जाना और भूकम्प के दबाव नें पहाडों की सृष्टि की थी। परमेश्वर की सृष्टि की आज्ञा के द्वारा भूमि ने भिन्न-भिन्न प्रकार के पौधों, और पेड़ों की सृष्टि की थी। और सूर्य की ज्योति उन घने बादलों में से छन कर जो पृथ्वी के चारों थे उसने पानी के साथ मिल कर प्रकाश-संश्लेशण सम्भव हो सकता था।

सृष्टि का चौथा दिनः

उत्पत्ति 1: 14-19 बताता है कि परमेश्वर नें बादलों के उस आवरण को जो पृथ्वी के चारो ओर था इतना चीर दिया कि सूरज की रौशनी सीधी पृथ्वी पर पड़ सके। और सूर्य, चन्द्रमा और सितारों के चलन की गति को साफ-साफ देखा जा सके।

जिस क्रिया शब्द का प्रयोग पद 16 में किया गया है उसका अनुवाद <u>बनाया गया</u> नहीं वरन <u>हो गया था,</u> होना चाहिए। परमेश्वर ने सूरज, चाँद, और सितारों की रचना चौथे दिन को नहीं की थी वरन उसने तो केवल उनको आज्ञा दी थी कि वह प्रकट में दिखाई दें। और इसी रीति से कि वे पृथ्वी पर से दिखाई दें और समय और मौसम पर राज्य करें। परमेश्वर ने ही भौतिक चीज़ों, ऊर्जा और उस अन्तरिक्ष की रचना की थी जिस में सूर्य चन्द्रमा और सितारों का स्थान निश्चिय था। इनकी रचना तो उत्पत्ति 1: 1 के आरम्भ में ही कर दी गई थी पर सष्टि के चौथे दिन ही उनको प्रकट रूप से दिखाई देन की आज्ञा दी थी। उस दिन के बाद से ही वे तारों से सम्बद्ध चिन्ह माने जाने लगे और उसी रीति से कार्य करने लगे थे जो एक कृषि सम्बन्धी कैलेण्डर था जिसके द्वारा मौसम के समय निर्धारित किए जाते थे। इसी से ऐतिहासिक कैलेण्डर का निर्माण हुआ जिस में 24 घंटे और सालों को नापा जाता है।

सृष्टि का पाँचवाँ दिनः

उत्पत्ति 1: 20-23 वर्णन करते हैं जल जीवन का, समुद्र जल का और ताज़े जल के प्राणियों का और उड़ने वाले पक्षियों का। इसमें महान समुद्रों के जीवों जैसे सामान्य मछलियाँ, शँख मछली, केंकड़ा, छोटी शँख मछली। एक ओर तो ये सब थे और दूसरी ओर कीटाणु थे, जैसे उड़ती छिपकली, और चिड़ियाँ। यह बहुत ही रोचक है जब कैम्ब्रियन युग में भूविज्ञान ने सबूत दिखाए थे जो उन पशुओं के थे जिनकी रीड़ की हड्डी होती थी। उस युग से पहले के पैलियोज़ौयिक युग के 5000 समुद्री और भू जाति के पशुओं का कोई रिकॉर्ड नहीं मिलता है जिस प्रकार कैम्ब्रियन युग के पशुओं के जीवाँश की परते पाई जाती हैं। परमेश्वर की आज्ञा कि फूलो फलो और संसार में फैल जाओ इन पशुओं के लिए नहीं थी। लेकिन जिस किसी की उसने आज्ञा देकर सृष्टि की थी उसके पास यह आशीष थी कि वे फूले -फलें और इस पृथ्वी को भर दें।

सृष्टि का छटा दिनः

उत्पत्ति 1: 24-26 वर्णन करते हैं सारे भूमि पर रहने वाले पशुओं की सृष्टि और पहले मानव की रचना के विषय में

बताता है। 24 पद का यह अर्थ कभी न निकाला जाए की पृथ्वी में सामर्थ थी कि वह निज से पशुओं की रचना कर सकती थी। भूमि पर के पशुओं में मवेशी भी शामिल थे जैस भेड़-बकरियाँ, सभी छोटे पशु जो ज़मीन पर इधर उधर भागते हैं। और फिर शेर और हाथी जैसे बड़े जानवर भी। इसे कोई वैज्ञानिक वितरण नहीं कह सकता है जैसा कि अकसर लोग पशुओं को देखते कर कहते हैं।

हर सृष्टि का दिन एक पूरे चक्र के प्रतीक द्वारा 6 सृष्टि दिनों के रूप में दर्शाया गया है जो अंधकार के दिन से शुरू होकर अगले दिन के अंधकार के शुर होने तक होता था। इस फॉरमूले का वास्तिवक प्रयोजन यह था कि शाम हुई और फिर सुबह। और फिर पहला दिन समाप्त हुआ। य़ह इसलिए था

कि परमेश्वर ने जो भी सृष्टि की थी उसे करने की एक स्पष्ट प्रक्रिया थी। लेखक का प्रयोजन यह नहीं था कि वह इस प्रक्रिया को किसी सबूत के रूप में इस्तेमाल करे। जिससे शाब्दिक रूप से उसे 24 घंटे के धारणा को सबूत माना जा सके। परमेश्वर ने इस बात का खुलासा नहीं किया है कि सृष्टि के 6 दिन कितने लम्बे थे और जो कुछ भी सिरजा गया उसमे कितना समय लगा था।

उत्पत्ति 2 :1 पूरी सृष्टि की रचना का साराँश यह है कि अब पूरी सृष्टि की रचना पूरी हो चुकी थी। 2:2 वचन कहता है कि सातवाँ दिन उसी समय शुरू हो गया था जब परमेश्वर ने सृष्टि की रचना समाप्त कर दी थी।

2:2-3

प्रश्न 4. मैं सातवें दिन को कैसे समझूँ जिस ने परमेश्वर की सृष्टि के मूल कार्य को पूरा कर दिया था?

नोट्सः

बन्द करने का कोई फॉर्मूला नहीं था।

बाइबल इस बात को नहीं बताती है कि परमेश्वर ने सृष्टि की रचना के बाद केवल 24 घंटों तक ही विश्राम किया था। सातवाँ दिन उन 6 दिनों के समान नहीं था। जिस समय का अन्त हो गया था। परमेश्वर ने 6 दिन सृष्टि की रचना करने में बिताए और उसके बाद एक दिन विश्राम किया था। जिसके बाद सृष्टि की रचना के लिए और दिन नहीं थे। नया नियम हमें सिखाता है कि यह सातवाँ दिन तब से निरन्तर चला आ रहा है और उसने कलीसिया के युग में "विश्राम दिन"के नाम से प्रवेश कर लिया है। इब्रा. 4:1-11 में यह स्पष्ट रूप से सिखाया गया है कि जब परमेश्वर ने 6 दिन में सृष्टि की रचना समाप्त कर ली थी तब सातवें दिन उसने विश्राम किया था। पर इस का यह अर्थ नहीं है कि परमेश्वर सृष्टि की रचना कर के थक गया था और विश्राम करने लगा। और न ही यह है कि आज भी परमेश्वर कोई काम नहीं कर रहा है। इस का अर्थ यह है कि चाहे परमेश्वर को नई सृष्टि नहीं कर रहा है पर वह निरन्तर उसने जो भी रचना की है उस पर एक राजा के समान राज्य कर रहा है। (युहन्ना 5:17; इब्रानियों 1:3)

ऐसे ही परमेश्वर के लोगों ने जिन्होंने अपनी सेवकाई पूरी कर ली है वे परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करेंगे। यह सबत का विश्राम (इब्रा.4:9) जो परमेश्वर के लोगों का है यह उस जीवन के विषय का संदर्भ है जो परमेश्वर की उपस्थिति में बिताया जाता है। और यह या तो तुरन्त मृत्यु के बाद स्वर्ग में होता है या फिर पुनरोत्थान के बाद नई पृथ्वी पर होगा।

हर सप्ताह सबत के दिन का प्रयोजनः

परमेश्वर के सृष्टि की रचना करने का नमूना मनुष्य के सप्ताह के कार्य का नमूना बन गया। सप्ताह के सातवें दिन का प्रयोजन थाः

- पढ़े निर्गमन 23:12 अपने सप्ताह भर के काम के बाद विश्राम करें जिससे तरो-ताज़ा हो जाएँ।

• लैव्यवस्था 23:3 अन्य विश्वासियों के साथ पवित्र संगति में मिलना।
• मरकुस 3:4 भले कार्य करके लोगों के जीवन बचाना।

1:26-27

प्रश्न 5. मैं उन डाइनासोर और मनुष्य के समान जन्तुओं के विषय में क्या विचार रखूँ जो हज़ारो साल पहले इस संसार में जीवित पाए जाते थे?

नोट्सः

डायनासोर और विशाल मनुष्य के समान जन्तुओं की रचना सृष्टि के छटे दिन की गई थी।
पैलेको मानव विकास के शास्त्री की खोज से मानव के समान जन्तुओं के अवशेष पाए गए है और उनको सामान्य रूप से वनमानुष या गुफावासी जंगली मानुष कहा जाता है। उनका अनुमान है कि ये जन्तु 1750000 से 2000000 साल पहले पाए जाते थे। इन अतीत के जन्तुओं को केवल वनमानुष कह कर उनकी मानसिकता को छोड़ा नहीं जा सकता है क्योंकि उनकी बुद्धि जिसके द्वारा उन्होंने पत्थर के औज़ार और शस्त्र बनाए थे वे भी उनके अवशेषों में पाए जाते हैं। इतना ही नहीं जो जले हुए अवशेष पाए जाते हैं वे बताते हैं कि उस समय भी भोजन पकाने के लिए आग का प्रयोग किया जाता था। पाषाण युग के अवशेषों में सबूत पाए जाते हैं कि उस समय मे भी मृत लोगों को कब्र में दफनाया जाता था। और तब भी मृत्यु के बाद के जीवन में विश्वास किया जाता था। कुछ अन्य कच्चे पदार्थ शायद सामप्रदायिक योजना की ओर संकेत करते हैं। कुछ गुफाओं में जो चित्रकला की तस्वीरे पाई जाती हैं वे पाषाण युग की हो सकती हैं। ये सारी जातियाँ जो क्रोमनोन से पहले भी ज़िंनथ्रोपस तक ऐसे अनेक प्राणी पाए जाते थे जिन में काफी बुद्धि और कुछ प्रप्त करनें के स्रोत थे।

वैज्ञानिक आधुनिक रीति से ऐसे प्राचीन प्राणियों की तकनीक की तिथियो के विषय में अलग विचार रखते हैं। उत्पत्ति 1:24-27 पद हमें सिखाते हैं कि ये सभी प्राणी सृष्टि की रचना के छटे दिन ही रचे गए थे। लेकिन कोई भी उस छटे दिन की अवधि को नहीं जानता है।

उपज की, पशुओं की और मनुष्य रूपी प्राणियों की मृत्युः

मृत्यु तो उन पाप करने वाले मनुष्य के लिए जो परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए थे उनके लिए परमेश्वर का न्याय था। (उत्पत्ति 2:15-17) इसका यह अर्थ नहीं है कि अन्य सभी जीवित प्राणियों की शारीरिक मृत्यु जैसे कि पेड़, पौधे, चिड़ियें, मछलियाँ, पशु या रेंगने वाले प्राणी केवल तभी पाए गये जब मनुष्य पाप में गिर चुका था। शारीरिक मृत्यु तो मनुष्य के पाप में गिरने से पहले भी थी क्योंकि भोजन खाने के कारण ही फलों, पौधों, और घास की शारीरिक मृत्यु होती थी। (उत्पत्ति 1:29-30) बहुत सी ऐसी जीवित प्राणियों की जातियाँ है जो भोजन के बिना कुछ घंटे भी जीवित नहीं रह सकती हैं। अर्थात वे किसी अन्य प्राणी की मृत्यु के बिना जीवित नहीं रह सकती है।

केवल मनुष्य को ही परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया था। और केवल मनुष्य ही इस काबिल था कि वह परमेश्वर के साथ सम्बन्ध स्थापित कर सके। और केवल मनुष्य ही था जिसने परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानी थी। और इस रीति से परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया था। इसलिए मृत्यु का न्याय भी केवल मनुष्य के लिए ही है। वह मृत्यु जिसका वर्णन उत्पत्ति 2:17 पद में और रोमियों 5:12,18 पद में दिया गया है उसका संदर्भ आत्मिक मृत्यु से है और अन्त में अनन्त मृत्यु से है। पहले मनुष्य के पाप के बाद परमेश्वर ने एक स्वर्गदूत को भेजा था कि वह जीवन के वृक्ष की रक्षा करे। क्योंकि निश्चय ही मनुष्य के पास वह सामर्थ थी कि वह अनन्त जीवन को पा सके। पाप करने से पहले भी और बाद में भी यदि वह उस पेड़ का फल खा लेता तो वह अनन्त जीवन पा लेता। उस पेड़ का फल न खाने के कारण पापी मनुष्य के लिए वह रास्ता बन्द कर दिया गया था जिसके द्वारा शारीरिक, आत्मिक और अनन्त मृत्यु को पलटा देना सम्भव न होता।

इस रीति से जीवित प्रणियों की अनेक जातियाँ मनुष्य के पाप में गिरने से पहले ही शारीरिक रूप से मर गई थीं। माँसाहारी जीव जन्तुओं की शारीरिक गर्मी की जो प्रक्रियाएँ हैं प्राकृतिक हैं न कि मनुष्य के पाप के द्वारा हैं। आज के युग में लोग पशुओं की मृत्यु को निजि हानि के रूप में देखते हैं इसी लिए वे पशुओं की मृत्यु के दुख को भी मनुष्य की मृत्यु के दुख के समान ही देखते हैं। लेकिन केवल मनुष्य ही परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है। केवल उन्ही के दुख और मृत्यु को देखा जाता है। (उत्पत्ति 3:16-19)

मनुष्य के समान दिखने वाले प्राणी बाइबल के वचन के अनुसार मनुष्य नहीं थेः

प्रेरितों के काम 17:26 कहता है, "एक मनुष्य के द्वारा"(शाब्दिक रूप से एक ही लहु से) परमेश्वर ने मनुष्यों के हर राष्ट्र की रचना की थी। और रोमियो 5:12-21 माँगता है कि पूरी मानव जाति आदम के समय से लेकर आज तक वास्तव में उसी की पीढ़ियाँ हैं। क्योंकि उनसे परमेश्वर ने एक वाचा बाँधी थी जो सारी मानव जाति के लिए थी। इस से साफ पता चलता है कि आदम जिस की रचना परमेश्वर ने की थी और अन्य मनुष्य रूपी जीवों का आपस में कोई पैत्रिक सम्बन्ध नहीं है। प्राचीन काल के मनुष्य रूपी जीव आदम के पूर्वज नहीं थे। और न ही वे परमेश्वर की वाचा से जुड़े थे जो परमेश्वर ने आदम से वाचा बाँधी थी। (उत्पत्ति 1:28-30; 2:15-17)

इन मनुष्य रूपी जीवों के कंकाल चाहे कितना भी आधुनिक मानव के समान हों यह बात कोई मायने नही रखती है उस मुख्य प्रश्न के अनुसार कि क्या उन में सच में मानव की आत्मा या व्यक्तित्व था? उत्पत्ति 1:26-27 जो बताता है कि परमेश्वर एक बढ़िया स्तर के मनुष्य की रचना कर रहा था जब उसने आदम की रचना की थी। जिसका अर्थ है आदम ही भाषा मे कहा गया प्रथम मानव था। जैसा आधुनिक भाषा में कहा जाता है। आदम वह पहला मनुष्य थी जिसे परमेश्वर ने अपने ही स्वरूप में रचा था। आधुविक भाषा में हम कह सकते हैं कि वह पहली जीवित आत्मा था जो एक जीवित शरीर में देखा जा सकता था। और जो एक अदृष्य आत्मा है और परमेश्वर के स्वरूप में पाई जाती है। और विज्ञान में इसको नकारने का कोई सबूत नहीं है।

1:26-27

<u>प्रश्न 6. इसका क्या अर्थ है, कि मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है?</u>

नोट्सः

मनुष्य का एक विशेष शारीरिक जीवन है।

उत्पत्ति 2:7 पद कहता है, परमेश्वर ने मनुष्य को धरती की मिट्टी से बनाया था। और फिर उसमें जीवन का श्वास फूँका था और तब मनुष्य एक जीवित आत्मा बन गया था। मनुष्य का शरीर अन्य जन्तुओं के शरीर के समान उन तत्वों से परिपूर्ण है जो पृथ्वी में पाए जाते हैं। लेकिन वे उन पशुओं से भिन्न होते हैं जो परमेश्वर की आज्ञा द्वारा रचे गए थे। परमेश्वर के हाथों ने पहले मनुष्य की रचना की थी। मनुष्य को भी पशुओं के समान जीवन का श्वास दिया गया था। (उत्पत्ति 2:7; 7:22) लेकिन एक अन्तर था, पशुओं को श्वास परमेश्वर की आज्ञा से मिला था पर पहले मानव को परमेश्वर ने स्वयं उसके नथुनों में श्वास फूँका था। सो हम कह सकते हैं कि परमेश्वर ने स्वयं मनुष्य को साँस दिया था और उसके द्वारा जीवन।

मनुष्य का एक विशेष आत्मिक स्वभाव होता है।

उत्पत्ति 1:26-27 कहता है, कि मनुष्य की रचना और भी अधिक विशेष है क्योंकि वह त्रिएक परमेश्वर का निर्णय था। जो कहता है, "आओ हम मनुष्य को अपने ही स्वरूप में अपने समान बनाएँ।"और फिर परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही समान अपने ही स्वरूप में बना दिया था। मनुष्य को एक आत्मिक स्वभाव भी दिया गया था जो बिलकुल परमेश्वर के स्वभाव के समान था। उसके अन्दर परमेश्वर के वास्तविक और विशेष गुण भरे थे। देखा जाए तो वह परमेश्वर के

व्यक्तित्व का एक और प्रतिरूप था। इस कारण इस सृष्टि में मनुष्य की रचना विशिष्ट है। मनुष्य को छोड़ किसी में भी परमेश्वर का स्वरूप नहीं पाया जाता है।

मनुष्य का परमेश्वर के साथ एक अद्वितीय सम्बन्ध भी है।

उत्पत्ति 1:28-29 कहता है, परमेश्वर ने आदम से आमने सामने बातचीत की थी। यही परमेश्वर का मनुष्य पर पहला प्रकटीकरण था। इसका अर्थ है कि मनुष्य के पास वह योग्यता है जिसके द्वारा वह परमेश्वर के साथ बात-चीत कर सकता है। इसके इलावा परमेश्वर ने मनुष्य को काम दिया है कि वह सारी पृथ्वी को अपने अधीन करके सभी जीवित प्रणियों पर राज्य करे और पेड़ पौधों का अपनी ज़रूरत के अनुसार इस्तेमाल करे। इस रीति से परमेश्वर प्रकट करता है कि उसने पृथ्वी की रचना मनुष्य के लिए की थी। और उसने मनुष्य को अपनी सृष्टि का भंडारी और प्रबन्धक वना दिया है।

<u>तरीका 4.लागू करना</u> **प्रयोग में लाना**

ध्यान देनाः इस लेखाँश में कौन से ऐसे सत्य है जो मसीही लोग अपने जीवन में लागू कर सकते हैं?

अपने विचार बाँटें और लिख लेः आईए हम एक दूसरे के दिमाग में तूफान ला दें और उन सब सच्चाईयों को लिख ले जो हमें उत्पत्ति 1:1 – 2:4अ से जीवन में लागू करनी हैं।

ध्यान देः कौन सी ऐसी बात हमें लागू करनी है जो परमेश्वर चाहते है कि हम निजि रूप से अपने जीवन में लागू करें?

लिख लेः यह निजि लागू करने का सत्य जो आप अपने जीवन मे लागू करने वाले है उसे अपनी कापी पर लिख लें। अपने इस निजि चुनाव को दूसरों के साथ बाँटें।

(याद रहे हर व्यक्ति भिन्न सत्य का चुनाव कर सकता है या किसी सत्य को अन्य रीति से अपने जीवन पर लागू कर सकता है। नीचे कुछ उदाहरणों की सूची है।

1. <u>उदाहरणों की सूची जो उत्पत्ति 1:1 – 2:4अ से दोषी सिद्ध होने के बाद लागू किए जा सकते हैं।</u>

1:1,28 बाइबल में उत्पत्ति के पहले 2 अध्याय नहीं बताते हैं कि परमेश्वर ने सारी सृष्टि की रचना करने में कितना समय लगाया था, पर वह हमें बताते हैं कि किसने सभी चीज़ों की रचना की थी और किसके लिए की थी। - उन लोगों के लिए जिन को परमेश्वर ने अपने ही स्वरूप में रचना की थी।

1:1-2 परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना तो पहले से ही कर दी थी। उन 6 दिनों कि सृष्टि से पहले ही। उन विशेष 6 दिनों में जब परमेश्वर ने अपनी सृष्टि की रचना पूरी की तब उसने आज्ञाएँ दी थी कि सृष्टि में विशेषकर इस पृथ्वी पर सब कुछ रच जाए जो इस पृथ्वी की ज़रूरत थी।

1:11,21,24 इन पदों मे परमेश्वर प्रकट करते हैं कि सारी जीवित प्राणियों की जातियाँ मूल रूप से की गई सृष्टि से उत्पन्न नहीं हुई थी वरन कुछ की सृष्टि परमेश्वर ने स्वयें की थी।

1:27-28 परमेश्वर की योजना थी कि वह सारी पृथ्वी को ऐसे लोगो से भर दे जो उसके स्वरूप में बनाए गए थे।

1:28 परमेश्वर की अपने लोगों के लिए आज्ञा है कि वे सृष्टि की देखभाल करें।

1:31 सृष्टि की रचना पूरी करने के बाद जब परमेश्वर ने देखा तो कहा सब कुछ भला है। क्योंकि कि कहीं कोई बुराई नहीं थी।

2:2-3 परमेश्वर की इच्छा थी कि मनुष्य 6 दिन काम करें और फिर सप्ताह में एक दिन विश्राम करे।

2:4 बाइबल में उत्पत्ति के पहले 2 अध्याय प्राचीन लोगों की कोई काल्पनिक कहानी नहीं है। उत्पत्ति 2:4 कहता है कि यह तो स्वर्ग और पृथ्वी का कोई ऐतिहासिक व्यौरा है।

2. निजि रूप से सत्यों को लागू करने के उत्पत्ति 1:1 – 2:4अ से लिए गए उदाहरण।

मैं परमेश्वर की एक विशेष रचना हूँ, मेरा शरीर और मेरी आत्मा दोनो ही परमेश्वर के लिए बहुमूल्य हैं। इस लिए मैं कभी भी स्वयं को नीचा नहीं देखना चाहूँगा, अपने से घृणा नहीं करूँगा और न ही स्वयं का तिरस्कार करूँगा। मैं अपने शरीर और अपनी आत्मा की अच्छे से देखभाल करूँगा।

मैं परमेश्वर द्वारा दिए गए काम को गम्भीरता से लूँगा। परमेश्वर की रचना होने के कारण मैं अपने परमेश्वर को जानना चाहूँगा और उसी के स्वरूप में योग्यता से चलूँगा। मैं स्त्री और पुरुष की भिन्नता को भी गम्भीरता से लूँगा। और मैं प्रकृति की भी अच्छे से देखभाल करूँगा।

तरीका 5 प्रार्थना करो **प्रतिउत्तर**

आईए हम एक सत्य के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें उत्पत्ति 1:1 – 2:4अ में हमें सिखाया है।
(अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें कि बाइबल अध्ययन के दौरान आपने क्या सीखा है? और केवल एक या दो वाक्यों में ही प्रार्थना करें। और याद रखे कि दल के अन्य लोग भिन्न विषयों में बात करेंगे।)

5.	प्रार्थना (8 मिनट)	*मध्यस्थता* **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

निरन्तर 2 या 3 लोगों के दल बना कर एक दूसरे के लिए और संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करे

6.	तैयारी (2 मिनट)	*निर्धारित कार्य* **अगले पाठ के लिए**

दल के अगुवेः दल के सदस्यों को घर पर तैयारी का काम करने के लिखित रूप से दे दें।

1. समर्पणः किसी एक सत्य के प्रति जो आपके लिए सम्भव है स्वयं को समर्पित कर दे।
2. परमेश्वर के साथ निजि समयः मत्ती 15:1 – 18:20 अध्यायों में से हर दिन आधे अध्याय का अध्ययन करें। और इसका अध्ययन करने के लिए अपने मनपसन्द सत्य का तरीका इस्तेमाल करें।
3. मुँह ज़ुबानी याद करना बाइबल में सीखे नए बाइबल वचन को याद कर लें। "प्रार्थना का उत्तर पाने का आश्वासन।"(युहन्ना 16:24) हर दिन पिछले दो बाइबल के वचनों को फिर से बोल कर देखें यह जानने को कि वे अब भी याद हैं या नहीं।
4. प्रार्थनाः इस सप्ताह किसी विशेष विषय पर प्रार्थना करें और देखें परमेश्वर इस सप्ताह आपके लिए क्या कर रहे हैं। (भजन 5:3)
5. अपनी सप्ताह के नोट्स की कापी को पूरा करें। आपने कितने नए चेले बनाए हैं उनकी सूची पूरी करें। अपने नोट्स में परमेश्वर के साथ अपने निजि समय में आपने क्या सीखा है उसे भी जोड़ लें। जो वचन आपने याद किए हैं उनको भी लिख लें। साथ ही आपके बाइबल अध्ययन के नोट्स भी जोड़ लें। यही आपकी तैयारी गिनी जाएगी।

अध्याय - 5

1.	**प्रार्थना**

दल के अगुवेः अपने दल और पाठ्यक्रम को जो चेले बनाने के लिए है उसे परमेश्वर को समर्पित करें।

2.	**आराधना** (20 मिनट)	***(परमेश्वर के विशिष्ट गुण)*** **परमेश्वर एक जीवित व्यक्ति है**

परिभाषा

आराधना क्या है? "आराधना" की परिभाषा है:

आराधना वह अभिव्यक्ति है जो हमारी परमेश्वर के प्रति उपासना, समर्पण और निष्ठा को प्रकट करती है। जो हम अपनी भिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं और अपनी प्रति दिन की जीवन शैली से प्रकट करते हैं।

परमेश्वर की आराधना करने के लिए, हमें ज़रूरत है कि हम अपने परमेश्वर को जान लें कि हमारा परमेश्वर कौन है। हर आराधना के समय हम परमेश्वर के केवल एक ही विशिष्ट गुण को जान सकते हैं।

मनन करें :

पढ़े या शिक्षा देः "परमेश्वर एक जीवित व्यक्ति है"

मूर्तियों का स्वभावः

कुछ लोग मूर्तियाँ बनाते हैं जो लोगों के स्वरूप में होती हैं और हालाँकि इन मूर्तियों की आँखे होती हैं परन्तु वे देख नहीं सकती उनके कान होते हैं पर वे सुन नहीं सकती । ये मृत पत्थर या लकड़ी की मूर्तियाँ न तो बोल सकती है और न ही कुछ कर सकती हैं। अन्य लोग अपने दार्शनिक विचारों मे एक छवि बना लेते हैं कि उनके एकमात्र परमेश्वर का रूप शायद ऐसा ही होगा। तौभी मनुष्य का मन चाहे जितने भी परमेश्वरों की रचना करे चाहे वे बहुदेववादि हों या एकईश्वरवादी हों उन में से किसी में भी वास्तिवक जीवन नहीं है।

मूर्तियों का प्रभावः

मनुष्य द्वारा बनाई गई परमेश्वर की मूर्ति की आराधना पूरी तरह से व्यर्थ है। ऐसी मूर्ति या ऐसा परमेश्वर कभी भी प्रतिउत्तर नहीं देता । सबसे बुरी बात जिसके विषय में बाइबल चेतावनी देती है वह यह हैः कि जो लोग ऐसे परमेश्वर जो अपने मन से और भावनाओं से अपनी चित्रकला की सहायता से और अपने उद्देश्य के कारण या अपने धार्मिक विचारों के कारण उनको गढ़ लेते हैं। वे लोग जो ऐसी मनुष्य द्वारा बनाई मूर्ति या मनुष्य द्वारा गढ़े हुए देवता (भजन 115:8) की आराधना करते हैं वह उन्ही की मूर्ति के समान बन जाते हैं। वे जो धन के देवता की आराधना करते हैं वे भौतिकवादी (साँसारिक) बन जाते हैं। और जो कामदेवता वीनस की आराधना करते हैं वें अनैतिक यौन सम्बन्धों में फँस जाते हैं।

इसी रीति से जो जिस देवता की आराधना करता हैं वह उसी के समान व्यवहार को प्रकट करता है। एक बदला लेने वाला आतंकवादी एक ऐसे देवता की आराथना करता है जो बदला लेता है। एक व्यक्ति जो सदा दूसरों को सताता है वह एक ऐसे देवता की आराधना करता है जो निरन्तर लोगों को सताता है। और एक व्यक्ति जो क्षमा नहीं कर सकता है और सदा कड़वाहट से भरा रहता है वह ऐसे ही देवता की आराधना करता है जो क्षमा नहीं कर सकता है।

बाइबल का सिद्धान्तः

मनुष्य द्वारा बनाए गए देवताओं या उनके द्वारा गढ़े हुए देवता के विपरीत जो लोग जीवित परमेश्वर की आराधना करते हैं, वे दिन ब दिन बाइबल के उस जीवित परमेश्वर के समान बनते जाएँगे! आराधना हमें बदल देती है उन क्षेत्रों में जहाँ हमें समझना है कि हम कौन हैं और हम कैसे हैं! इस प्रकार जब हम अपने पवित्र, धर्मी और जीवित परमेश्वर

की आराधना करते हैं तब हम और अधिक पवित्र और धर्मी बनते जाएँगे। और जब हम एक प्रेमी और दयालु परमेश्वर की आराधना करेंगे तो हम भी प्रेमी और दयालु बनते जाएँगे!

2. जीवित परमेश्वर का स्वभावः

पढ़ेः निर्गमन 3:1-12

परमेश्वर एक जीवित व्यक्ति है और उसके निजि कार्य हैं।

- परमेश्वर कोई व्यक्तित्वहीन सामर्थ नहीं है वरन वह तो एक जीवित व्यक्तित्व है। वह जीवित है।
- परमेश्वर स्वयं को आग की लपटों में और प्रभु के स्वर्गदूत में प्रकट करता है।
- परमेश्वर हम से स्पष्ट रूप से बातें करता है। इस से हम जान सकते हैं कि परमेश्वर क्या कह रहे हैं। हम परमेश्वर के विचारों, भावनाओं, इच्छाओं, और मर्ज़ी को इस हद तक कि कि जो कुछ वह हम पर प्रकट कर रहा है हम उसे समझ सकते है।
- परमेश्वर सब कुछ देख सकते हैं वे केवल वह ही नहीं देख सकते हैं जो हम कर रहे हैं वरन वह भी जो अदृष्य है। वह हमारे दुख और पीड़ा को और हमारे जीवन के भीतर क्या चल रहा है उसे भी देख सकते हैं।
- परमेश्वर सब कुछ सुन सकता है। वह हमारी बातें, हमारी फुसफुसाहटे, हमारी सहायता की पुकार और हमारी प्रार्थनाएँ भी सुन सकता है।
- परमेश्वर के पास एक दिल है जो भावनात्मक है। उसे हमारे दुख-सुख और द्वन्द की चिन्ता है। बाइबल बताती है कि वह अपने लोगों से प्रेम करता है और अपना पवित्र क्रोध उन पर दिखाता है जो उसका विरोध करते हैं। परमेश्वर भी दुखी और आनन्दित होता है।
- परमेश्वर हमारे स्थान पर कार्य करता है स्वर्ग से नीचे आकरहमें बचाता है। इसके इलावा परमेश्वर हमें कोई अर्थपूर्ण कार्य देकर हमें स्वयं के साथ मिला लेता है जैसे उसने मूसा को साथ मिला कर इस्राएल में काम कराया था। और परमेश्वर कभी भी हमे किसी काम को करने के लिए अकेला नहीं भेजता है। वह स्वयं हमारे साथ चलता है और उस काम को पूरा कराता है। ठीक वैसे ही जैसे उसने मूसा के साथ चल कर उस का काम पूरा कराया था।

परमेश्वर एक जीवित व्यक्ति है जिस ने मनुष्य को अपने ही रूप में रचा थाः

एकमात्र परमेश्वर जिस ने स्वयं को बाइबल में प्रकट किया है वह मनुष्य की कल्पना की रचना नहीं है। परमेश्वर के निजि कार्य हैं जैसे कि बातें करना, देखना, सुनना, अनुभव करना, तर्क करना, अपनी मर्ज़ी प्रकट करना, और कार्य को पूरा करना, इसलिए नहीं क्योंकि हम मनुष्य वह सब कुछ कर सकते हैं वरन इस लिए कि परमेश्वर मनुष्य के मन की प्रस्तुति नहीं है। वह ऐसा परमेश्वर नहीं है जिसे मनुष्य के विचारों के अनुसार रचा गया है। वरन वह तो स्वभाव से ऐसा जीवित व्यक्ति है जो पूरी तरह से निजि व्यक्तित्व का मालिक है।

वह कोई मनुष्य नहीं था जिसने परमेश्वर को मनुष्य के स्वरूप में रचा था। बल्कि वह परमेश्वर ही था जिस ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप में रचा था। परमेश्वर एक व्यक्ति है इसलिए उसने अन्य व्यक्तियों की रचना की थी जो परमेश्वर के समान हैं। हम मनुष्य एक दूसरे से बातें कर सकते हैं क्योंकि परमेश्वर बातें कर सकता है। हम देख सकते हैं क्योंकि परमेश्वर देख सकता है, हम भी तर्क और बुद्धि से सोच सकते हैं क्योंकि परमेश्वर तर्क और बुद्धि से सोच सकता है, हम चुनाव और निर्णय ले सकते हैं क्योंकि परमेश्वर चुनाव और निर्णय ले सकता है। क्योंकि परमेश्वर जीवित है हम मनुष्यों की भी समान प्रक्रियाएँ हैं। फिर भी हमारी निजि प्रक्रियाएँ परमेश्वर की तुलना में सीमित हैं।

परमेश्वर एक जीवित व्यक्तित्व है जो मनुष्यों के साथ सम्बन्ध रखता हैः

क्योंकि परमेश्वर और हम मनुष्य दोनो ही जीवित प्राणी हैं इसलिए हम एक दूसरे से सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं और एक दूसरे के साथ संगति भी कर सकते हैं। एक व्यक्ति होने के नाते हम परमेश्वर और हम के साथ बातचीत कर सकते हैं, एक दूसरे को जान सकते हैं, समझ सकते हैं, एक दूसरे को महसूस कर सकते हैं, हम एक दूसरे के साथ

संगति और काम भी कर सकते हैं। यदि परमेश्वर एक निजि रूप से सम्बन्ध बनाने वाला नहीं होता तो हमारा परेश्वर के साथ कभी भी घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करना सम्भव ही नहीं होता। लेकिन क्योंकि परमेश्वर एक जीवित व्यक्ति है ऐसा निजि सम्बन्ध स्थापित होना सम्भव ही नहीं है वरन वास्तव में स्थापित हो चुका है।

आराधनाः
परमेश्वर की आराधना उसके इस सर्वोत्तम गुण के लिए करें क्योंकि वह जीवित है और आप उसे जानते हैं। तीन-तीन व्यक्तियों के दल बना कर आराधना करें।

3.	**गवाही बाँटना**(20 मिनट)	***[शान्त समय]*** **मत्ती 15:1 - 18,20**

बारी-बारी वचन बाँटें या निज लिखे नोट्स से पढ़ेः संक्षेप में जो कुछ भी आपने परमेश्वर के साथ अपने निजि समय में जो लेखाँश आप को दिया गया है उससे सीखा है उसे सबके साथ बाँटें। (मत्ती 15:1 - 18,20)

4.	**बाइबल शिक्षा** (70 मिनट)	***बाइबल*** **बाइबल को प्रयोग करने के 7 तरीके**

प्रोत्साहित करना, बाइबल का इस्तेमाल क्यों करें?

1. प्रभु यीशु मसीह का उदाहरणः

बाइबल के प्रति उसकी धारणा को सिद्ध करनाः
यीशु मसीह मानते थे कि बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया वचन है। सभी लेखकों ने सारे वचन पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखे थे। (मत्ती 22:43) वे बाइबल के वचन को परमेश्वर का अधिकारपूर्ण वचन मानते थे। वह उसे परमेश्वर का हर परिस्थिति में आत्मा में बोला गया अन्तिम वचन मानते थे। (मत्ती 4:1-10) वह उन लोगों को आशीषित मानता था जो परमेश्वर के वचन को सुनते थे और उसे आज्ञा समझ कर मानते थे। (लूका 11:28; प्रकाशितवाक्य 1:3)

यीशु मसीह स्वयं वह व्यक्ति है जिसने बाइबल को प्रेरित किया और वह स्वयं ही बाइबल में निहित विषय सामग्री हैः
1 पतरस 1:10-12; प्रकाशितवाक्य 19:10.
नोट्सः प्रेरित पतरस ने कहा था, यीशु की आत्मा ने ही पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं को प्रेरित किया था कि वह पुराने नियम को लिखें। यीशु ने कहा था कि सच्ची आत्मा और भविष्यद्वाणी के शब्द वही हैं जो यीशु की पवित्र आत्मा ने पुराने नियम में सिखाए थे। (1 पतरस 1:10-12) और वह जो भी यीशु मसीह ने नए नियम में सिखाया था (मत्ती 5:17; युहन्ना 3:11-13; 5:39; 8:18-19, 24, 31-32, 51, 58) इसको अन्य शब्दों मे ऐसे भी कह सकते हैं इस बात की घोषणा करना जो यीशु मसीह ने अपने विषय में कहा था उसके वचन और कार्य जो बाइबल में दिए गए है वह तो भविष्यवाणी करने का आत्मिक वरदान है। (प्रकाशितवाक्य 19:10)
(बौक्सर का शब्दकोष ए.एम.डी.टी. जिनक्रिच पृष्ट 730) यह एक बाइबल की भविष्यद्वाणी है जो दूसरे लोगों द्वारा दी गई थी पर यह अपनी इच्छा से दी गई भविष्यद्वाणी नहीं है वरन वह तो यीशु मसीह की अपने क्रूस पर मारे जाने की घोषणा है। (1 कुर.2:2 cf. 4:6)

यीशु मसीह ने बाइबल (परमेश्वर के वचन) का प्रयोग कैसे किया था?
पढ़ेः लूका 2: 46-47
नोट्सः अपने मानव स्वभाव में यीशु ने छोटी आयु से ही परमेश्वर के वचन का अध्ययन शुरू कर दिया था।

उसने उसे सुन कर सीखा था, प्रश्न पूछ कर और अन्य लोगों के साथ विचार-विमर्श करके सीखा था।
उस समय में परमेश्वर का वचन खर्रे की तरह लपेट कर लिखा जाता था जो पैपीरस या चमड़े का बना होता था। यीशु मसीह परमेश्वर के वचन का बहुतायत से इस्तेमाल करते थे। वे उस वचन का अपने निजि जीवन में पालन भी करते थे। (लूका 4:21; 24:25-27, 40-45) वे परमेश्वर के वचनों को शत्रु के विरुद्ध बोलते थे। (मत्ती 4:4,7,10) वे परमेश्वर के वचन को सत्य की शिक्षा देने के लिए भी इस्तेमाल करते थे। (मत्ती 5:21-22,27,31-34,38-39,43-44) वह उसे प्रश्नों के उत्तर देने के लिए भी इस्तेमाल करते थे। (मत्ती 19:3-6) झूठी शिक्षाओं को खंडित करने के लिए भी यीशु वचन का इस्तेमाल करते थे। (मत्ती 22:42-46) लोगों के पाखण्डी जीवन का खुलासा करने के लिए (मरकुस 7:5-9) और भविष्यद्वाणी करने के लिए भी यीशु ने वचन का प्रयोग किया था। (मत्ती 26:31)

यीशु ने स्वयं और लोगों ने उसकी शिक्षा के विषय में क्या कहा था?
पढ़ेः युहन्ना 7:14-18)
नोट्सः हालाँकि यीशु के पास कोई धर्म शास्त्र की कोई शिक्षा नही थी जैसा कि रब्बी के स्कूलों में दी जाती थी। पर वे परमेश्वर का वचन अच्छी तरह से जानते थे। यीशु मसीह की सारी शिक्षा और प्रशिक्षण एकमात्र सच्चे और जीवित परमेश्वर से जिसने उसे इस पृथ्वी पर भेजा था, उसी की ओर से ही आती थी। वे दावा करते थे कि बिना किसी झूठ का सहारा लिए उन्होंने सदा सच ही बोला था।

यीशु मसीह ने कैसे लोगों की व्यक्तिगत प्रतिबद्धता का विकास किया था?
पढ़ेः लूका 10:25-28
नोट्सः यीशु एक प्रश्न का उत्तर कई बार एक अन्य प्रश्न से देते थे। - यह पिंग-पॉग खेल का सिद्धान्त है। इस रीति से लोगों को अपने आप सच्चाई तक पहुँचाना था। बाइबल का वह सच जिसे हम अपने आप खोज कर निकालते हैं। वही उनके लिए उनकी धारणा बन जाती है। इस लिए किसी प्रश्न का उत्तर देने के स्थान पर लोगो को बाइबल का संदर्भ वचन बताएँ। जिससे वे उसे पढ़ कर स्वयं उस सत्य की खोज करके उसे जान जाएँ।

2. <u>पौलूस प्रेरित का उदहरणः</u>

बाइबल के विषय में उसकी प्रतिबद्धता
प्रेरित पौलूस बाइबल को परमेश्वर के वचन द्वारा प्रेरित वचन मानते थे। वह बाइबल के हर वचन को परमेश्वर पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित वचन मानते थे।(2 तिमु. 3:16-17) वह वचन को परमेश्वर का अधिकारपूर्ण वचन मानते थे। वह उसे हर परिस्थिति में परमेश्वर का अन्तिम वचन मानते थे। (प्रेरितों के काम 13:34-35) प्रेरित पतरस का कहना था कि परमेश्वर ने पौलूस को अपनी 13 पत्रियों को लिखने के लिए अपनी बुद्धि और समझ दी थी। (2 पतरस 3:15-16)

पौलूस एक छोटे दल में बाइबल का अध्ययन कैसे करता था?
पढ़ेः प्रेरितों के काम 17:2-4
नोट्सः पौलूस की आदत थी कि वह ऐसे लोगों का दल ढूँढता था जिसे परमेश्वर के वचन जो बाइबल में लिखे हैं उन को सीखने की इच्छा रखते थै। हर हफ्ते वह दल मिलता था। पौलूस उनके साथ तर्क करता था, जिसका अर्थ है कि वह उन शब्दों पर विचार विमर्श करता था और दल के सदस्यों को उनके विषय में सोचने को कहता था। क्योंकि परमेश्वर का वचन वही है जिसे मन ग्रहण करता है। उसका अर्थ यह नही है कि उस पर बहस की जाए। वचनो के विचार-विमर्श के समय पौलूस एक अगुवा होने के नाते दल को समझाने की कोशिश करता था कि बाइबल की सच्चाईयों को उनके सामने साबित कर सके। समझाने का अर्थ है कि वह बाइबल को पूरी तरह से खोल कर दल के सामने रख दे। इसका अर्थ यह भी है कि वह कठिन लेखाँशों के अर्थों को भी समझा कर सिखाना। पौलूस का छोटे दल में बाइबल की शिक्षा देने का लक्ष्य यह भी था कि वह लोगों को मजबूर कर दे कि वे बाइबल की सच्चाईयों पर विश्वास करने लगें। इफसुस में पौलूस ने दो साल तक ऐसे अनेक विचार विमर्श किए थे। (प्रेरितों के काम 19:8-10)

पौलूस का शिक्षा देने और प्रचार करने का लक्ष्य क्या था?
पढ़ेः प्रेरितों के काम 20:20,27,30-31

नोट्सः पौलूस का उद्धेश्य था कि वह लोगों को परमेश्वर की सारी मर्ज़ी को समझा दे और वह सब भी जो उनके लिए सहायक सिद्ध हो। एक तरफ जहाँ उसने सभी महत्त्वपूर्ण शिक्षाओं को सिखाया था वहाँ दूसरी ओर उसने उन्हें ऐसा कुछ भी नहीं सिखाया था जो उनके लिए किसी तरह से सहायक न हो। पौलूस ने मसीही लोगों को चेतावनी दी थी कि वे स्वयं को मूर्ख बहस से न जोड़ें और न ही झूठी शिक्षाओं से जुड़ जाएँ। (तिमु 1:3-7)

पौलूस के शिक्षा देने और प्रचार करने के क्या नियम थे?
पढ़ेः 1 कुर. 4:6
नोट्सः पौलूस का सबसे बड़ा नियम यह था कि वह कभी भी ऐसा कुछ नहीं सिखाता था जो बाइबल में न लिखा हो। इसके लिए यीशु के द्वारा दी गई चेतावनी पर ध्यान दें जो प्रकाशितवाक्य के 22:18-19 में लिखि है, "यदि कोई मनुष्य इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक में कुछ बढ़ाएगा या उसमे से कुछ घटाएगा तो परमेश्वर उसका नाम जीवन की पुस्तक से काट कर बाहर निकाल देगा, जिसका वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।"

3. <u>बिरिया के लोगों का उदाहरण:</u>
बिरिया के लोग कैसे बाइबल के वचनों का प्रयोग करते थे?
पढ़ेः प्रेरितों के काम 17:10-12

नोट्सः बिरिया के लोग बाइबल के वचन को सुनते थे और उसकी शिक्षाओं को सही रीति से उत्सुक्ता से ग्रहण करते थे। वे हर दिन बाइबल से जाँचते थे कि प्रचारक सही शिक्षा दे रहा है या नहीं। सब कुछ बाइबल के अनुसार सच है, कहीं कुछ झूठ तो नहीं है। वे परमेश्वर के वचन के विषय में अपनी ही एक धारणा विकसित करना चाहते थे। वचन को जाँचने (जीः अनाक्रीनो) का शाब्दिक अर्थ है ढूँढ कर सच खोज निकालना, और प्रश्न पूछ कर उसे जान लेना, सत्य को पहचान कर उसे ऊँचा उठाना। इसका अर्थ यह भी है कि ध्यान से और गहराई से खोज करने की ज़रूरत है जो लगे मानों वह कानूनी प्रक्रिया है। सो इस रीति से यह सही और निजि घारणा बनाने के लिए ज़रूरी है कि सभी धार्मिक विषयों को पहले बाइबल से जाँच लिया जाए। सब से अच्छा तरीका यही है कि हम एक छोटे मसीही दल के साथ सत्य की जाँच करें।

4. <u>एज़रा का उदाहरण</u>
एज़रा ने कैसे परमेश्वर के वचन बाइबल का प्रयोग किया था?
पढ़ेः एज़रा 7:10

नोट्सः एज़रा एक महान शिक्षक था। उसने स्वयं को तीन चीज़ों के लिए समर्पित किया था। पहला बाइबल अध्ययन, दूसरा बाइबल की शिक्षाओं का जीवन में पालन करना और तीसरा बाइबल की सच्चाईयों को दूसरों को सिखाना। यह सब विद्यार्थियों और दल के अगुवों के लिए एक उत्तम उदाहरण है। इससे पहले कि आप बाइबल के इस सच को दूसरे को सिखाएँ ज़रूरी है कि आप स्वयं पहले इसका अध्ययन करें और बाइबल के इस सत्य का अपने जीवन में पालन करें।

5. <u>सेना के अगुवे यहोशु और दाऊद के उदाहरण</u>
परमेश्वर ने क्या वायदे किए थे और लोगों ने क्या अनुभव किया था?
पढ़ेः यहोशु 1:7-9;भजन 1:1-3

नोट्सः परमेश्वर ने सेना के अगुए यहोशु को आज्ञा दी थी कि वह लगातार परमेश्वर के वचन पर मनन करे जिस से

वह सावधानी से वह सब करे जो बाइबल के वचन में लिखा है। परमेश्वर ने वायदा किया था कि ऐसा करने से वह महसूस कर सकेगा कि परमेश्वर की नज़रों में सफलता क्या है और उसके लिए क्या लाभदायक है। राजा दाऊद ने लगातार अपने जीवन में इसे महसूस किया था कि बाइबल के वचन पर लगातार मनन करने के कारण परमेश्वर ने उसे दुष्ट लोगों से दूर रखा था और उसके जीवन को फलवन्त बनाया था। इसलिए बाइबल के वचन पर मनन करना और उसे अपने जीवन में लागू करना आपके जीवन पर भारी असर करेगा और आपको बड़ा प्रतिफल देगा। आप अपने मार्ग को सुखी और समृद्ध बना लेंगे। और आप सफल होंगे।(अर्थात आप जीवन के अर्थ को समझ पाएँगे और समझदारी से कार्य करेंगे।) और वह आपके जीवन को फलवन्त और आकर्षक बना देगा।

बाइबल अध्ययन के 5 नियमः

उपर दिए बाइबल के लेखाँश हमें बाइबल अध्ययन के लिए 5 अच्छे नियम सिखाते हैं।

- **छोटे दल**
  एक छोटा दल बनाएँ जो बाइबल का अध्ययन करना चाहता हो। अच्छा होगा यदि यह अध्ययन हर हफ्ते हो।

- **तथ्यों को ध्यान से देखेः**
  तथ्यों को ध्यान से देख कर सत्य को खोज कर निकालें विशेषकर परमेश्वर की पूरी मर्ज़ी के साथ और जो कुछ भी सहायक सिद्ध हो सकता है।

- **सत्य का सही अर्थ समझनाः**
  प्रश्न पूछें और एक दूसरे के दृष्टिकोण(विचारों) को सुने और समझें। लेखाँश में छुपे सच पर विचार-विमर्श करें। कठिन शब्दों और विचारों के अर्थ समझाएँ। हर प्रसंग में हर बात को बाइबल के वचन से समझाएँ। बाइबल को सही रीति से समझाएँ। ऐसे में बाइबल के अन्य संदर्भों में लिखे लेखाँशों को ध्यान में रखते हुए समझाएँ।

- **सत्य को जीवन में लागू करेः**
  इस बात पर मनन करें कि परमेश्वर आप से क्या जानने को, बनने को, और करने को कह रहा है। उसके बाद ही उस सत्य को जीवन में लागू करें जो परमेश्वर आपसे लागू करने को कह रहा है।

- **सत्य को सूत्र के अनुसार सुव्यवस्थित करनाः**
  मुख्य सत्यों को सूत्र के अनुसार अपनी धारणा बनाएँ, और निर्णय लें और उन्हें जीवन में लागू करने को सुव्यवस्थित करें।

ब. उदाहरणः एक मसीही की बाइबल के प्रति ज़िम्मेदारी

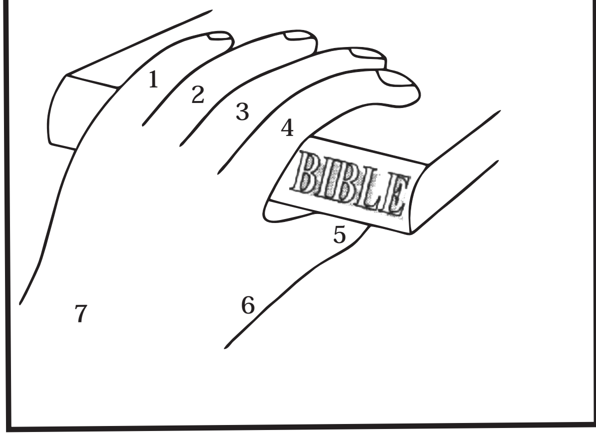

1. **बाइबल को सुने**
   पढ़ेः लूका 11:28; प्रकाशितवाक्य2:7
2. **बाइबल को पढ़े.**
   *पढ़ेः*व्यवस्थाविवरण 17:18-20;नहेम.8:8; 1 तिमु.4:13
3. **बाइबल का अध्ययन करे**
   पढ़ेः एज़रा 7:10;प्रेरितों के काम 17:11
4. **बाइबल के पद याद करें**
   पढ़ेः भजन संहिता 119:9,11
5. **बाइबल के संदेशों पर मनन करें**
   पढ़ेः यहोशु 1:8
6. **बाइबल के संदेश को लागू करें**
   पढ़ेः लूका 6:46-49;युहन्ना 14:21
7. **बाइबल का संदेश दूसरों तक पहुँचाएँ**
   पढ़ेः कुलुसियों 3:16, 2 तिमु. 4:2

आप जितना अधिक बाइबल को इन 7 तरीकों से इस्तेमाल करेंगे उतना अधिक आप परमेश्वर के वचन को समझने पाएँगे।

ग. व्यवहारिकःबाइबल को प्रयोग करने के 7 व्यवहारिक तरीके

प्रशिक्षण के इस पाठ्यक्रम के दौरान हम बाइबल का सही रीति से इस्तेमाल करना सीखेंगे। हम बाइबल को सुनना, पढ़ना, अध्ययन करना, बाइबल के पद याद करना, बाइबल के सत्यों पर मनन करना, उन सत्यों अपने जीवन में लागू करना और उनको दूसरे लोगों तक पहुँचाना भी सीखना होगा।
शिक्षा देः बाइबल के इन 7 व्यवहारिक तरीकों को सिखाएँ।

1. बाइबल को सुनेः

परमेश्वर की आवाज़ को सुनना सीखिये क्योंकि तब हम बाइबल के वचन से सीधे परमेश्वर की आवाज़ को सुनते हैं। और हम आशा कर सकते हैं कि परमेश्वर हम से कुछ कहना चाहता है।

2. रोज़ बाइबल पढ़ेः

बाइबल को शुरू से आख़िर तक पढ़ें।
एक, दो या तीन साल लगा कर बाइबल को शुरू से आख़िर तक पढ़ें। बाइबल में 1187 अध्याय हैं। आप चाहें तो हर दिन 3 अध्याय और खाली दिन में 5 अध्याय पढ़ कर एक साल में पूरी बाइबल पढ़ सकते हैं। रोज़ एक अध्याय पुराने नियम का और एक नए नियम का पढ़ें। चाहे तो किसी पठन योजना का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। (अतिरिक्त लेख 3 की पुस्तिका से जानकारी प्राप्त करें) यह नियमावली बाइबल के महत्त्वपूर्ण लेखाँशों को खोजने में आपकी मदद करेगी और साथ ही बाइबल के विशेष विषयों का अध्ययन करने में भी मदद करेगी।

अपने परिवार के बाइबल पढ़ कर सुनाएँ
हर दिन अपने परिवार को बाइबल का एक लेखाँश पढ़ कर सुनाएँ। उदाहरण के लिए दिन के मुख्य भोजन के समय के बाद। (इस लेखाँश के विषय में बातचीत करें और उसके लिए प्रार्थना भी करें। (व्यवस्थाविवरण 6:4-9)

दूसरे लोगों को बाइबल पढ़ कर सुनाएँ।
ऐसे अवसर खोजें जब आप बाइबल के वचन दूसरे लोगों को पढ़ कर सुना सकते हैं। जो मसीही हैं और उन्हें भी और जो गैर-मसीही हैं।

3. हर हफ्ते बाइबल का अध्ययन करें

बाइबल अध्ययन के विद्यार्थियों या चेलो का एक छोटा दल बनाईए।
ऐसे लोगोकी खोज करें जो बाइबल का अध्ययन करना चाहते हैं और एक छोटा सा दल बनाएँ। हर सदस्य बाइबल अध्ययन की सभा के लिए आने से पहले स्वयं को तैयार कर के आए। सो जब बाइबल अध्ययन की सभा में आएँ तो वे जब सत्य की खोज में, विचार-विमर्श करने में, अपनी गवाही या विचार बाँटने में, और सत्य को सही रूप से अपने जीवन में लागू करने में भाग ले सकें। यह अच्छा होगा यदि वे हफ्ते में एक बार बाइबल अध्ययन और प्रार्थना की सभा में ज़रूर मिलें।

बाइबल अध्ययन के लिए भिन्न तरीके सीखें।
बहुत से तरीके हैं जिसके द्वारा बाइबल के अध्ययन में सहायता की जा सकती है। एक पद के द्वारा, एक बाइबल की

बाइबल की एक पुस्तक के द्वारा, बाइबल के एक व्यक्तित्व के द्वारा, या बाइबल के केवल एक विषय के द्वारा। इस पाठ्यक्रम में आप एक बहुत अच्छा तरीका सीखेंगे, जिसका नाम है **पाँच कदमों का तरीका।** जिसका प्रयोग आप बाइबल के हर लेखाँश के लिए कर सकते हैं। (नियमावली 1 के - अतिरिक्त लेख 4 की पुस्तिका देखें)

4. <u>नियमित रूप से बाइबल के पदों को याद करेः</u>
नियमित रूप से बाइबल के पदों याद करने का अभ्यास करें। और ध्यान रखें कि जो पुराने पद आपने याद किये थे वे याद हैं या भूल गए हैं। (नियमावती 5 का 5 पूरक देखें)

5. <u>बाइबल की सच्चाइयों पर मनन करेः</u>
सीखे और अभ्यास करें जिससे आप लगातार बाइबल की सच्चाइयों पर मनन करते रहें। इसके लिए अधिक समय और अनुशासन की ज़रूरत होती है। मसीही मनन करने का तरीका अन्य धर्मों के मनन करने के तरीके से भिन्न होता है। अन्य धर्मों में मनुष्य स्वयं मनन का केन्द्र होता है जबकि मसीही मनन करते समय हमेशा परमेश्वर और उसके वचन ही मनन का केन्द्र होते हैं। मसीही विश्वास में मनन का केन्द्र परमेश्वर और उसके वचन होते हैं। वह तो हमेशा एक दूसरी रीति पर केन्द्रित होता है जिसमें परमेश्वर और मनन करने वाले के बीच सम्वाद होता है। यह मनन विशेषकर परमेश्वर के साथ एकान्त में समय बिताते समय, प्रार्थना के समय, पदों को याद करते समय या फिर बाइबल का अध्ययन करते समय ही होता है। **मसीही मनन के चार कदम है - विचार करो, प्रार्थना करो, सम्बन्ध जोड़ो और उसे लिख लो।** (देखे नियमावली 1 का अतिरिक्त लेख 1 का 4 कदम))

6. <u>बाइबल की सच्चाई को जीवन में लागू करेः</u>

बाइबल की सच्चाई को अपने जीवन में लागू करें।

लागू करने का उद्देश्य
परमेश्वर ने आपको बाइबल केवल इसलिए नहीं दी है जिससे आप अपना ज्ञान बढ़ा सकें वरन इसलिए भी कि आप अपना जीवन बदल सकें।

लागू करने की सम्भावनाएँ
विचार करें जो भी अनेक बाइबल के सत्य हम ने सीखे हैं उनको हम अपने निजि जीवन में तथा संसारिक जीवन में कहाँ-कहाँ प्रयोग कर सकते हैं। बाइबल का कोई भी सत्य एक से अधिक स्थानों पर प्रयोग किया जा सकता है। स्वयं से

क्या कोई सच है जिस पर विश्वास करना चाहिए?	क्या कोई ऐसा व्यवहार है जिसे बदलना है?
क्या कोई ऐसी आज्ञा है जिसे मानना ज़रूरी है?	क्या कोई ऐसा पाप है जिससे बचना ज़रूरी है?
क्या हम किसी वायदे का दावा कर सकते हैं?	क्या कोई उदाहरण है जिसका हम अनुकरण करें?
क्या बुद्धि लगाने की ज़रूरत है?	क्या बाँटने के लिए कोई अच्छा संदेश है?

खुद पर लागू करनाः
परमेश्वर से पूछें कि वह आपके लिए क्या चाहता है कि आप जाने, किस पर विश्वास करें, क्या बन जाएँ या फिर क्या करें। वास्तिवक बनने की कोशिश करें और खुद पर निजि रूप से सच्चाईयाँ लागू करें। विशेषकर वे जिनका आप एक हफ्ते तक अभ्यास कर सकते हैं। लिख कर रखे कि परमेश्वर आपसे क्या लागू करने को

कह रहे हैं।

लागू करने में आपने कितनी सफलता पाई है:
हर दिन प्रार्थना में परमेश्वर से माँगे कि वह आप को निजि रूप से जो सीखा है उसे लागू करने में सहायता करें। फिर हर हफ्ते अपने छोटे दल के साथ इस बात की गवाही दें कि आप ने निजि रूप से सत्य को लागू करने में कितनी सफलता पाई है।

7. बाइबल की जो सच्चाई आपने सीखी है उसे दूसरों तक पहुँचाएँ

जो कुछ आपने पढ़ा है, अध्ययन किया है, याद किया है, उन बाइबल की सच्चाईयों को बता कर, गवाही देकर, शिक्षा देकर, प्रचार करके, दूसरों को उत्साहित करके या डाँट-फटकार कर चेतावनी देकर दूसरों तक पहुँचाएँ।

5.	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***प्रतिक्रियाएँ*** **परमेश्वर के वचन के प्रति उत्तर में प्रार्थना**

बारी से: दल में बारी-बारी से एक छोटी प्रार्थना करें। उसके लिए जो कुछ भी आज आपने सीखा है।
या फिर पूरे दल को 2 या 3 के छोटे दलों में बाँट कर जो भी सीखा है उसके प्रतिउत्तर में प्रार्थना करें।

6.	**तैयारी** (2 मिनट)	***निर्धारित कार्य*** **अगले पाठ के लिए**

दल के अगुवे: दल के सदस्यों को घर के लिए लिखित में काम दे और सभी सदस्य उसे अपनी कापी में उतार लें।

1.समर्पण: किसी एक सत्य के प्रति जो आपके लिए सम्भव है स्वयं को समर्पित कर दे।

2.परमेश्वर के साथ निजि समय:मत्ती 18:21 – 21:46 अध्यायों में से हर दिन आधे अध्याय का अध्ययन करें। और इसका अध्ययन करने के लिए अपना मनपसन्द सत्य का तरीका इस्तेमाल करें। निजि नोट्स तैयार करें।

3.बाइबल अध्ययन: अगले बाइबल अध्ययन की घर पर ही तैयारी करें।इफिसियों 2:1-22 इसका विषय है, "मैं कौन हूँ?"

4. प्रार्थना: किसी विशेष व्यक्ति या विशेष चीज़ की ज़रूरत के लिए प्रार्थना करें। (भजन 5:3)

5. अपनी सपताह के नोट्स की कापी को पूरा करे: आपने कितने चेले बनाए हैं, आपके आराधना समय के नोट्स, आपके परमेश्वर के साथ निजि समय के नोट्स, शिक्षा के नोट्स और तैयारी के काम के नोट्स लिक कर पूरे करें।

अध्याय - 6

1.	प्रार्थना

दल के अगुवेः अपने दल और चेले बनाने के पाठ्यक्रम के लिए स्वयं को परमेश्वर के सामने समर्पित करें।

2.	गवाही बाँटना (20 मिनट) *[शान्त समय]* मत्ती 18:21 – 21:46

बारी-बारी पढ़े और वचन बाँटे, (या अपने नोट्स में से पढ़ें) संक्षेप में वही बोले जो आपने परमेश्वर के साथ जो वचन आपको दिया गया था (मत्ती१८:21 – 21:46) तक) उससे अपने निजि समय में जो भी आपने सीखा है, उसे सब के साथ बाँटें।
जो भी गवाही बाँट रहा है उसे गम्भीरता से सुनें और ग्रहण करें। जो वह बाँट रहा है उस पर बहस न करें।

3.	याद करना (20 मिनट) *निश्चितता* विजय निश्चित है -1 कुर.10:13

क. प्रोत्साहित करना (याद करने के लिए)

पढ़े मत्ती 16:3-6 और लूका 10:25-26
खोजें और विचार-विमर्श करेः बाइबल के पदों को याद करना क्यों ज़रूरी है?(चाहे वे लेखाँश हो या अध्याय)
लिख लेः याद किए गए बाइबल के पद आप को इस योग्य बना देंगे कि आप मनुष्य के प्रश्नों के उत्तर दे सकें।

ख. मनन करे (बाइबल के एक लेखांश को)

एक सफेद काग़ज़ पर या श्यामपट पर याद करने वाला पद लिख कर रख लें

विजय निश्चित है 1 कुरन्थियों 10:13
तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है। परमेश्वर सच्चा है और वह तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में नहीं पड़ने देगा, वरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको। 1 कुर. 10:13

काग़ज़ के पिछली तरफ बाइबल का का संदर्भ वचन लिख दें।

<u>1. प्रलोभन एक ही समय में परीक्षा भी हो सकती है</u>

मूल शब्द (जी.पीरासमोस) को हिन्दी अनुवाद में परीक्षा या प्रलोभन कह सकते हैं। परीक्षा तो एक प्रकार का टेस्ट होता है जो परमेश्वर हमें और भी सामर्थी और बुद्धिमान बनाने के लिए लेता है। यह हमेंशा हमारा निर्माण करता है। (याकूब 1:2-4; 12) लेकिन प्रलोभन तो हमें पाप करने को उकसाता है और आपको जीवन में नीचे गिरा कर हराना चाहता है। प्रलोभन का स्रोत तो आप का निजि पापी स्वभाव ही होता है। (याकूब 1:13-15) या आपके चारों ओर फैला पापी संसार, (1 युहन्ना 2:15-17) या फिर शैतान (लूका 4:1-13) संदर्भ (1 कुर.10:6-11) स्पष्ट रूप से प्रलोभन के विषय में बताता है जो मूर्ति पूजा, विधर्मी मौज मस्तियाँ, यौन अनैतिकता, और परमेश्वर के विरुद्ध बुड़बुड़ाना आदि को भी प्रलोभन माना जाता है। फिर भी हमारा परमेश्वर इतना सामर्थी है कि वह हर प्रलोभन को जो दुष्टता कर सकता है उसे बदल कर एक परीक्षा बना देता है। कि आप कुछ भला कर सकें। यह इसी बात पर निर्भर करता है कि

आप प्रलोभन का प्रतिउत्तर कैसा देते हैं।

<u>2. परीक्षा या प्रलोभन का स्वभाव ?</u>

एक ही तरह के प्रलोभन हर व्यक्ति के जीवन में आते हैं। और हर कोई उस प्रलोभन को पहचानता भी है क्योंकि यह संसार भर में इसी प्रकार होता है। एक बार नहीं वरन इतिहास में ऐसा बार-बार होते देखा है।

<u>3. परमेश्वर की विश्वासयोग्यता, जब आप प्रलोभन में फँसते हैः</u>

परमेश्वर कभी भी ऐसा नहीं होने देते हैं कि आपका प्रलोभन इतना बड़ा हो कि आप उस पर विजय पाने की सामर्थ न रखते हों। परमेश्वर हमारे सभी प्रलोभनो से बड़ा है और वह न्यायी भी है। वह कभी भी ऐसा होने नहीं देता है कि हमें अपनी सामर्थ से बढ़ कर प्रलोभन का सामना करना पड़े। यदि ऐसा होता है तो परमेश्वर हमें एक मार्ग देता है कि हम उस प्रलोभन से बच कर निकल सकें।

परमेश्वर कभी भी मनुष्य को पाप करने के लिए प्रलोभन नहीं देता है। (याकूब 1:13) लेकिन आपके पापी स्वभाव के कारण वह प्रलोभन को जो परमेश्वर से रिक्त संसार या शैतान लेकर आता है आपके जीवन में आने देता है। जब हम प्रार्थना करते हैं, “हमें परीक्षा में न पड़ने दे पर हमें बुराई से बचा।” (मत्ती 6:13) तब हम परमेश्वर से माँगते हैं कि वह अपनी प्रभुता का मार्ग दिखाए और हमें अपने स्वभाव के अनुसार वह करने की अनुमति न दे जो पाप है। जब भी हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं और उससे प्रार्थना करते हैं, “कृपया हमें कुछ ऐसा करने की अनुमति न दें कि हम प्रलोभन की स्थिति में फँस जाएँ।”तब परमेश्वर हमें उस बुरी परिस्थिति से बचा कर बाहर निकाल लेगा। (मत्ती 6:13)

परमेश्वर जीवन में प्रलोभनों में पड़ने की अनुमति क्यों देता है? शैतान, यह पापी संसार, और मनुष्य का पापी स्वभाव ये सभी कोशिश करते रहते हैं कि प्रलोभन देकर वे हमें पाप में गिरा कर तोड़ डाले। लेकिन परमेश्वर उस प्रलोभन को परीक्षा बना कर उसे हमारा निर्माण करने के लिए इस्तेमाल कर लेता है। एक विशष घटना हो सकती है जो एक प्रलोभन लगे परन्तु परमेश्वर के नज़रियों वह केवल एक परीक्षा होती है। (अय्यूब अध्यया 1)

परमेश्वर आपको अपने पापी स्वभाव के कारण एक प्रलोभन का सामना एक परीक्ष3 के रूप में करने देता है। उसकी इच्छा यह नहीं ही है कि आप असफल हो जाएँ। वरन वह तो उस परी7 के द्वारा आप को और सामर्थी बना चाहता है। कोई भी घटना शैतान के नज़रिए से कि आप के लिए प्रलोभन हो सकता है पर परमेश्वर के नज़रिये से वह सदा एक परीक्षा होती है।(अय्यूब अध्याय 1)

परमेश्वर के पास यह अधिकार भी है कि वह कि वह पाप के द्वारा आपकी परीक्षा ले सके। वह नही चाहता है कि आप परीक्षा में असफल हों। उन लोगो के जीवन में जो प्रार्थना नहीं करते हैं। ऐसी परिस्थिति में आप प्रार्थना कर सकते हैं, “परमेश्वर मुझ पर अनुग्रह कर कि मैं तेरी परीक्षा में असफल न होने पाऊँ।”उदाहरण के लिए परमेश्वर ने शैतान को अनुमति दी थी कि वह अय्यूब को हर तरह से प्रलोभन में डाले। लेकिन अय्यूब का भरोसा परमेश्वर पर था इस लिए अन्त में वह बहुत ही परिपक्व पुरुष बन गया था।

परमेश्वर कई बार लोगों को अपने पापी स्वभाव के कारण अनुमति देता है कि वह प्रलोभन में फँस जाएँ। परमेश्वर की मर्ज़ी है कि वह बीच में आकर सहायता करे या नहीं। विशेषकर वे लोग जो न तो प्रार्थना करते हैं और न ही परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं। वे परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर भी भरोसा नहीं करते हैं। (याकूब 4:2) प्रलोभन उनके लिए बहुत शक्तिशाली होगा और वे उससे निकलने की राह नही ढूँढ पाएँगे। उदाहण के लिए जब लोग सच को दबा देते हैं या सच को किसी झूठ से बदल देते हैं तब परमेश्वर उनको उनकी पापी इच्छाओं पर छोड़ देते हैं। (रोमियो 1:24-25) परमेश्वर के बिना कोई भी पाप पर विजय नहीं पा सकता है।

4.प्रलोभनों से बचने के व्यवहारिक रास्ते

- **उत्पत्ति 39:9-10** तुरन्त न कह कर मना करें। बहकाने वाले सुझाव और योजनाओं पर चलने से मना करो। (युहन्ना 8:3-8)
- **उत्पत्ति 39:12** प्रलोभन के स्थान या स्रोत से दूर चले जाओ। सदा इन प्रलोभनो से दूर भागें - यौन अनैतिकता (नीति वचन 4:14-15, 23-27,5:1-23; 1 कुर.6:18) मूर्तिपूजा (1 कुर.10:14) पैसे का प्यार (1 तिमु.6:9-11) और जवानी की बुरी इच्छाओं के लिए (2 तिमु.2:22; 1 पतरस 4:3-4)
- **भजन 119:9,11,** तुरन्त परमेश्वर के विचारों को सोंचना शुरू करें। बाइबल के पदों को याद करें और उनका प्रयोग करेंविशेषकर जब आपका सामना अशुद्ध विचारों से हो रहा हो या आप झूठ तथा नकारात्मक विचारों का सामना कर रहे हों। (इफीसियों 6:16)
- **सभोपदेशक 4:9-10** तुरन्त अन्य मसीही लोगों की संगति की खोज करें।
- **मत्ती 26:41**देखते रहें और प्रार्थना करते रहें। विशेषकर जब आप आत्मिक युद्ध करते-करते थक गए हों।
- **लूका 6:27-28** तुरन्त मसीही सेवकाई के साथ सकारात्मक प्रतिउत्तर दें (मत्ती 5:38-42) अपने हाथों से कुछ सकारात्मक करो या किसी की सेवा करो। (युहन्ना 8:3-11)
- **काम 16:18** अपने आत्मिक अधिकार का प्रयोग करें और दुष्ट को यीशु के नाम से दूर हो जाने की आज्ञा दें। (मत्ती 4:3-4)
- **1 तिमु.6:9** गलत लक्ष्यों पर और गलत आदतों से बचे रहें। (अय्यूब 31:1)
- **याकूब 4:7-8** तुरन्त अपने आप को परमेश्वर को समर्पित कर दें। (1पतरस 5:8-9)

ग. याद करना और पुनरावलोकन

1.लिखेः बाइबल के पद को किसी खाली कार्ड पर या अपनी कापी के खाली पन्ने पर लिख लें।
2.याद करें बाइबल का पद प्रार्थना में प्रार्थना में विजय निश्चित है को सही रीति से याद करें।(1 कुर.10:13)
3.पुनरावलोकनः दो-दो के दल में बाँट कर पिछली बार याद किए पद की जाँच करें।

4. बाइबल अध्ययन (70 मिनट) *(जीवन के विषय में प्रश्न)* मै कौन हूँ? इफिसियों 2:1-22

इफिसियों 2:1-22काबाइबल अध्ययन करने के लिए अध्ययन के पाँच कदमो के तरीके का प्रयोग करें।

तरीका 1. पढ़े **परमेश्वर का वचन**
पढ़ें. आइए एक साथ पढ़ेंगे इफिसियों 2:1-22
आईए हम बारी बारी से एक पद पढ़ेंगे जब तक लेखाँश समाप्त न हो जाए।

तरीका 2. खोज करें **अवलोकन**
ध्यान देः इस लेखाँश में कौन सा सच आपके लिए महत्त्वपूर्ण है?
या फिर कौन से सच ने आपके दिल को छू लिया है?
लिख लेःएक या दो सत्य जो आपने खोजे और समझे हैंउन्हे अपनी कॉपी में लिख लें।

गवाही बाँटेः (जब सभी दल के सदस्य 2 मिनट तक विचार कर चुकें और कापी में अपने विचार लिख चुके हों तब बारी-बारी सब अपने विचारों को दूसरों के साथ बाँटें।
(नीचे कुछ लोगों के उदाहरण दिए गए हैं जिन्होंने अपने विचार बाँटे थे कि उन्होंने क्या पाया था। पर याद रहे हर छोटे दल में लोग अलग-अलग बातें बाँटते हैं। पर यह ज़रूरी नही है कि सब के विचार एक समान हो।)

2:8-9
1.पहली खोज - मैं परमेश्वर के अनुग्रह से बचाया गया हूँ, अपने कर्मो के द्वारा नहीं।

इससे पहले कि मैं यीशु मसीह को अपने दिल और जीवन में ग्रहण किया था मेरा विश्वास था कि मुझे बहुत से धार्मिक नियमों का पालन करना होगा और भले कर्म करने होंगे जो परमेश्वर को खुश कर सकें। मैं सोचता था कि यदि मैं यह सब करूँगा तो शायद परमेश्वर मेरे जीवन को इस पृथ्वी पर समृद्ध और सफल बना दे। और मृत्यु के बाद मुझे स्वर्ग में ग्रहण कर ले। मैं परमेश्वर से अपने सम्बन्ध को एक ठेके का सौदा समझता था। इसलिए मै सोचता था, जब मैं परमेश्वर के लिए कुछ करूँगा तो वह मेरे लिए कुछ करेगा!
लेकिन वह परमेश्वर जिसने बाइबल के द्वारा स्वयं को मुझ पर प्रकट किया था वह मुझे केवल अनुग्रह के द्वारा बचाता है, मैं उसके लिए क्या करता हूँ उसके द्वारा नहीं। मैं ने जाना कि परमेश्वर के उद्धार का काम मेरे लिए सर्वोत्त्म और सम्पूर्ण है, हालाँकि मेरी अपनी सारी कोशिशें अपूर्ण सी लगती हैं। तब मैं ने जाना की सम्पूर्ण उद्धार तो एक उपहार है जिसे न तो खरीदा जा सकता है और न ही कमाया जा सका है।

2:18
2.दूसरी खोजः मेरे पास जीवित परमेश्वर तक पहुँचने का मार्ग है।

अनेक लोग कहते हैं परमेश्वर इतना महान है कि कोई भी उसे निजि रूप से जान नहीं सकता है। न वह उससे निजि रूप से बात कर सकता है, और न ही निजि रूप से उसके साथ चल सकता है। अन्य लोग चाहते हैं कि उनका परमेश्वर के साथ एक निजि सम्बन्ध बन जाए। लेकिन फिर भी चाहे वे कितना भी कठिन परिश्रम कर लें वे कभी भी परमेश्वर के साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध अनुभव नहीं कर पाते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि वे न तो उसके शब्दों को सुनते हैं और न ही उसके कार्यों को देखते हैं। और सोचते हैं कि परमेश्वर का को अस्तित्व नहीं है।

लेकिन बाइबल हमें बताती है कि मैं परमेश्वर के कामों को उसकी सृष्टि की रचना में देख सकताँ हूँ।
मैं उसकी आवाज़ को बाइबल पढ़ते समय अपने दिल में सुन सकता हूँ। और मैं उसकी देखभाल अपनी कठिन परिस्थितियों में महसूस कर सकता हूँ। बाइबल बताती है कि जीवित परमेश्वर से सम्बन्ध बनाने का एक ही सच्चा रास्ता है। और वह रास्ता यीशु मसीह है। परमेश्वर एक ऐसे स्थान पर रहते हैं जो ज्योति से भरपूर है और जहाँ कोई भी मनुष्य प्रवेश नहीं कर सकता है। लेकिन परमेश्वर मुझ तक पहुँच गया। परमेश्वर ने मुझ पर स्वयं को यीशु मसीह के रूप में और उसके द्वारा प्रकट किया है। इतना ही नहीं परमेश्वर ने वह सब कुछ किया जो मेरे उद्धार के लिए ज़रूरी था। उसने मेरे लिए यीशु मसीह का बलिदान दिया जिससे मेरे सारे पापों के लिए पश्चाताप हो सके और वे क्षमा कर दिए जाएँ। जब मैं ने इस बात पर विश्वास किया कि यीशु मसीह ने मेरे पापों के लिए जुरमाना चुकाया था और मुझे परमेश्वर के सामने निर्दोष सिद्ध किया था। तब मैं ने यीशु को अपने दिल और जीवन में उद्धारकर्ता ग्रहण कर लिया था। (वह पवित्र आत्मा के रूप में जो कि यीशु की आत्मा है, मेरे अन्दर वास करने आ गया। यह यीशु की आत्मा ही है जो मेरी परमेश्वर से मुलाकात और संगति करवाती है। (रोमियो 8:9-10) यीशु का आत्मा ही हमे परमेश्वर से मिलवाता हैऔर उसके साथ संगति करने का अवसर भी देता है। यीशु मसीह का आत्मा मुझे में वास करके परमेश्वर की वास्त्विकता और उपस्थिति और उसकी निकटता का अनुभव कराता है। यीशु मसीह के आत्मा के द्वारा मैं परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश कर सकता हूँ, मैं उसे स्वयं से निजि रूप से बोलते सुन सकता हूँ। मैं स्वयं भी उससे बात कर सकता हूँ और मै उस के साथ एक निजि सम्बन्ध स्थापित करके जीवन बिता सकता हूँ।

3.तीसरा तरीकाः प्रश्न व्याख्या
ध्यान देः वह कौन सा प्रश्न है जो किसी भी विषय में आप दल से पूछना चाहते हैं?
आईए हम इफिसियों 2:1-22 में जो सत्य निहित हैं उनको समझने की कोशिश करें। और उन बातों के विषय में प्रश्न करें जो अब तक हमें समझ नहीं आई हैं।
लिख लेः अपने प्रश्न सही और स्पष्ट रूप से पूछें और फिर उसे अपनी कॉपी में लिख लें।
गवाही बाँटेः दल के सभी सदस्य दो मिनट तक मनन करें और फिर हर सदस्य अपने प्रश्न को दल के साथ बाँटें।
विचार-विमर्श करेः (फिर इन में से कुछ प्रश्न चुन कर उन के उत्तर पर दल के साथ मिल कर विचार-विमर्श करें और उनका उत्तर खोजने की कोशिश करें।)
नीचे प्रश्नों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं जो विद्यार्थी पूछ सकते हैं और साथ ही कुछ नोट्स भी हैं जिन पर विचार विमर्श किया गया था।)

2:1

प्रश्न 1. "पाप और अपराध में मर जाना"इसका क्या अर्थ है?

नोट्सः यह पद समझाता है कि यीशु मसीह पर विश्वास करने से पहले मैं क्या था। बिना यीशु मसीह के मैं केवल शारीरिक रूप से जीवित था पर आत्मिक रीति से मरा हुआ था। यह सच है कि मैं खाता, पीता, काम करता और सोता था। परन्तु मेरे अन्दर का आत्मा मरा हुआ था। और जब मेरा आत्मा मृत है तो मैं परमेश्वर को नहीं जान सकता और न ही उससे सम्बन्ध रख सकता हूँ।

परमेश्वर एक गैर-मसीही को मृत क्यों समझते हैं जब कि उसमें अनेक नैतिक गुण और भले काम भी पाए जाते हैं? एक गैरमसीही के पास नैतिक गुण हो सकते हैं और वह भले काम भी कर सकता है क्योंकि वह जीवित परमेश्वर की रचना है। ये सब योग्यताएँ परमेश्वर ने ही दी हैं चाहे वह इस बात को माने या न माने। लेकिन एक गैर-मसीही अपने काम परमेश्वर के लिए नहीं करता है और न ही उस पर निर्भर रहता है।वह परमेश्वर पर भरोसा नही रखता है और न ही उसकी आज्ञाओं का पालन करता है। वह किसी भी चीज़ के लिए परमेश्वर का धन्यवाद नहीं करता है और न ही किसी भी बात के लिए परमेश्वर की महिमा करना चाहता है। (मियो 1:21) जो कुछ भी एक गैर मसीही करता है उसका परमेश्वर से कोई सम्बन्ध नहीं होता है। एक गैर-मसीही केवल अपने लिए जीता है। वह स्वार्थी है, स्वयं केन्द्रित है, अपने निर्देश पर चलता है और परमेश्वर से बिलकुल स्वतन्त्र घूमता है। यह परमेश्वर से आज़ादी, या परमेश्वर से अलग रहना ही आत्मिक मृत्यु है।

:22:1-4,11-12
प्रश्न 2. मसीही बनने से पहले मैं कौन था?
क्या बातें थीं जो मुझे गैर-मसीही बनाती थी?

नोट्सः मसीह में विश्वास करने से पहलेमेरे अन्दर ये सब गुण पाए जाते थेः (इफिसियों 2:1-3, 11-13)

आत्मा में मैं मृत थाः (कुलुसियों 2:13)
मेरी आत्मा में जीवित परमेश्वर की कोई जानकारी नहीं थी। मैं सोचता था कि परमेश्वर का कोई अस्तित्व नही है। मैं यह भी सोचता था कि परमेश्वर कमज़ोर लोगों के दिमाग़ की उपज है। या मेरा विश्वास था कि मैं एक ऐसे परमेश्वर कुछ धर्म गुरूओं रचना है।
मैं संसार के नियमों पर चलता थाः (1 युहन्ना 2:15-17)
तब मैं आस-पास के लोगो की आदतों और जीवन शैली की नकल करता था। मैं वही करता था जो अधिकतर लोग

सोचते थे कि वही महत्त्वपूर्ण और सही है।उस समय अधिकार, शक्ति, मशहूरी और मौज-मस्ती का मेरे जीवन में बड़ा मूल्य था। मैं केवल समृद्धि और सफलता के लिए जीता था। औरों के समान मैं केवल अपने लिए जीता था।

मैं शैतान के रास्तों पर चलता था (जो कि वायुमण्डल का राजा है) (इफिसियों 6:12; कुलुसियों 1:13)मैं हर समय शैतान के समान झूठ बोलता था। कभी-कभी मैं ज्योतिषियों के पास भी जाता था। सुरक्षा के लिए मैं गले में एक माला भी पहनता था जिससे दुष्ट आत्माओं से सुरक्षित रह सकूँ।

मैं अपनी पापी इच्छाओं को संतुष्ट करने में लगा रहता था।

मैं बुरे और अशलील चुटकुलों का आनन्द लेता था। मुझे अपनी आँखों पर नियन्त्रण नहीं था। मेरा अन्तरमन भ्रष्ट था। (कुछ लोग शराब, नशीले पदार्थो, अशलील चित्रों के देखने, लूटमार, हिंसा, जुए, लॉटरी खेलने, और टी.वी, मोबाइल फोन, विडियो गेम्स और इन्टरनेट आदि के दास होते हैं।

मैं अविश्वासी था इस लिए परमेश्वर मुझ से नाराज़ थेः

परमेश्वर को मेरी आज़ादी, स्वयं-केन्द्रित होने, आज्ञा न मानने, मेरी सांसारिकता, और अन्तरमन की भ्रष्टता से घृणा थी।

मैं मसीह से अलग थाः

मैं नहीं जानता था कि जीवित परमेश्वर यीशु मसीह के द्वारा अपना कार्य कर रहा था। मैं सुनता रहता था कि अन्य गैर-मसीही धर्म यीशु मसीह के विषय में बिना कुछ जाने, कि बाइबल के समय में यीशु ने क्या कहा था और क्या किया था। मैं नें यीशु मसीह को पूरी तरह से गलत समझा था। और में यीशु के पीछे चलने वालों को दुष्ट कहता था।

मुझे इस्राएल का नागरिक होने से अलग कर दिया गया थाः

यहाँ पर इस्राएल वह शब्द नहीं है जिसका प्रयोग मध्य पूर्व के यहूदी राष्ट्र में किया जाता है। असली इस्राएल में केवल परमेश्वर के लोग शामिल होते हैं। वे जो परमेश्वर पर विश्वास रखते हैं और जिन पर परमेश्वर ने स्वयं को यीशु मसीह के रूप में प्रकट किया था। (रोमियो 9:6) मैं परमेश्वर के लोगों का हिस्सा नहीं था इस लिए मेरे पास परमेश्वर के लोगों जैसी सुविधाएँ भी नहीं थीं। मैं विशेषकर बाइबल को नहीं जानता था जिस में अदभुत भविष्यद्वाणियाँ लिखी हैं और साथ ही वायदे और जीवन के मार्गदर्शक भी दिए गए हैं। और मैंने वह सुरक्षा और मार्गदर्शन भी खो दिया है जो परमेश्वर के लोगों को मिलता है।

जिन लोगों से परमेश्वर ने वाचा बाँधी थी उनके लिए तो मैं अनजान थाः

परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ एक समझौता किया था। बार-बार परमेश्वर ने उन से कहा था, "मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँगा और तुम मेरे लोग होगे।"परमेश्वर चाहते थे कि वे उनका बचाने वाला और मित्र बन जाए। वह उनको ऐसे उठा कर ले जाना चाहता था जैसे एक पिता अपने पुत्र को उठा कर ले जाता है वहाँ तक जहाँ उनको होना चाहिए। (व्यवस्थाविवरण 1:31) परमेश्वर ने इस समझौते को फिर से इसे बार-बार अपने लोगों के साथ पक्का किया था। लेकिन मेरे सुसमाचार सुनने से पहले मैं ने इस का अनुभव कभी नहीं किया था कि परमेश्वर ने कहा, "मैं तेरा मित्र हूँ।"

मैं निराश थाः

मेरे पास जीवन का कोई लक्ष्य नहीं था और मुझे जीवन अर्थहीन लगता था। मैं नहीं जानता था कि मैं यहाँ पर क्यों हूँ और मुझे कहाँ जाना है। मैं सदा असुरक्षित और खतरे की धमकी से डर कर जीवन बिताता था।

मैं इस संसार में परमेश्वर के बिना था

मैं एक ऐसा जीवन जी रहा था जिस में जिवित परमेश्वर के लिए कोई स्थान नहीं था। मेरे लिए वस्त्विकता केवल यह शारीरिक और भौतिक (नियावी) संसार ही था। मैं स्वयं को नास्तिक बुलाता था।। मैं केवल स्वयं पर केन्द्रित रहता है। एक तरह से कहा जाए तो मैं ही मेरा परमेश्वर था।

2:4-7

प्रश्व 3. <u>जीवित हो जाने, उठाए जाने, और मसीह के साथ बैठाए जाने का क्या अर्थ है?</u>

नोट्सः बाइबल अकसर कहती है कि एक विश्वासी मसीह के साथ मर जाता है और मसीह के साथ फिर से जी उठता है और मसीह के साथ उसकी भी महिमा होती है। इसका अर्थ यह है कि जो कुछ भी मसीह को होता है और उसका सीधा असर एक विश्वासी पर होता है। इसका अर्थ यह भी है कि परमेश्वर पिता विश्वासियों के यीशु मसीह में एक नया दर्जा और एक नई परिस्थिति दे देता है।

न्यायसंगत होना

परमेश्वर विश्वासियों को वही स्थान देता है जो कानूनन मसीह को दिया गया है। इसे ही न्यासंगत होना कहते हैं। जब परमेश्वर एक विश्वासी को देखता है तब वह उसमे केवल यीशु मसीह की धार्मिकता को देखता है। क्योंकि यीश मारा गया था इस लिए उसके साथ उस विश्वासी का जिसने मसीह को ग्रहण किया था उसका पापी स्वभाव भी मर जाता है। उसका न्याय किया गया और उसका तिरस्कार किया गया था उसे क्रूस पर चढ़ाया गया था और यीशु के साथ दफनाया गया था लेकिन क्योंकि यीशु जी उठा था इस लिए वह मसीही भी जी उठा था अर्थात उसका नया जन्म हो गया था। अब उसका एक नया आत्मिक स्वभाव है। क्योंकि यीशु मसीह स्वर्ग में ऊँचा उठाया गया था इसलिए मसीह की देह भी ऊपर उठा ली जाएगी। और भविष्य में स्वर्ग में एक स्थान प्राप्त कर लेगी। जो कुछ मसीह के साथ हुआ था वह निश्चय ही उन सब के साथ भी होगा जो यीशु पर विश्वास करते हैं। एक मसीही होने का दर्जा गारन्टी देता है कि परमेश्वर अपने सभी वायदों को पूरा करेगा जो उसने एक नए जन्म लिए मसीही के लिए किए थे।

शुद्धिकरणः

परमेश्वर एक नए जन्मे मसीही को सामने एक शर्त रखी है और वह हैजिसे शुद्धिकरण कहते हैं। पवित्र आत्मा (अर्थात मसीह की आत्मा) के कार्य से जो वह मसीही के दिल में करता है उसके द्वारा उस दिल से पाप मर जता है। और तब वह अपना नया जीवन जीना शुरू कर देता है। यह दर्जा एक मसीह को गारन्टी देता है कि वह धीरे धीरे और अधिक नये जीवन का अनुभव करेगा।

2:8-10

<u>प्रश्न 4. यदि भले काम मुझे बचा नहीं सकते हैं तो मै भले काम करने की चिन्ता क्यों करूँ?</u>

नोट्सः

मुझे बचाने के लिए मसीह ने पहले से ही वह भला कार्य कर दिया है जिस की ज़रूरते थी।

वह मारा गया और मुर्दो में सी जी उठा और ऊँचे स्वर्ग पर उठा लिया गया था।। वह स्थान जहाँ पर वे सभी जो उस पर विश्वास करते हैं उठा लिए जाएंगे। उसने वह सारा काम पूरा कर दिया था जो मेरे उद्धार के लिए ज़रूरी था। अपनी मृत्यु के द्वारा यीशु मसीह ने मेरे पापों के लिए परमेश्वर के मन में जो गुस्सा था उसे दूर किया था। उसने मेरे पापों को क्षमा कर के मुझे पाप की गुलामी से मुक्त कर दिया था। सो अब मेरे लिए क्या करना बचा है? जब मैं यीशु मसीह पर विश्वास करता हूँ तब मैं केवल सम्पूर्ण उद्धार को ग्रहण कर सकता हूँ जो सम्पूर्ण आज़ादी है। मैं तो उद्धार के लायक नहीं

हूँ और न ही मैं उद्धार को खरीद सकता हूँ। उद्धार तो मुझे दिया जाता है क्योंकि परमेश्वर मुझ से प्रेम करता है और वह मुझ पर दयावान है।

मेरी वाहवाही और घमण्ड यीशु के काम को बहुत छोटा बना देता है

यदि मेरे उद्धार के लिए सब कुछ भले कामो के कारण हो जाता या धार्मिक कामों से हो जाता तो यीशु का जीवन बलिदान करने के महान काम को जिसके द्वारा उद्धार मिलता बहुत छोटा हो जाता और हम उसकी महिमा को लूट लेते हैं। तब शायद अन्तिम न्याय के दिन हम डींगे मार सकते हैं कि हमारा उद्धार हमारे भले कामों या धार्मिक कामों के कारण हुआ था। लेकिन मेरे भले काम या धार्मिक काम इतने अच्छे नहीं हैं। यदि हम अपने धार्मिक और अच्छे कामों के कारण न्याय चाहते हैं तब हमारे सारे काम 100% भले होने और पूरे होने चाहिए। (गलातियों 3:10; याकूब का 2:10) लेकिन क्योंकि संसार मे एक व्यक्ति भी ऐसा नहीं है जिसके काम सम्पूर्ण रीति से भले हैं (रोमियो 3:10-12) किसी भी व्यक्ति का परमेश्वर की नज़रों में उसके अपने भले कामों या धार्मिक कामों को ध्यान में रखते हुए न्याय नहीं होगा। (गलातियों 3:11) हर व्यक्ति चाहे वह बहुत ही धार्मिक हो या एक साधारण मनुष्य हो वह परमेश्वर सम्पूर्ण धार्मिकता और उसकी महिमा से रहित हैं। कोई भी व्यक्ति अपने भले कामों या धार्मिक कामों के आधार पर उद्धार नहीं पा सकता है। कोई भी परमेश्वर के सामने अपनी शेखी नहीं बघार सकता है।

मेरे भले काम आभार प्रकट करने वाले होने चाहिए।

एक विश्वासी होने के नाते मैं भले काम करना चाहता हूँ लेकिन इस लिए नहीं कि मैं उद्धार पा सकूँ। मैं भले काम इस लिए करना चाहता हूँ क्योंकि मैं परमेश्वर के प्रति अपना आभार प्रकट करना चाहता हूँ। क्योंकि परमेश्वर ही भला है और उसी ने मुझे उद्धार का वरदान दिया है। (मत्ती 5:16;गलातियो 6:9-10) परमेश्वर ने बहुत सारे भले काम तैयार किए है जो इस संसार में एक मसीही को करने चाहिए। (इफिसियों 1:4) इन भले कामों का वर्णन बाइबल में है। (व्यवस्थाविवरण 10:17-18; मरकुस 3:4; रोमियो 12:9-21) इसलिए एक सच्चा मसीही दो बाते करता है, वह परमेश्वर के सर्वोत्त्म काम की स्तुति करता है, कि यीशु मसीह ने अपने प्राणो का बलिदान देकर अपनी मृत्यु और पुनरोत्थान के द्वारा जिसका परिणाम है कि मुझे उद्धार मिला और दूसरी बात वह अपने किए कामों के लिए धन्यवाद करना है क्योंकि परमेश्वर ने हमें अपना मुफ्त उपहार उद्धार दे दिया है।

2:4-10; 13-22

<u>प्रश्न 5. अब आप कौन है जब आप यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं?</u>
<u>या वे कौन से गुण है जो आपको मसीही सिद्ध करते हैं?</u>

नोट्सः अब जब मैं यीशु मसीह पर विश्वास करता हूँ, तो मेरी अब एक नई पहचान है, एक नई पदवी है, एक नई स्थिति है (इफि.2:4-7) और अब मुझ में नीचे दिए गुण भी हैं।

मेरा परमेश्वर से मिलाप हो गया है।

अब मेरा परमेश्वर से मिलाप हो चुका है और अब मैं परमेश्वर के साथ शान्ति से हूँ।

अब मेरा लोगों के साथ भी मेल-मिलाप हो चुका है।

अब मेरा अन्य जातियों के साथ मेल-मिलाप हो चुका है और वे भी मसीह के विश्वासी बन चुके हैं। अब मैं अन्य लोगों के साथ शान्ति से रह सकता हूँ, अन्य देश के लोगों के साथ भी। (इफि. 2:14-17)

अब मैं आज़ादी से परमेश्वर की उपस्थिति में जा सकता हूँ। (इफि. 2:18)
अब मैं सदा परमेश्वर की उपस्थिति और उसको अनुभव करने की स्थिति में उसकी निकटता को अनुभव करता हूँ। और उससे बातें कर सकता हूँ। मैं सुन सकता हूँ जब वह मुझ से बातें करता है। और अब मैं अपने दैनिक जीवन में उसके साथ चलता हूँ। (भजन 16:8)

अब में परमेश्वर के लोगों के साथ एक मसीही नागरिक हूँ। (इफि. 2:19(अ))
अब मैं परमेश्वर के राज्य का नागरिक हूँ। अब मैं मानव इतिहास में सबसे महत्त्वपूर्ण राज्य से सम्बन्ध रखता हूँ। यह राज्य हर दिन बढ़ता जा रहा है। और जल्दी ही इस सृष्टि में वही एकमात्र राज्य रह जाएगा। (दानिएल 2:44)

अब मैं परमेश्वर के घर और परिवार का सदस्य भी हूँ। (इफि. 2:19(ब))
इस संसार में परमेश्वर का घर या उसका परिवार उसकी कलीसिया है। मेरे पास यह सुविधा है कि मै परमेश्वर को "पिता जो स्वर्ग में है," कह कर बुला सकता हूँ। मेरे पास इस संसार में बहुत से मसीही भाई और बहने हैं। शब्द भाई, बहन या पिता इनका कोई संकेत रूपी शारीरिक सम्बन्ध नहीं है लेकिन इनका आत्मिक अर्थ है।

मैं परमेश्वर के नए मन्दिर का भाग हूँ। (इफि.2:20-22)
यह कोई पत्थरों का मन्दिर नहीं है। वरन यह तो एक "जीवित मन्दिर है जिस में हर मसीही एक जीवित पत्थर के समान निर्मित किया जाता है।"(1 पतरस 2:4-5) परमेश्वर स्वयं इस जीवित मन्दिर में पवित्र आत्मा के रूप में वास करते हैं।इस रीति से परमेश्वर स्वयं मेरे अन्दर वास करते हैं और सभी अन्य मसीहों के अन्दर भी पवित्र आत्मा के द्वारा जो कि परमेश्वर की आत्मा है अर्थात मसीह की आत्मा या फिर मसीह मुझ में रहता है। रोमियो 8:9-10)

<u>तरीका 4.</u> **लागू करना**
ध्यान दे: कौन सा सच है इस लेखाँश में जो एक मसीही अपने जीवन में लागू कर सकते है?
गवाही बाँटे और लिख लेः एक दूसरे के दिमाग़ के अन्दर एक तूफान जगा दें और अपनी कापी में एक सूची लिख कर रख लें कि क्या लागू करना सम्भव है। (इफि. 2:1-22)
ध्यान दे: ऐसा कौन सा सच है जो परमेश्वर चाहते हैं कि आप अपने जीवन में निजि रूप से लागू करे?
लिख लें:अपनी कापी में वे निजि सच जो आप लागू करेंगे उन को लिख लें। और आज़ाद होकर उस सच को लोगों के साथ बाँटें।
(याद रहे दल के सभी लोग अलग-अलग सच को बताएँगे। या वे उसी सच को अपने जीवन में अलग रूप से लागू करेगे।
नीचे एक सूची दी गई है उन उदाहरणों की जिन्हे लागू किया जा सकता है।

1. इफिसियों 2:1-22 से कुछ उदाहरण जिनको लागू करना सम्भव है।

2:1-4 ध्यान दे कि आप आत्मिक रूप से मृत थे क्योंकि आप गलत मार्ग पर चल रहे थे।
2:6 इस धारणा के पीछे चलें कि, "मैं मसीह में हूँ। अब मैं कभी भी अकेला नहीं हूँ।"
2:5-8 ध्यान दे कि क्या आप सच में यीशु के साथ आत्मिक रूप से जिलाए गए हैं। अर्थात क्या आप ने यीशु के सर्वोत्तम कार्य को जो कि उद्धार है अपने जीवन में ग्रहण किया है जिससे जब भी परमेश्वर आपकी ओर देखे तो वह केवल मसीह की धार्मिकता को देखने पाए।

2:9 इस बात पर ध्यान दें, क्या आप अभी भी कोशिश करेंगे कि परमेश्वर के अनुग्रह को न्याय के कामों, भले कामों और धार्मिक कामों के द्वारा प्राप्त कर लें।

2:10 बाइबल को पढ़े और खोज करें कि परमेश्वर ने आपके लिए कौन से भले काम रखे हैं कि आप उस पर चल सकें।

2:14-17 ध्यान दें कि क्या आप अभी भी अन्य जाति के मसीही लोगों को अपने से नीचा समझते हैं।

2:18: 3:12} अभ्यास करें कि आप परमेश्वर की उपस्थिति में पहुँच सकें, परमेश्वर की आवाज़ को सुन सकें, और परमेश्वर के साथ आत्मविश्वास और आज़ादी के साथ बातें कर सकें।

2:19 ध्यान दें कि क्या आप स्वयं को परमेश्वर के राज्य के नागरिक के रूप में और उसके घर और परिवार के सदस्य के रूप में देखते हैं।

2:22 इस कटु सत्य पर मनन करें कि परमेश्वर पवित्र आत्मा के रूप में कलीसिया में वास करता है।

2. इफिसियों 2:1-22 से निजि रूप से सच को लागू करने के उदाहरण।

परमेश्वर की सहायता से मै अपने भले या धार्मिक कामों पर निर्भर रहना बन्द कर दूँगा। इसके स्थान पर मैं इस सत्य को याद रखूँगा कि यीशु मसीह ने मेरे पापों के लिए मारा गया था और अब पवित्र आत्मा के रूप में मेरे अन्दर जीवित है।

परमेश्वर की सहायता से मैं दूसरे मसीहों के प्रति अपने व्यवहार को बदलना चाहता हूँ विशेषकर जो दूसरे देशों में रहते हैं और एक अन्य भाषा बोलते हैं। और भविष्य में उनको अपने स्वर्गीय परिवार का हिस्सा मानूँगा।

5.पाँचवाँ तरीका **प्रतिउत्तर**

आईए हम एक सच के विषय में बारी बारी प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने इफि.2:1-22 में हमें सिखाया है। (अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें उस के लिए जो आपने बाइबल अध्ययन के दौरान सीखा है। कोशिश करें कि केवल एक या दो लाइन में ही प्रार्थना करें। याद रखें दल के अन्य लोग अन्य विषयों पर प्रार्थना करेंगे।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***मध्यस्थता*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

लगातार प्रार्थना करते रहेः दो या तीन के दल बना कर एक दूसरे के लिए प्रार्थना करें और साथ ही संसार के लिए भी प्रार्थना करें।

6.	**तैयारी** (2 मिनट)	***निर्धारित कार्य*** **अगले पाठ के लिए**

दल के अगुवेः दल के सदस्यों को तैयारी के लिए घर का काम लिखित रूप में देंगे और उसे कापी पर उतारने को कहेंगे।

1.समर्पणः हर सदस्य किसी एक सत्य को लागू करने के लिए जो सम्भव है समर्पण करेगा।

2.परमेश्वर के साथ निजि समयः परमेश्वर के साथ एक निजि समय निर्धारित करें जिस में मत्ती 22:1 – 25:13 से हर दिन आधा अध्याय पढ़ेंगे। और सत्य खोजने के लिए अपने मनपसंद तरीके का प्रयोग करेंगे। अपने नोट्स बनाएँ।

3.याद करेः मनन करके बाइबल के नए पदो को याद करें जो आश्वासन देते हैं कि प्रार्थना में विजय है। (1 कुर.10:13) हर दिन पिछले तीन पदों को फिर से दोहराएँ।

4.प्रार्थनाः किसी विशेष व्यक्ति या किसी विशेष चीज़ के लिए प्रार्थना करें कि इस हफ्ते परमेश्वर आपके लिए क्या नया कर रहा है। (भजन 5:3)

5.अपनी कापी को पूरा करेः आपने कितने चेले बनाए, इसके साथ वह सभी नोट्स जो आपने परमेश्वर के साथ निजि समय बिताते समय सीखा, और जो पद आपने याद किए थे। साथ ही आपके बाइबल अध्ययन के नोट्स भी लिख लें।

अध्याय - 7

1.	**प्रार्थना**

दल के अगुवेः प्रार्थना करें और अपने दल और इस पाठ्यक्रम को परमेश्वर को समर्पित करें कि वे प्रभु के लिए अनेक चेले बना सकें।

2.	**आराधना** (20 मिनट) ***(परमेश्वर के विशिष्ट गुण)*** **परमेश्वर पवित्र है**

परिभाषा

आराधना क्या है? "आराधना" की परिभाषा है:

आराधना वह अभिव्यक्ति है जो हमारी परमेश्वर के प्रति उपासना, समर्पण और निष्ठा को प्रकट करती है। जो हम अपनी भिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं और अपनी प्रति दिन की जीवन शैली से प्रकट करते हैं।

परमेश्वर की आराधना करने के लिए, हमें ज़रूरत है कि हम अपने परमेश्वर को जान लें कि हमारा परमेश्वर कौन है। हर आराधना के समय हम परमेश्वर के केवल एक ही विशिष्ट गुण को जान सकते हैं।

मनन करेः

पढ़े या शिक्षा देः मसीह के पवित्र होने की शिक्षा दें।

पढ़ेः निर्गमन 34:6-7; यशायाह 1:15-17; यशायाह 6:1-8

1.पवित्रता का अर्थः

शब्द पवित्रता का अर्थ दो पक्षों मे निहित है।

उससे अलग करना जो गलत और दुष्ट हैं, और सांसारिक है।

सही, अच्छे और ईश्वर के प्रति समर्पित, निष्ठावान और प्रतिबद्ध होना।

पवित्रता का अर्थ है कि चरित्र और व्यवहार पूरी तरह से सर्वोत्तम हो। चरित्र और व्यवहार केवल तभी पवित्र नहीं गिने जाते हैं जब वे एक दूसरे से जुड़े होते हैं। वह चरित्र और व्यवहार तभी पवित्र होते हैं जब वे न केवल गलत, दुष्ट और सांसारिक बातो से अलग ही नहीं होते हैं वरन जब वे सही, अच्छे और ईश्वर के प्रति समर्पित, निष्ठावान और प्रतिबद्ध होते हैं। कोई भी एक पक्ष दूसरे के बिना सम्पूर्ण नहीं होता है। सर्वोत्तम चरित्र में दोनों पक्षों का होना ज़रूरी है, अलग होना होना और समर्पित होना।

2. पवित्रता और परमेश्वरः

परमेश्वर पवित्र है और वह चरित्र और व्यवहार में सर्वोत्तम है।

एक तरफ परमेश्वर बुराई, और हर तरह की दुष्टता से अलग है। वह हर रूप में दुष्टता से नफरत करता है। फिर चाहे वह थोड़ी सी अपवित्रता हो या फिर बहुत सारी अपवित्रता हो।

दूसरी ओर परमेश्वर अपनी सभी दैविक विशेषताओं के प्रति समर्पित और प्रतिबद्ध है। वह समर्पित है उसके प्रति जो पूरी तरह से सही, अच्छा और दैविक है। अर्थात वह धार्मिकता में परिपूर्ण है और वह निरन्तर उनको ऊँचा उठाता रहता जो सही, अच्छा और दैविक हैं। वह समर्पित है, न्यायपूर्ण और खरा है। अर्थात वह न्याय करने में सच्चा है और अन्याय को सज़ा देगा और न्यायी को ईनाम देगा। परमेश्वर में कोई भ्रष्टाचार नहीं पाया जाता है। वह तो प्रेम के प्रति समर्पित है और उसके प्रति जो प्रेम को बढ़ावा देता है। अर्थात वह प्रेम करने में और प्रेम भरे वचन बोलने में और ऐसे

कर्म करने में जो प्रेम उत्पन्न करता है और सर्व गुण सम्पन्न है। वह अपनी योजना को पूरा करने में जो इस संसार के लिए यहाँ तक कि पूरी सृष्टि के लिए समर्पित है। अर्थात वह परमेश्वर की योजना पूरी करने के लिए सर्वगुण सम्पन्न है। स्वर्गदूत जो परमेश्वर के चरित्र और व्यवहार को हर समय देखते रहते हैं वे उसकी स्तुति करते रहते हैं और कहते है पवित्र, पवित्र, पवित्र है सर्व शक्तिमान परमेश्वर।

3.पवित्रता और संगतिः

जब यशायाह परमेश्वर की पवित्र संगति में आता है तब वह विशेष रूप से अपनी अपवित्रता को पहचान लेता है। वह कहता है, "मैं तो अपवित्र हूँ और अपवित्र लोगों के बीच रहता हूँ।"पवित्र परमेश्वर अपवित्र लोगों के साथ संगति नहीं कर सकता है और न ही करेगा। फिर भी परमेश्वर लोगों के साथ संगति करना चाहता है। और यह तभी हो सकता है जब मनुष्य की अपवित्रता दूर की जा सके। परमेश्वर ने यशायाह की अपवित्रता को दूर किया था और उसके पापों के लिए प्रायश्चित किया था। यह प्रायश्चित एक चिन्ह के द्वारा किया गया था जब परमेश्वर ने एक जलते हुए कोयले से यशायाह के होंठों को छुआ था। बाइबल में प्रायश्चित का अर्थ है अपने पाप की कीमत चुकाना जिससे परमेश्वर की धार्मिकता को समझा बुझा कर उनके क्रोध को शान्त करना है। जिससे दोषी को फिर से परमेश्वर के साथ मिला देना। क्योंकि यशायाह के पापों का प्रायश्चित हो गया था इस लिए अब वह परमेश्वर की उपस्थिति में खड़ा हो सकता था। इसी रीति से यदि हम चाहते हैं कि हम भी परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े हो सकें तो हमें भी परमेश्वर को अनुमति और अवसर देना होगा कि वह हमारे लिए प्रायश्चित करे।

4. पवित्रता और सेवकाईः

परमेश्वर ने फिरौन, नबूकदनज़र और साइरस जैसे सांसारिक लोगों का भी प्रयोग किया है जिससे इतिहास में अपनी योजनाओं को पूरा कर सके। लेकिन पवित्र परमेश्वर किसी भी अपवित्र जन को आत्मिक सेवा में इस्तेमाल नहीं करेगा। एक अपवित्र भविष्यद्वक्ता कभी भी लोगों के सामने एक पवित्र परमेश्वर का दूत नहीं बन सकता है। लेकिन अब जब परमेश्वर ने यशायाह के पापों के लिए प्रायश्चित कर दिया है तो अब परमेश्वर ऐसा कर सकता है और चाहता भी है कि वह एक भविष्यद्वक्ता के रूप में उसकी सेवा करे। और परमेश्वर ने वास्तव में यशायाह को अपनी सेवकाई करने दी थी। इसी रीति से यदि हम परमेश्वर की सेवकाई करना चाहते हैं तो हमें परमेश्वर को अनुमत देनी होगी कि वह हमारे पापों के लिए प्रायश्चित करे।

आराधनाः
छोटा दल बना कर परमेश्वर की आराधना करें।

3.	**गवाही बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **मत्ती 22:1 – 25:13**

बारी-बारी से अपनी गवाही बाँटे या अपने नोट्स से पढ़ेः संक्षेप में जो कुछ भी आपने परमेश्वर के साथ अपने निजि समय में सीखा था उस लेखाँश से जो आपको दिया गया था।
(मत्ती 22:1 – 25:13)
जो भी गवाही बाँट रहा है उसे ध्यान से सुने और उसे मान ले। कोई बहस न करें।

4.	**बाइबल शिक्षा** (70 मिनट) *प्रार्थना* **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर के लिए प्रार्थना**

क.प्रार्थना क्या है?

1.प्रार्थना परमेश्वर के साथ दो तरफा बातचीत है।

नीचे दिये चित्र में क्या अन्तर है?

परमेश्वर — परमेश्वर वचन आप अपने पड़ोसी के खिलाफ झूठी गवाही नहीं देंगे निर्ग, 20:16 परमेश्वर कृपया मुझे चंगा कर दें तुम — तुम	परमेश्वर — परमेश्वर वचन आप अपने पड़ोसी के खिलाफ झूठी गवाही नहीं देंगे निर्ग, 20:16 मानता हूँ कि मैंने सच को बढ़ा-चढ़ा कर बोला था। कपया मेरी सहायता करें मैं जितना सच है उतना ही बोलूँ। तुम

नोट्सः यह एक तरफा बातचीत है। इसमे आप अपनी प्रार्थना में परमेश्वर को उसका कोई प्रतिउत्तर नहीं देते है (जैसा बाइबल में लिखा है)	यह दो तरफा बातचीत है। आप प्रार्थना में जो परमेश्वर की बात का प्रतिउत्तर देते हैं।

प्रार्थना के दौरान परमेश्वर और अब्राहम ने एक दूसरें से कितनी बार बातचीत की होगी?
पढ़ेः उत्पत्ति 18:17-33
नोट्सः इस प्रार्थना के दौरान परमेश्वर ने 7 बार बात की थी और अब्राहम ने 6 बार। यह प्रार्थना स्पष्ट रूप से बताती है कि प्रार्थना परमेश्वर और मनुष्य के बीच की गई बातचीत है। जिस में दोनो बारी बारी से बात करते हैं।

यह दो तरफा बातचीत कौन शुरू कर सकता है?
पढ़ेः भजन 5:3
नोट्सः आप या परमेश्वर कोई भी इस दो तरफा बातचीत को शुरू कर सकता है। उत्पत्ति 18 में परमेश्वर ने पहले अब्राहम को दिखाया था क वह सदोम और गमोरा जैसे दुष्ट नगरों के साथ क्या करने वाला था। तब अब्राहम ने प्रतिउत्तर में इन नगरों के धर्मी लोगों के लिए प्रार्थना करनी शुरू की थी। भजन 5 में दाऊद ने पहले प्रार्थना की थी और फिर परमेश्वर के प्रति उत्तर की आशा में बैठा रहा था।

उत्पत्ति 18	भजन 5:3
परमेश्वर वचन परमेश्वर के चेतावनी के के वचन प्रार्थना आपका प्रतिउत्तर मध्यस्थता की प्रार्थना के द्वारा	परमेश्वर वचन/कार्य प्रार्थना परमेश्वर से सवेरे की गई आप की प्रार्थना और आशा के साथ प्रतीक्षा करना। बाद में परमेश्वर आपको अपने वचन या कार्य के द्वारा प्रतिउत्तर देगा।

संक्षिप्त वर्णनः प्रार्थना परमेश्वर और मनुष्य के बीच दो तरफा बातचीत है जिसे आप या परमेश्वर कोई भी शुरू कर सकता है।

2. प्रार्थना परमेश्वर के शब्दों और कर्मो के विषय में भिन्न तरह का प्रतिउत्तर होता है।

परमेश्वर क्या कहते व करते हैं? और लोगों की प्रतिक्रिया क्या होती है?
पढ़ेः नीचे लिखे बाइबल के संदर्भो को पढ़े।

परमेश्वर बोलता है या करता है	हम प्रार्थना में उसका प्रति उत्तर देते हैं
1.भजन 33:1-4 परमेश्वर का वचन सही और सच्चा है। परमेश्वर के कार्य विश्वासयोग्य हैं।	**1.स्तुतिः** प्रार्थना करके, संगीत बजा कर और गीत गा कर।
2.भजन 51 मुख्य वचनः 4,10-12 परमेश्वर के वचन नातान भविष्यद्वक्ता के द्वारा जिसने पाप का न्याय किया था।	**2.अंगीकार करनाः** अपने पाप का अंगीकार करके परमेश्वर से क्षमा माँग कर शुद्ध करने की माँग करें।
3.भजन 119:33-37 परमेश्वर अपने वचनो को अपने नियमों में, आज्ञाओं में, विधियों और वायदों के साथ बोलता है।	**3.माँगोः** परमेश्वर से अपने जीवन में सही समझ, मार्गदर्शन और वह सहायता माँग लें जिसके द्वारा परमेश्वर की नज़रों में पाप करने से बच जाएँ।
4.उत्पत्ति 18:17,20,26 परमेश्वर दूसरों की ज़रूरतों को प्रकट करता है।	**4.मध्यस्थ बनो** परमेश्वर से मिलो और दूसरों कि ज़रूरत क लिए विनती करो
5,भजन 107:4-15 परमेश्वर हर दुख से बचाता है।	**5.धन्यवाद करो** परमेश्वर का उसके कभी असफल न होने वाले प्रेम के लिए धन्यवाद करें।

संक्षिप्त वर्णनः
प्रार्थना एक प्रतिउत्तर है जो परमेश्वर के वचन या कार्य के लिए 5 भिन्न रूप में दिया जा सकता है।
प्रार्थना एक प्रति उत्तर है स्तुति करने का, अंगीकार करने का, किसी माँग के लिए विनती करने का मध्यस्थता का या फिर धन्यवादी का।

3. प्रार्थना करने के भिन्न लक्ष्य होते हैं।

नीचे दी गई प्रार्थनाओं का लक्ष्य क्या है?

पढ़ेः नीचे लिखे बाइबल के लेखाँश पढ़ें।

नोट्सः

भजन 77:7-14,19 यह प्रार्थना परमेश्वर पर उसके चरित्र, वचनों और कर्मो पर केन्द्रित है। **कुलुसियों 1:9-12** इस प्रार्थना का केन्द्र अन्य लोग हैं और उनकी ज़रूरते हैं। **भजन 31:2-5**इस प्रार्थना का केन्द्र स्वयं पर है आपकी निजि ज़रूरतें और इच्छाएँ।	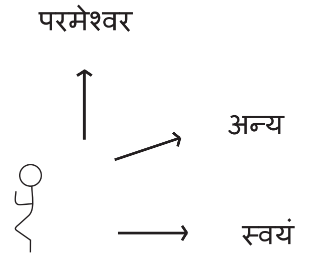

संक्षिप्त विवरणः
प्रार्थना का केन्द्र परमेश्वर उसका चरित्र उसके वचन या कर्मो पर हो सकता है
प्रार्थना का केन्द्र दूसरे लोग उनकी ज़रूरतें और इच्छाएँ हो सकती हैं।
प्रार्थना का केन्द्र आप स्वयं या आपकी इच्छाएं हो सकती हैं।

ख. प्रार्थना और दृष्टिकोण

खोजें और उस पर विचार विमर्श करें प्रार्थना करते समय कौन सी मानसिक स्थिति और व्यवहार महत्त्वपूर्ण है?

1. नम्रताः

पढ़ेः नीति वचन 3:5-6; 1 युहन्ना 5:14
नोट्सः अपने मन को और उसमें बसे विचारो और उद्देश्यों को परमेश्वर के मन को समर्पित कर दें। परमेश्वर घमण्डी लोगों का सामना करते हैं और जो अपनी समझ पर भरोसा करते हैं।(1 पतरस 5:5-6)

2. एक क्षमा करने वाली आत्माः

पढ़ेः मरकुस 11:25
नोट्सः जिस किसी ने आपके विरुद्ध गलत किया है उसे क्षमा कर दें। कभी भी नाराज़ या बदला लेने की भावना न रखें। यदि आप क्षमा नहीं करेंगे तो परमेश्वर भी आपको क्षमा नहीं करेगा।
(मत्ती 6:14-15; भजन 66:**18)**

3. ईमानदारीः

पढ़ेः मत्ती 6:5-8
नोट्सः हर प्रलोभन का सामना करें जिससे लोग आपकी प्रार्थना से प्रभावित हों।
यदि आप को अच्छा लगता है कि लोग आपको प्रार्थना करते सुने तब आपको परमेश्वर से प्रतिफल नहीं मिलेगा।

ग. व्यवहारिकताः परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में भिन्न प्रार्थनाएँ

1. प्रार्थना जो आप परमेश्वर के साथ अपने निजि समय में करते हैः

शिक्षा देः अपने मनपसन्द सत्य पर मनन करने के बाद आप अपने मनपसन्द सत्य के प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें। अपने मनपसन्द सत्य के विषय में अपने लिए प्रार्थना करें, या परिवार के किसी प्रियजन के लिए, किसी पड़ोसी के लिए, यै किस ऐसे के लिए जो दूर रहता हो, प्रार्थना करें। जब कभी आप एक मित्र के साथ प्रार्थना करते हैं तब आप अपने मित्र के मनपसंद सत्य के विषय में प्रार्थना करें अर्थात आप एक दूसरे कि लिए प्रार्थना करें।

2. बाइबल अध्ययन के दौरान परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना करनाः

शिक्षा देः जब आप बाइबल के लेखाँश का अध्ययन कर चुके हैं तब उन महत्त्वपूर्ण सत्यों के विषय में जो आपने सीखे हैं उनके विषय में प्रार्थना करें। यह परमेश्वर के वचन के विषय में आपकी प्रतिक्रिया होगी। विशेषकर इसके लिए प्रार्थना करें और परमेश्वर से पूछें कि वह बाइबल के इन सत्यों को आपके जीवन में कैसे लागू करना चाहता है।

3. बाइबल पठन के दौरान परमेश्वर के वचन के प्रति आपकी प्रतिक्रियाः

शिक्षा देः जब आप एक बाइबल का लेखाँश पढ़ चुके हों और उसके अर्थ को समझ चुके हों तब आप उन वचने में लिखे हर सत्य के लिए प्रार्थना करें। यही परमेश्वर के वचन के लिए आपकी प्रतिक्रिया होगी। इस प्रार्थना को पवित्र वचन की प्रार्थना कहा जाता है।

5.	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*(प्रतिक्रियाएँ)* **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

भाग करेः पूरे दल को 3-3 सदस्यों के दल में बाँट लें। फिर भजन 34:1-21 से हर व्यक्ति 1 या 2 पद पढ़े और हर व्यक्ति के पढ़ने के तुरन्त बाद ही उन पदों के विषय में छोटी सी प्रार्थना करे, इससे पहले कि अगला व्यक्ति अगले पदों को पढ़े।

6.	**तैयारी** (2 मिनट)	*निर्धारित कार्य* **अगले पाठ के लिए**

दल के अगुवेः दल के सदस्यों को यह तैयारी घर से करने को लिखित में दें। और उसे कापी में उतारने को कहें।

1.समर्पणः प्रार्थना करें कि जब कभी परमेश्वर आप से बात करेगा तब आप स्वयं को प्रतिउत्तर देने के लिए समर्पित करेंगे।

2.परमेश्वर के साथ निजि समयः परमेश्वर के साथ एक निजि समय निर्धारित करें जिस में मत्ती 25:14 – 28:3 से हर दिन आधा अध्याय पढ़ेंगे। और सत्य खोजने के लिए अपने मनपसंद तरीके का प्रयोग करेंगे। अपने नोट्स बनाएँ।

3.बाइबल अध्ययनः अगले बाइबल अध्ययन को घर पर तैयार करें। इफीसियों अध्याय 4:17-5:17 आपकाविषय होगा "मैं यहाँ क्यों हूँ?"

4. प्रार्थनाः किसी विशेष व्यक्ति या किसी विशेष चीज़ के लिए प्रार्थना करें कि इस हफ्ते परमेश्वर आपके लिए क्या नया कर रहा है। (भजन 5:3)

5.अपनी कापी को पूरा करेः आपने कितने चेले बनाए, इसके साथ वह सभी नोट्स जो आपने परमेश्वर के साथ निजि समय बिताते समय सीखा, और जो पद आपने याद किए थे। साथ ही आपके बाइबल अध्ययन के नोट्स भी लिख लें।

अध्याय - 8

1.	**प्रार्थना**

दल के अगुवेः प्रार्थना करें और अपने दल और इस पाठ्यक्रम को परमेश्वर को समर्पित करें कि वे प्रभु के लिए अनेक चेले बना सकें।

2.	**गवाही बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **मत्ती 25:14 – 28:20**

बारी-बारी पढ़े और वचन बाँटे, (या अपने नोट्स में से पढ़ें) संक्षेप में वही बोले जो आपने परमेश्वर के साथ जो वचन आपको दिया गया था (मत्ती:25:14 – 28:20) तक) उससे अपने निजि समय में जो भी आपने सीखा है, उसे सब के साथ बाँटें।
जो भी गवाही बाँट रहा है उसे गम्भीरता से सुनें और ग्रहण करें। जो वह बाँट रहा है उस पर बहस न करें।

3.	**याद करना** (20 मिनट) *निश्चितता* **क्षमा निश्चित है -1 युहन्ना.1:9**

क. प्रोत्साहित करना (याद करने के लिए)

पढ़े मत्ती 22:23-33, 41-46 और लूका 10:25-26
खोजें और विचार-विमर्श करेः बाइबल के पदों को याद करना क्यों ज़रूरी है?(चाहे वे लेखाँश हो या अध्याय)
लिख लेः याद किए गए बाइबल के पद आप को इस योग्य बना देंगे कि आप मनुष्य के प्रश्नों के उत्तर दे सकें।

ख. मनन करना (बाइबल के एक लेखाँश पर)

एक सफेद कागज़ पर या श्यामपट पर याद करने वाला पद लिख लें

क्षमा निश्चित है **1 युहन्ना 1:9**
यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने में और हमें सब पापों से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य है **1युहन्ना 1:9**

कागज़ के पिछली तरफ बाइबल का संदर्भ वचन लिख दें।

1. मेरी ज़िम्मेदारी है कि मैं अपने पाप को मान लूँ।

अपने पाप को मान लेने का अर्थ है कि जब वह हमें हमारे पाप को दिखाता है तब हम परमेश्वर की बात से सहमत हैं। इसका अर्थ यह भी है कि हम उस से सहमत हो जाएँ जैसा बाइबल हमें बताती है कि पाप क्या है। इसका अर्थ यह है कि हम परमेश्वर से कह सकें कि हम ने क्या गलती की है। और यह भी बताना ज़रूरी है कि हम ने कौन सी सही बातें नहीं की हैं।

2. परमेश्वर की ज़िम्मेदारी है कि वह हमें क्षमा कर दे और हमें शुद्ध कर दे।
जब परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करता है तो वो सारे अपराध बोध व पाप की शर्म को भी हटा देता है।
यीशु मसीह मारे गए क्योंकि उन्होंने हमारे पापों के लिए पश्चाताप् करके उसकी कीमत चुकाई थी। उसने परमेश्वर के क्रोध को जो हम पर हमारे पापों के कारण था उन्हें दूर किया था। (रोमियो 3:25;भजन 32:5) अब हम उसकी आँखों में

दोषी नहीं हैं और अब हमें अपने पिछले पापों भरी ज़िन्दगी के लिए शर्मिन्दा होने की ज़रूरत नहीं है। परमेश्वर फिर कभी हमारे पापों को याद नहीं करेगा। (मीका 7:18-19; इब्रानियों 8:12) और वह कभी भी हमारे पुराने पापों के लिए हमें दोषी नहीं ठहराएगा। (युहन्ना 5:24) वह हमें पूरी तरह से धर्मी का दर्जा देता है और वह हमारा अपने परिवार में स्वागत करता है। (लूका 15:20-24)

जब परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा कर देता है तो वह उनके सारे परिणामों को भी हम से दूर कर देता है।
इसका अर्थ है कि वह हमें शुद्ध और पवित्र कर देता है। वह हमारी अन्तर आत्मा को शुद्ध कर देता है। (इब्रानियों 9:14) वह हमारी सोच और जो हम करते हैं उसे बदल देता है। वह हमें एक धार्मिक जीवन शैली प्रदान करता है।

जब परमेश्वर हमारे पाप क्षमा करता है तब वह हम पर से पाप की राज्य शक्ति हटा देता है
वह हमें पाप की आदतों की गुलामी से आज़ाद कर देता है। जिससे हम अपने शरीर के भागों को धार्मिकता का साधन बना सकें जो पवित्रता की ओर लो कर जाता है। (रोमियो 6:6,13,19)

3. परमेश्वर विश्वासयोग्य और न्यायी है।

परमेश्वर न्यायी है(धर्मी और पवित्र है) इसलिए वह मेरे पापों का प्रायश्चित कर सकता है और अन्त में सारे पापों को क्षमा कर सकता है। परमेश्वर विश्वासयोग्य है इसीलिए उसने आपके सारे पापों के लिए प्रायश्चित पहले से कर दिया है और अन्त में उन्हें क्षमा कर दिया है। हर बार जब आप पाप करते हैं, तुरन्त उसे परमेश्वर के सामने मान लें और वह उनको क्षमा कर देगा और आपको पवित्र कर देगा।

ग. याद व पुनरावलोकन करना

1.लिख लेः बाइबल का पद एक खाली गत्ते या अपनी कापी के पन्ने पर लिख लें।
2.याद करेः तुरन्त बाइबल के पद को याद कर लें। हमारे पास क्षमा का आश्वासन है।(1युहन्ना 1:9)
3.पुनरावलोकनः दो के दलों में बाँट ले और एक दूसरे को जाँच ले कि आप ने पद याद कर लिया है।

4.	**बाइबल अध्ययन** (70 मिनट) ***जीवन के विषय में प्रश्न*** **मैं यहाँ पर क्यों हूँ? इफिसियों 4:17 – 5:17**

बाइबल अध्ययन के लिए बाइबल अध्ययन के 5 कदमों के तरीके का प्रयोग करें।

1 पहला तरीका - पढ़ेः **परमेश्वर का वचन**

पढ़ेः आईए हम सब एक साथ पढ़े, इफिसियों 4:17 – 5:17
आईए हम सब इस लेखाँश का एक-एक पद बारी बारी पढ़ें जब तक पूरा लेखाँश खत्म न हो जाए।

---

2. दूसरा तरीका. - खोज निकालेः **अवलोकन**
ध्यान देः इस लेखाँश में कौन सा सच आपके लिए महत्त्वपूर्ण है?
या फिर कौन से सच ने आपके दिल को छू लिया है?
लिख लेःएक या दो सत्य जो आपने खोजे और समझे हैं उन्हें अपनी कॉपी में लिख लें।
गवाही बाँटेः (जब दल के सभी सदस्य 2 मिनट तक विचार कर चुकें और कापी में अपने विचार लिख चुके हों तब बारी-बारी सब अपने विचारों को दूसरों के साथ बाँटें। (नीचे कुछ लोगों के उदाहरण दिए गए हैं जिन्होंने अपने विचार बाँटे थे कि उन्होंने क्या पाया था। पर याद रहे हर छोटे दल में लोग अलग-अलग बातें बाँटते हैं। पर यह ज़रूरी नही है कि सब के विचार एक समान हो।)

1. पहला खोजः परमेश्वर की मर्ज़ी जानने का महत्त्व।

इफिसियों 4:30 कहता है, "परमेश्वर की पवित्रात्मा को शोकित न करो।"इफिसियों 5:10 कहता है, "और वह खोज निकालो जो परमेश्वर को भाता है।"और इफिसियों 5:17 कहता है, "इस कारण ध्यान से समझो कि प्रभु की इच्छा क्या है।"सच तो यही है कि परमेश्वर इस बात में रुचि रखता है कि मैं हर दिन कैसा जीवन बिताता हूँ। हर दिन मैं जैसे जीता हूँ वह परमेश्वर को शोकित कर सकता है या दुखी कर सकता है। पर यदि मैं मैं झूठ बोलता हूँ और अपने क्रोध पर नियन्त्रण नहीं रखता हूँ, चोरी करता हूँ, निन्दा करता हूँ या लड़ाई करता हूँ तब जैसे मैं जी रहा हूँ उससे परमेश्वर का आत्मा दुखी होता है। पर जो इसके विपरीत है वह भी सच होगा। जब भी मैं सच बोलता हूँ, अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखता हूँ, अपना काम करता हूँ और बाँटता हूँ, लोगों को क्षमा करता हूँ, उनको ऊँचा उठाता हूँ, तब परमेश्वर का आत्मा खुश होता है। और तब जैसे मैं जीता हूँ उससे परमेश्वर खुश होता है। इसीलिए बाइबल कहती है, "समझें कि परमेश्वर की इच्छा (मरज़ी) क्या है।"जितना अधिक मैं अपने जीवन के लिए परमेश्वर की मर्ज़ी को समझूँगा उतना ही अधिक वह जीवन जीऊँगा जो परमेश्वर को पसंद है। इसलिए मैं सोचता हूँ कि इस प्रश्न का उत्तर कि "मैं यहाँ क्यों हूँ?" यही है कि मैं यहाँ इस लिए हूँ कि उसकी मर्ज़ी को जान लूँ और जैसे मैं जीता हूँ उससे परमेश्वर को खुश कर सकूँ।

---

2. दूसरी खोजः मै कैसे जीता हूँ (व्यवहार करता हूँ) इसके महत्त्व को जानना।

इफिसियों की पत्री मूल रूप से एक शब्द का अनेक बार प्रयोग करती है और वह है "चलना"अर्थात "व्यवहार करना" या अपना रोज़ का जीवन जीना। इफिसियों 2:2 कहता है कि इससे पहले कि हम मसीही बनें थे हम आत्मिक रूप से मृत थे क्योंकि हम पाप में जीते थे। इस संसार के परमेश्वर रहित संसार में शैतान की आज्ञाओं को मान कर जीते थे। इफिसियों 2:10 कहता है, मसीही बनने के बाद हमें भले कामों के साथ जीना चाहिए जो परमेश्वर ने पहले से हमारे लिए रख छोड़े हैं कि हम उनको करें। इफिसियो 4:1 कहता है, "जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए हो उसके योग्य चाल चलो। "इफिसियों 4:17 कहता है, "जैसे अन्य जाति के लोग अपने मन की अनर्थ रीति से चलते हैं तुम अब से फिर वैसे न चलो।" इफिसियों 5:2 कहता है,"और प्रेम की चाल चलो जैसे मसीह ने तुम से प्रेम किया था। एक बुद्धिमान के समान न कि किसी मूर्ख के समान।" इफिसियों 5:8 कहता है, "अब तुम ज्योति की संतान के समान जियो।" और इफिसियो 5:15 कहता है, "इस लिए ध्नान रखो कि कैसी चाल चलते हो, निर्बुद्धियों के समान नहीं पर बुद्धिमानों के समान चलो।" सच तो यह है कि परमेश्वर मुझे स्पष्ट रूप से बताता है कि मैं कैसा जीवन बिताऊँ। वह वचन के शब्दो में मुझ से बात करके बताता है कि मैं अपने प्रतिदिन के जीवन में कैसे चलूँ।

इस प्रश्न का उत्तर, "मैं यहाँ पर क्यों हूँ**?**" यही है कि, "मैं यहाँ इसलिए हूँ कि मैं अपना जीवन वैसे ही जीऊँ जैसे परमेश्वर चाहता है।" और वह कारण जिसके लिए मैं इस पृथ्वी पर जीता हूँ वह यह है कि मैं परमेश्वर को खुश कर सकूँ। लेखक पौलूस का कहना है, "चाहे तुम खाओ या पीओ या जो कुछ भी करो सब कुछ परेमेश्वर की महिमा के लिए करो।" (1 कुर.10:11) परमेश्वर ने मनुष्यें की रचना करके उन को इस पृथ्वी पर भेजा है कि वे परमेश्वर की महिमा करें। जब लोग वह रास्ता चुन लेते हैं जिससे परमेशवर की महिमा हो तो परमेश्वर को अच्छा लगता है और वह खुश होता है। लेकिन यदि लोग अपनी मर्ज़ी से चुन कर जीवन जीना चाहते हैं तब परमेश्वर दुखी हो जाता है और उनको सज़ा देता है और उनको अपने राज्य से अलग कर देता है।

3.तीसरा तरीका - प्रश्न व्याख्या करना

ध्यान देः वह कौन सा प्रश्न है जो किसी भी विषय में आप दल से पूछना चाहते हैं?
आईए हम इफिसियों 4:17 - 5:17 में जो सत्य निहित हैं उनको समझने की कोशिश करें। और उन बातों के विषय में प्रश्न करें जो अब तक हमें समझ नहीं आई हैं।
लिख लेः अपने प्रश्न सही और स्पष्ट रूप से पूछें और फिर उसे अपनी कॉपी में लिख लें।

गवाही बाँटेः दल के सभी सदस्य दो मिनट तक मनन करें और फिर हर सदस्य अपने प्रश्न को दल के साथ बाँटें।

ध्यान देः अब सभी प्रश्नों में से कुछ प्रश्न चुन लें और विचार-विमर्श करके अपने दल में उनके उत्तर को खोजने की कोशिश करें।
नीचे कुछ प्रश्नों के उदाहरण दिए हए हैं जो विद्यार्थी पूछ सकते हैं। और साथ ही विचार-विमर्श के बाद उन को अपनी कापी में लिख सकते हैं।

4:17
प्रश्न 1. इसका अर्थ क्या है कि अन्य जाति के लोग अपने विचारों के कारण अपना जीवन व्यर्थ गंवा रहे हैं?

लिख लेः अन्य जाति के लोग वे हैं जो अब तक यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करते हैं। बाइबल बताती है कि अन्य जाति के लोग खुशी प्राप्त करने के लिए जितनी भी कोशिश कर लें वे अन्त में सदा निराश ही होंगे। उनका जीवन एक लम्बे इन्तज़ार का जीवन होगा जहाँ पर उनकी इच्छाएं कभी भी पूरी नहीं होंगी।वे जो चाहते हैं उसका पीछा तो करते हैं लेकिन उसे कभी भी प्राप्त नहीं कर पाते हैं। उनके पेड़ों में फूल के समान खिलते तो हैं पर फलवन्त नही होते हैं। वे कभी भी लम्बे समय तक रहने वाले परिणामों के साथ जीवित नहीं रहते हैं। वे उसका अनुभव करते हैं जो प्रचारक ने अपने जीवन में अनुभव किया था, "यह कि सारी नदियाँ बह कर समुद्र में समा जाती हैं पर समुद्र कभी भी पूरी तरह से भरता नहीं है।.... और और मेरी आँखों की देखने की लालसा काफी न थी और न ही मेरे कानों ने वह सब सुना जिसकी मुझे लालसा थी।। मैंने अपने दिल को किसी भी आनन्द को भोगने से नहीं रोका था...लेकिन जब भी मैं ने देखा कि जो कुछ मेरे हाथों ने किया था तो मैं ने देखा कि वह सब तो जैसे व्यर्थ था, मानों हवा के पीछे भागने के समान था।" (सभोपदेशक 1:7-8, 2:10-11_ जो लोग परमेश्वर के बिना होते हैं उनकी सोच ऐसी किसी चीज़ की रचना नहीं कर सकता है जो संतोष दे सके।

4:18
प्रश्न 2. बाइबल ऐसा क्यों कहती है कि अन्य जाति के लोग इस लिए अज्ञानी होते हैं क्योंकि उन्होंने अपने हृदयों को कठोर कर लिया है?

लिख लेः सृष्टि की उत्पत्ति के समय सब लोग जीवित परमेश्वर के अस्तित्व को जानते थे। लेकिन मनुष्य के पाप में गिर जाने के कारण मनुष्य धीरे-धीरे परमेश्वर को भूलने लगा था और ऐसा जीवन जीने लगा था परमेश्वर के जीवन से रहित था। जब परमेश्वर ने हनोक और नूह के द्वारा लोगों से बात करनी चाही थी तब लोगों ने अपने दिलों को कठोर कर लिया था।

जब जब लोग निरन्तर पाप करने में डटे रहते हैं तब परमेश्वर उन्हें छोड़ देता है कि वे अपने पाप के पूरे परिणामों का दुख सहें। अन्य जाति के लोग जब अपने हृदय को कठोर कर लेते हैं तब परमेश्वर उनको कठोर बनने देता है। परमेश्वर उनको कठोर बना देता है जो खुद को परमेश्वर के विरुद्ध कठोर बना लेते हैं। अपने ही जानबूझ कर किए कर्मों के कारण अन्य जाति के लोग कठोर बन जाते हैं। अन्यजाति के लोग परमेश्वर के बारे में सोचना भी नहीं चाहते हैं इसी लिए परमेश्वर ने उनको जीवित परमेश्वर के विषय में अंधा बना दिया था। वे इस बात के प्रति भी अंधे थे कि वे वास्तव में अंधे थे। (युहन्ना 9:40-41) वे लोग जो परमेश्वर के बिना जीवित रहने पर डटे रहते हैं वे इस बात को जानते भी नहीं हैं कि वे जीवित परमेश्वर के बिना जी रहे हैं क्योंकि वे परमेश्वर के अस्तित्व से अनजान है। वे जीवित परमेश्वर के बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं।

4:22-24
<u>प्रश्न 3. आप अपने पुराने मनुष्यत्व को त्याग कर नए मनुष्यत्व को कैसे पहन सकते हैं?</u>

नोट्सः दोनों क्रिया शब्द किसी प्रक्रिया की ओर संकेत नहीं करते हैं। वह तो सदा के लिए एक ही बार की प्रक्रिया को बताते हैं जो मेरे पुनर्जन्म के समय हुई थी। उस समय जब मैं ने पहली बार यीशु मसीह पर विश्वास किया था, तब मैं ने एक ही बार अपने पुराने मनुष्यत्व को त्याग कर एक नए मनुष्यत्व को पहन लिया था। मेरा पुराना मनुष्यत्व तो परमेश्वर से और मेरी पुरानी जीवन शैली से अनजान था। मेरा नया व्यक्तितत्व तो परमेश्वर की मर्ज़ी का और ऐसा जीवन जीने का ज्ञान है जो परमेश्वर को पसन्द है। मेरा नया व्यक्तितत्व ही अब मेरी पहचान है। अब "मैं मसीह में हूँ" और कभी भी अकेला नहीं हूँ। "मेरा जीवन अब मसीह के साथ परमेश्वर में छुपा हुआ है।" (कुलु.3:3)

लेकिन इस एक ही बार की शुरूआत में मैं चाहता हूँ वह मुझे जीवनपर्यन्तउस प्रक्रिया की ओर ले जाए, जहाँ पर मैं अपने पापों को मान कर यीशु मसीह के गुणों को धारण कर लूँ। वे विशेष पाप कौन-कौन से हैं जिन को मुझे त्यागना होगा? बाइबल बताती है कि मुझे विशेष रूप से झूठ बोलना, क्रोध करना, चोरी करना, लड़ाई करना, निन्दा करना, यौन अनैतिकता, लालच और हर प्रकार के द्वेश भाव को त्यागना होगा। वे कौन सी विशेष धार्मिक बातें हैं जिनको हमें पहनना है? बाइबल बताती है कि हमें जो ग्रहण करना है वह है सच बोलना, अपने क्रोध पर नियन्त्रण करना, मिल-बाँट कर काम करना, दया करना, करुणा दिखाना, क्षमा करना, प्रेम करना, धन्यवाद करना, परमेश्वर की मर्ज़ी को जानना और उसके उस ज्ञान को पा लेना कि जीवन को कैसे जिया जाए।

4:26
<u>प्रश्न 4. इसका क्या अर्थ है कि क्रोध तो करो पर पाप मत करो?</u>

लिख लेःकुछ लोग सोचते हैं कि एक मसीही को कभी भी क्रोध नहीं करना चाहिए। वे कहते हैं कि हर प्रकार का क्रोध पाप है। अन्य लोग सोचते हैं कि आप क्रोध कर सकते हैं क्योकि क्रोध का पाप से कोई मेल नही हैं। लेकिन ये दोनों दृष्टिकोण गलत है।

बाइबल कहती है, "क्रोध करो पर पाप मत करो।" क्रोध अपने आप में पाप नहीं है क्योंकि क्रोध तो परमेश्वर के नाम से जुड़ा है। परमेश्वर का क्रोध धार्मिक नाराज़गी की भावना है। वह उसकी हर गलत काम और दुष्टता के प्रति नाराज़गी है। मसीही लोगो को भी उन लोगों के प्रति जो दुष्टता करते हैं इस धार्मिक नाराज़गी की भावना हो सकती है। इस तरह के क्रोध को धार्मिक क्रोध कहते हैं। धार्मिक क्रोध तो किसी व्यक्ति, किसी विषय के प्रश्न पर होता है और उसे नाराज़गी नियन्त्रण के साथ उस गलत बात के लिए जो लोग कहते या करते हैं, उसके प्रति हमारे व्यवहार और बातों के द्वारा दिखाई जाती है। परमेश्वर अपना धार्मिक क्रोध अस्थाई सज़ा के रूप में, न्याय के द्वारा दिखाता है। (रोमियो 1:18; 2:5-6; इब्रानियों 12:6) और यीशु मसीह ने भी (मत्ती 21:12; युहन्ना 2:15-16) में अपना क्रोध दिखाया था जब उन्होंने अस्थाई सज़ा दी थी।

लेकिन अधिकतर समय जब हम मनुष्य क्रोध करते हैं तब हम अपने क्रोध को केवल उस व्यक्ति तक या उस मसले तक सीमित नहीं रखते हैं। हम कुछ भी नियन्त्रण में रहीं रख पाते हैं और हम बुरे शब्दों को प्रयोग करते हैं जो कि दुखी करने वाले होते हैं। इस तरह से हम पाप करते हैं। जब कभी क्रोध को नफ़रत के रूप में गलती करने वाले पर प्रकट किया जाता है या गाली देकर या हिंसा के साथ, तब वह क्रोध पाप बन जाता है। पाप से नफरत करने के लिए और पापी से प्रेम करने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह की ज़रूरत है।

4:26

प्रश्न 5. इसका क्या अर्थ है कि सूरज डूबने से पहले क्रोध शान्त हो जाना चाहिए

नोट्सः बाइबल में सूरज के ढलने का अर्थ है दिन का समाप्त हो जाना। अनेक लोग तो कई बार सालो-साल लोगों से गुस्सा रहते हैं। वे क्षमा नहीं कर पाते हैं और कड़वाहट से भरे रहते हैं। वे गलतियों की एक लम्बी सूची बना कर रख लेते हैं जो दूसरे लोगों ने उनके विरुद्ध गुज़रे सालों में की हैं। वे सदा उनकी आलोचना करते रहते है और उसके लिए ताने मारते रहते हैं। बाइबल बताती है कि एक मसीही को दिन भर के लम्बे अरसे से अधिक समय के लिए क्रोध नहीं करना चाहिए। उस दिन के समाप्त होने से पहले अर्थात सूरज डूबने से पहले या फिर सोने से पहले उसे जिससे वह गुस्सा है उससे मेल-मिलाप कर लेना चाहिए। उसे दया करके उस गलती के लिए जो दूसरे व्यक्ति ने की है उसके लिए क्षमा कर देना चाहिए।

4:27

प्रश्न 6. हम शैतान को पैर रखने का स्थान कैसे दे देते है?

लिख लेःबाइबल इफिसियों 4 के 26 और 27 पदों को इस बात से जोड़ती है। 27 पद तो कहता है, "शैतान को अवसर मत दे।"उसका अर्थ है कि शैतान को जीवन के उस क्षेत्र मे प्रवेश करने का मौका न दो। अर्थात मेरे शरीर में प्रवेश न करने पाए जिससे कोई नुकसान पहुँचा सके, विशेषकर जब मैं क्रोध से भरा हूँ। उस समय मैं शैतान को अवसर न दूँ कि वह मेरे क्रोध को नफरत में बदल कर मुझे उस बात को दिल में रख कर क्षमा न करने दे। इतना ही नहीं, ध्यान रहे कि कहीं वह मुझ को हिंसक न बना दे। इसी लिए ज़रूरी है कि मैं जल्दी से क्षमा करना सीख लूँ। और इसी लिए इफिसियों 4:32 कहता है कि मुझे अपने विरुद्ध गलत करने वाले को मैं वैसे ही माफ कर दूँ जैसे यीशु ने मुझे क्षमा किया है।

इफिसियो 6:11 यह भी जोड़ता है, "परमेश्वर केसारे हथियार बाँध लो कि तुम शैतान की युक्तियोंं के सामने खड़े रह सको।"शैतान तो कोई भी युक्ति लगा कर कोशिश करेगा कि मैं पाप करूँ। वह मेरे क्रोध को पकड़ लेगा और उसे गालियों और हिंसक व्यवहार में बदल देगा। वह मेरे लालच को पकड़ लेगा और और मुझे धोखा देने या चोरी करने को उकसाएगा। वह मेरे भय को पकड़ लेगा और मुझे झूठ बोलने पर मजबूर कर देगा। इसी लिए याकूब का 4:7 कहता है, "इस लिए परमेश्वर के अधीन रहो और शैतान का सामना करो तो वह तुम्हारे पास से भाग जाएगा।"

4:29

प्रश्न 7. आप कैसे सहायक शब्द बोलेंगे जो दूसरे लोगों का निर्माण कर सकते हैं?

लिख लेः नीति वचन की पुस्तक मुझे सिखाती है कि मैं कैसे बात करूँ जिससे दूसरों की सहायता हो सके। मुझे कुछ बोलने से पहले सोचना चाहिए कि मैं क्या उत्तर दूँ। मुझे अपना उत्तर सही समय पर देना चाहिए। मुझे एक नम्र उत्तर देना चाहिए। (नीति वचन 15:28,23,1) इफिसियो 4:15 कहता है, "सच्चाई और प्रेम से उत्तर दो जिससे हम मसीह में जो कि सिर है बढ़ते जाएँ।"इफिसियो 4:29 कहता है, "कोई गन्दी बात तुम्हारे मुँह से न निकले पर आवश्यक्ता के अनुसार वही निकले जो उन्नति के लिए उत्तम हो ताकि उससे सुनने वाले पर अनुग्रह हो।"इस रीति से बोलने का नियम, निर्माण के लिए एक और तरीका है।

बोलने के विषय के तीन महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों का साराँश कि बोलने से पहले मुझे खुद से क्या प्रश्न करने हैं।

1. क्या वह सच है या नहीं? और यदि वह सच नहीं है तो क्या मुझे चुप रहना है?
2. यदि यह सच है तो क्या यह दूसरे व्यक्ति को बनाएगी या तोड़ डालेगी? और यदि तोड़ डालेगी तो

क्या मुझे चुप रहना है?

3. यदि वह उसका निर्माण करेगी तो क्या मै उसे प्यार से कहूँगा या नहीं? और यदि मैं उसे प्यार से नहीं कह सकता है तो क्या मुझे चुप रहना होगा?

5:7

<u>प्रश्न. 8. कैसे लोगों के साथ एक मसीही को संगति नहीं करनी चाहिए?</u>

लिख लें। मसीही लोग एक पापी और टूटे हुए संसार में जीते हैं, लेकिन वे इस पापी और टूटे संसार का भाग नहीं हैं। (युहन्ना 17:11,16)मसीहों को इस संसार की अन्य जातियों के बीच अपनी ज्योति को चमकने देनी चाहिए। (इफिसियों 5:14-16) लेकिन मसीहों को उन अन्य जाति के लोगों का साथी नहीं बनना चाहिए जिनके कार्य फलवन्त नहीं हैं। (इफिसियों 5:11) और न ही उनके साथी बने जो आज्ञाओं का पालन नहीं करते हैं। **पढ़ें** 1 कुर.5:9-13

<u>प्रश्न 9. आप क्या सोचते हैं कि इफिसियों 4:17 - 5:17 आपके जीवन में क्यों महत्त्वपूर्ण है?</u>

लिख लेः इफिसियों 4:17 - 5:17 हमें सिखाता है कि मैं यहाँ इस पृथ्वी पर क्यों है। मैं इस पृथ्वी पर इस लिए हूँ कि मैं वह जीवन जीऊँ जो परमेश्वर चाहता है। एक नया जीवन जो परमेश्वर की मर्ज़ी के अनुसार है और जो परमेश्वर को पसंद है और जो उसकी महिमा करता है। एक नया जीवन वह है जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे बुलाया है। (इफीसमयों 4:1) जो अन्य जातियों के जीवन से एक दम अलग है। (इफीसियो 4:17; 2:2) नया जीवन लगातार पुराने जीवन के व्यक्तित्व को जो पापों से भरा है उसे छोड़ कर एक नई धार्मिकता को ग्रहण करना है। यह नया जीवन वह जीवन है जो सच्चाई, धार्मिकता, और पवित्रता के विशेष लक्षणों से सजा होता है। इफीसियो 4:22-24) प्रेम (5:2) ज्योति (5:8) बुद्धि (5:15) इफिसियों 4:17 - 5:17 हमें सिखाता है कि हमारा जीवन कैसे अर्थपूर्ण बन सकता है और इस संसार में उसका एक उद्देश्य है।

---

4. चौथा तरीका **लागू करना**

ध्यान देः इस लेखाँश में कौन से ऐसे सत्य है जो मसीहों पर लागू किए जा सकते हैं?

गवाही बाँटें और उसे लिख लेः आईए हम हर व्यक्ति के दिमाग़ में तूफान मचा दें और उनके विचारों की एक सूचि बनाएँ कि कहाँ-कहाँ पर इफिसियों 4:17 - 5:17 के सत्यों को लागू किया जा सकता है।

ध्यान देः वह कौन सा सत्य है जिसे परमेश्वर आपको अपने जीवन में लागू करने को कह रहा है?

लिख लेः अपनी निजि कापी में जो सत्य आपने लागू किया है उसे लिख कर रख लें। और उसको दूसरों में स्वतन्त्र हो कर बाँटें। (याद रहे कि हर दल में लोग अलग-अलग सत्य को अपने जीवन में लागू करेंगे और कई लोग तो एक ही सत्य को अलग रीति से लागू करेंगे। नीचे उन सत्यों को लागू करने की एक सूची है जो सत्य लागू करने की सम्भावना है।

<u>1. वे सम्भव उदाहरण जो इफिसियों के 4:17 - 5:17 में लागू किए गए थेः</u>

4:17-19 ध्यान दे कि मेरे चारों तरफ रहने वाले अन्य जाति के लोग कैसे हैं। फिर उनसे भिन्न रीति की चाल चलें।

4:24 ध्यान दे कि किस रीति से सच्चाई, धार्मिकता, और पवित्रता मेरे जीवन में और अधिक वास्तविक रूप ले सके।

4:25 हर तरह के झूठ को त्याग दें। केवल सत्य ही बोलें।

4:26	अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखना सीख लें। सोने जाने से पहले ही क्रोध को त्याद दें।
4:27	सावधान रहें कि कहीं शैतान आपके जीवन में अपना कदम न जमा सके।
4:28	किसी ज़रूरत मन्द के साथ कुछ बाँट लें।
4:28	खुद काम करके पैसा कमाएँ।
4:29	अपने शब्दों के द्वारा जो मैं बोलता हूँ उससे लोगों का निर्माण हो।
4:30	संवेदनशील बन जाएँ जिससे आप पवित्र आत्मा को शोकित न करें।
4:31	हर तरह की दुष्टता और द्वेश भावना को दूर करें।
4:32	अपने प्रति गलत करने वालों को तुरन्त क्षमा कर दें।
5:1	परमेश्वर को और अच्छी तरह से जान लें और उसी की नकल करें।
5:2	और अधिक सीखने का प्रयास करें कि कैसे एक मसीही के समान प्रेम कर सकते हैं।
5:3-7	उन लोगों से दूर रहे जो गन्दी या गलत बातें बोलते हैं।
5:8-14	अपने जीवन के अन्दर के अन्धकार और अपने भाईयों के जीवन को अन्धकार को सब के सामने ले कर आएँ।
5:15-17	सीख कर बुद्धिमान बन जाओ और परमेश्वर की मर्ज़ी को पूरा करो।

2. इफिसियों के 4:17 - 5:17 मे दिए निज जीवन में सत्यों को लागू करने के उदाहरणः

मैं एक ऐसा जीवन जीना चाहता हूँ कि मैं हर समय परमेश्वर की उपस्थिति को महसूस कर सकूँ कि जो मैं कर रहा हूँ वह परमेश्वर को पसंद है। मैं विशेष रूप से चाहता हूँ कि मैं अपने क्रोध पर काबू रख सकूँ। और जिस ने मेरे विरुद्ध गलत किया है उससे दिन समाप्त होने से पहले मेल मिलाप सकूँ।

मैं एक ऐसा जीवन जीना चाहता हूँ जो परमेश्वर को पसंद हो विशेष रूप से तब जब मैं अपनी किसी गन्दी आदत को छोड़ कर एक अच्छी नयी आदत बना लूँ और लगातार कोशिश करके अभ्यास करूँ जब तक बुरी आदत छूट न जाए और परमेश्वर मेरे जीवन का नए सिरे से निर्माण न कर दें।

---

5. पाँचवाँ तरीका **प्रतिक्रिया**

आईए हम एक सच के विषय में प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने इफि.4:17 - 5:17में हमें सिखायागया है। अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें उस के लिए जो आपने बाइबल अध्ययन के दौरान सीखा है। कोशिश करें कि केवल एक या दो लाइन में ही प्रार्थना करें। याद रखें दल के अन्य लोग अन्य विषयों पर प्रार्थना करेंगे।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***मध्यस्थता*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

लगातार प्रार्थना करते रहेः दो या तीन के दल बना कर एक दूसरे के लिए प्रार्थना करें और साथ ही संसार के लिए भी प्रार्थना करें।

6.	**तैयारी** (2 मिनट)	***निर्धारित कार्य*** **अगले पाठ के लिए**

दल के अगुवेः दल के सदस्यों को तैयारी के लिए घर का काम लिखित रूप में देंगे और उसे कापी पर उतारने को कहेंगे।

1.समर्पणः हर सदस्य किसी एक सत्य को लागू करने के लिए, जो सम्भव हैउसके सिए समर्पण करेगा।

2.परमेश्वर के साथ निजि समयः परमेश्वर के साथ एक निजि समय निर्धारित करें जिस में 1 युहन्ना1:1-4:22 से हर दिन आधा अध्याय पढ़ेंगे। और सत्य खोजने के लिए अपने मनपसंद तरीके का प्रयोग करेंगे। अपने नोट्स बनाएँ।

3. याद करेः नए बाइबल के पद पर मनन करे और उसे याद कर लें, **"क्षमा का आश्वासन"**

नए पद को याद करें जो आश्वासन देते हैं कि प्रार्थना में क्षमा है। (1 युहन्ना 1:9) हर दिन पिछले तीन पदों को फिर से दोहराएँ।

4.प्रार्थनाः किसी विशेष व्यक्ति या किसी विशेष चीज़ के लिए प्रार्थना करें कि इस हफ्ते परमेश्वर आपके लिए क्या नया कर रहा है। (भजन 5:3)

5.अपनी कापी को पूरा करेः आपने कितने चेले बनाए, इसके साथ वह सभी नोट्स जो आपने परमेश्वर के साथ निजि समय बिताते समय सीखा, और जो पद आपने याद किए थे। साथ ही आपके बाइबल अध्ययन के नोट्स भी लिख लें।

अध्याय - 9

1.	**प्रार्थना**

दल के अगुवेः प्रार्थना करें और अपने दल और इस पाठ्यक्रम को परमेश्वर को समर्पित करें कि वे प्रभु के लिए अनेक चेले बना सकें।

2.	**आराधना** (20 मिनट) ***(परमेश्वर के विशिष्ट गुण)*** **परमेश्वर प्रेम है**

परिभाषा

आराधना क्या है? "आराधना" की परिभाषा है:

आराधना वह अभिव्यक्ति है जो हमारी परमेश्वर के प्रति उपासना, समर्पण और निष्ठा को प्रकट करती है। जो हम अपनी भिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं और अपनी प्रति दिन की जीवन शैली से प्रकट करते हैं।

परमेश्वर की आराधना करने के लिए, हमें ज़रूरत है कि हम अपने परमेश्वर को जान लें कि हमारा परमेश्वर कौन है। हर आराधना के समय हम परमेश्वर के केवल एक ही विशिष्ट गुण को जान सकते हैं।

मनन करनाः

पढ़े या शिक्षा दे: "परमेश्वर प्रेम है।"की शिक्षा दें।

1. परमेश्वर का स्वभाव प्रेम है।

पढ़ेः यशायाह 43:2; रोमियो 5:8-10 परेश्वर हम से किस रीति से प्रेम करता है?

- **परमेश्वर संसार के लोगों से एक जीवन बचाने वाले के रूप में प्रेम करता है।**

एक जीवन बचाने वाला बाढ़ के पानी में कूद कर, या जलते हुए घर की आग में घुस कर अपनी जान को खतरे में डाल कर दूसरे लोगों की जान बचाता है। लाल समुन्दर की बाढ़ का पानी चिन्ह है परमेश्वर को न मानने वाले दुष्ट राष्ट्रों का जो पूरे संसार में फैले हैं। (यशायाह 17: 12-13) वह आग की भट्टी जिस में दानिएल के तीन मित्रों को फेंका गया था चिन्ह है मसीहों के सताव का।

- **परमेश्वर संसार के लोगों को एक चरवाहे के समान प्रेम करता है।**

एक चरवाहा अपनी खोई हुई भेड़ को तब तक ढूँढता रहता है जब तक वह मिल नहीं जाती है।

- **परमेश्वर हम से एक माता और पिता के समान प्रेम करता है।**

परमेश्वर एक माता के समान प्रेम करता है जैसे माता अपने बच्चो की देखभाल करती है, उनकी रक्षा करती है उनको खाती पिलाती है और उनको पढ़ाती लिखाती है

- **परमेश्वर हम से ऐसे प्रेम करता है जैसे एक मित्र प्रेम करता है।**

एक मित्र की इच्छा रहती है कि वह अपने मित्र के साथ रहे और उसके साथ मिल कर कुछ अच्छा करे।

- **परन्तु सब से अधिक परमेश्वर हमें से अपना बलिदान देकर प्रेम करता है।**

परमेश्वर अपने निज बलिदान के द्वारा अपने प्रेम को साबित करता है इस बात से कि उसने अपने पुत्र यीशु मसीह को क्रूस पर हमारे लिए बलिदान करने को दिया था। उसने यह निज बलिदान इस लिए किया था कि हमें पाप से और अनन्त नाश से बचा सके। परमेश्वर ने यीशु मसीह को हमारे पापों का पश्चाताप करने का अभिषेक करके भेजा था। अर्थात क्रूस पर उसकी मृत्यु के कारण यीशु मसीह ने परमेश्वर के धार्मिक क्रोध को जो हमारे पापों के विरुद्ध था उसे शान्त कर दिया था। उसने हमारे पापों को दूर करके हमे परमेश्वर से मिला दिया था।

<u>2. परमेश्वर ने हम से पहले प्रेम कया था।</u>

पढ़ेः 1 युहन्ना 4:7-21 परमेश्वर सदा से हमारे प्रति अपने विचारों और योजनाओं में प्रथम रहा है।

- **संसार की सृष्टि के पहले से**

परमेश्वर हम से प्रेम करता था और वह दृड़ता से चाहता था कि हम उसके धार्मिक पुत्र और पुत्रियाँ बने। (इफि.1:4-5)

- **हमारे जन्म से पहले से**

परमेश्वर ने यीशु मसीह को भेजा था कि वह हमारे पापों के लिए क्रूस पर मारा जाए।

- **इससे पहले कि हम उसके विषय में कुछ सुनते**

परमेश्वर ने निर्णय लिया कि वह हम तक पहुँचेगा और उसने लोगों को हमारे पास प्रचार करने के लिए भेजा था। (रोमियो 10:14-17)

- **यीशु मसीह को ग्रहण करने से पहले से ही**

परमेश्वर ने हमारे दिलों में काम किया जिससे हम सुसमाचार को सुने और समझें। (युहन्ना 16:8) परमेश्वर ने हमसे इसलिए पहले प्रेम किया था क्योंकि वह चाहते थे कि वह हमे जीत सके। और अब जब उसने हमें जीत लिया है और हम ने उसे ग्रहण कर लिया है तो हम भी बदले में उसे अपना प्रेम दिखा सकते हैं। परमेश्वर नहीं चाहते हैं कि केवल हम अकेले ही उससे प्रेम करे वरन वह चाहते हैं कि हम सब जो उसकी संतान हैं बदले में उससे प्रेम करें और साथ ही एक दूसरे से वैसा ही प्रेम करें जैसा उसने हम से किया है। (मरकुस 12:30-31) जब हम यीशु मसीह को ग्रहण कर लेते हैं और उस पर विश्वास करने लगते हैं तब हमारे अन्दर परमेश्वर का भय समाप्त हो जाता है। यीशु मसीह पर विश्वास करने के बाद सज़ा का कोई भय नहीं रहता है (विशेष रूप से नरक की सज़ा का) लेकिन परमेश्वर मे जीने, उससे प्रेम करने और एक दूसरे से प्रेम करने से हमारा न्याय के दिन पर आत्मविश्वास बढ़ जाता है। (1 युहन्ना 4:17-18)

<u>यीशु से पहले</u>	**<u>यीशु के समय</u>**	**<u>यीशु के बाद</u>**
* हम विश्वास नहीं करते हैं	* उसने हम पर परमेश्वर की और हमारी सच्चाई को प्रकट को प्रकट किया था।	* हम विश्वास करते हैं (उसे अपना मान लेते हैं।)
* हम परमेश्वर के क्रोध के अधीन हैं (रोमियो 1:18)	* यीशु ने पश्चाताप के द्वारा परमेश्वर के पवित्र क्रोध को शान्त (1 युहन्ना4:10) किया और हमारा परमेश्वर के साथ मेल कराया। (रोमियो 5:9-10)	* अब हम परमेश्वर के प्रेम के अधीन है। (1 युहन्ना 3:1) और हमें यह अनुभव कराया कि उसने हम से पहले प्रेम किया और वह सदा करता रहेगा।
* हम परमेश्वर के श्राप के अधीन हैं। (गला.3:10)	* यीशु ने खुद श्राप बन कर हमें छुटकारा दिया है। (गला. 3:13)	* हम परमेश्वर की आशीषों के अधीन हैं।(गलातियों 3:14, इफिसियों 1:3)
हम परमेश्वर की सज़ा के प्रति भय रखते हैं। (1 युहन्ना 4:17-18)		* हमें न्याय के दिन पर भरोसा रखते हैं। (1 युहन्ना 4:17-18)
* हम पापी और खोए हुए लोग हैं। (लूका 5:31-33; 19:10		* हमें खोजा और बचाया जा चुका है। (लूका 15:24)

केवल क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु, और पुनरोत्थान ही हमें परमेश्वर के धार्मिक और न्यायी क्रोध को दूर करके हमें उसकी धार्मिक दया और प्रेम से मिला देता है।

3. परमेश्वर हमें अनन्त प्रेम करता है।

पढ़ेः यर्मियाह 31:3;रोमियो 8:39 - परमेश्वर आज भी हमसे उतना ही प्रेम करता है जितना वह आदिकाल से हम से करता आया है। और वह कल भी हम से उतना ही प्रेम करेगा जितना उसने अतीत में क्रूस पर हम से किया था। परमेश्वर का प्रेम कभी भी डगमगाता नहीं है और न ही अधिक या कम होता है, जैसा कि अकसर मनुष्य का प्रेम होता है। जो परिस्थितियों और भावनाओं के अनुसार अधिक और कम हो जाता है। लेकिन परमेश्वर का प्रेम अनन्तकाल के लिए निरन्तर बना रहता है। कुछ भी ऐसा नहीं है जो मुझे परमेश्वर के प्रेम से अलग कर दे जो कि मेरा प्रभु यीशु मसीह है।

4. परमेश्वर का प्रेम हमें बदल देता है।

पढ़ेः रोमियो 5:5 परमेश्वर का प्रेम केवल हमारी भावनाओं को नहीं छूता है लेकिन वह तो हमारे जीवन को ही बदल डालता है। उसका प्रेम हमें उससे और एक दूसरे से प्रेम करने कारण बन जाता है। वह उन लोगों से भी प्रेम करना सिखा देता है जिन्हें हम प्रेम के लायक नहीं समझते है या जो हमारे शत्रु हैं। कटु सत्य तो यह है कि हम उससे इसलिए प्रेम कर सकते हैं क्योंकि उसने पहले हम से प्रेम किया है। उसने तो अपना प्रेम हमारे हृदय में उँडेल दिया है। रोमियो 5:5 कहता है, "परमेश्वर ने अपना प्रेम उस पवित्र आत्मा के द्वारा मेरे हृदय में उँडेल दिया है जो उसने हमें दी है।" प्रेम का मूल जन्म स्थान हमारा हृदय नहीं है। प्रेम तो केवल परमेश्वर की ओर से आता है। (1 युहन्ना 4:7) परमेश्वर का स्वभाव ही प्रेम है और वही इस संसार में प्रेम का एकमात्र स्रोत है।

आराधना

परमेश्वर के गुण और प्रेम में होकर आराधना करें। तीन लोगों के छोटे समूह में आराधना करें।

3.	**गवाही बाँटना** (20 मिनट)	***[शान्त समय]*** **युहन्ना 1:1 - 4:22**

बारी-बारी वचन बाँटें या निज नोट्स से पढ़ेः संक्षेप में जो कुछ भी आपने परमेश्वर के साथ अपने निजि समय में, उस लेखाँश से जो आप को दिया गया है उससे सीखा है उसे सबके साथ बाँटें।युहन्ना 1:1 - 4:22) जो भी गवाही बाँट रहा है उसे गम्भीरता से सुनें और ग्रहण करें। जो वह बाँट रहा है उस पर बहस न करें।

4.	**बाइबल शिक्षा** (70 मिनट)	***आज्ञाकारिता*** **बढ़होतरी का अध्ययन**

क. बढ़ोतरी की ज़िम्मेदारी

धार्मिक बढ़ोतरी के लिए कौन ज़िम्मेदार है? मरकुस के सुसमाचार 4 में लिखे दो दृष्टान्त इस प्रश्न का उत्तर देते हैं।

1. बीज बोने वाले का दृष्टान्त
फल लाने और आत्मिक उन्नति का ज़िम्मेदार कौन है?

पढ़ेः मरकुस 4:1-20 (मत्ती 13:3-23; लूका 8:4-15)
नोट्सः बीज तो परमेश्वर का वचन है। (लूका 8:11) विशेष रूप से परमेश्वर के राज्य का संदेश (मत्ती 13:19) मिट्टी मनुष्य के दिल की हालत को और उसके व्यवहार को दर्शाती है। (मत्ती 13:19;लूका 8:12)

वह बीज जो सड़क के किनारे पर गिरा थाः
यह तस्वीर है एक ऐसे दिल की जो प्रतिक्रिया नहीं दिखाता है वह एक नासमझ और कठोर हृदय को दर्शाता है। जब आपका दिल इस प्रकार की प्रतिक्रिया या व्यवहार दिखाता है तब आप परमेश्वर के वचन के प्रति कोई प्रतिक्रिया नहीं

दर्शाते हैं। आप लगातार एक ही बात सोचते रहते हैं और वह यह है कि परमेश्वर के वचन में कुछ भी महत्त्वपूर्ण नहीं है। और आप बिलकुल भी कोशिश नहीं करते हैं कि संदेश को समझने का प्रयास करें। (मत्ती 13:19) या फिर अपनी प्रतिक्रिया को बाद के लिए टाल देते हैं। और फिर अन्त में आपका दिल इतना कठोर हो जाता है कि हर बात को ऐसे ही जाने देते हैं। शैतान तो परमेश्वर के वचन की शक्ति को अच्छी तरह से जानता है और वह कोशिश करता रहता है कि उसे दूर से ही छीन लेना चाहता है जिसे आपने ग्रहण नहीं किया है।
वास्तविक शिक्षा यही है कि आप परमेश्वर के वचन को कबूल कर ले (मरकुस 4:20) और जब कभी आप वचन को सुनते हैं, पढ़ते हैं या उसका अध्ययन करते हैं तब हर कोशिश करें कि उसके वचन को समझ सकें (मत्ती 13:23) जब भी वचन को सुने, पढ़ें या उसका अध्ययन करें तुरन्त अपने उदासीनता और शत्रुता के व्यवहार से निबट ले।

वह बीज जो पथरीली भूमि पर गिरा है
यह ऐसे हृदय का चित्रण है जो भावुक हैउथला है और जिस की जड़ नहीं है। जब कभी आपके दिल की यह स्थिति या व्यवहार की यह परिस्थिति होती है तब आप परमेश्वर के वचन पर जल्दबाज़ी से प्रतिक्रिया करते हैं। तब आप बिना नतीजे पर ध्यान दिए वचन को ग्रहण कर लेते हैं। शुरू में आप परमेश्वर के वचन से बहुत उत्साहित होते हैं लेकिन जब कठिनाई या सताव आता है तब आप दूर छिटक जाते हैं। आप परिस्थिति के सामने हथियार डाल देते हैं और अपनी बातों से जो भी कुरबानी देने और दुख उठाने का वायदा किया था उससे मुकर जाते हैं।
सही शिक्षा यही है कि आप परमेश्वर के वचन में बने रहें। (लूका 8:15) और कोशिश करते रहना इस विश्वास के साथ वचन पर बने रहे और हर परिस्थिति में परमेश्वर के वचन का पालन करना। अपनी आदत से तुरन्त निबट लें कि परमेश्वर के वचन को सुन कर उसे केवल भावुकता से स्वयं को छूने न दें।

वह बीज जो कँटीली झाड़ियों मे गिरा था।
यह तस्वीर है एक ऐसे हृदय की जो पहले से कुछ बातों में उलझा और बँटा हुआ है। जब आपके दिल की यह हालत होती है तब आप परमेश्वर के वचन के अतिरिक्त दूसरी बातों के अनुसार भी प्रक्रियाएँ करते हैं। तब आपकी प्राथमिकताएँ गलत होती हैं। तब आप लगातार जीवन की चिन्ताओं, और धन के धोखे, जीवन में आनन्द देने वाली चीज़ो और अपने मन की इच्छाओं में जो परमेश्वर को पसंद नहीं हैं, फँसे रहते है। आपका मन दो भागों में बँटा रहता है एक ओर सांसारिक बातों में और दूसरी ओर परमेश्वर की बातों में। और तब संसार की बातें परमेश्वर की बातों का गला घोंट देती हैं। और ऐसे में जब मुश्किलें और सताव आता है तब आप परमेश्वर से दूर चले जाते हैं। और अन्त में परमेश्वर का वचन आप के जीवन में कोई फल उत्पन्न नहीं करता है।
मुख्य पाठ यही है कि आप अपने हृदय को साफ इमानदार और अच्छा रखें। (लूका 8:15) उसे अपने जीवन की चिन्ताओं से, धन के धोखे से, संसार के आनन्द से और और अपनी गलत इच्छाओं से दूर रखें। तुरन्त अपनी चिन्ताओ से, अपनी भौतिक(साँसारिक) चीज़ों को प्राप्त करने की इच्छाओं से, और गलत प्राथमिक्ताओं से निबट लें।

वह बीज जो अच्छी भूमि पर गिरा था
यह चित्र है एक ऐसे दिल का जो प्रतिक्रिया दर्शाता है, जो दिल में बात संजो कर रखता है, जो सदा तैयार रहता है और जो फलवन्त होता है। जब भी आपके दिल की परिस्थिति या व्यवहार ऐसा होता है तब आप परमेश्वर के वचन पर उस रीति से प्रतिक्रिया करते हैं जैसा यीशु मसीह परमेश्वर की आज्ञा पर करते थे।
पहली तरह की भूमि के विपरीत आप परमेश्वर के वचन को सुनते हैं, समझते हैं और उसे ग्रहण करते हैं। (मत्ती 13:23, मरकुस 4:20)
दूसरी तरह की भूमि के विपरीत आप परमेश्वर के वचन को सुन कर उसे दिल की गहराई में बसा कर कठिन हालातों में भी उससे चिपटे रहते हैं। (लूका 8:15)
तीसरी भूमि के विपरीत आप अपने दिल को पूरी तरह से उन सब बाते से शुद्ध और आज़ाद रखते हैं जो परमेश्वर के वचन का गला घोंट सकते हैं। (लूका 8:15)
इस तरह आप चौथी तरह की भूमि का होने के कारण कोशिश और मेहनत से फलवन्त हो जाते हैं। (लूका 8:15) कभी आप 30 गुणा फल लाएँगे, तो कभी 60 गुणा और कभी 100 गुणा से भी अधिक फल लाएंगे। (मत्ती 13:23, मरकुस 4:20)

इस दृष्टान्त का संदेश
आपके व्यवहार और हृदय की हालत ही निर्णय करती है कि आप परमेश्वर के वचन के प्रति कैसा प्रतिउत्तर देते हैं। और आप का प्रतिउत्तर ही इस बात का फैसला करता है कि आप परमेश्वर के लिए कितना फल लाएँगे। (अर्थात आपका धार्मिक प्रभाव कितना अधिक या कम है।)

<u>2. वह बीज जो छुप कर बढ़ रहा है उसके दृष्टान्त का रहस्य</u>

आत्मिक उन्नति और फलवन्त होने के लिए कौन ज़िम्मेदार है?
पढ़े - मरकुस 4:26-29)

लिख लेः
लोगों के लिए बढ़ना या उन्नति करना एक रहस्य है (मरकुस 4:26-27)
प्राकृतिक रूप से बढ़ना सदा से ही एक रहस्य रहा है। जो भी है चाहे वह पौधो, पेड़ो, जानवरों या फिर मनुष्यों के बढ़ने की बात हो। कोई भी इस बात को सही रीति से समझा नहीं सकता है कि बढ़ना क्यों और कैसा होता है। एक किसान अपने खेत में बीज छितरा देता है यह पूरी तरह से जानते हुए भी कि वह किसी भी तरह से उनको उगा नहीं सकता है। उसका उनके अंकुरित होने, उसके फूट पड़ने, और फल के विकसित होने पर कोई नियन्त्रण नहीं है। और न ही इस पर कि वह फल उत्पन्न करेगा। कई दिन और रात गुज़र जाते हैं जब किसान उस बीज या पौधे के लिए कुछ भी नहीं करता है तौभी वह बीज बढ़ता रहता है। पर वह नहीं जानता है कि कैसे। अपने को आश्वासन देने के लिए वह उन बीजो को ढाँप कर रखता है, उसमें से खत पतवार जैसी चीज़ो को निकाल कर बाहर फैंक देता है। खेत की गुड़ाई करता है और उसमे खाद डालता है और उन पोधों को पानी भी देता है। ये सभी चीज़े बढ़ने को आसान बनाने में सहायक होती हैं पर वे बढ़ने का कारण नहीं होती हैं। किसान को केवल धीरज के साथ इन्तज़ार करना होता है जब तक कटनी का समय नहीं आ जाए। उसे बढ़ने का पूरा काम परमेश्वर पर छोड़ देना चाहिए और उसके भले कार्य की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

इसी रीति से आत्मिक रूप से बढ़ना भी एक रहस्य है। परमेश्वर ही लेखक है जोलोगों के दिलों में
अपने राज्य का निर्माण कर रहा है। यह उसी की मर्ज़ी के कारण है कि बाइबल के वचनों का बीज लोगों के दिलों और जीवनों पर एक सामर्थी प्रभाव डालता है और इस रीति से वह सामान्य रूप से मानव समाज को भी प्रभावित करता है। (युहन्ना 3:5-8, 1 कुर. 3:5-9)

बीज की सामर्थी शक्ति (मपकुस 4:28)
अपने आप से, बिना किसी प्रकट कारण के, और मनुष्य की किसी भी सहायता के बिना ही बीज मिट्टी में उगने लगता है। अपने आप से, बिना किसी मनुष्य की सहायता के बीज अंकुरित हो जाता है, तब तक बढ़ता है जब तक एक पौधे की लम्बी डण्डी बनता है, और अन्त में उसी में दाने निकल आते हैं। ऐसा लगता है मानो परमेश्वर ने एक छोटे से बीज के अन्दर बढ़ने के रहस्य को छुपा दिया है। इस लिए वह जानता है कि अब उसे कब, क्या और कैसे करना है। परमेश्वर उस छोटे से बीज को एक महान सामर्थ और क्षमता दी है।

इसी रीति से परमेश्वर के वचन में भी एक महान सामर्थ निहित है। मसीही लोग हर कोशिश करते हैं कि परमेश्वर के वचन की पहचान की जा सके और हो सके तो उसे जीवन के हर क्षेत्र में माना जा सके जैसे कि अपने परिवार मे, अपनी कलीसिया मे, अपनी सरकार में, अपनी शिक्षा मे, अपने कृषि के क्षेत्र में, अपने व्यापार मे, और बहुमत से अपनी संचार व्यवस्था में वह उसका पालन भी करें। फिर भी मानव सहायता के अतिरिक्त परमेश्वर का वचन जानता है कि क्या, कब और कैसे सब कुछ किया जाए। धीरे-धीरे परमेश्वर का वचन एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचता है। और फिर एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र तक और उसकी सामर्थ बहुतायत से अपने प्रभाव को जीवन के हर क्षेत्र में अनुभव कराती है। (1 पतरस 1:23-2:3;प्रेरितो के काम 19:10)

कटनी का समय अन्तिम विजय का समय होगा (मरकुस 4:29)
पद 29 शब्दो में कहता है,"जब भी फल या फसल अनुमति देता है, हम तुरन्त हँसिया का प्रयोग करें क्योंकि फसल तो तैयार है।"फसल तैयार होने का वर्णन बड़ा ही नाटकीय है, "तुरन्त", जब कटनी का समय आएगा तब निश्चय ही किसान बिना समय बरबाद किए कटनी करेगा। यह कटु सत्य एक बड़ा ही विश्राम देने वाला और उत्साहित करने वाला सत्य है कि कटनी के समय आने वाला है इसलिए भी उत्साहित करता है कि हम धीरज के साथ कटनी की प्रतीक्षा करें क्योकि जब वह आएगा तब पूरी विजय के साथ आएगा।

इसी रीति से परमेश्वर के राज्यकी योजना भी है और उसे भी इसी रीति से चलाना होगा। परमेश्वर के राज्य का आना रोका नहीं जा सकता है। जैसे बीज अपनी विरासत और नियमों के अनुसार बढ़ता है चाहे किसान उसके लिए कुछ होता देख न सके। वैसे ही परमेश्वर के राज्य का कार्य भी परमेश्वर के नियमों के अनुसार बढ़ता रहता है चाहे हमें दिखाई दे या नहीं। और जिस क्षणपरमेश्वर फैसला कर लेते हैं उसी क्षण परमेश्वर अपने सारे वैभव को प्रकट कर देते हैं। (मत्ती 13:41; प्रकाशितवाक्य 11:15)

इस दृष्टान्त का संदेश
आत्मिक उन्नति के लेखक केवल परमेश्वर हैं, मनुष्य नही है अर्थात परमेश्वर के राज्य कि उन्नति की प्रक्रिया जो दिलों में उत्पन्न होकर इस पृथ्वी पर जीवन के अलग-अलग क्षेत्रों के लोगों में जीती है। और यह परमेश्वर एक प्रभुता से राजा की तरह करते हैं।

यह दृष्टान्त परमेश्वर के कार्य के प्रति मनुष्य के प्रोत्साहित होने, उसके आदर्शों के विरुद्ध और उसके धैर्य की कमी के विषय में एक चेतावनी है। लोग पूछते हैं, "परमेश्वर इस टूटी और अन्धकार से भरी दुनियाँ में अपने राज्य को पूरी तरह से स्थापित क्यों नहीं करते हैं?"इसका परिणाम अकसर उत्साह रहित, निराशापूर्ण, शक और लगे न रहने और लगातार मेहनत करने में कमी ले आता है। यह दृष्टान्त हमारी निराशापूर्णता को आशापूर्णता, और विश्वासयोग्य आदर्शो में बदल देता है। जब भी हम बीज बोते हैंतब एक न एक दिन कटनी का समय ज़रूर आता है। (यशायाह 55:11) हालाँकि हम बहुत कुछ समझ नहीं पाते हैं, लेकिन परमेश्वर की योजनाएँ और कार्यक्रम कभी भी असफल नहीं हो सकते हैं।

<u>3. दोनों दृष्टान्तों के बीच का सम्बन्ध</u>

शिक्षा ः
मनुष्य की ज़िम्मेदारी
बीज बोने वाले (किसान) का दृष्टान्त आत्मिक उन्नति के लिए मनुष्य की ज़िम्मेदारी पर ज़ोर डालता है। आपके जीवन मे आत्मिक उन्नति का परिणाम इस बात पर निर्भर करता है कि परमेश्वर के वचन के विषय में आप की प्रतिक्रिया क्या है। और यह प्रतिक्रिया परमेश्वर के वचन के प्रति आप के दिल और व्यवहार पर निर्भर करती है।

परमेश्वर का सर्वसामर्थी होना
यह दृष्टान्त कि एक बीज रहस्यमय रूप से विकसित होता है इस बात पर ज़ोर देता है कि जहाँ तक बढ़ने का प्रश्न है वहाँ पर परमेश्वर सर्वसामर्थी है। आप नहीं, केवल परमेश्वर पर ही आत्मिक उन्नति के लिए निर्भर रहना ज़रूरी है। वही आपके जीवन में आत्मिक उन्नति को स्थापित करता है वही आपके जीवन में तथा आपके दिल में अपने राज्य को सिद्ध करता है और उसकी उन्नति की प्रक्रिया को जीवन के हर क्षेत्र में सिद्ध करता है। केवल परमेश्वर ही उसका विस्तार कर सकता है। (1 कुर 3:6) यह इस सच को एक तरफ नहीं रखता है कि मसीहों को परमेश्वर के साथ मिल कर काम करना चाहिए जैसे कि बीज बोने वाला और पानी देने वला। (1 कुर. 3:6-9) फिर भी यह दृष्टान्त ज़ोर देता है कि परमेश्वर का सर्वोत्तम काम लोगों के दिलों और उनके जीवनों में होना चाहिए। एक बीज को केवलतभी अंकुरित होता है, बढ़ता है और फलवन्त होता है जब परमेश्वर ऐसा करता है।

ख. जीवित और मृत चीज़ों में अन्तर

कार और पेड़ के बीच में क्या अन्तर पाया जाता है?

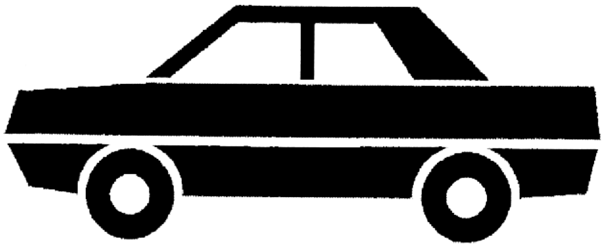	
नोट्सः कार - मृत है और मरी हुई चीज़ों से बनी है। - इसे मनुष्य ने रूप देकर बनाया है। - बाहरी तरीके ने बनाया गया है - इसके सारे भाग बाहर से जोड़े गए हैं। - इसका रूप नियत होता है और हज़ारों की गिनती में बनाई जाती हैं। - इसको बनने में थोड़ा समय लगता है। - इस के लिए बहुत सा पैसा खर्च होता है। - यह एक नई कार को जन्म नहीं दे सकती। - यह समय के साथ पुरानी होकर पड़े-पड़े ज़ंक लग कर व्यर्थ रद्दी बन जाता है।	**नोट्सः पेड़** - जीवित है और एक जीव के समान बढ़ता है। - इसे परमेश्वर ने रूप देकर बनाया है। - लगातार अन्दरुनी बढ़ने के द्वारा बनाया गया है। - हर भाग लगातार अन्दर से बन कर बढ़ता है। - हर पेड़ का अपना अलग रूप होता है और उसकी पत्तियाँ विरली होती हैं। - इसे बनने में बहुत समय लगता है और इसके बढ़ने के स्तर होते हैं। - इससे बहुत सा पैसा कमाया जा सकता है। - यह अनेक पेड़ों को जन्म दे सकता है। - यह स्थिर नहीं रहता या तो बढ़ता रहता है या मर जाता है।

ग. बढ़ने के चरण

1. एक पौधे की भौतिक बढ़ोतरी के चरण

चित्र बनाएँ - बीज के बढ़ने के हर चरण का चित्र बनाएँ जैसे मरकुस 4:28-29 में वर्णन है।

बढ़ने के चरणो का चित्रणः

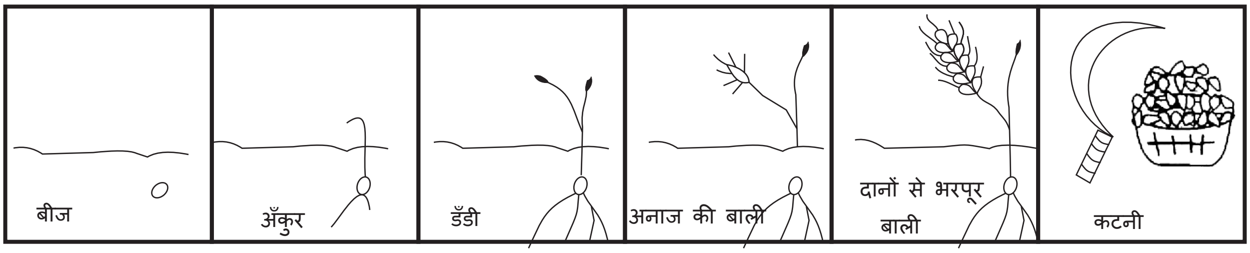

शिक्षा देः एक चरण से दूसरे चरण और फिर अगले चरण की बढ़ने स्थिति बहुत ही क्रम से होती है पर प्रकट में दिखाई नही देती है। एक किसान नहीं बता सकता है कि कब पौधे की पहली लम्बी डाली दिखाई देगी या उसमें से बालें निकलती दिखाई देंगी या फिर हर बाल में पूरी दानों से भरी बालों की पंक्तियाँ देखने को मिलेंगी या नहीं। लेकिन सामान्य परिस्थिति में बढ़ोतरी तो होती ही है। कोई भी चीज़ बढ़ोतरी की प्रक्रिया को रोक नहीं सकती है। शारीरिक रूप

से हर जीवित प्राणी या तो बढ़ता रहता है या फिर मर जाता है। लेकिन वह स्थिर नहीं रह सकता है। पेड़, पौधे, जानवर और मनुष्यों को बढ़ते रहना है नहीं तो वे मर जाएँगे। पर वे एक कार या पत्तर के समान वैसे ही बने नहीं रह सकते हैं। हर जीवित प्राणी बढ़ने के अलग अलग चरणों से होकर गुज़रता है। ऐसे ही आत्मिक रूप से मसीहों को बढ़ना है। वे भी अलग-अलग आत्मिक बढ़ोतरी के चरणों से गुज़रते हैं।

2. एक मसीही के बढ़ने के भिन्न चरणः

एक मसीही के बढ़ने के तीन मुख्य चरण क्या हैं?
पढ़ेः इब्रानियों 5:11 - 6:3
लिख लेः लेखक इब्रानी मसीहों को डाँटता है। वह कहता है, हालाँकि वे बहुत सालों से मसीही रहे हैं पर वे विकसित नहीं हुए हैं। उन तीन तरह के मसीहों का वर्णन इस प्रकार दिया गया है।
बच्चे, परिपक्व, और शिक्षक। और उनके अलग-अलग गुण होते हैं।

बच्चे	परिपक्व	शिक्षक
पद 11. उनको बाइबल को समझना मुशकिल लगता है। पद 11. वे धीमी चाल से सीखते हैं। प्रोत्साहित करने के लिए समय की, पद और एक बाइबल की ज़रूरत होती है। पद 12. उनको समझने के लिए और विकसित होने के लिए एक शिक्षक की ज़रूरत होती है। पद 12 उन्हे दूध की ज़रूरत होती है (जो बाइबल की सब से आसान शिक्षा है।) पद 13 वे बाइबल की शिक्षाओं से परिचित नहीं होते हैं। पद 14 उनको भले और बुरे की पहचान करनी नहीं आती है।	पद.14 वे अन्न खाने वाले हैं (वे बाइबल को स्वयं के के लिए पढ़ते और उसका, अध्ययन करते हैं। 14 वे लगातार बाइबल की शिक्षाआँ का पालन करते हैं। पद 14. वे भले से बुरे को अलग करके देख सकते है।	पद 12 वे बच्चों को शिक्षा दे कर परिपक्व बनाते हैं।

एक मसीही के विकास के तीन स्तरों का वर्णन जो कुरन्थियों की पत्री में लिखे हैं क्या हैं?

पढ़ेः 1 कुर. 2:15 - 3:11
नोट्सः पौलूस ने कुरन्थियों की कलीसिया को लिखा था कि वास्तव में **आत्मिक** क्या है। 3 भिन्न तरह के मसीहों का वर्णन ऐसे किया है - बच्चे, आत्मिक और कर्मचारी हैं।उन में ये गुण पाए जाते हैः

बच्चे	आत्मिक (परिपक्व)	कर्मचारी
पद.1. वे अब भी वैसे ही व्यवहार करते हैं जैसे कि संसार के लोग करते हैं। पद,3. वे ईर्ष्या करते हैं और लड़ते रहते हैं। पद.4. वे अलग-अलग दलों में बँट जाते हैं।	पद.16. वे मसीह के समान सोचते है पद.1. वे धार्मिक और आत्मिक हैं।	पद.5. वे परमेश्वर के सेवक हैं हर एक को परमेश्वर का कार्य सौंपा गया है। पद.6. कुछ सेवक सुसमाचार सुनाते अन्य लोग उनबीजों में पानी दे कर देख-भाल करते हैं। वे प्रभु के खेत की देख भाल

		करते हैं। और (विकसित होते मसीहों की देख-भाल करते हैं।) पद.10. कुछ सेवक नींव डालते हैं (लोगों को मसीह के पास लाते हैं) अन्य सेवक परमेश्वर के भवन के निर्माण का कार्य करते हैं (विश्वासियों को चेला बना कर परिपक्व बनाना।)

युहन्ना के सुसमचार में मसीहों के विकास के कौन से 3 स्तर हैं?

पढ़ेः 1 युहन्ना 2:12-14)

लिख लेः युहन्ना विश्वासी बाइयों को लिखता है तीन भिन्न तरह के मसीह है बच्चे, जवान और पिता। और उनमें ये गुण पाए जाते हैं।

बच्चे	जवान	पिता
पद 12. वे क्षमा पा चुके हैं। पद 13. वे परमेश्वर पिता को जानते हैं।	पद 14. वे सामर्थी हैं। परमेश्वर का वचन उनके अन्दर रहता है। वे शैतान पर विजय पा चुके हैं।	पद 14. वे लम्बे समय से परमेश्वर को जानते हैं। उनके बच्चे आत्मिक हैं।

ग. उन्नति से सम्बन्धित शिक्षाएँ

1. मसीही उन्नतिः

हर मसीही के लिए विकसित होना ज़रूरी है। प्रेरित पौलूस, प्रेरित युहन्ना और इब्रानियों के लेखक तीनों ने स्पष्ट रूप से लिखा है कि एक मसीही का विकास होना आवश्यक है। एक मसीही होना एक प्रक्रिया है केवल एक हैसियत नहीं है। एक मसीही होना पूरे जीवन एक तीर्थयात्री की यात्रा करना है और कहीं पर भी स्थाई रूप से बसना नहीं है। उसकी यात्रा उसके उद्धार से शुरू हो कर एक कतार में चलती जाती है जब तक यीशु दुबारा लौट कर आने के बाद समाप्त होती है।

एक मसीही की उन्नति के स्तर

बाइबल एक मसीही के विकास (उन्नति) के 3 स्तरों के विषय में बताती है।
1. बच्चे का स्तर (एक नया विश्वासी)
2. परिपक्व स्तर (एक चेला)
3. एक सेवक का स्तर (कर्मचारी)

कभी-कभी एक मसीही में ये तीनों स्तर एक दूसरे को दबा देती हैं।
पर मसीही को अगले स्तर के लिए विकसित होना है।

यदि आप अभी भी यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले एक **नए विश्वासी** है तो आपकोः
1. बाइबल की प्राथमिक शिक्षाओं की (अर्थात आत्मिक दूध की) ज़रूरत है।

2. आपको एक अन्य परिपक्व मसीही की ज़रूरत है जो शिक्षक या सलाहकार बन कर आपकी सहायता कर सके। (शिक्षक या सलाहकार)
3. आपका लक्ष्य कि आप आत्मिक रूप से परिपक्व बन जाएँ और (यीशु मसीह के चेले बन जाएँ)

यदि आप एक **चेले** हैं (अर्थात यीशु मसीह के एक परिपक्व विश्वासी हैं) तो आपः
1. अपने आत्मिक विकास की और व्यवहारिक जीवन की ज़िम्मेदारी लें।
2. आप बाइबल का अध्ययन करें और उसे स्वयं (परमेश्वर के साथअपना निजि समय निकाल कर) अपने जीवन में लागू करें।
3. दूसरे विश्वासियों क साथ भी एक छोटे दल में परमेश्वर के साथ समय बिताएँ।
4. आपका लक्ष्य विकसित हो कर फलवन्त हो कर यीशु मसीह का सेवक बन जाएँ।

यदि आप यीशु मसीह के या उसकी कलीसिया के **सेवक** हैं तो आपः

1. निरन्तर यीशु मसीह का चेले होने के लिए विकसित होते रहें।
2. आप यीशु मसीह में परमेश्वर की सेवा करते रहें और खोए हुओं को सुसमाचार सुना कर जीत लें और इस रीति से बचाए गए लोगों का निर्माण करते रहें।
3. चेल बनाने की शिक्षा प्राप्त करें।
4. आपका लक्ष्य केवल परमेश्वर की महिमा करना और उसके राज्य का विकास करना हो। जिससे दूसरो के जीवन भी फलवन्त होने पाएँ।

घ. निजि मूल्याँकन

1. प्रार्थना के साथ मूल्याँकन करें।

चुपचाप निज का मूल्याँकन करें।
इन में से कौन से गुण हैं जो आप में सबसे अधिक दर्शाते हैं?
परमेश्वर इसके लिए आप से क्या करने को कह रहा है?

प्रार्थना करके एक समर्पण करेः

यदि आप अभी एक नए विश्वासी हैं तो समर्पण करें कि आप यीशु मसीह के चेले (एक परिपक्व विश्वासी बनेंगे।)
यदि आप एक परिपक्व विश्वासी है तो समर्पण करें कि आप यीशु मसीह के सेवक बनेंगे।
1. आप सुसमाचार सुनाएँगे।
2. आप चेले बनाएँगे और एक दल के अगुवे बनेंगे
3. आप शिक्षा देने के लिए या प्रचार करने के लिए या किसी अन्य सेवा के लिए मसीह की कलीसिया में या परमेश्वर के राज्य के लिए सेवक बन जाएँ

5.	**प्रार्थना** (8 मिनट) ***प्रतिक्रियाएँ*** **परमेश्वर के वचन के प्रति उत्तर में प्रार्थना**

दल में बारी-बारी से एक छोटी प्रार्थना करें। उसके लिए जो कुछ भी आज आपने सीखा है।या फिर पूरे दल को 2 या 3 के छोटे दलों में बाँट कर जो भी सीखा है उसके प्रतिउत्तर में प्रार्थना करें।

6.	**तैयारी** (2 मिनट)	***निर्धारित कार्य*** **अगले पाठ के लिए**

दल के अगुवेः दल के सदस्यों को घर के लिए लिखित में काम दे और सभी सदस्य उसे अपनी कापी में उतार लें।

1.समर्पणः आत्मिक परिपक्वता और फलवन्त होने के लिए स्वयं को समर्पित कर दे।

2.परमेश्वर के साथ निजि समयः युहन्ना4:23 – 7:46 अध्यायों में से हर दिन आधे अध्याय का अध्ययन करें। और इसका अध्ययन करने के लिए अपने मनपसन्द सत्य के तरीके का इस्तेमाल करें। निजि नोट्स तैयार करें।

3.बाइबल अध्ययनः अगले बाइबल अध्ययन की घर पर ही तैयारी करें।प्रकाशितवाक्य21:1-22:6 इसका विषय है, "मैं कहाँ जा रहा हूँ?"

4. प्रार्थनाः किसी विशेष व्यक्ति या विशेष चीज़ की ज़रूरत के लिए प्रार्थना करें। (भजन 5:3)

5. अपनी सपताह के नोट्स की कापी को पूरा करेः आपने कितने चेले बनाए हैं, आपके आराधना समय के नोट्स, आपके परमेश्वर के साथ निजि समय के नोट्स, शिक्षा के नोट्स और तैयारी के काम के नोट्स लिख कर पूरे करें।

अध्याय - 10

1.	**प्रार्थना**

दल के अगुवेः अपने दल और चेले बनाने के पाठ्यक्रम के लिए स्वयं को परमेश्वर के सामने समर्पित करें।

2.	**गवाही बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **युहन्ना 4:23 – 7:52**

बारी-बारी पढ़े और वचन बाँटे, (या अपने नोट्स में से पढ़ें) संक्षेप में वही बोले जो परमेश्वर के उस वचन से जो आपको दिया गया था (युहन्ना 4:23 – 7:52तक) उससे अपने निजि समय में जो भी आपने सीखा है, उसे सब के साथ बाँटें।
जो भी गवाही बाँट रहा है उसे गम्भीरता से सुनें और ग्रहण करें। जो वह बाँट रहा है उस पर बहस न करें।

3.	**याद करना** (20 मिनट) *निश्चितता* **मार्गदर्शन निश्चित है - नीति वचम 3:5-6**

क. प्रोत्साहित करना (याद करने के लिए)

पढ़े व्यवस्थाविवरण6:4-9
खोजें और विचार-विमर्श करेः बाइबल के पदों को याद करना क्यों ज़रूरी है?(चाहे वे लेखाँश हो या अध्याय)
लिख लेः याद किए गए बाइबल के पद आप को इस योग्य बना देंगे कि आप अपने परिवार में बाइबल के वचनों द्वारा स्वयं को और अपने परिवार को अपनी धारणा मनवा लोगे।।

ख. मनन करना (बाइबल के एक लेखाँश पर)

एक सफेद काग़ज़ पर या श्यामपट पर याद करने वाला पद लिख कर रख लें।

परमेश्वर का मार्गदर्शन निश्चित है **नीतिवचन 3:5-8**
तू अपनी समझ का सहारा न लेना वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा करना उसी को स्मरण करके सब काम करना, वही तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा. **नीतिवचन 3:5-8**

काग़ज़ के पिछली तरफ बाइबल का का संदर्भ वचन लिख दें।

1. अपने पूरे दिल से परमेश्वर पर भरोसा रखें।

परमेश्वर पर भरोसा रखने का अर्थ है कि हम उसे अपने जीवन की नींव बना लें या अपना पूरा जीवन देख-भाल के लिए उसके हवाले कर दें। इसका अर्थ है कि हम केवल उस पर निर्भर रहें कि वह हमें बचा लेगा, हमारा निर्माण करेगा और हमारा मार्गदर्शन करेगा। हमें केवल उसके वचन का सही प्रतिउत्तर देना है।
यह सम्भव नहीं हैं कि हम किसी इमारत को आधी नींव पर बना सकें। ऐसे ही एक सामर्थी मसीही का निर्माण भी

नींव पर नहीं किया जा सकता है। यह सम्भव नहीं है कि हम परमेश्वर पर आधे हृदय से भरोसा रखे। हमें हमेशा मनुष्य की समझ पर भरोसा नहीं करना चाहिए। असल में हमें हर बार लगातार मनुष्य की समझ को समझने से इन्कार करना चाहिए। हमें केवल स्वयं को केवल परमेश्वर को समर्पित कर देना चाहिए और उसकी समझ पर भरोसा करना चाहिए। हमें अभ्यास करना चाहिए कि हम परमेश्वर के नज़रिये से पृथ्वी की चीज़ों को देखें न कि पृथ्वी के नज़रिये से। (भजन 73:16-17)

2. अपने सभी मार्गों में परमेश्वर को मान्यता दें।

हम कैसे जाने कि परमेश्वर हमारे सभी मार्गों में साथ है?
कभी भी अपने मसीही होने पर शर्मिन्दा न हों। और न ही मसीही तरीके से व्यवहार करने पर लज्जा अनुभव करें। (मत्ती 10:32-33)
कुछ करने से पहले हर महत्त्वपूर्ण विषय के लिए बाइबल का अध्ययन करें। (प्रेरितों के काम 17:11)
कुछ भी करने या कहने से पहले प्रार्थना करें। (नहेम्याह 1:11)
हर समय परमेश्वर की खोज करते रहे और जो भी करें उसकी महिमा के लिए करे। 1 कुर. 10:31)

3. परमेश्वर हमारे मार्गों को सीधा करता है।

कभी-कभी परमेश्वर हमारी योजनाओं कोव् सफल करता है। (नीति वचन 16:3)
कभी कभी परमेश्वर हमारे शत्रुओं को हमारे साथ शान्ति से रहने देता है। (नीति वचन 16:7)
कभी कभी परमेश्वर बन्द दरवाज़ों और दिलों को खोलता है। (कुलु 4: 2-4)

ग. याद करना और पुनरावलोकन

1.लिखोः अपनी कापी के एक खाली पेज पर बाइबल का वचन लिखें।

2.याद करोः बाइबल का वचन प्रार्थना के उत्तर का आश्वासन पाने की सही राह है।

3.पुनरावलोकन दो-दो के दल बना कर एक दूसरे के आखरी याद किए वचन की जाँच करें।

4.	**बाइबल अध्ययन** (70 मिनट) ***जीवन के विषय में प्रश्न*** **मैं कहाँ जा रहा हूँ? (प्रकाशितवाक्य 21:1 – 22:6)**

शिक्षा दे: प्रकाशितवाक्य को एक विनाश, पर्दा उठाने, और प्रकटीकरण की किताब माना जाता है जो यीशु मसीह के संदेश को दर्शन के रूप में, चिन्हों और अंकों के द्वारा प्रकट करती है। यीशु मसीह हमें स्वयं वह कुंजी देते हैं कि उस पुस्तक को कैसे समझा जाए। और वे कौन से नियम हैं जिसके आधार पर उसे कैसे समझना है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की व्याख्या के लिए 8 कुंजियाँ या नियम

पहली कुंजीः यह पुस्तक भविष्यवाणी की पुस्तक है जो यीशु मसीह की घोषणा करती है।

पढ़ेः प्रकाशित वाक्य 22:6; 19:10, प्रभु यीशु मसीह मध्यस्थ है बाइबल के हर प्रकटीकरण के लिए। उसका भी जो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के 1:1 में लिखा है। प्रभु यीशु मसीह हर पुराने नियम के भविष्द्वक्ताओं की आत्माओं का परमेश्वर है। (प्रकाशित वाक्य 22:6) खास ज़ोर इस बात पर दिया गया है कि पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने जो भविष्यदवाणियाँ की थी वे परमेश्वर के रूप में यीशु मसीह के द्वारा ही दी गई थीं। अर्थात यीशु मसीह ही पुराने नियम का परमेश्वर था जो पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के द्वारा उस परमेश्वर के विषय में बोले थे।

यीशु मसीह की गवाही जैसा प्रकाशितवाक्य 19:10 में लिखा है कि वह भविष्यद्वाणी की आत्मा है। अर्थात यीशु मसीह की गवाही जो कुछ भी पुराने नियम मे भविष्यद्वक्ताओं नें उसकी आत्मा के द्वारा भविष्यद्वाणियाँ की थी (पढ़े 1 पतरस 1:9-12) और जो नए नियम में उसकी आत्मा के द्वारा प्रेरितों ने की थी (पढ़े युहन्ना 16:13-15) सो पुराने नियम और नए नियम के लेखक और कोई नहीं है वरन केवल यीशु मसीह ही हैं। (1पतरस 1:9-12; 2 तिमु. 3:16) मुख्य ज़ोर प्रकाशितवाक्य 19:10 में यही है जो यीशु मसीह ने परमेश्वर के विषय, अपने विषय में, आने वाले मसीहा के विषय में और पुराने नियम के परमेश्वर के लोगों के विषय में जो इस्रायल है और उन में संसार के हर राष्ट्र से अन्य विश्वासियों को जोड़ने के विषय में जो उस पर विश्वास करेंगे लिखा है। (पढ़े उत्पत्ति 22:18; मत्ती28:19) इस लिए परमेश्वर का राज्य और कलीसिया ही वास्तव में वह आत्मा है या अन्तः -करण की बात है जो बाइबल की भविष्यदवाणी हैं। (प्रकाशितवाक्य 19:10)

भविष्यद्वाणी करने का शाब्दिक अर्थ है किसी बात को होने से पहले बोल देना, घोषणा कर देना या प्रचार कर देना। पुराना नियम ऐसे भविष्द्वक्ताओं को चेतावनी देता है जो अपने मन से, दर्शनों की भविष्यद्वाणियाँ करते हैं कि वे ऐसा न करें।(यर्मियाह 23:16-32) नया नियम भी बहुत से झूठे भविष्दवक्ताओं के विषय में अपने मुख से झूठी भविष्यद्वाणी करने वालों को चेतावनी देता है। (मत्ती 24:24) असली भविष्यदवाणी तो यीशु की घोषणा करना है और जो कुछ भी नए नियम में लिखा है उसकी घोषणा करना है। एक मसीही को केवल उसी की घोषणा करनी चाहिए। किसी भी मसीही को उससे परे नहीं जाना है जो बाइबल में लिखा है। (1 कुर. 4:6;प्रकाशितवाक्य 22:18-19)

दूसरी तरह से कहें तो भविष्यद्वाणी का आत्मिक वरदान इस लिए होता है कि आप उस बात की घोषणा करें कि जो यीशु ने अपने विषय में आप पर प्रकट किया था। उसके शब्द और बाइबल के वचन। इस लिए बाइबल की भविष्यद्वाणी दूसरे लोगों, देशों (इस्राएल और अन्यजाति के लोगों) के भविष्य के विषय में अपने मन से नहीं की जाती है। इसके स्थान पर यीशु मसीह की घोषणा और उसके संदेश की घोषणा ही सही भविष्यद्वाणी होगी। सही भविष्यद्वाणी का उदाहरण पुराने नियम में भविष्यद्वकाताओं ने जो भविष्यद्वाणी यीशु के विषय में की थी वही वास्तविक है। जो नए नियम में यीशु मसीह के द्वारा पूरी की गई थी। यीशु मसीह चाहे जो भी थे पर उन्होंने क्या किया था और क्या कहा था, पर पुराने नियम की भविष्यद्वाणी को यीशु ने ही पूरा किया था। (मत्ती5:17) और जो कुछ यीशु मसीह ने प्रकट किया, सिखाया और आज्ञाएँ दीं वही सब आज नए नियम में लिखा गया है। और यह वही है जो पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता अपनी धुँधली सी घोषणा के द्वारा कहना चाहते थे। जैसा मत्ती 5:17;प्रेरितों के काम 3:18;कुलु. 2:17;इब्रानियों 8:6; 10:1; 1 पतरस 1:10-12 में लिखा है पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता वैसे ही बोलना चाहते थे।

इस लिए प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को बाइबल की रौशनी में ही समझाना चाहिए। वैसे ही पुराने नियम को भी नए नियम की रौशनी में समझना चाहिए।

<u>दूसरी कुंजी - इस पुस्तक का हर संदेश हर पढ़ने वाले को आशीष देने के लिए लिखा गया है</u>

पढ़ेः प्रकाशितवाक्य 1:3; 22:6,10 - प्रकाशित वाक्य का उद्देश्य लोगों को डरा कर दूर भगाना नहीं है। यीशु ने कहा था, **"**धन्य है वह जो भविष्यद्वाणी के इन वचनों को पढ़ेगा क्योंकि यह एक घोषणा है। धन्य हैं वे जो इसे सुनेंगे और उसे दिल में रखेंगे जो इस में लिखा है।**"**(1:3; 22:7) इस पुस्तक का संदेश इस सत्य को बताता है कि मसीह विजयी है और सारे मसीही यीशु मसीह के साथ विजयी लोगों से भी बढ़ कर हैं। (प्रकाशितवाक्य 17:14; रोमियो 8:37-39) यह संदेश मसीही लोगों को उत्साहित करना चाहता है जिससे मसीही लोग अपनी पीढ़ी में विशवास की एक अच्छी लड़ाई लड़ें। यह यीशु मसीह की और साथी विश्वासियों की अन्तिम विजय को प्रकट करता है। और यही यीशु मसीह के राज्य के अन्तिम चरण को स्थिर करता है। अर्थात नई पृथ्वी की घोषणा करता है। इस लिए इस पुसतक का संदेश हर किसी के लिए आशीष की घोषणा करता है।

<u>तीसरी कुँजी - इस पुस्तक का संदेश शब्दों में मसीह के पहले आगमन से दूसरे आगमन तक है।</u>

पढ़ेः प्रकाशितवाक्य 1:1,3; 22:6,10 जब यीशु मसीह प्रेरित युहन्ना से बात कर रहे थे तब कहा था, "प्रकाशन तो बहुत जल्द ही होगा।"इसलिए"भविष्यद्‌वाणी की इस पुस्तक के शब्दों की सील बन्द न करो क्योंकि उसका पूरा होने का समय बहुत पास है।"(प्रकाशितवाक्य 1:1,3; 22:6,10) इसका अर्थ यह है कि जो कुछ भी इस पुस्तक के दर्शन में प्रकट किया है उसे यीशु के पहली बार आने के समय से तुरन्त ही समझ लिया जाएगा। प्रकाशितवाक्य का असर पूरे नए नियम के समय से यीशु की पहली से दूसरी आमद तक होगा। इसलिए प्रकाशितवाक्य के संदेश का लक्ष्य हर पीढ़ी के मसीहो के लिए है।

<u>चौथी कुंजी - पुस्तक में दिए शाब्दिक चिन्ह वास्तविकताएँ हैं जो कि शब्दों से कहीं अधिक ऊँचे और महान हैं।</u>

पढ़ेः प्रकाशितवाक्य 1:1,20; 5:6 यीशु ने कहा कि उसने अपना संदेश जो (प्रकाशितवाक्य 1:1) में दिया था। यह शब्द "यह वचन मैं ने तुम्हें बता दिया है।"यह मूल ग्रीक भाषा में इस का अर्थ है तुम्हें चिन्हों के द्‌वारा बता दिया हैएक काल्पनिक तथ्य है। इसी लिए प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में अनेक अंक और चिन्ह पाए जाते हैं। और इसी लिए हमें समझना है कि हर चिन्ह हमें किसके विषय में बता रहा है। उदाहरण के लिए प्रकाशितवाक्य 1:12-13, 16 में एक चिन्ह है जहाँ पर सात दीवटों के बीच एक मनुष्य खड़ा है और उसने सात सितारों को अपने दाहिने हाथ में उठा रखा है। प्रकाशितवाक्य 1:20 में यीशु मसीह स्वयं उन चिन्हों के अर्थ समझाते हैं। वे दीवट वास्तव में दीवट नहीं हैं वे तो 7 कलीसियाओं को दर्शाते हैं। और सात सितारे भी सितारे नहीं हैं वे स्वर्गदूत है जो सात कलीसियाओं के प्रतिनिधि हैं। और फिर प्रकाशितवाक्य के 5:6 में जिस मेमने का वर्णन है जिसे मार दिया गया है और जो सिंहासन की बीच में खड़ा है वह तो यीशु मसीह को दर्शाने का चिन्ह है। उस मसीह को जो क्रूस पर मारा गया था और जिसका पुनरोत्थान हुआ था।

<u>पाँचवीं कुँजी - इस पुस्तक में प्रयोग किए गए अँक भी चिन्ह के रूप में अर्थ हैं। और वे शाब्दिक वास्तविक्ताएँ हैं जो उन अँको के मूल्यों से कहीं अधिक महान हैं।</u>

पढ़ेः प्रकाशितवाक्य 5:6; 2:7- अँक 7 एक पवित्र अँक है। यह अंक दैविक सम्पूर्णता का प्रतिनिधित्व करता है। उत्पत्ति 2:1 पद कहता है परमेश्वर ने 6 दिन तक उत्पत्ति का कार्य किया और सातवें दिन विश्राम किया जो सम्पूर्ण दैविक सर्वोत्तम अँक का प्रतीक है। प्रकाशितवाक्य के 5:6 में लिखा है, "मेमने के सात सींग और सात आँखें हैं। जो कि परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं जिनको इस पृथ्वी पर अलग-अलग दृष्टिकोण को ध्यान में रख कर भेजा जाता है।"यह मसीह के पवित्र आत्मा के द्‌वारा इस संसार में सर्वसामर्थी और सर्वज्ञानी होने का प्रतीक है। और प्रकाशितवाक्य 2:7 में सात दीवट ऐतिहासिक सात कलीसियाओं का प्रतीक हैं जो एशिया में स्थिति हैं और जो प्रतीक हैं संसार की उन कलीसियाओं का जिनका उद्धार का इतिहास है। और प्रकाशितवाक्य 2 और 3 में जो सात पत्रियाँ हैं जो सात कलीसियाओं को लिखी गई हैं वे मसीह की निजि पत्रियाँ हैं जो इतिहास में हर तरह की परिस्थिति में हर कलीसिया को लिखी गई हैं।

<u>छटी कुँजी - सारी पुस्तक को सात समानान्तर भागों में बाँटा गया है और हर भाग प्रतीक है सम्पूर्ण नए नियम के समय काल का।</u>

पढ़ेः प्रकाशितवाक्य 12:5; 14:14-16 जैसे कि चारों सुसमाचार में साथ-साथ यीशु के जीवन, कार्यों, मृत्यु और पुनरोत्थान की घोषणा की गई है इसी रीति से प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पूरे नए नियम के समय काल के विषय में यीशु मसीह के पहले आगमन से लेकर उसके दूसरे आगमन तक का वर्णन भिन्न दृष्टिकोणों से किया गया है। उदाहरण के लिए पहले भाग में अध्याय 1 से 3 शुरू होता है यीशु मसीह की मृत्यु, पुनरोत्थान और सिंहासन के सामने

विराजमान होले तक। (प्रकाशितवाक्य 1:5) और जिसका अन्त उन वायदों का उनके लिए पूरा होने से है जो उसके दूसरे आगमन पर विजय पा लेंगे। (प्रकाशितवाक्य 2:7; 3:12) यह भाग वर्णन करता है उस लड़ाकु कलीसिया का जो पूरे नए नियम के काल में स्थापित की गई थी। दूसरा भाग (अध्याय 4 से 7) शुरू होता है यीशु मसीह के पहले आगमन से जब यीशु ने अधिकार पाया था उद्धार को प्रकट करने का और उसे महान घटनाओं के द्वारा इतिहास में पूरा करने का। प्रकाशितवाक्य 5:1-10 समाप्त होता है मसीह के दूसरे आगमन के साथ जब वह न्याय करने आएगा। (प्रकाशितवाक्य 6:12-17) इस तीसरे भाग में पूरे नए नियम के दौरान पूरे संसार में कलीसिया के सताव का वर्णन है। चौथे भाग (अध्याय 12 -14) से शुरू होता है यहाँ पर यीशु मसीह के पहले आगमन जब वह जन्म लेता है और फिर स्वर्ग में उसका पुनरोत्थान होता है (प्रकाशितवाक्य 12:5) और इसका अन्त होता है उसके दूसरे आगमन पर जब वह अन्तिम न्याय के दिन धर्मी और अधर्मियों का न्याय करने आएगा। (प्रकाशितवाक्य 14:14) इस भाग में मसीह और उसकी कलीसिया की विजय का वर्णन है जो उसने उस पशु और उसके साथियों पर पाई थी। इस बात को नोट करें कि एकमात्र युद्ध तो तीसरे भाग में हुआ था जिसका वर्णन प्रकाशितवाक्य 11:7 में, भाग 4 में प्रकाशितवाक्य 13:7 में भाग 5 में प्रकाशितवाक्य 16:12-16 में, भाग 6 में प्रकाशितवाक्य 19:17-19 में और भाग 7 में प्रकाशितवाक्य 20:7-9 में किया गया है।

<u>सातवीं कुँजी -पुस्तक से सात भाग नीचे से ऊपर उठते मौसम के क्रम में हैं।</u>

पढ़ेः प्रकाशितवाक्य 2:27; 6:12-17; 16:17-21; 20:11-15 - हालाँकि प्रकाशितवाक्यकी सात कुँजियाँ समानान्तर रूप से यीशु की पहली आमद से लेकर उसकी दूसरी आमद तक साथ-साथ चलती हैं लेकिन उसमें आगे बढ़ने की घटनाऔं पर ज़ोर दिया गया है जो यीशु की दूसरेआगमन से पहले घटेंगी। उदाहरण के लिए अन्तिम न्याय के दिन की ओर बढ़ने का वर्णन। भाग एक घोषणा करता है न्याय के दिन की (प्रकाशितवाक्य 2:27), भाग 2 (प्रकाशितवाक्य 6:12-17) भाग 3 (11:18) में अन्तिम न्याय का परिचय है। भाग 4 में (प्रकाशितवाक्य 14:14-20) भाग 5 में (16:17-21) और भाग 6 में (18:1-24) ये सभी अन्तिम न्याय के दिन को चिन्हों के द्वारा समझाते हैं। और भाग 7 (20:11-15) जो अन्तिम न्याय के दिन को सारे चिन्ह गिरा के दिखाता है कि तब क्या होगा। और यहाँ पर कलीसिया की आगे बढ़ती हुई अन्तिम स्थिति पर ज़ोर दिया है। (3:12-13; 7:9-17; 11:15; 14:1-5; 15:2-4; 19:1-10 और 21:1 - 22:5) और हर भाग के साथ पुस्तक आगे बढ़ती जाती है।और इस मे लिखे संदेश का हर भाग में आगे बढ़ने का एक संदेश निहित देता है।

आठवीं कुँजी - प्रकाशिवाक्य 21:1 - 22:5 स्पष्ट करता है कि इस पृथ्वी पर आज के युग में यीशु मसीह के आने से पहले कलीसिया की सच्चाई क्या है और नई पृथ्वी की सम्पूर्ण वास्तविक्ता में कलीसिया की सच्चाई यीशु की दूसरे आगमन के बाद क्या होगी।

पढ़ेः प्रकाशितवाक्य 21:2"स्वर्गीय यरुशलेम"चिन्ह है जो उन सब परमेश्वर के लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो यीशु की दूसरी आमद से पहले आज के युग में इस पृथ्वी पर बसे स्वर्ग में बसते हैं।(गलातियों 4:24-26;इब्रानियों 12:22-24) कुछ ऐसे क्रिया शब्दो का प्रयोग जो प्रकाशितवाक्य 21:1 - 22:5 में किया गया हैं उनका अर्थ है कि वह सब अभी भी हो रहा है और नया यरुशलेम नीचे आ रहा है। यीशु मसीह सब कुछ नया और वास्तविक बना रहे हैं, और मसीही लोग इस पृथ्वी पर विजय पा रहे हैं। (प्रकाशितवाक्य 21:2,5,7) "नया यरुशलेम "नकेवल एक चिन्ह है वरन वह तो परमेश्वर के लोगों का यीशु मसीह के दूसरे आगमन के बाद नई पृथ्वी होने की पूरी वास्त्विकता को प्रकट करने का प्रतीक है।(प्रकाशितवाक्य 21:9-10) और वह तो इस बात का भी प्रतीक है परमेश्वर के उन लोगों की जो का आज की पृथ्वी पर यीशु के दूसरे आगमन से पहले ही उस सच्ची वास्तविक्ता और पहचान को प्रस्तुत करते हैं।

बाइबल अध्ययन

बाइबल के अध्ययन के लिए पाँच कदमों का तरीका इस्तेमाल करें। साथ मिल कि प्रकाशितवाक्य 21:1 से 22:6 का अध्ययन करें।

पहला तरीका - पढ़ें **परमेश्वर का वचन**

पढ़ेः आईए हम प्रकाशितवाक्य 21:1 - 22:5 एक साथ पढ़ें।

आईए हम मिल कर बारी बारी से एक वचन पढ़ें जब तक पूरा लेखाँश समाप्त न हो जाए।

दूसरा तरीका - खोजें **अवलोकन**

ध्यान देः यहाँ पर कौन सा लेखाँश आप के लिए महत्त्वपूर्ण है?

या ऐसा कौन सा सच है इस लेखाँश में जिस ने आपके दिल को छू लिया है?

लिखेः लेखाँश में से एक या दो सत्यों को खोज निकालें। उनके विषय में सोचें और अपने विचार अपनी कापी में लिख दें।

गवाही बाँटेः (जब सभी दल के सदस्य 2 मिनट तक विचार कर चुकें हों और कापी में अपने विचार लिख चुके हों, तब बारी-बारी सब अपने विचारों को दूसरों के साथ बाँटें।

(नीचे कुछ लोगों के उदाहरण दिए गए हैं जिन्होंने अपने विचार बाँटे थे कि उन्होंने क्या पाया था। पर याद रहे हर छोटे दल में लोग अलग-अलग बातें बाँटते हैं। पर यह ज़रूरी नही है कि सब के विचार एक समान हो।)

21:3-4

खोज 1. परमेश्वर के साथ भविष्य में सम्बन्धः

इससे पहले कि नई पृथ्वी बनी थी परमेश्वर का निवास स्थानस्वर्ग था। जब कि हम लोग इस पृथ्वी पर हैं हालाँकि हम परमेश्वर तक यीशु मसीहपर विश्वास के द्वारा पहुँचसकते हैं। लेकिन वह अभी भी अदृष्य है। यीशु मसीह के दूसरे आगमन के बाद नया स्वर्ग इस नई पृथ्वी पर होगा। और तब परमेश्वर का निवास अपने लोगों के बीच में होगा। और तब हम परमेश्वर को देख सकेंगे और हम उस तक पहुँच सकेंगे। उस नई पृथ्वी पर हमारा सम्बन्ध सब से महत्तवपूर्ण घटना होगी। तब हमारा सम्बन्ध परमेश्वर के साथ बहुत ही निजि और घनिष्ठ होगा। वह हमारे जीवन पर से इस धरती पर के हर पाप और दुख के दाग को मिटा देगा।वह हमारी आँखों से हर आँसु को पोंछ देगा। वह हमारे हर घाव को चंगा कर देगा जो मेरे पाप और दुख के कारण दाग़ बन गए है। वह मुझे लगातार जीवन की भरपूरी का एहसास देगा। वह मुझे ज्ञान और आनन्द की ज्योति में चलाएगा। और तब मै उसके मुख को देखूँगा।

22:3-5

खोज 2. परमेश्वर के लिए भविष्य के कार्य।

नई पृथ्वी पर परमेश्वर के लोग महत्तवपूर्ण तथा अर्थपूर्ण कार्यों में व्यस्थ होंगे। वे नई पृथ्वी को विरासत में पा जाएँगे और उस नई पृथ्वी पर राज्य करेगे और परमेश्वर की सेवा करेंगे। "अनन्त जीवन"कुछ भी अनन्त काल तक कुछ करना नहीं है वरन कुछ महत्त्वपूर्ण अनन्तकालीन करना ही कुछ है। मसीह के साथ सारी विश्वासियों के साथ मिल कर अब मैं परमेश्वर के राज्य को अन्तिम रूप में अर्थात नई पृथ्वी और नए स्वर्ग के रूप में विरासत में पा लेना। तब हम परमेश्वर के साथ मिल कर परमेश्वर के इस राज्य में राज करेंगे। अर्थात नई पृथ्वी पर। हम परमेश्वर के अधीन

सेवा करेंगे।तब काम की सारी परेशानियाँऔर मुश्किलें दूर कर दी जाएंगी। तब हम वैभव, महिमाऔर आदर उस राज्य में लेकर आएँगे।

<u>तीसरा तरीका- प्रश्न</u> **समझाना**

ध्यान देः इस लेखाँश में कौन सा ऐसा प्रश्न है जो आप इस दल से पूछना चाहेंगे?

आईए हम कोशिश करें कि प्रकाशित वाक्य 21:1 - 22:6 के सभीसत्यों को समझ सके और प्रश्न पूछें उस सब के विषय में जो अब तक समझ नहीं आया है।

लिख लेः अपना प्रश्न पूरी स्पष्ट रीति से पूछें और उसे अपनी कापी में लिख लें।

गवाही बाँटेः (जब सभी दल के सदस्य 2 मिनट तक विचार कर चुकें और काफी में अपने विचार लिख चुके हों तब बारी-बारी सब अपने विचारों को दूसरों के साथ बाँटें।

विचार-विमर्श करेः (फिर इन में से कुछ प्रश्न चुन कर उन के उत्तर पर दल के साथ मिल कर विचार-विमर्श करें और उनका उत्तर खोजने की कोशिश करें।)

नीचे प्रश्नों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं जो विद्यार्थी पूछ सकते हैं और साथ ही कुछ नोट्स भी हैं जिन पर विचार विमर्श किया गया था।)

21:1

<u>प्रश्न 1. मसीह के दूसरे आगमन के बाद मसीही लोग स्वर्ग में रहेंगे या इस पृथ्वी पर?</u>

मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः विश्वासियों की आत्माएँ जो शारीरिक रूप के मरने के बाद स्वर्ग में चले जाते हैं। जो वहाँ पर स्थित है जहाँ परमेश्वर रहते हैं(2 सैमुएल 12:23;सभोपदेशक 12:7; लूका 16:22; 2 कुर. 5:1; फिलिपियों 1:23; प्रकाशितवाक्य 20:4) स्वर्ग को फिर चिन्ह के रूप में स्वर्गलोग कहा गया है (लूका 23:43; 2 कुर.12:3-4; प्रकाशितवाक्य 2:7)

मसीह के दूसरे आगमन के बादः मसीहों की नियति का अन्तिम पड़ाव स्वर्गलोक नहीं है। यह एक लोकप्रिय विश्वास है कि स्वर्गलोक मौज मस्ती का स्थान है पर यह सच नहीं है। मसीहों कीनियतिका अन्तिम पड़ाव नई पृथ्वी है जो स्वर्गलोक से कहीँ बेहतर होगी। पुराना स्वर्ग लोग तो पृथ्वी पर एक छोटी सी वाटिका था जिसमें फलों के पेड़ लगे थे और वह मध्य पूर्व में स्थित था। परन्तु नया स्वर्गलोक तो नई बना दी गई पूरी पृथ्वी होगी। (रोमियो 4:13; 8:19-21) पुराने स्वर्गलोक में शैतान मनुष्य में प्रवेश कर सकता था, और तब मनुष्य पाप कर सकते थे और वे आत्मिक, शारीरिक रूप से अनन्तकाल के लिए मर जाते थे। लेकिन नई पृथ्वी दो धार्मिकता का घर होगी। उस में कुछ भी अपवित्र प्रवेश नहीं करने पाएगा। (2 पतरस 3:13; प्रकाशितवाक्य 21:27) नई पृथ्वी पर शैतान का नाम ओ नशान न होगा, नही पाप होगा और नही मृत्यु होगी। अन्तिम न्याय के दिन मसीह के स्वर्गदूत वह सब जो पाप उत्पन्न करता या दुष्ट कर्म करते हैं उसे खत-पतवार के समान परमेश्वर के राज्य से उखाड़ कर फेंक देंगे।(मत्ती 13:41) जो कोई भी मनुष्य या वस्तु पापी है उसका पर्दाफाश करके उसे आग द्वारा नष्ट कर दिया जाएगा।पुरानी सृष्टि और पुरानी पृथ्वी जाती रहेगी और एक नई सृष्टि और नई पृथ्वी उसका स्थान ले लेगी। (2 पतरस 3:10-13)

21:1

<u>प्रश्न 2. उसके बाद से समुद्र क्यों न रहेगा?</u>

नोट्सः

यीशु मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः समुद्र दुष्ट राष्ट्रों काचिन्ह है जो शान्त नहीं हैं और युद्ध करने में लगे हैं(यशायाह 8:7; 17:12) यह चित्र है दुष्ट ताकतों का जो गड़बड़ी फैला रही हैं और जीवन के लिए खतरा हैं। यह उन राष्ट्रों का प्रतीक है जो उस पशु की आराधना करते हैं जो समुद्र से बाहर निकला है।(क्रीस्ट विरोधी, प्रकाशितवाक्य

13:1; दानिएल 7:2-7)और वह महान वेश्या जो महान जल पर बैठती है (बबेल, प्रकाशितवाक्य 17:15)

यीशु के दूसरे आगमन के बादः तब कोई भी महासागर नहीं पाया जाएगा।लेकिन ऐसा नहीं लिखा है कि नई पृथ्वी पर समुद्र नहीं होंगे।वरन यह कि नई पृथ्वी पर क्रीस्ट-विरोधी राष्ट्र नहीं पाए जाएँगे और न ही वे लोग जो परमेश्वर को नही मानते हैं। और न ही नई पृथ्वी पर कोई दुष्ट और गड़बड़ी फैलाने वाली शक्तियाँहोंगी। तब कोई युद्ध नहीं होंगे केवल शान्ति होगी।

21:2, 9-11

<u>प्रश्न 3. नया पवित्र नगर येरूशलेम जो स्वर्ग से उतरा है किस का प्रतीक है?</u>

नोट्सः बाबुल और यरुशलेमः जहाँ एक ओर बाबुल अविश्वासी और अपवित्र लोगों का चिन्ह है और पुरानी पृथ्वी का प्रतीक है (प्रकाशितवाक्य 17:1-2,5,18) वहीं यरुशलेम परमेश्वर के विश्वासी और पवित्र लोगों और नई पृथ्वी का प्रतीक है।

स्वर्गीय यरुशलेम और नया यरुशलेमः स्वर्गीय यरूशलेम और नया यरुशलेम दोनो ही शाब्दिक रूप से कोई नगर नहीं है। वरन वह तो विश्वासियों के समाज (कलीसिया) का एक चिन्ह है। अन्तिम न्याय जो आकाश में होगा उसके बाद स्वर्गीय यरुशलेम जिस में मसीह, और सारे विश्वासी (कलीसिया) होंगे वह उतर कर नई पृथ्वी पर आ जाएगा। और वह ही नया यरुशलेम कहलाएगा। (प्रकाशितवाक्य 20:11 - 21:2) और परमेश्वर मसीह के रप में कलीसिया के साथ नई पृथ्वी पर वास करेंगे। (प्रकाशितवाक्य 21:3)

मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः सारे विश्वासी विशेष रूप से जिनको स्वर्गीय यरुशलेम कहते हैं (गलातियों 4:21 - 31; इब्रानियों 12:22-24; 13:14) पहले से ही उन को पुराने नियम में मसीह की दुल्हन कहा गया है। (यशायाह 54:1,5-6,11) नए नियम में उन्हें मेमने की दुल्हन कहा गया है। (प्रकाशितवाक्य 21:9-10; 2 कुर.11:2-3; इफीसियों 5:25 - 32)

मसीह के दूसरे आगमन के बादः सभी विश्वासियो को विशेष रूप से नया यरुशलेम कहा गया है। (प्रकाशितिवाक्य 21:1-2,9-10) यीशु मसीह की दूसरी आमद के बाद नया यरुशलेम तो नई पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के अन्तिम पक्ष का प्रतीक है। नए यरूशलेम का वर्णन महिमा शब्दों में किया गया है क्योंकि इस सृष्टि पर कोई भी इतना महिमा नहीं है जितनी उन लोगो की है जो मसीह के रूप में जीवित परमेश्वर के साथ आराधना करते हैं।

नया यरूशलेम एक आदर्श और सर्वगुण समपन्न वास्तविक्ता है।

मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः नया यरूशलेम वह आदर्श है जो दर्शाता है कि आज की इस पृथ्वी पर परमेश्वर के लोग कैसे होने चाहिए। इसी लिए कुछ क्रिया शब्द जिस रूप में प्रयोग किए गए है वह दिखाते हैं कि यह निरन्तर होता आ रहा है। नया यरुशलेम तो हमेशा से हमारे बीच उतरता रहा है। (जैसा कि मत्ती 6:10 में लिखा है, "तेरा राज्य आए।") मसीह तो हर समय चीज़ों और लोगों को नया बनाता आ रहा है। (2 कुर.5:17) मसीह तो उन्हें जो प्यासे हैं जीवन का जल दे रहा है(युहन्ना 7:37-38) और जीवन के पेड़ की पत्तियाँ सभी राष्ट्रों को चंगा कर रही हैं।(मत्ती 8:16-17 और प्रकाशितवाक्य 21:2,5,6; 22:2)

मसीह के दूसरे आगमन के बादः नया यरूशलेम वह कटु वास्त्विकता है कि परमेश्वर के लोगउस नई पृथ्वी पर होंगे।इसी लिए दूसरे क्रिया शब्द भूत काल में पाए जाते हैः पहला स्वर्ग और पहली पृथ्वी जाती रही। अब न तो मृत्यु ही रहेगी और न हीपुरानी बातों पर रोना और पीटना होगा। और अब कोई श्राप न होगा। (प्रकाशितवाक्य 21:1,4; 22:3) जो कुछ भी बाइबल में लिखा है वह हो गया है / या हो चुका है। निश्चित क्रिया शब्द इस बात ज़ोर देते हैं कि ये सब से उत्तम नतीजे सदा आते रहेंगे। अनन्तकाल का परमेश्वर जो मसीह में शुरू से आखिर तक है गारंटी देता है कि यह

सबसे उत्तम वास्त्विकता लगातार रहेगी। (प्रकाशितवाक्य 21:6)

21:7-8:
प्रश्न 4 - विजय पा लेने का अर्थ क्या है?
नोट्सः

मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः "किसी पर विजय पाना"एक ज़िम्मेदारी का काम है और हर विश्वासी के लिए जो इस पृथ्वी पर है, एक चुनौती है। विजय पा लेना का अर्थ है कि आप हर परिस्थिति में यीशु मसीह के साथ जुड़े हुए है। इसका अर्थ है कि आप शैतान और इस पापी दुनियाँ को अपने से दूर रखते हैं। कि वह आपके परमेश्वर की संगति और सेविकाई से दूर न ले जाए। इसका अर्थ यह भी है कि हम युद्ध करते रहें कि मसीह की संगति सेभटक कर फिसल न जाएँ। इसका अर्थ यह भी है कि हम लगातार अधर्म का विरोध करें। वे विश्वासी जो विजय नहीं पाते हैं वे अविश्वासी हैं क्योंकि वे इस पृथ्वी की शक्ति, मशहूरी, मौज-मस्तीको उद्धार से और इस नई पृथ्वी से ऊपर रखते हैं। यीशु मसीह ने इस संसार पर विजय पा ली है (युहन्ना16:33) वे जो मानते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है वही संसार पर विजय पा सकेंगे। (1 युहन्ना 2:14) हर मसीही शैतान और उसकी दुष्टात्माओं पर मेमने के लहु से और उनकी गवाही से (प्रकाशितवाक्य 12:11 ही विजयपाएँगे उन पर जो उन से युद्ध करते हैं। (प्रकाशितवाक्य 17:14)

मसीह के दूसरे आगमन के बादः हर विश्वासी यीश मसीह में जयवन्त से भी बढ़ कर है। (रोमियो 8:37)

प्रश्न 5. नगर के हर भाग का क्या अर्थ है?

नोट्सः जब प्रेरित युहन्ना ने नए यरुशलेम का वर्णन किया था तब वह एक दीवार और एक फाटक का वर्णन करता है, उस नगर की नींव और गलियों के विषय में बताता है। नगर के ये भाग नए यरुशलेम को अलग अलग दृष्टिकोंणों से विश्वासियों का समाज बताता है।

21:12,15,17
प्रश्न 6. दीवार का अर्थ क्या है?

नोट्सः महान और ऊँची दीवार मसीहों के समाज (कलीसिया) की सुरक्षा, बचाव, और हिफाज़त का प्रतीक है। वह दीवार 144 क्युबिट चौड़ा। (जो मनुष्य के हाथ के माप से 65 मीटर) अँक भी चिन्ह होते हैं। जैसे अंक तीन प्रतीक है परमेश्वर का, अंक 4 प्रतीक है संसार का, अंक 12 पुराने नियम पर विश्वास करने वालों का प्रतीक है। (प्रकाशितवाक्य 21:12) या नए नियम से (प्रकाशितवाक्य 21:14) और फिर अंक 12x12 प्रतीक है सर्वगुण सम्पन्न होने का। इस रीति से हो सकता है कि अंक 144 परमेश्वर के संसार के उद्धार के कर्म का प्रतीक है जिस पर आक्रमण नहीं किया जा सकता है और जो पूरी तरह से सुरक्षित है।

मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः सारे सच्चे मसीही सुरक्षित है और वे पूरी तरह से अपने जीवित परमेश्वर की संगति के द्वारा बचे हुए हैं। यीशु मसीह ने पहले से ही कह दिया था कि चुने हुओं को धोखा देना सम्भव नहीं है। (मत्ती 24:24) उसने वायदा किया है, "कोई भी उनको मेरे हाथों से छीन कर नहीं ले जा सकता है।"(युहन्ना 10:28) और "उन में से एक भी नहीं खोया है।"(मत्ती 25:46)

21:12,13,25
<u>प्रश्न 7. फाटकों का क्या अर्थ है?</u>

नोट्सः फाटक इस बात का प्रतीक हैं कि आप परमेश्वर से संगति करने वाले लोगों के समाज में विश्वास के फाटक द्वारा प्रवेश कर रहे हैं। उन 12 गोत्रों के नाम जो फाटकों पर लिखे हैं इस बात का संकेत देते हैं कि जो परमेश्वर पर विश्वास करने वाले हैंवही वहाँ पर रहने पाएँगे। (विश्वासी मसीही, गलातियों 6:14-16; और याकूब 1:1)

मसीह के पहले आगमन से पहलेः ये फाटक कभी बन्द नहीं किए जाते हैं और विश्वासियों के समाज में प्रवेश करने के बहुत से अवसर होते हैं। ये फाटक हर दिशा में खुले हैं और वे संसार के हर राष्ट्रइकट्टे करेंगे। (यशायाह 43:5-7; मत्ती 24:14; प्रकाशितकवाक्य 5:9) स्वर्गदूत इन फाटकों की रक्षा करते हैं जिससे कोई दुष्ट, अधर्मी और अविश्वासी इस नगर में प्रवेश न करने पाए।(प्रकाशिताक्य 21:27) पुराने नियम के हाबिल, हनोक, नूह, अब्राहम, दाऊद और दानिएल ने विश्वास के द्वारा इन फाटकों में प्रवेश किया था। (उत्पत्ति15:6; लूका 20:37-38) नए नियम के लोग जिन्होंने अपने कपड़े मेमने के लहु से धो लिए हैं उन्हें इस नगर में प्रवेशकरने काअधिकार है। (प्रकाशितवाक्य 22:14) अपनी मृत्यु से ले कर मसीह के दूसरे आगमन तक अवसर है कि वे विश्वासियो के समाज में प्रवेश कर सकें।(मत्ती 7:13-14;लूका 13:23-30)

मसीह के दूसरे आगमन के समयः ये फाटक बन्द कर दिए जाएंगे और तब कोई अवसर नहीं होगा उद्धार पाने का (मत्ती 25: 10-13; और 2 कुर. 6: 1-2; 13:5) इसका अर्थ यह हुआ कि केवल वही नाम जो यीशु मसीह की जीवन की पुस्तक में लिखे हैंवही उस नगर में प्रवेश करने पाएँगे।

मसीह के दूसरे आगमन के बादः ये फाटक फिर कभी बन्द न होंगे। यही इस बात का प्रतीक होगा हम परमेश्वर के साथ बिना किसी रुकावट के नई पृथ्वी पर संगति करने पाएँगे।

12:14, 19-21
<u>प्रश्न 8. नींव का अर्थ क्या है?</u>

नींव प्रतीक है सहारा देने का उस नगर को जो विश्वासियों के समाज का आधार है। उस नींव पर यीशु मसीह के 12 गोत्रों के नाम लिखे हैं जो इस बात को बताते हैं कि उन्होंने ऐतिहासिक रूप से मसीही कलीसिया की नींव रखी थी। (मत्ती 16:18-19, प्रेरितों के काम 1:8; इफिसियों 2:20; 3:5-6; प्रकाशितवाक्य 21:14) वे तो यीशु मसीह के चश्मदीद गवाह, और सुनने वाले गवाह होंगे (जो वास्तव में मसीही कलीसिया की नींव हैं)

मसीह के पहले आगमन से पहलेः प्रेरितों ने नियम के लेखों की घोषणा करके ऐतिहासिक कलीसिया की नींव डाली थी और लोगों को (अर्थात कलीसिया को) यीशु मसीह के पास और स्वर्गीय यरुशलेम के पास लाए थे। (गलातियों 4:26) वे कीमती पत्थर जो नींव को सजाते हैं (यशायाह 54:11-12; और प्रकाशितवाक्य 21:19-21) वे प्रतीक है परमेश्वर के उन अनेक बुद्धि-ज्ञान और गुणों का और परमेश्वर के सदगुणों की घोषणा कलीसिया ने की थी। (इफिसियों 3:10)

मसीह के दूसरे आगमन के बाद विश्वासियों का समाज (अर्थात उसका राज्य) फिर कभी भी हिलाया नहीं जा सकेगा क्यों परमेश्वर स्वयं उस नगर का वास्तुकार है और निर्माता है। (इब्रानियों 11:10; 12:28)

21:16
प्रश्न 9. वह नगर एक क्यूब(घन) के आकार में क्यों है?
लिख लेः
इस क्यूब (घन) का आकार उस मिलाप के तम्बू और सुलेमान के मन्दिर के पूर्वाभास के अनुसार था।

(1 राजा 6:20) पुराने नियम के समय में महा पवित्र स्थान जहाँ पर वाचा का संदूक रखा था उसे परमेश्वर का निवास स्थान माना जाता था। जहाँ पर वह अपनी पूरी महिमा के साथ रहते थे। (1 सैमुएल 4:4; 2 राजा 19:15;1 राजा 8:10-11) नए नियम में महा पवित्र स्थान स्वर्ग है जो परमेश्वर का निवास स्थान है (इब्रानियों 9:12,24)

नए यरुशलेम भी क्यूब के आकार का है।

मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः स्वर्गीय यरुशलेम (गलातियों 4:26) को परमेश्वर का मन्दिर कहा गया है। (2 कुर. 6:16; इफिसियों 2:22) और क्योंकि नया यरुशलेम, महा पवित्र स्थान के आकार में ही मन्दिर में बना है, (प्रकाशितवाक्य 21:16) ये केवल विश्वासियों के समाज के (अर्थात कलीसिया के) अपने आदर्श आकार के चिन्ह हैं जो कि आज की पृथ्वी पर परमेश्वर का निवास स्थान है। कलीसिया को पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास स्थान कहा जाता है। (इफिसियो 2:19-22)

अंक 12000 गुणनफल है 3 बार, 4 बार, 10 बार, 10 बार, 10. अंक 3 प्रतीक है परमेश्वर का (मत्ती 28:19) अंक चार इस संसार का प्रतीक है (प्रकाशित वाक्य 7:1) अंक 12 प्रतीक है परमेश्वर के लोगों का (प्रकाशितवाक्य 21:12,14) जो उद्धार के कार्य का नतीजा है। अंक 10 पूरे संसार की गिनती का प्रतीक है। (10 कँवारियाँ और 10 सेवक प्रतीक हैं संसार के सारे लोग। (मत्ती 25:1; लूका 19:13) और अंक 10X10X10 इस पृथ्वी पर यह एक सम्पूर्ण दैविक अंक है।(निर्गमन 20:6; यशायाह 60:21-22)इस लिए अंक 12000X12000X120000 यह सम्पूर्णता का एक चिन्ह जो हर पीढ़ी में और हर राष्ट्र में त्रिएक परमेश्वर के उद्धार जैसे सर्वोत्तम नतीजे लाता है। यह अंक हर पीढ़ी तक पहुँच जाएगा (रोमियो 11:4-5) कोई भी चुना हुआ है धोखा नहीं खाएगा। (मत्ती 24:24) और कोई भी चुना हुआ खोएगा नही (युहन्ना 10:28; 17:12)

मसीह के दूसरे आगमन के बादःनया यरूशलेम (प्रकाशितवाक्य 21:1) भी क्यूब के आकार का है (प्रकाशितवाक्य 21:16) एक चिन्ह है विश्वासियों के समाज का (अर्थात कलीसिया का) जो सर्वगुण सम्पन्न रूप में परमेश्वर के निवासस्थान नई पृथ्वी पर सदा के लिए निवास करेगी और परमेश्वर की महिमा की ज्योति में चमकती रहेगी। (प्रकाशितवाक्य 21:3,11)

अंक 12000 X 12000 X 12000 वह चिन्ह है जो परमेश्वर के सम्पूर्ण कार्य का जो त्रिएक परमेश्वर के उद्धार के कार्य के नतीजे का प्रतीक है जो उसने संसार के सभी राष्ट्रों के इतिहास में किया है। यह अंक उन चुने हुए विश्वासियो का भी प्रतीक है जो सृष्टि के आरम्भ से लेकर उसके नया बनने तक पाए गए हैं। "इसमें इस्राएल की भरपूरी"और "अन्य जातियों की भरपूरी"शामिल है और यह मसीह के दूसरे आमद से कुछ पहले ही पूरी होगी। (रोमियो 11:12,25,26;और 2 तिमुथियुस 2:19)

21:22

<u>प्रश्न. 10 नए यरूशलेम में कोई मन्दिर क्यों नहीं है?</u>

नोट्सः

मसीह के पहले आगमन से पहलेः पुराने नियम के समय के दौरान मन्दिर को परमेश्वर का निवास स्थान माना जाता था। और परमेश्वर की महिमा को दिन के समय बादल में और रात के समय आग में परमेश्वर का निवास माना जाता था। और यह महिमा मन्दिर के महा पवित्र स्थान में वाचा के सन्दूक के ऊपर बने करूब पर वास करती थी। (निर्गमन 25:22; 40:34-38; 1 सैमुएल 4:4; 2 राजा 19:15) परमेश्वर की महिमा की चमक केवल मंदिर की इमारत में महा पवित्र स्थान तक सीमित थी परन्तु भविष्यद्वक्ता यशायाह भविष्यवाणी कर चुके थे कि परमेश्वर स्वयं मन्दिर में

परमेश्वर के पहले आगमन के बादः मन्दिर परमेश्वर का निवास स्थान माना जाना बन्द हो गया (युहन्ना 2:19; प्ररितें के काम 7:44-50; 17:24-25) यरुशलेम के मन्दिर का पर्दा उपर से नीचे फट गया था। (मत्ती 27:51) यह चिन्ह देने के लिए कि आप हर विश्वासी का सीधे-सीधे पवित्र आत्मा के द्वारा यीशु मसीह तक पहुँचने का अधिकार है। (इफिसियों 2:18; 3:12; इब्रानियों 4:14-16) एक मसीही के दृष्टिकोण से अब इस पूरे संसार में कोई भी पवित्र स्थान या इमारत नहीं है।

मसीह के पहले आगमन के बाद विश्वासियों का समाज (अर्थात कलीसिया) ही परमेश्वर का मन्दिर है और परमेश्वर उन में पवित्र आत्मा के रूप में वास करता है। (2 कुरन्थियों 6:16;इफिसियों 2:22; 1 पतरस 2:5) और अब परमेश्वर की महिमा की चमक कलीसिया पर स्पष्ट दिखाई देती है। (2 कुर. 3:18;मत्ती 5:16)

मसीह के दूसरे आगमन के बादः परस्थिति एक दम उलटी हो जाएगीः परमेश्वर यीशु मसीह नये यरूशलेम के रूप में वह मन्दिर बन जाएगा जिसे देख सकेंगे। और तब विश्वासियों का समाज (कलीसिया) उस परमेश्वर के साथ निवास करेगी जिस ने स्वयं को यीशु मसीह में प्रकट किया था। तब कुल. 3:3-4 में जो लिखा है वह एक छुपी हुई सच्चाई नहीं रहेगा। जो भविष्यवाणी यशायाह ने की थी तब उसकी पूरी तरह से पूर्ति हो गई थी। परमेश्वर अब वे स्वयं परमेश्वर का मन्दिर बन गए हैं। वे जहाँ भी रहें वे सुरक्षित हैं और वे वहीं पर सदा आराधना और सेवा करेंगे। और तब महिमा का तेज पूरी नई पृथ्वी को प्रभावित करेगा।

21:23; 22:5

<u>प्रश्न 11. नए नगर यरुशलेम में सूरज, चाँद या कोई और ज्योति क्यों नहीं है?</u>

नोट्सःनए नगर में सूरज, चाँद या कोई और ज्योति इस लिए नहीं है क्योंकि मसीह उनकी ज्योति है। मसीह के विशेष रूप से नगर की ज्योति कहा गया है।

मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः मसीह ही संसार की ज्योति है। (युहन्ना 8:12) क्योंकि उसी ने मनुष्य को परमेश्वर के दर्शन कराए थे। (युहन्ना 1:4-5; 14:9; 2 कुर. 4:6; कुलुसियो, 1:15) और अब वह विश्वासियों में सच्चे उद्धार का ज्ञान बाँटता रहता है। (युहन्ना 8:19) विश्वासी अब यीशु मसीह को अपनी आत्मिक आँखों से देखते हैं।

मसीह के दूसरे आगमन के बादः मसीह ही नई पृथ्वी पर सारे विश्वासियों के समाज (अर्थात कलीसिया) के लिए दीवट और ज्योति होगी। (प्रकाशितवाक्य 21:23) क्योंकि मसीह ही प्रकट रूप से विश्वासियों को परमेश्वर का मुख और उसके सारे गुण दिखाएगा। परमेश्वर एक आत्मा है और वह नई पृथ्वी पर प्रकट रूप से विश्वासियों के बीच यीशु मसीह के द्वारा देखी जा सकती है। और तब विश्वासी अपनी शारीरिक आँखों से भी यीशु मसीह का दर्शन पा सकेंगे। (प्रकाशितवाक्य 22:4)

21:24-27

<u>प्रश्न 12. वे कौन से राष्ट्र है जो नए यरुशलेम में हैं और वे नए यरुशलेम में क्या लेकर आते हैं?</u>

लिख लेः

मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः हर राष्ट्र से अनेक लोग यीशु मसीह को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता ग्रहण कर लेंगे और खुले फाटक से अन्दर प्रवेश कर लेंगे। (मत्ती 7:13-14) और वे अपने राष्ट्र का धन नगर में ले आएँगे। (यशायाह 60:11) और स्वर्गीय यरुशलेम का भाग बन जाएँगे। (मत्ती 24:14;प्रकाशितवाक्य 5:9-10) वे यीशु मसीह के द्वारा

जो भला है विज्ञान में और दवा और इलाज में, कृषि आदि में इस संसार के लिए, और समाज के लिए परमेश्वर की आराधना करेंगे। फिर वे अपनी संसकृति और संसकारों मे, कविताओं में, लेखों में, संगीत और नृत्य में, अपने निजि जीवन (अपने चरित्र और कर्मों के लिए) भी आराधना करेंगे।

मसीह के दूसरे आगमन के बादः जब स्वर्गीय यरूशलेम नए यरुशलेम के रूप में नई पृथ्वी पर उतर आएगा तब हर जाति के लोग, हर भाषा बोलने वाले लोग, और हर राष्ट्र के लोग उस नई पृथ्वी पर सदा के लिए उन लोगों का हिस्सा बन जाएँगे जो परमेश्वर के विश्वासी लोग हैं। परन्तु परमेश्वर पर विश्वास करने वाले लोग अब पहले जासे नहीं रहेंगे और न ही कभी पहले के समान बन सकेंगे। तब इस नई पृथ्वी पर अनेक प्रकार के लोग होंगे और अनेक प्रकार के वैभव भी देखने को मिलेंगे। जो कुछ भी उनके इस पृथ्वी पर रहते हुए परीक्षाएँ हुई थीं और जहाँ वे अस्थाई रूप से ठहर गए थे संस्कृति के कारण या अग्नि परीक्षा के न्याय के कारण (मत्ती 3:11-12; 13:40-43; 1 कुर. 3:12-15; 2 पतरस 3:10) फिर भी यह महिमय और आदर के योग्य होगा। (फिलिपियों 4:8) जो भी कर्म किए गए थे, "परमेश्वर की ओर से, परमेश्वर के द्वारा और परमेश्वर की महिमा के लिए"(रोमियो 11:36; युहन्ना 15:5) वह सब व्यर्थ नहीं जाएगा। (1 कुर. 15:58) वह तो उनके साथ नए यरूशलेम में प्रवेश कर जाएगा। (प्रकाशितवाक्य 14:13) विचार करें उऩ अनगितनत सुन्दर गुणों के विषय में जो एक व्यक्ति मे पाए जाते हैं और उन अनेक खोए हुओं के विषय में भी विचार करे जिन को बचा लिया गया है। वे हर जाति से, अलग-अलग भाषा बोलने वालों मे से और अनेक राष्ट्रों से (प्रकाशितवाक्य 5:9-10) विज्ञान, कौशल, संगीत, गीतो, कला, लेखन, और हर तरह क काम जो परमेश्वर की महिमा करते हैं। लेकिन कुछ भी जो बुरा है नए यरूशलेम में प्रवेश नहीं कर पाएगा। (प्रकाशितवाक्य 21:27) केवल वही जिनका नाम यीशु मसीह की जीवन की पुस्तक में लिखा है वही नए यरुशलेम में प्रवेश पाएँगे। (प्रकाशितवाक्य 20:15)

22:1

<u>प्रश्न 13. जीवन के जल की नदी का क्या अर्थ है?</u>

नोट्सः आज का प्राक्रतिक स्वर्ग, पृथ्वी, और सागर हैं वे पूरी तरह से बदल जाएँगे। (रोमियो 8:21; 2 पतरस 3:10) पूरा भू-मण्डल महिमय रूप से बदल जाएगा। उस सागर के बदले जो सदा खतरा बनाए रखता है, उसके स्थान पर जीवन जल की नदी होगी। (प्रकाशितवाक्य 22:1) और यह बदलाव प्रतीक है इस बात का कि नए यरुशलेम में मनुष्य और प्रकृति का सम्बन्ध पूरी तरह से फिर से स्थापित हो जाएगा। (यशायाह 11:6-9; यहेजकेल 47:9) फिर शारीरिक रचना या प्रकृतिक रचना बिलकुल वैसे ही होगी जैसे परमेश्वर की योजना थी। (प्रेरितों के काम 3:21) तौ भी जीवन जल की नदी एक महत्तवपूर्ण प्रतीक है जो आत्मिक है।

मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः जीवन जल की नदी प्रतीक है कि उद्धार के लिए सुसमचार का प्रचार सारे संसार में होगा। और यह उन सबके लिए अनन्त जीवन लेकर आएगा जो उसे उस में से पीएगा। (युहन्ना 4:10, 14; 7:38) यह नदी परमेश्वर के सिंहासन से यीशु मसीह में बहती है और यही उद्धार का प्रतीक है कि उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह और प्रेम के कार्य से मिलता है। (इफिसियों 2:8-9)

इसके लिए वर्तमान काल के क्रिया शब्दों का प्रयोग इस लिए किया गया है क्योंकि यह आज के समय में यीशु के दूसरे आगमन के पहले का कार्य है।

मसीह के दूसरे आगमन के बादः जीवन जल की नदी प्रतीक है उस उद्धार का जो सम्पूर्ण है और सर्वगुण समपन्न है जिसे परमेश्वर ने अपने लोगो को नई पृथ्वी पर दिया है।

22:2

<u>प्रश्न 14. सड़क का क्या अर्थ है?</u>

नोट्सः ये शब्द जैसे नदी, सड़क और पेड़ मूल भाषा में एक वचन में लिखे हैं। पर इन के अनेक अर्थ भी हो सकते हैं। इस लिए दर्शन दिखाता है कि केवल एक नदी, एक सड़क और एक पेड़ नहीं है। लेकिन एक वाटिका है जहाँ पर पेड़ो की पंकतियाँ है और उनके बीच में से अनेक नदीं और सड़के हैं।

मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः सड़कें प्रतीक है कि उनके द्वारा हम परमेश्वर के सिंहासन तक, जीवन की नदी तक और जीवन के पेड़ तक आसानी से पहुँच सकते हैं। मध्यस्थ यीशु मसीह के द्वारा (1 तिमु. 2:5) और उसकी आत्मा के द्वारा (इफिसियों 2:18) जो प्यासा है उसके लिए एक खुला दरवाज़ा है जहाँ पर वह बिना किसी पैसे के और बिना किसी कीमत के विश्वास के साथ अन्दर आ सकता है और जल पी सकता है। (यशायाह 55:1-2) यीशु ने कहा "हे बोझ से दबे लोगो मेरे पास आओ मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।" (मत्ती 11:28)

सड़कें खरे सोने की हैं जैसे आर-पार दिखने वाला शीशा तो प्रतीक है लोगों के सर्वगुण सम्पन्न चरित्र का जिसके आधार पर वे परमेश्वर के निकट जाते हैं। (युहन्ना 3:19-21; 8:12) और उनकी परमेश्वर के साथ संगति (1 युहन्ना 1:5-7) कहीं भी कुछ भी गुप्त नहीं होता है (कोई रहस्य, गोपनीय, केवल पहल करने वालों के लिए) जो परमेश्वर के निकट जाने की पहल करते है जो स्वयं को बाइबल में प्रकट करता है।

मसीह की दूसरी आमद के बादः सड़कें अभी भी प्रतीक हैं आसानी से परमेश्वर के सिंहासन के निकट, जीवन जल की नदी के निकट और जीवन के पेड़ के निकट पहुँचने का और विश्वास ने इसे वास्तविक्ता में बदल दिया है।

22:2-3(क)

<u>प्रश्न 15. जीवन के पेड़ का क्या अर्थ है?</u>

लिख लेः

पाप में गिरने से पहलेः जीवन का पेड़ वास्तविक था जो अदन वाटिका रूपी स्वर्गलोक में था जहाँ पर आदम और हव्वा अनन्तकाल तक जी सकते थे। लेकिन जब उन्होंने पाप कर लिया तब परमेश्वर ने उनको उस स्वर्गलोक से बाहर निकाल दिया था। जिससे वे सदा के लिए पाप और मृत्यु के दास बन कर जीवन जी सकें। (उत्पत्ति 2:9-11; 3:22-24) आज की इस पृथ्वी पर मनुष्य को स्वर्ग से बाहर कर दिया गया है (उस वाटिका से) वह आत्मिक रूप से मर चुका है, उसे निश्चय ही शारीरिक रूप से भी मरना होगा और वह अनन्तकाल के लिए भी मर जाएगा यदि यीशु मसीह उसे बचा न ले।

मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः जीवन का पेड़ और उसकी पत्तियाँ सुसमाचार के स्वास्थ्य के लिए हितकर प्रभाव का प्रतीक है। और परमेश्वर के उद्धार के लिए भरपूरी और उस चंगाई के लिए जो आज के युग में शरीर और आत्मा को मिलती है कलीसिया की आदर्श वास्तविकता है। यीशु मसीह के दूसरे आगमन से पहले सभी राष्ट्रों के लोगों को आत्मिक, शारीरिक, मनोभावनाओं की और अनन्त जीवन चंगाई की ज़रूरत है।

यीशु मसीह के दूसरे आगमन के बादः जीवन का पेड़ उन सभी गहरे दाग़ों की चंगाई का सम्पूर्ण और सर्वोत्तम प्रतीक है जो हम ने पुरानी पृथ्वी पर जीते समय पाए थे। और वह निरन्तर परमेश्वर की आशिषों से जो हमें सदा हमारी ज़रूरतों को तृप्त करेंगी और हमें नयी पृथ्वी पर जीते हुए उस आनन्द से भर देंगी जिस को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता है। उस नई पृथ्वी पर स्वर्गलोक (वाटिका) नगर के अन्दर होगी। और जीवन का पेड़ उस स्वर्गलोग में होगा। और हर व्यक्ति जो विजय पाएगा उसे अधिकार होगा कि वह सदा उस जीवन के पेड़ के फल को खा सकेगा।

(प्रकाशितवाक्य 2:7) वह तो आत्मिक, शारीरिक, भावनात्मक रूप से अनन्तकाल तक जीवित रहेगा। (1 कुर. 15:42-44) जीवन के पेड़ की मासिक रूप से फलवन्त होने की भरपूरी लगातार इस गारंटी है कि नई पृथ्वी पर आशीषों की भरपूरी है। "अब से कोई श्राप नहीं रहेगा।"

22:3(ख)

प्रश्न 16. परमेश्वर के सिंहासन पर कौन बैठता है?

लिख लेः

मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः परमेश्वर का राज्य इस उस का सर्वोपरी राज्य होगा जो वह सब पर करेगा आदि से अनन्तकाल तक (भजन 93:1-2:145;13; 146:10; 1 तिमिथियुस 6:15) विशेषकर यह राज्य तो परमेश्वर का सर्वोच्च राज्य होगा दो वह यीशु मसीह के माद्यम से करेगा। (मत्ती 28:18; यहुन्ना 13:3, इफिसियों 1:20-22; फिलिपियों 2:9-11; कुलुसियों 1:15-20; प्रकाशितवाक्य 1:5; 17:14; 19:16) उसका राज्य तो यीशु मसही के द्वारा उद्धार के पूरा किए कार्य पर आधारित है। मत्ती 21:39, 42-43; प्रेरितों के काम 2:36) और उस काम को विश्वासियों में पवित्र आत्मा के द्वारा कार्यशील किया गया था। (रोमियो 14:17) उस राज्य को विश्वासियों के दिलों में पहचाना जा सकता है।और उसे उनके जीवनों में कार्यशील देखा जा सकता है।(लूका 17:20-21; मत्ती 25:34-40)

परमेश्वर के राज्य के नतीजे 4 क्षेत्रों मे देखे जा सकते हैं। शुरू से आखिर तक विश्वासियों में सम्पूर्ण उद्धार,(मरकुस 10:25-26; युहन्ना 3:3-8;1 कुर. 6:9-11) विश्वासी मिल कर जब इस पृथ्वी पर एक कलीसिया बन जाएगी (मत्ती 16:18-19; इफिसियों 1:20-23; 1 पतरस 2:4-5, 9-10) भले काम विश्वासियों को हर सामाजिक क्षेत्र में प्रभावित करते हैं और उनके काम भले काम समाज के हर क्षेत्र को प्रभावित करेंगे। (मत्ती 25:34-36, रोमियो 14:17 और अन्त में वह पूरे ब्रम्हाण्ड या नए स्वर्ग और न पृथ्वी को यीशु की दूसरी आगमन के समय देखेंगे। (1 कुर. 15:24-26; प्रकाशितवाक्य 11:15) पृथ्वी पर राज्य के आरम्भ और 1 कुर. 15:24-28 परमेश्वर के राज्य के अन्त को बताता है। अपने दूसरे आगमन के समय तक उसने मध्यस्थ का राज्य पूरा कर लिया होगा।

मसीह के दूसरे आगमन के बादः परमेश्वर का राज्य जो नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर होगा उसमें कोई कमी नही होगी। और वह परमेश्वर का राज्य कहलाएगी (मत्ती 25:34; और युहन्ना का 25:34; 1 कुर. 15:23-28; प्रकाशितवाक्य 11:15-18)यह कहना,"परमेश्वर ने जो अपने पुत्र यीशु मसीह के अधीन किया था वह स्वयं खुद को परमेश्वर के अधीन कर देगा। और उसका मध्यस्थता का राज्य जो उद्धार के इतिहास में 1 कुर 15:28 में शुरू हुआ था वह यीशु ने पिता परमेश्वर के हाथों में फिर से सौंप दिया था कि केवल वही सब पर अधिकारी हों। (फिलिपियों 2:9-11)" इस प्रकार यीशु समीह का मध्यस्थता का राज्य वर्तमान पृथ्वी पर समाप्त हो गया था।

परमेश्वर के अनन्तकाल का राज्य मसीह के दूसरे आगमन से परे है। लेकिन फिर भी यीशु मसीह परमेश्वर के साथ मिल कर अनन्तकाल का राज्य कर रहे हैं। (2 सैमुएल 7:13;यशायाह 9:7; 2 पतरस 1:11; प्रकाशितवाक्य 22:1-3) केवल इतना ही हुआ है कि परमेश्वर के पिता के काम और परमेश्वर पुत्र के कामों में अन्तर शेष हो गया है। यहाँ से आगे बाइबल केवल पिता और पुत्र की एकता की बात करती है। संसार का राज्य अब सदा-सदा के लिए प्रभु का राज्य और मसीह का राज्य बन चुका है।(प्रकाशितवाक्य 11:15) "सर्वशक्तिमान परमेश्वर और मेमना ही उनका मन्दिर हैं।"(प्रकाशितवाक्य 21:22) "परमेश्वर और मेमना ज्योति हैं।"(प्रकाशितवाक्य21:23)और परमेश्वर का सिंहासन और मेमने का सिंहासन नए यरूशलेम का प्रतीक होंगे। (प्रकाशित वाक्य 22:1-3)

22:4

प्रश्न 17. विश्वासी लोग परमेश्वर के चेहरे को कैसे देख सकेंगे?

लिख लेः परमेश्वर क महिमा को हम यीशु मसीह के मुख पर कैसे देख सकेंगे?

मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः यीशु मसीह अदृष्य परमेश्वर की प्रत्यक्ष छवि है। (कुल. 1:15) परमेश्वर की महिमा की चमक और उनका सटीक रूप जो उपस्थित है (इब्रानियों 1:3; युहन्ना 1:14)
जिस किसी ने यीशु मसीह को देख लिया है उसने परमेश्वर को देख लिया है। (युहन्ना 14:9)

यीशु मसीह के दूसरे आगमन के बादः यीशु मसीह फिर भी अदृष्य परमेश्वर की प्रत्यक्ष छवि रहेंगे और विश्वासी लोग हर समय यीशु मसीह के चेहरे में देख सकेंगे कि परमेश्वर कौन है। वे यीशु मसीह के द्वारा सीधे परमेश्वर के साथ संगति करेंगे। वे उसकी पस्थिति में जिएंगे, सेवा और राज्य करेंगे। (प्रकाशितवाक्य 22:3-5)

22:5
प्रश्न 18. नई पृथ्वी पर विश्वासी क्या करेंगे?

लिख लेः

मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः विश्वासी जो इस पृथ्वी पर हैं उनको सांस्कृतिक मिशन दिए गए हैं और वह यह है कि पूरे संसार को परमेश्वर की छवि से भर दें। और सबको अपने अधीन करके जो भी रचा गया है उसे संजो कर रखें। (उत्पत्ति 1:26-18) और विश्वासियों को एक दूसरा मिशन भी दिया गया है कि जाओ और सारे जगत के राष्ट्रों में चेले बनाओ। (मत्ती 28:19)

मसीह के दूसरे आगमन के बादः नई पृथ्वी के लोग इस बात को जान लेंगे और अपने मूल मिशन को पूरी तरह से पूरा करेंगे। और परमेश्वर की शारीरिक रचनाओं और सभी अदभुत प्राकृतिक रचनाओं पर राज्य करेंगे। (प्रकाशितवाक्य 22:5) और वे परमेश्वर की सेवा करेंगे और सदा उसकी आराधना करेंगे। (प्रकाशितवाक्य 22:3)

प्रश्न 19. आप क्या सोचते हैं कि प्रकाशितवाक्य के 21 और 22 अध्याय आप के मसीही जीवन के लिए क्यों महत्त्वपूर्ण हैं?

सीख लेः प्रकाशितवाक्य 21 और 22 अध्याय मुझे सिखाते हैं कि मैं उन प्रश्नों का उत्तर दे सकूँ जैसे, **"मैं कहाँ जा रहा हूँ?"** मैं यीशु मसीह से उसकी दूसरी आमद के समय मिलने जा रहा हूँ। उसके बाद मेरे शरीर का पुनरोत्थान होगा और फिर मेरा न्याय होगा। और तब मैं यीशु मसीह के रूप में बदल जाऊँगा। (फिलिपियों 3:21; 1युहन्ना 3: 1-3) और तब मैं नई पृथ्वी पर हर समय यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति में उसे देखते हुए रहूँगा। वहाँ पर मैं परमेश्वर के साथ परमेश्वर की आराधना करूँगा, उसकी सेवा करूँगा और उसके साथ उसके ही राज्य में नई पृथ्वी पर राज्य करूँगा। मेरा भविष्य सचमुच में बहुत ही अदभुत और आशापूर्ण है।

चौथा तरीका. लागू करना **लागू करना**
ध्यान देनाः इस लेखाँश में कौन से ऐसे सत्य है जो मसीही लोग अपने जीवन में लागू कर सकते हैं?
अपने विचार बाँटें और लिख लेः आईए हम एक दूसरे के दिमाग में तूफान ला दें और उन सब सच्चाईयों को लिख लें

जो हमें उत्पत्ति 1:1 – 2:4अ से जीवन में लागु करनी हैं।

ध्यान देः कौन सी ऐसी बात हमें लागु करनी है जो परमेश्वर चाहते है कि हम निजि रूप से अपने जीवन में लागु करें?

लिख लेः यह निजि लागु करने का सत्य जो आप अपने जीवन मे लागु करने वाले है उसे अपनी कापी पर लिख लें। अपने इस निजि चुनाव को दूसरों के साथ बाँटें।

(याद रहे हर व्यक्ति भिन्न सत्य का चुनाव कर सकता है या किसी सत्य को अन्य रीति से अपने जीवन पर लागु कर सकता है। नीचे कुछ उदाहरणों की सूची है।

1. उन उदाहरणो की सूची जो प्रकाशितवाक्य 21:1 - 22:6 से जिन का प्रयोग करना सम्भव है।

21:1-3 मसीह के दूसरे आगमन पर नज़र रखना, कि कब नया स्वर्ग और नई पृथ्वी एक वास्तविकता बन जाएँगे।

21:4 याद रहे कि हमारे आज के आँसु और शरीर की कमज़ोरियाँ अस्थाई हैं। समपूर्ण वास्तविकता तो आगे आने वाली है।

21:*7-8* एक विजयी व्यक्ति बन जाएँ।

21:16 केवल एक चीज़ की खोज करें और वह है कि जीवन में हर दिन परमेश्वर की उपस्थिति में रहें और परमेश्वर के सुन्दर गुणों, वचनों और कर्मो पर नज़र रखे और उन पर मनन करें। (भजन 27:4)

21:17 इस बात पर कभी शक न करें कि मसीह एक दीवार के समान हमारी रक्षा करता है। (युहन्ना 17:12)

21:18-21 परमेश्वर के विभिन्न प्रकार के ज्ञान की घोषणा करें। (इफिसियों 3:10; याकूब 3:17)

21:22 संसार के हर विश्वासी को परमेश्वर का मन्दिर जान कर उसका आदर करें क्योंकि परमेश्वर उन में पवित्र आत्मा के रूप में वास करता है। (इफिसियों 2:22) और इस बात की आशा करें कि परमेश्वर ही मसीह में आप का अन्तिम मन्दिर बन जाए।

21:23 लगातार जीवित परमेश्वर को हर दिन बेहतर जानने के लिए यीशु के चेहरे को देखते रहें 2 कुर. 4:6)

21:25 सब को बताएँ कि फाटक अभी भी खुले हैं और अभी भी परमेश्वर के अनुग्रह का समय है और आप बचाए जा सकते हैं।

21:26 वह सब करो जो मैं करता हूँ (मेरा अध्ययन, मेरा काम, मेरे सम्बन्ध आदि) जैसा मैं सब कुछ मसीह के लिए करता हूँ। (कुलु. 1:16; 3:17)

21:27 हर शर्मनाक और धोखा देने वाली गति विधियों को दूर कर दें।

22:2 परमेश्वर को अनुमति दें कि वह अतीत की चोटों और घावों के दागों को चंगा कर दे।

22:3 इस पृथ्वी पर यीशु मसीह के समान जीवन बिताएँ - सेवा करें ना कि सेवा करवाएँ। (मरकुस 10:45)

अपने दिल और मन को ऊपर उन चीज़ों पर लगाए जहाँ यीशु मसीह रहते हैं न कि संसार की चीज़ों पर। (कुलु. 3:1-4) सामर्थी बन जाएँ न केवल विश्वास और प्रेम में वरन आशा में भी। (इब्रानियों 6:11-12; 10:23)

2. निजि रूप से लागु करने वाले प्रकाशितवाक्य 21:1 - 22:6 में दिए उदाहरणः

मुझे याद रखना है कि मैं इस पृथ्वी पर एक विदेशी और अजनबी हूँ। मेरी नागरिकता तो स्वर्गीय यरुशलेम की है। यह मेरी सहायता करेगा कि मै संसार की चीज़ों में पहले से उलझा न रहूँ। मैं तो अपने लिए स्वर्ग में खज़ाना इकट्ठा करना चाहता हूँ। (मत्ती 6:19-21; कुलु.3: 1-4)

मैं चाहता हूँ कि आज इस पृथ्वी पर अपने जीवन में वही करूँ जो मैं भविष्य में नई पृथ्वी पर करूँगा। मैं परमेश्वर के साथ संगति करना चाहता हूँ मैं उसकी आराधना, और सेवा करना चाहता हूँ और बहुत से लोगों को और चीज़ों तो परमेश्वर के पास लाना चाहता हूँ जो परमेश्वर के राज्य के लिए महिमामय और आदर के योग्य हैं। और सब से अधिक मैं परमेश्वर के राज्य की खोज करना चाहता हूँ। (मत्ती 6:33)

पाँचवाँ तरीका - प्रार्थना **प्रतिउत्तर**

आईए हम एक सत्य के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें प्रकाशितवाक्य 21:1-22:6 में हमें क्या सिखाया है।

(अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें कि बाइबल अध्ययन के दौरान आपने क्या सीखा है? और केवल एक या दो वाक्यों में ही प्रार्थना करें। और याद रखे कि दल के अन्यलोग भिन्न विषयों में बात करेंगे।)

5.	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***मध्यस्थता*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

निरन्तर 2 या 3 लोगों के दल बना कर एक दूसरे के लिए और संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करे

6.	**तैयारी** (2 मिनट)	***निर्धारित कार्य*** **अगले पाठ के लिए**

दल के अगुवेः दल के सदस्यों को घर पर तैयारी का काम करने के लिखित रूप से दे दें।

1.समर्पणः किसी एक सत्य के प्रति जो आपके लिए सम्भव है स्वयं को समर्पित कर दे।

2.परमेश्वर के साथ निजि समयः युहन्ना 7:73 – 11:37 अध्यायों में से हर दिन आधे अध्याय का अध्ययन करें। और इसका अध्ययन करने के लिए अपने मनपसन्द सत्य का तरीका इस्तेमाल करें।

3.मुँह ज़ुबानी याद करना बाइबल में सीखे नए बाइबल के पद को याद करें "परमेश्वर के मार्गदर्शन पाने का आश्वासन।"(भजन 3:5-6) हर दिन पिछले दो बाइबल के वचनों को फिर से बोल कर देखें यह जानने को कि वे अब भी याद हैं या नहीं।

4. प्रार्थनाः इस सप्ताह किसी विशेष विषय पर प्रार्थना करें और देखें परमेश्वर इस सप्ताह आपके लिए क्या कर रहे हैं। (भजन 5:3)

अध्याय - 11

1.	**प्रार्थना**

दल के अगुवेः अपने दल और पाठ्यक्रम को जो चेले बनाने के लिए है उसे परमेश्वर को समर्पित करें।

2.	**आराधना** (20 मिनट) ***(परमेश्वर के विशिष्ट गुण)*** **परमेश्वर मेरा सहायक है**

परिभाषा

आराधना क्या है? "आराधना" की परिभाषा है:

आराधना वह अभिव्यक्ति है जो हमारी परमेश्वर के प्रति उपासना, समर्पण और निष्ठा को प्रकट करती है। जो हम अपनी भिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं और अपनी प्रति दिन की जीवन शैली से प्रकट करते हैं।

परमेश्वर की आराधना करने के लिए, हमें ज़रूरत है कि हम अपने परमेश्वर को जान लें कि हमारा परमेश्वर कौन है। हर आराधना के समय हम परमेश्वर के केवल एक ही विशिष्ट गुण को जान सकते हैं।

मनन करनाः

पढ़े या शिक्षा देः परमेश्वर हमारा सहायक है।

पढ़े व्यवस्थाविवरण 1:29-33; इब्रानियों 13:5-6

1. परमेश्वर हमारे शत्रुओं के विरुद्ध हमारी सहायता करता है।

हर विश्वासी के शत्रु होते हैं।

ये शत्रु कुछ लोग हो सकते हैं जो हमारे यीशु पर विश्वास से घृणा करते हैं। वे दुष्ट आत्माएं हो सकती हैं जिन का लक्ष्य हमारे यीशु पर विश्वास को नष्ट करना होता है। कभी-कभी वे हमारे परिवार के सदस्य भी हो सकते हैं या कलीसिया के वे सदस्य जिन्होंने नया जन्म नहीं लाया है। लेकिन अकसर हमारा सब से बड़ा शत्रु है हमारा पापी स्वभाव जो हमारे अन्दर ही वास करता है।

लेकिन परमेश्वर हम से कहते हैं, "मैं तुम्हारे साथ चलूँगा और मैं तुम्हारी लड़ाई लड़ूँगा।"परमेश्वर हमारे लिए कैसे लड़ता है?"

कभी-कभी परमेश्वर हमारे शत्रुओं को दूर कर देता है।

पढ़ेः 2 इतिहास 20:12-17, 22-23 वह हमारे लिए लड़ता है और हमें अपनी शक्ति और विजय को देखने देता है।

कभी-कभी हमें अपने शत्रुओं का सामना करना पड़ता हैः

पढ़ेः लूका 6:27-28; 1 पतरस 2:21-23 कई बार परमेश्वर हमारे शत्रुओं को हम से दूर नहीं करता है क्योंकि वह हमारे शत्रुओ का इस्तेमाल करता है कि हमारे चरित्र को प्रशिक्षण देकर सिखा सके कि हम बुरे लोगों के साथ भी भला करें जिससे उसकी महिमा हो सके। जब हमारे शत्रुओं के प्रति हमारी प्रतिक्रिया परमेश्वर को खुश कर देती है तब वह अकसर हमारे शत्रुओं को हमारे साथ शान्ति से रहने के लिए तैयार कर देता है। (नीति वचन 16:7) अन्य समयों पर परमेश्वर हमें उससे युद्ध करने के लिए आत्मिक शस्त्रों से लैस (तैयार) करता है. इफिसियों 6:10-17 हमें सिखाता है कि हम परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लें जिससे शत्रु के विरोध में खड़े हो सकें।

2. परमेश्वर हमारी परिस्थितों में हमारी मदद करता है

एक सब से मुश्किल चीज़ जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं और रेगिस्तान में रहते हैंजो कि दिन में बहुत गर्म और रात में बहुत ठण्डाहोता है। वहाँ पर पानी, भोजन और घर की सुरक्षा के कोई प्रकृतिक स्रोत नहीं होते हैं। वह हर तरफ से शत्रु के आक्रमण से असुरक्षित होता है। यदि यह लम्बे समय तक अर्थात 40 साल तक हो तो बहुत ही कठिन होता है। यह पुराने नियम में प्रभु के लोगों के साथ हुआ था। परन्तु फिर भी परमेश्वर ने अपने लोगों की एक पिता के समान देखभाल की थी। अन्त तक जब तक कि वे अपनी अन्तिम मंज़िल तक नहीं पहुँच गए थे। अकसर परमेश्वर हमारी कठिन परिस्थितियों को दूर नहीं करता है और हमें उन में से गुज़र जाने देता है। परन्तु ऐसे समय में वह हमें अकेला भी नहीं छोड़ता है। वह ऐसा इसलिए करता है क्योंकि वह हमारे आत्मविश्वास की जो घमण्डी आज़ादी है उसे बदलना चाहता है और वह चाहता है कि हम एक स्वस्थ रूप से उस पर निर्भर करना शुरू कर दें। परमेश्वर तो हमें उस कठिन समय से स्वयं उठा कर पार कर देता है। और जब वह हमें उठा कर चलता है तब वह हमें उसी पर भरोसा करना है, उसकी निकटता पर, उसकी बुद्धि और ज्ञान पर, उसकी सामर्थ, उसके उद्धार और उसकी सहायता पर निर्भर करना सिखा देता है।

3. परमेश्वर हमारी यात्रा में हमारी सहायता करता हैः

एक और कठिन कार्य है कि हम किसी अनजानी मंज़ील तक पहुँचने की, किसी अनजाने स्थान की यात्रा कर रहे होते हैं जहाँ हम पहले कभी भी नहीं गए होते हैं। हालाँकि हम अपने विश्वास के कारण जानते हैं कि यह यात्रा हमें कहाँ ले कर जाएगी।लेकिन हम ने अभी तक उस अन्तिम मंज़िल को अनुभव नहीं किया है। अपनी जीवन यात्रा को परमेश्वर के बिना करना ऐसा होगा जैसे कोई जहाज़ बिना कम्पास या बिना पत्वार के चल रहा हो। हमारा जीवन भी परमेश्वर के मार्गदर्शन के बिना नहीं चल पाएगा। परमेश्वर के बिना हम लगातार अपना रास्ता भूल सकते हैं। बिना परमेश्वर के तो हमारे पास ज़रूरी आत्मविश्वास भी नहीं रहता है जो हमें आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करता है। बिना परमेश्वर के हम जान नहीं पाएंगे कि कब और कहाँ आराम करना चाहिए।

लेकिन परमेश्वर तो हमारे आगे-आगे चलता है कि हमें राह दिखा सके कि हम आगे चल कर उस स्थान को खोज लें जहाँ हमें विश्राम करना है। अकसर परमेश्वर हमें बहुत पहले से रास्ता नहीं दिखाता है क्योंकि वह हमें अपने मार्दर्शन पर भरोसा करना सिखा रहा होता है जिससे हम अपना हाथ उसके हाथ में दे दें। और उसे ही हर कदम पर हमारी अगुवाई करने दें। (भजन 119:105)

आराधना

परमेश्वर की उसके गुणों के कारण आराधना करें कि वह हमारी मदद करे। तीन-तीन लोगों के दल में आराधना करें।

3.	**गवाही बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **यूहन्ना 7:53 - 11:37**

पढ़े और वचन बाँटे, (या आपने जो लिखा है उस में से पढ़ें) संक्षेप में वही बोले जो आपने परमेश्वर के साथ जो वचन आपको दिया गया था (यूहन्ना 7:35 – 11:37 तक) उससे अपने निजि समय में जो भी आपने सीखा है, उसे सब के साथ बाँटें।
जो भी वचन बाँट रहा है उसे सुने और जो वह कहता है उसे गम्भीरता से लें और उसे ग्रहण करें पर उस पर किसी तरह की बहस न करें।

4.	**बाइबल शिक्षा** (70 मिनट) *संगति* **एक दूसरे के प्रति हमारी ज़िम्मेदारी**

क. मसीही संगति का महत्व

मसीही संगति का रूप और महत्व क्या है?

पढ़ेः यूहन्ना 13:34-35

लिख लेः मसीही संगति मूल रूप से एक दूसरे से वैसे ही प्रेम करना है जैसा यीशु मसीह ने हम से किया था।
1. **मसीही संगति एक आज्ञा है।** कोई चुनाव का विकल्प नहीं है।
2. **मसीही संगति एक विरला गुण है।** वह महत्त्वपूर्ण गुण है एक दूसरे से प्रेम करना
3. **मसीही संगति की परिभाषा यह है कि हम एक दूसरे के प्रति कितने ज़िम्मेदार हैं।**
बाइबल के अनुसार हमारी एक दूसरे के प्रति अनेक ज़िम्मेदारियाँ हैं।

ख. मसीही संगति के विशिष्ट गुण

1. मसीही संगति का विशेष गुण है परमेश्वर और परमेश्वर के लोगों के बीच का सम्बन्ध

मसीही लोग किस के साथ निकटतम सम्बन्ध रखते हैं?

पढ़ेः 1 यूहन्ना 1:3; 1 कुर.1:9; 12:12-13, 25; इफिसियों 2:18; 3:12;इब्रानियों 4:15-16
नोट्सः मसीही लोग पिता परमेश्वर, यीशु मसीह और पवित्र आत्मा के साथ निकटतम सम्बन्ध रखते हैं और साथ ही मसीही लोगों के समाज में एक दूसरे के साथ भी निकटतम सम्बन्ध रखते हैं जो कि मसीह का बदन है। एक मसीही व्यक्ति जो कि मसीह के बदन का सदस्य है उसे यीशु मसीह से अलग नही किया जा सकता है क्योंकि वह सिर है या मसीही कलीसिया से भी जो कि उसका बदन है।

2. मसीह की संगति उसकी संगत के साथ विशिष्ट सम्बन्ध से जानी जाती है।

मसीही लोग अपनी संगति के समय में क्या करते हैं?
पढ़ेः प्रेरितों के काम 2:42; इफिसियों 5:19
लिख लेः मसीही लोग नियमित रूप से छोटे या बड़े दल में मिलते रहते हैं। अपनी सभा में वे सुसमाचार का प्रचार करते हैं। और बाइबल का अध्ययन के साथ बाइबल की बातों को सिखाते हैं। वे साथ मिल कर आराधना के गीत गाते है और प्रार्थना करते हैं।

3. मसीही संगति की विशेषता उनकी ज़िम्मेदारी के साथ आपसी सम्बन्धों को निभाने से प्रकट होती है।

शिक्षा देः एक दूसरे के प्रति ज़म्मेदारी की शिक्षा दें।

मसीही संगति को समझने का सबसे अचछा तरीका हमें बाइबल के अनुसार एक दूसरे के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को समझना है। बाइबल के अनेक लेखाँशों में हम इन शब्दों को, "एक दूसरे के साथ" उदाहरण के लिए, "एक दूसर से प्रेम करो""एक दूसरे को शिक्षा दो,""एक दूसरे की सेवा करो" आदि। यही ज़िम्मेदारियाँ हैं जो हर मसीही को पूरे संसार में दूसरे मसीहों के प्रति निभानी है।

मसीही नियम नहीं।
यह एक बहुत बड़ा प्रलोभन है कि हम इन ज़िम्मेदारियों को मसीह के नियम बना देते हैं। जिन को उठाना बहुत भारी होता है। कोई भी मसीही इन सारी ज़िम्मेदारियों को एक ही समय पर या फिर एक साथ नहीं उठा सकता है। परमेश्वर चाहते हैं कि आप इन ज़िम्मेदारियो को परमेश्वर के मार्गदर्शन के अनुसार पूरा करें। वैसे जैसे वह आपको और आपके जीवन को बढ़ाता है। या उसके अनुग्रह के अनुसार तथा उन वरदानों के अनुसार जो उसने आपके दिए हैं।

सुझावः कोई एक ज़िम्मेदारी चुन ले और उसका कुछ महीनों तक उसका पालन करें।

<u>4. महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारीः</u>

पढ़ेः 1 थिस 3:12 और 1 कुर. 13:4-7
सबसे महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी यह है कि हम एक दूसरे से ऐसा प्रेम करें जैसा यीशु मसीह ने हम से किया है।

लागू करने के सम्भव तरीकेः "प्रेम करने" का अर्थ है जब कोई व्यक्ति पाप करता है तब
धीरज रखना, या जब कोई व्यक्ति कोई सामाजिक रूप से तिरस्कृत किया जाता है, जब वह असहाय होता है, या जब वह किसी शत्रु के समान व्यवहार करता है तब उसके प्रति दया दिखाना न कि कड़वाहट प्रकट करना। प्रेम करने का अर्थ है किसी व्यक्ति के प्रति जो आप से प्रेम नहीं करता है उसके लिए कुछ सकारात्मक करना है। प्रेम का अर्थ है दूसरे के लिए अपना जीवन बलिदान कर देना। दूसरे व्यक्ति से प्रेम करने का उदाहरण 1 कुर. 13:1-8 में समझाया गया है। मसीही संगति केवल एक आज्ञा ही नहीं है इसे उस पवित्र आत्मा के द्वारा जो आपके अन्दर वास करती है सम्भव किया जा सकता है। (रोमियो 5:5)

ग. मसीहीयों का एक दूसरे के प्रति व्यवहार

<u>1. रोमियो 12:10</u>

ज़िम्मेदारियाः उनकी ज़िम्मेजारी है कि एक दूसरे के प्रति भक्त के समान सच्चे भाइचारे, प्रेम और आदर के साथ एक दूसरे में बने रहें।
लागू करने के सम्भाव तरीकेः एक भाई के समान प्रेम करने का अर्थ है कि आप एक निकटतम सम्बन्ध बनाए रखें आपका प्रेम और गहरी आत्मिक एकता बनाए रखें जो केवल मसीहों के लिए है।
आदर का अर्थ है दूसरे मसीही लोगों के भले कामों और वचनों के प्रति आदरभाव दिखाना क्योंकि जो कुछ भी उन्होंने किया है उसके लिए उनके इरादे नेक थे और उन्होंने कभी भी कुछ भी बुरे इरादे से नहीं किया है। लेकिन ऐसा केवल तब तक हो सका है जब तक लगातार बुरे इरादे प्रकट न हों। आदर करने का अर्थ है दूसरों के लिए अच्छा बोलना न कि बुरा।

2. रोमियो 13:8-10

ज़िम्मेदारियाः एक दूसरे को चोट न पहुँचाएँ।
लागू करने के सम्भाव तरीकेः किसी अन्य स्त्री को उसके साथ व्याभिचार करके नुकसान न पहुँचाएँ। इसके स्थान पर पवित्रता को बनाए रखें। शादी की पवित्रता को बनाए रखें। हत्या न करें वरन अपने पड़ोसी को जीवित और स्वस्थ रखने में सहायता करें। चोरी न करें वरन पड़ोसी की चीज़ों की रक्षा करें। दूसरों की चीज़ पर कबज़ा न करें वरन खुश हों कि आपके पड़ोसी के पास उसकी इच्छा की वस्तुएँ हैं।

3. इफिसियों 4:32

ज़िम्मेदारियाःएक दूसरे के प्रति दया भाव रखें। एक दूसरे के प्रति करुणामय स्वभाव रखें। और एक दूसरे को क्षमा करने की भावना को रखें।
लागू करने के सम्भव तरीकेः दयालु बने रहने का अर्थ है कि हम नम्र और मैत्रीपूर्ण स्वभाव बनाए रखें बजाए इसके कि आलोचक या घृणित स्वभाव का प्रदर्शन करें। इसका अर्थ यह भी है कि हम उन मार्गों की खोज करे और दूसरों की ज़रूरत को पूरा कर दें। करुणामय होने का अर्थ है कि हम दिल से एक दूसरे के प्रति अच्छी भावनाएँ रखें। क्षमावान होने का अर्थ है कि आप कह रहे हैं कि जो अपराध आपने मेरे विरुद्ध किया था आप उसके विषय आप उनके विरुद्ध कोई भावनाएँ नहीं रखते हैं और आप उस पड़ोसी के लिए प्रार्थना करते हैं।

4. कुलु 3:13

ज़िम्मेदारियाः आप सभी तरह की शिकाएतों को जो आपकी किसी दूसरे के प्रति हैं उनको क्षमा कर दें।
लागू करने के सम्भाव तरीकेः आप उसी तरह से क्षमा करें जैसे परमेश्वर ने आप को किया है। सात गुणा सत्तर बार बिना रुके किया है। अपने पड़ोसी को दिल से क्षमा करें क्योंकि जो कोई ऐसा नहीं करता है उसे परमेश्वर भी क्षमा नहीं करेगा।

5. एक दूसरे की ज़िम्मेदारी के प्रति अपने व्यवहार से आदर करेः

रोमियो 15:1-7 (एक दूसरे को स्वीकार करें) रोमियो 16:16 (एक दूसरे का अभिवादन एक प्रेमी चुम्बन से करो) गलातियों 5:26 (एक दूसरे को डींगे मार के न उकसाओ और न ही एक दूसरे से ईर्ष्या करो) इफिसियो 4:2 (एक दूसरे की सह लो) इफिसियों 5:21(एक दूसरे के प्रति समर्पित हो जाओ) 1 थिसु. 5:13 (एक दूसरे के साथ शान्ति से रहो) 1 थिसु. 5:15 (सदा एक दूसरे के प्रति दयालु रहो) 1 पतरस 5:5-6 (एक दूसरे के लिए स्वयं को नम्रता से ढक लो)

घ. एक दूसरे के प्रति मसीही बातचीत

1. रोमियो 14:13

ज़िम्मेदारियाः एक दूसरे पर न्याय के वचन बोलना बन्द करें।
लागू करने के सम्भव तरीकेः कमज़ोर लोगों को सामर्थी लोगों की आलोचना करना बन्द कर देना चाहिए और सामर्थी लोगो को कमज़ोर लोगों की गलतियां निकालना बन्द करना चाहिए। मसीहों को या दूसरों को ज़बरदस्ती किसी भी अन्य मसीही को धर्म का पालन आपकी रीति से मानने के लिए नहीं कहना चाहिए। उदाहरण के लिए उन्हें भिन्न दृष्टिकोण को जिसका वे पालन करते हैं उसका आदर करना चाहिए। उदाहरण के लिए कि कौन सा खाना उनके खाने के लिए सही है या कौन से दिन विशेष होने चाहिए। इसे छोड़ कर उनको एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए कि वे प्रभावशाली रीति से मसीह के गवाह बन सकें।

2. कुलुसियों 3:9

ज़िम्मेदारिया: एक दूसरे से झूठ न बोलें।
लागू करने के सम्भव तरीके: सच इस रीति से बोलना जिससे दूसरे व्यक्ति का निर्माण हो सके और उसे आपके प्रेम का आश्वसन हो सके। किसी को भी प्रार्थना करने का आश्वासन न दें यदि आप ऐसा नहीं करने वाले हैं।

3. कुलुसियों 3:16

ज़िम्मेदारिया: एक दूसरे को सिखाएँ कि वे कैसे एक दूसरे को डाँट भी सकते हैं।
लागू करने के सम्भव तरीके: शिक्षा देने की बुलाहट और ड्यूटी केवल पास्टर या अगुवों की ही नहीं होती है। यह बुलाहट कलीसिया के हर एक सदस्य की होती है अर्थात हर मसीही की होती है कि वह एक दूसरे के साथ अपना शान्त समय बिता कर और एक साथ बाइबल अध्ययन करके एक दूसरे को सिखाएँ। गवाहियाँ देकर, शिक्षा देकर और प्रचार करके भी एक दूसरे को सिखाया जा सकता है। डाँटने का अर्थ है एक दूसरे को उनके कमज़ोर क्षेत्र के लिए या जहाँ पर वे असफल हो जाते हैं उसके लिए सलाह देना। इसका अर्थ है कि आप परमेश्वर की शिक्षाओं को और बाइबल की आज्ञाओं को उनके मन पर खोद कर लिख देना है। (वय्वस्थाविवरण 6:6-7)

4. इब्रानियों 10:24-25

ज़िम्मेदारिया: हमें एक दूसरे को प्रेरणा देनी है कि हम एक दूसरे से प्रेम करें। हमें प्रेरणा देनी है कि भले काम करें। और एक दूसरे को उत्साहित करते रहना है कि वे एक दूसरे से मिलते रहें।
लागू करने के सम्भव तरीके: प्रेरणा देने का अर्थ है कि एक दूसरे को उकसाते रहें कि वे प्रेम से भरे सम्बन्ध बनाएं और भले काम करें जिससे दूसरों का लाभ हो। उत्साहित करते रहने का अर्थ है एक दूसरे को प्रेरित करना कि वे कम से कम एक मसीही संगति में भाग अवश्य लें। जहाँ पर मसीहो को प्रेम करने और भले काम करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

5. एक दूसरे की ज़िम्मेदारियो का सम्मान करना और उनके बोलने के विषय में उनका मान रखना।

रोमियो 15:14 (एक दूसरे को सिखाएँ) 1 कुर. 1:10 (एक मन से मिल कर बातचीत करना) इफिसियों 5:19 (गीतों में एक दूसरे से बातचीत करना) याकूब 4:11(एक दूसरे की निन्दा न करना) याकूब 5:9 (एक दूसरे प्रति बुड़बुड़ाना नहीं) याकूब 5:16 (एक दूसरे के सामने अपने पापों को मान लेना)

ङ. एक दूसरे के प्रति मसीही व्यवहार

1. 1 कुर. 12:25

ज़िम्मेदारिया: एक दूसरे के प्रति समान रूप से चिन्ता करना ।
लागू करने के सम्भव तरीके: परमेश्वर द्वारा दी गई अपनी योग्यताओं और अवसरों के द्वारा दूसरे मसीहों की सेवा करें।एक ओर हम कमज़ोरों कि सहायता करें और दूसरी ओर शक्तिशाली लोगों को प्रशिक्षण दें। विशेष दल के लोगों के लिए पक्षपात न दिखाएँ।

2. गलातियों 6:2 और 5

ज़िम्मेदारिया: एक दूसरे का बोझ उठा के चलो लेकिन अन्य लोगों के बोझ को उठा कर न चले।
लागू करने के सम्भव तरीके: यह मसीहों की ज़िम्मेदारी है कि जितना हो सके वे अन्य मसीही का बोझ उठा कर चलें। जो कि उदाहरण के लिए उनकी विपत्तियाँ, उनके संकट, और उनके नुकसान हैं। पर वे उनका सारा बोझ उठाने के

ज़िम्मेदार नहीं हैं क्योंकि वे तो उनके विचारों, व्यवहार, विश्वास, ज़रूरतों, चुनावों, मूल्याँकन और जो वे अपने समय के साथ अपने कौशल के साथ, अपनी चीज़ों के साथ अपने शरीर के साथ व्यवहार करते हैं।

3. 1 पतरस 4:9

ज़िम्मेदारिया: हमें बिना कुड़कुड़ाए एक दूसरे का आदर-सत्कार करना है।
लागू करने के सम्भव तरीके: अन्यस्थान से आए मसीही भाई-बहनों को अपने क्षेत्र में रहने का स्थान और भोजन देना।

4. एक दूसरे की ज़िम्मेदारियो का सम्मान करना और उनके कार्यों का मान रखना।

युहन्ना 13:14 (एक दूसरे के पाँव धोना) युहन्ना 15:12 (एक दूसरे से प्रेम करें) गलातियो 5:13 (एक दूसरो की प्रेम के साथ सेवा करना) 1 पतरस 4:10-11 (जो भी वरदान आपको मिला है उससे एक दूसरों की सेवा करें। युहन्ना 1:7 (एक दूसरे के साथ संगति करें)

संक्षेप में - मसीही संगति में शामिल है एक दूसरे के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करना, जिस में व्यवहार, दिल और जो भी आप मुख से बोलते हैं या करते हैं भी शामिल है।

च. व्यवहारिक अभ्यास

1.लक्ष्य निर्धारित करें

एक मसीही होने के नाते या एक कलीसिया होने के नाते हमें एक ज़िम्मेदारी को चुन लेना है और उसे एक दल में कार्यरत करना है। व्यक्तिगत रूप से उसे कुछ महीनों तक करना है।

2. नाटक में पात्र को निभाएँ।

अपने दल को 3 या चार लोगों के दल में बाँट लें और एक छोटी सी एक - दो मिनट की नाटिका तैयार करें। और उसे पूरे दल के सदस्यों के सामने एक नाटक के रूप में प्रस्तुत करें।

5.	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***प्रतिक्रियाएँ*** **परमेश्वर के वचन के प्रति उत्तर में प्रार्थना**

बारी से: दल में बारी-बारी से एक छोटी प्रार्थना करें। उसके लिए जो कुछ भी आज आपने सीखा है।
या फिर पूरे दल को 2 या 3 के छोटे दलों में बाँट कर जो भी सीखा है उसके प्रतिउत्तर में प्रार्थना करें।

6.	**तैयारी** (2 मिनट)	***निर्धारित कार्य*** **अगले पाठ के लिए**

दल के अगुवे: दल के सदस्यों को घर के लिए लिखित में काम दे और सभी सदस्य उसे अपनी कापी में उतार लें।
1.समर्पण: समर्पण करें कि आप उन ज़िम्मेदारियों का अभ्यास करेंगे जो हमें एक दूसरे के प्रति निभानी हैं।
2.परमेश्वर के साथ निजि समय: युहन्ना 11:38 - 14:31 अध्यायों में से हर दिन आधे अध्याय का अध्ययन करें। और इसका अध्ययन करने के लिए अपना मनपसन्द सत्य का तरीका इस्तेमाल करें। निजि नोट्स तैयार करें।
3.बाइबल अध्ययन: अगले बाइबल अध्ययन की घर पर ही तैयारी करें।याकूब 15:1-17 इसका विषय है, “मैं कैसे

फलवन्त बनूँ?"

4. प्रार्थनाः किसी विशेष व्यक्ति या विशेष चीज़ की ज़रूरत के लिए प्रार्थना करें। (भजन 5:3)

5. अपनी सप्ताह के नोट्स की कापी को पूरा करेः आपने कितने चेले बनाए हैं, आपके आराधना समय के नोट्स, आपके परमेश्वर के साथ निजि समय के नोट्स, शिक्षा के नोट्स और तैयारी के काम के नोट्स लिक कर पूरे करें।

अध्याय - 12

1.	प्रार्थना

दल के अगुवेः प्रार्थना करें और अपने दल और इस पाठ्यक्रम को परमेश्वर को समर्पित करें कि वे प्रभु के लिए अनेक चेले बना सकें।

2.	गवाही बाँटना (20 मिनट) *[शान्त समय]* यहुन्ना 11:38 - 14: 31

बारी-बारी पढ़े और वचन बाँटे, (या अपने नोट्स में से पढ़ें) संक्षेप में वही बोले जो आपने परमेश्वर के साथ जो वचन आपको दिया गया था (युहन्ना 11: - 14:31) तक) उससे अपने निजि समय में जो भी आपने सीखा है, उसे सब के साथ बाँटें।
जो भी गवाही बाँट रहा है उसे गम्भीरता से सुनें और ग्रहण करें। जो वह बाँट रहा है उस पर बहस न करें।

3.	याद करना (20 मिनट) *निश्चितता* मसीही निश्चय के पदों का पुनरावलोकन

क. याद किए पदों का पुनरावलोकन.

पिछले याद किए बाइबल पदो का पुनरावलोकन करें जिन में निम्न भाग हैं।

1. पुनरावलोकनः

पुनरावलोगन का अर्थ है दिन में एक बार दुबारा से पिछले 5 पदों को देखना। बार-बार बाइबल के पदों को पढ़ना सबसे अच्छा तरीका है उन्हें याद करने का। और फिर दोबारा से उनको सही से बोलना। इसलिए पिछले 5 पदों को को आपने सीखे हैं उनको 5 दिन तक दिन में 1 बार ज़रूर दोहराएँ। इस तरह से आप हर पद को 35 बार दोहरा लेते हैं इससे पहले कि आप उसे पिछले पुनरावलोकन के स्थान पर छोड़ देते हैं।

2. पिछला पुनरावलोकनः

इसका अर्थ है उन वचनों को हर तीन हफ्ते बाद देखना जो आपने अतीत में बाइबल में से याद किए थे। यह सर्वोत्त्म तरीका है पुराने पदों याद रखने का। इसलिए पिछले 100 दिनो में जो पद आपने याद किए हैं उन में से 5 पदों का हर दिन पुनरावलोकन करें। इस रीति से आप इन सारे पदों को जो आपने याद किए हैं उनको हर तीन हफ्ते बाद फिर से देख लेते हैं कि वे आपको याद हैं या नहीं।

3. साथ ले कर चलनाः

अपनी याद करने की पुस्तिका या कार्ड सदा साथ लेकर चलें। जब आप काम पर जाने की यात्रा कर रहे हैं तो दिन के उस समय को उन वचनों का पुनरावलोकन करने के लिए का उपयोग करें। और उस समय पर पिछली अन्य पदों पर भी नज़र डाले कि वे पद आपको याद हैं या नहीं। उस समय में आप 3 पदों में क्या लिखा है उन पर मनन करके प्रार्थना भी कर सकते हैं।

2. जाँच लेः

एक दूसरे की जाँच कर के देखें कि आप को अभी भी बाइबल के पहले याद किए वचन याद हैं। हर बार दल की सभा में दल को दो-दो लोगों के दल में बाँट कर जाँच करें कि सब को बाइबल के वचन याद हैं। और फिर कभी कभी बाइबल के पिछले 5 पदों की भी इसी तरह से जाँच करें। एक दूसरे की जाँच करें कि जान लें कि आप को सभी पद याद हैं। इसकी भी जाँच कर लें कि क्या आपको वचन के साथ-साथ उस वचन का विषय और उससे जुड़ा सन्दर्भ वचन भी याद हैं या नहीं। साथ ही यह कि आपको बाइबल का पूरा पद बिना कोई भूल किए याद है या नहीं। जाँचने के लिए कभी-कभी एक संकेत देकर जैसे कोई विषय देकर, या बाइबल का संदर्भ वचन देकर या फिर कभी-कभी पद के पहले कुछ शब्द देकर देखें कि सब को पद याद हैं या नहीं।

ख. दो-दो कर के मसीही निश्चय के पदो का पुनरावलोकन करें

1. उद्धार निश्चित है - युहन्ना 10:28 2. प्रार्थना के उत्तर निश्चय - युहन्ना 16:24 6. विजय निश्चित है - 1 कुर. 10:13	4. क्षमा निश्चित है - 1 युहन्ना 1:9 5. मार्गदर्शन निश्चित है - नीतिवचन 3:5-6

4.	**बाइबल अध्ययन** (70 मिनट)	***जीवन के विषय में प्रश्न*** **मैं कैसे फलवन्त बनूँ? युहन्ना 15:1-17**

बाइबल अध्ययन के पाँच कदम का तरीका इस्तेमाल करके युहन्ना 15:1-17 का अध्ययन करें।

पहला तरीका - पढ़े **परमेश्वर का वचन**

पढ़ेः युहन्ना 15:1-17 एक साथ पढ़ें।

आईए हम मिल कर बारी बारी से एक वचन पढ़ें जब तक पूरा लेखाँश समाप्त न हो जाए।

दूसरा तरीका - खोजें **अवलोकन करें**

ध्यान देः यहाँ पर कौन सा लेखाँश आप के लिए महत्त्वपूर्ण है?

या ऐसा कौन सा सच है इस लेखाँश में जिस ने आपके दिल को छू लिया है?

लिख लेः लेखाँश में से एक या दो सत्यों को खोज निकालें। उनके विषय में सोचें और अपने विचार अपनी कापी में लिख दें।

गवाही बाँटेः (जब सभी दल के सदस्य 2 मिनट तक विचार कर चुकें और कापी में अपने विचार लिख चुके हों तब बारी-बारी सब अपने विचारों को दूसरों के साथ बाँटें।

(नीचे कुछ लोगों के उदाहरण दिए गए हैं जिन्होंने अपने विचार बाँटे थे कि उन्होंने क्या पाया था। पर याद रहे हर छोटे दल में लोग अलग-अलग बातें बाँटते हैं। पर यह ज़रूरी नही है कि सब के विचार एक समान हो।)

15:5
<u>खोज 1. मसीह में बने रहने का महत्त्व</u>

"यदि कोई व्यक्ति मुझ में बना रहता है और मैं उस में तो वह बहुतायत से फल लाएगा। परन्तु मुझ से दूर होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते हो।"मैं ऐसा व्यक्ति बनना चाहता हूँ जो परमेश्वर के लिए बहुत सा फल ला सके। यह पद मुझे बताता है कि यह तभी हो सकता है जब मैं यीशु में बना रहूँ और यीशु मसीह मुझ मे बने रहें। कटु सत्य तो यही है कि यीशु मसीह के बिना मैं कुछ भी नहीं कर सकता हूँ जो सदा के लिए महत्त्वपूर्ण हो। कई बार यह सत्य मुझे डरा देता है क्योंकि मैं एक मसीही हूँ जो कि बहुत ही चुस्त और क्रियाशील है। अब मैं स्वयं से प्रश्न करता हूँ कि क्या जो कुछ भी मैं करता हूँ क्या वह परमेश्वर के लिए ऐसा फल लाएगा जो सदा के लिए महत्त्वपूर्ण होगा? मैं तो केवल लगातार यह विश्वास कर सकता हूँ कि जब तक मैं यीशु मसीह में बना रहूँगा और यीशु मसीह मुझ में बना रहेगा, जो कुछ भी मैं करूँगा वह परमेश्वर के लिए अनन्तकाल के लिए फलवन्त होगा। मैं ऐसे किसी दिन की खोज नहीं करना चाहूँगा जब मैं यीशु मसीह के साथ कार्यशील रहा हूँ पर फलवन्त नहीं हुआ हूँ।

15:8
<u>खोज 2. परमेश्वर की महिमा करने का महत्त्वः</u>

"यह तो मेरे पिता की महिमा के लिए है कि तुम फलवन्त हो, यह दिखाता है कि तुम मेरे चेले हो।"मैं भी अपने जीवन के द्वारा परमेश्वर की महिमा करना चाहता हूँ। और परमेश्वर की महिमा करने के लिए ज़रूरी है कि मैं बहुत सा फल लाऊँ। और बहुत सा फल लाने के लिए मुझे यीशु में बने रहना ज़रूरी है और यह कि वह मुझ में बना रहे। यह मुझ पर स्पष्ट हो चुका है कि एक मसीही का सब से बड़ा लक्ष्य है कि वह परमेश्वर की महिमा करें। सो मसीही जीवन में दो चीज़ों का होना बहुत ज़रूरी है और वह है लगातार यीशु मसीह से और उसकी फलवन्त होने की शक्ति से सम्बन्ध बनाए रखना।

<u>तीसरा तरीकाः</u> **<u>समझाना</u>**

ध्यान देः इस लेखाँश में कौन सा ऐसा प्रश्न है जो आप इस दल से पूछना चाहेंगे?

आईए हम कोशिश करें कि युहन्ना 15:1-17 के सभीसत्यों को समझ सके और प्रश्न पूछें उस सब के विषय में जो अब तक समझ नहीं आया है।

लिख लेः अपना प्रश्न पूरी स्पष्ट रीति से पूछें और उसे अपनी कापी में लिख लें।

गवाही बाँटेः (जब सभी दल के सदस्य 2 मिनट तक विचार कर चुकें और कापी में अपने विचार लिख चुके हों तब बारी-बारी सब अपने विचारों को दूसरों के साथ बाँटें।

विचार-विमर्श करेः (फिर इन में से कुछ प्रश्न चुन कर उन के उत्तर पर दल के साथ मिल कर विचार-विमर्श करें और उनका उत्तर खोजने की कोशिश करें।)

नीचे प्रश्नों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं जो विद्यार्थी पूछ सकते हैं और साथ ही कुछ नोट्स भी हैं जिन पर विचार विमर्श किया गया था।)

15:1-17
<u>प्रश्न 1. युहन्ना 15:1-17 क्या है? क्या वह एक सीधी शिक्षा है या एक दृष्टान्त है? या फिर क्या यह केवल अर्थ का एक प्रतीक है?</u>

लिख लेः एक सीधी शिक्षा का उदाहरण युहन्ना 14:15-27 में लिखा है।

एक दृष्टान्तका उदाहरण लूका के 10:30-35 में लिखा है। दृष्टान्त तो इस पृथ्वी की एक कहानी है जिस का एक स्वर्गीय अर्थ होता है। दृष्टान्त का केवल एक मुख्य संदेश होता है। उदाहरण के लिए भले सामरी के दृष्टान्त का मुख्य संदेश है कि "आपका पड़ोसी वही है जिस पर आप दया दिखाते हैं।"

बाइबल में फल के अर्थ के प्रतीक के अनेक उद्हरण है युहन्ना 10:1-16 और युहन्ना 15:1-17 अर्थ का प्रतीक अतिरिक्त तुलना के प्रसंग पाए जाते हैं। जैसे अर्थ के प्रतीक हम दाखलता और डालियाँ है और माली परमेश्वर पिता हैं। दाखलता यीशु मसीह है और डालिया जो फलवन्त है वे सच्चे मसीहों का प्रतीक हैं। और जो डालिया फलवन्त नहीं होती है वे नाम के वास्ते मसीहों का या फिर अविश्वासी लोगों का प्रतीक हैं। क्योंकि दाखलता और डालियाँ लोगों का प्रतीक हैं तो पहले फल भी लोगों का ही प्रतीक हैं। अर्थ का प्रतीक यह नहीं कहता है कि वास्तव में यीशु मसीह दाखलता है और हम उसकी डालियाँ है और उस पर अंगूर लगे हैं। यह केवल यह बताती है कि यीशु मसीह और लोगो का रिश्ता दाखलता और और उसकी डालियों के समान है। हमें अर्थ के प्रतीक के हर चिन्ह को समझने की ज़रूरत नहीं है। (अर्थ का प्रतीक)

15:2

<u>प्रश्न 2. उस फल का चारित्रिक गुण क्या हो जो मसीहों में फलवन्त होना चाहिए?</u>

नोट्सः शब्द "फल" के बाइबल में अनेक अर्थ हैं।

1. कुलुसियों 1:6 कहता है, वे फल जो सुसमाचार के प्रचार से उत्पन्न होते हैं और वे हैं नए विश्वासी

2. युहन्ना 15:16 "अनन्त काल का फल"जो कि परिपक्व मसीही (विश्वासी) हैं। ये वे विश्वासी है जो परिपक्व हो चुके हैं और जो फिसल कर गिरने वाले नहीं हैं। वही "अनन्तकाल के फल" हैं।

3.. लूका 3:8-14 कहता है फल वह है जो भले कामों के पश्चाताप् से मिलता है। (इफिसियों 2:10)

4. गलातियों 5:22-23"आत्मा के फल"यह मसीही चरित्र का दूसरा पहलू है।

इसलिए जिस फल की मसीह को आशा है वह यह है कि मसीहों को सुसमाचार केप्रचार से पाए फल। (नए विश्वासी) उस फल को जो चेले बनाता है (अर्थात परिपक्व मसीही विश्वासी) भले कामों के फल (अर्थात मसीही कर्म) और पवित्र आत्मा के फल (अर्थात मसीह के चरित्र के लोग)

15:2

<u>प्रश्न 3. काटना-छाँटना किस बात का प्रतीक है?</u>

लिख लेः जहाँ एक ओर परमेश्वर मरे हुओं और उन्हें जो फलवन्त नहीं है उनको अन्तिम न्याय के समय काट डालेगा। अर्थात वे जो अविश्वासी हैं (मत्ती 13:41)लेकिन वह उनको जो जीवित है और जिनकी फलवन्त डालियाँ हैं उनकी काट-छाँट करेगा। यहाँ काट-छाँट का अर्थ है उनको डाँटेगा, उनको अनुशासन में रहना चाहेगा, और उनको मुशकिलों और विरोधियों से निबटना सिखाएगा। यह इस बात का प्रतीक है कि विश्वासियों को इन मुश्किलों के द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है जिससे वे बदल जाएं और तब अधिक फलदायक बन जाएँ।

15:3

<u>प्रश्न 4. वह कौन सा शब्द है जिसने चेलों को शुद्ध किया था?</u>

नोट्सः वह शब्द जिसके द्वारा चेले शुद्ध हो गए थे सुसमाचार का वह शब्द है जिसने उनकी नये जन्म के और न्याय के

लिए अगुवायी की थी। (पढ़ें याकूब 1:18; 1 पतरस 1:23) और यह मसीही शिक्षा का वचन है जो उनको उनकी शुद्धता की ओर ले जाता है। (इफिसियों 5:26)

15:4-5
प्रश्न 5. वे कौन लोग हैं जो फलवन्त होते हैं?

पद 4 में हम पढ़ते हैं, "मुझ में बने रहो और मैं तुम में बना रहूँगा। कोई डाली मेरे बिना स्वयं फलन्त नहीं हो सकती है;उसे दाखलता में बने रहने की ज़रूरत है। तुम तब भी फलवन्त नहीं हो सकते हो जब तक तुम मुझ में न बने रहो।"वे लोग जो फलवन्त होते हैं ये वे लोग हैं जो यीशु मसीह के निकट रहते हैं और उसे अपने दिल और जीवन में स्थान देते हैं और जो लगातार प्रतिदिन मसीह से सम्बन्ध बनाए रखते हैं। क्योंकि परमेश्वर उन में बसा रहता है इसलिए वे चौकस रहते हैं तथा सावधानी और परिश्रम से फलवन्त होते रहते हैं।

15:6
प्रश्न 6. वे कौन लोग हैं जो फलवन्त नहीं होते हैं?

नोट्सः इसके अर्थ का प्रतीक दाखलता के विकास का वर्णन नहीं करता कि अतीत में जिसकी एक हरी-भरी डाली थी जिस पर फल लगे थे जो बाद में मर गई और उसके फल सूख गए और तब वह एक ऐसी डाली बन गई थी जिस पर फल नहीं थे और वह काट डाली गई थी। इस प्रतीक का अर्थ है एक ऐसी दाखलता का वर्णन देता है जिसकी दो तरह की डालियाँ थीं एक जो जीवित और फलवन्त थी और दूसरी जो मरी हुई थी जिस पर कोई फल नहीं थे। और यह प्रतीक इस मरी हुई डाली के इतिहास का कोई वर्णन करती है। हम में से किसी को भी यीशु की इस तस्वीर के साथ अपने विचार या प्रश्न नहीं जोड़ने चाहिए।

वे डालियाँ जो फलवन्त हैं वे सच्चे विश्वासियों को दर्शाती हैं। लेकिन जो डालियाँ फलवन्त नहीं है वे उनको नहीं दर्शाती हैं जो पहले विश्वासी थे पर बाद में विश्वास से दूर चले गए थे। ये डालियाँ जो फलवन्त नहीं है इस बात को सिखाती हैं कि जो डालियाँ काट कर आग में झोंक दी जाती हैं वह वे विश्वासी है जो जीवित नहीं हैं। (अर्थात जो मन से यीशु मसीह से जुड़े नहीं हैं।) और जो पहले भी कभी भी फलवन्त नहीं हुए थे उस समय भी नहीं जब वे मसीह के साथ निकटतम सम्बन्ध रखे थे। हालाँकि एक समय था जब वे कलीसिया के साथ मसीह के निकट थे परन्तु मन से वे कभी भी मसीह के निकट नहीं थे। वे कभी भी सच्चे विश्वासी नहीं थे। उनका मसीह से निकट सम्बन्ध तो था परन्तु वह केवल बाहरी था। उनका सम्बन्ध कभी भी नया जन्म लेने वाले मसीही का नहीं था। (युहन्ना 3:3-8) इस प्रतीक के अर्थ का निषकर्श यह नहीं सिखाता है कि नया जन्म पाया हुआ विश्वासी अपने उद्धार को खो सकता है। इस शिक्षा को मान लेना सीधे-सीधे मसीह की शिक्षा का विरोध करता है जो उसने युहन्ना 5:24 और 10:28 पद में दी है। बाइबल कभी भी विरोधी शिक्षाएँ नहीं देती हैं।

प्रतीक के रूप में यह सिखाती है कि नाम के वास्ते मसीही सदा फल रहित रहेगा, जब कि नया जन्म पाया मसीही अनेक फल लाएगा। इस लिए जो लोग फलवन्त नहीं होते हैं वे मसीह के निकट तो आते हैं पर उसे ग्रहण नहीं करते हैं। उनका मसीह के साथ केवल एक बाहरी रिश्ता होता है। वे मसीही कलीसिया में भाग लेते होंगे और उनके कार्य में भी हिस्सा लेते होंगे। लेकिन मसीह उनके अन्दर नहीं बसता है। वे कोई भी ऐसा फल नहीं ला सकते हैं जो अनन्तकाल के लिए महत्त्वपूर्ण हो। यीशु मसीह जोर देकर हर मसीही को जो उसके निकट आता है ज़िम्मेदारी देता है पर यदि कोई उसके वचन का और उस ज्योति का जो उसने पाई है तिरस्कार करता है तो एक समय आएगा जब परमेश्वर उसके साथ कोई भी काम करना बन्द कर देगा। पवित्र आत्मा उसके लिए विनती नहीं करेगा और उसकी अन्तरआत्मा उसे सावधान नहीं करेगा और उसका दिल कठोर बन जाएगा। और अन्त में उसका ऐसे तिरस्कार होगा कि उसे नरक की आग में फैंक दिया जाएगा। (यशायाह 6:9-10; मत्ती 13:11-15;इब्रानियो 3:7-11) इस बात से प्रकट होता है कि उस

व्यक्ति ने कभी भी नया जन्म नहीं पाया था।

मसीह के दूसरे आगमन से पहले आज के युग का मसीही समाज, परमेश्वर के राज्य का एक भाग होने के नाते आप के आज के रूप में सच्चे मसीहों और सामान्य मसीहों का एक मिला-जुला समाज है। (मत्ती 13:24-30, 36-43) ये सामान्य मसीही दिखने में सच्चे और वास्तविक मसीही लोगों के समान ही दिखाई देंगे। पर अपने दिलों में वे ऐसे जीते हैं जैसे उनका नया जन्म नहीं हुआ है। उदाहरण के लिए ऐसे भी सामान्य मसीही है जो बोलेंगे और व्यवहार तो ऐसे करते हैं मानो वे सच्चे मसीही हैं (मत्ती 7:21-22) पर वे तो खत-पतवार हैं जो गेहूँ की बालों के समान दिखाई देते हैं। (मत्ती 13:24-30, 47) वे सूखी और फल के बिना डालियाँ होती हैं। मानों वे दाखलता का ही भाग हैं। (युहन्ना 15:1-6) वे तो भेड़ों के झुँड एक हिस्सा हैं जो उठता है कि सत्य को बिगाड़ सके और चेलों को अपने पीछे भटका कर दूर ले जा सके। (प्रेरितों के काम 20:29-31) वे झूठे प्रेरित हैं जो किसी अन्य यीशु का प्रचार करते हैं। उनके पास कोई दूसरी आत्मा है और वे बाइबल से अलग किसी अन्य सुसमाचार की घोषणा करते हैं। (2 कुर. 11:4, 13-15) वे झूठे भाई हैं जो घुसपैठ बन कर कलीसिया की सच्चाई को बिगाड़ना चाहते हैं। (गलातियों 1:6-9; 2:4-

ये वे लोग है जिन पर प्रकाशन हुआ है, या जिन का बपतिस्मा हुआ है, और शायद इन्होने प्रभुभोज में हिस्सा लिया हो और सुसमाचार का प्रचार किया हो और प्रभु के लिए बड़े-बड़े काम देखें हैं या संक्षेप में यह हो सकता है कि वे वह सब कर रहे हों जो पवित्र आत्मा कर रहा था। और फिर भी बाद में प्रभु से दूर जा रहे थे। वे तो हर बार यीशु को फिर से क्रूस पर चढ़ाते हैं और यीशु को लोगों के बीच में शर्मिन्दा करते हैं। और फिर जब उनके जीवन में काँटे ही निकलते हैं तब वे श्राप के खतरे से गुज़रते हैं। तब वह वही प्रकट करते हैं जो वे हैं न कि एक जीवित डाली। अन्त में वे एक सूखी डाली के समान आग में झोंक दिए जएँगे। (इब्रानियो 6:4-8) केवल ऐसे ही लोग जब सच में नया जन्म लेंगे तभी वे पूरी क्षमा पाएँगे। (इब्रानियो 8:10-12)

15:5,7

प्रश्न 7. मसीह में बने रहो, इसका क्या अर्थ है?

नोट्सः पद 7 में हम पढ़ते हैं, "मसीह में बने रहने का अर्थ है मसीह के वचनों में बने रहना।"और 9-10 पद कहते हैं, "मेरे प्रेम में बने रहो........और मेरी आज्ञाओं का पालन करो।"सो मसीह में बने रहने का अर्थ जुड़ा है मसीह की आज्ञाओं का पालन करने से। हालाँकि मसीह पहले मसीहों से बोलते हैं, और वह पहले हर मसीही पर प्रेम प्रकट करते हैं, इस लिए हर मसीही की ज़िम्मेदार है कि वह मसीह के प्रेम और आज्ञाओं का प्रतिउत्तर दे। उसे कोशिश करते रहना है कि वह मसीह से एक निजि रिश्ता बनाए रखे और निरन्तर उसकी आज्ञाओं का पालन करे। हर मसीह को पूरी कोशिश करके जो कुछ यीशु मसीह सिखाते हैं उससे प्रेम करना चाहिए। उसे कोशिश करनी चाहिए कि वह यीशु मसीह से अपने पूरे दिल, मन और शक्ति से प्रेम करे। और उसे यह भी कोशिश करनी चाहिए कि वह उस काम को करे जो यीशु मसीह करने के कहते हैं। जब भी कोई व्यक्ति सोचता है कि वह एक मसीही है लेकिन यीशु मसीह से प्रेम नहीं करता है और न ही उसक आज्ञाओं को मानता है तब वह एक सूखी डाली बनने के खतरे में है जिसका तिरस्कार किया जाएगा और उसे आग में झोंक दिया जाएगा।

15:7

प्रश्न 8. "मसीह का वचन विश्वासियों में बने रहना और विश्वासी का मसीह के वचनों में बने रहने में क्या अन्तर है।"

नोट्सः युहन्ना 8:31-32 हमें सिखाता है कि यीशु मसीह के सच्चे चेले बाइबल के साथ कुछ करते हैं। ये चेले सदा वचनों (शिक्षाओं) में बने रहते हैं। इसका अर्थ यह है कि विश्वासी वचनों को सुनने, पढ़ने, अध्ययन करने मनन करने,

याद करने और उसे लागू करने (पालन करने) के प्रति ज़िम्मेदार हैं। और वे बाईबल के वचनों को दूसरों तक पहुँचाते हैं।

युहन्ना 15:7 हमें यह सिखाता है कि बाइबल के वचन सच्चे चेलों के साथ कुछ करते हैं। मसीह के वचन सच्चे चेलों मन में बने रहते हैं। इसका अर्थ यह है कि विश्वासियों की ज़िम्मेदारी है कि वह मसीह के वचनों को उनके विचारो को प्रभावित कर के नियन्त्रण में रख कर उन्हें अपने इरादों और इच्छाओं, व्यवहार और भावनाओं के साथ उनके बोलने और व्यवहार के प्रति एक धारणा बना सके। संक्षेप में यीशु मसीह के शब्द (वचन) चोलों में परिवर्तन ला लके।

15:7
<u>प्रश्न 9. वचनों और प्रार्थना के बीच क्या सम्बन्ध है?</u>

नोट्सः पद 7 कहता है, "यदि मेरे वचन तुम में बने रहेंगे तो जो कुछ भी तुम माँगोगे वह तुम्हें दे दिया जाएगा।"जब एक विश्वासी यीशु मसीह के वचनों से स्वयं को प्रभावित होने देता है और उन्हें स्वयं के जीवन को नियन्त्रण मे रखने देता है तब उसकी प्रार्थनाएँ प्रभावशाली होंगी। क्योंकि तब वह ऐसा कुछ भी नही माँगेगा जो यीशु मसीह के वचनों के विरुद्ध होगा। और उसे अपनी प्रार्थाओं के लिए बहुत से उत्तर मिलेंगे। 1 युहन्ना 5:14) यह तो एक बड़ा वायदा है।

15:8
<u>प्रश्न 10. वचन और प्रार्थना कितनी मात्रा में परिपूर्ण होंगे?</u>

नोट्सः 5 और 8 पद के अनुसार मसीहों से आशा की जाती है कि वे फल लाएँ। इसी लिए परमेश्वर उन को काटता-छाँटता है। (युहन्ना 15:2) जब परमेश्वर किसी मसीही को काटते-छाँटते हैं तब वे उन्हें डाँटते हैं, सुधारते हैं, और कठिनाइयों के साथ उनको अनुशासन में लाते हैं। फिर 16 पद के अनुसार मसीहों से आशा की जाति है कि वे अनन्तकाल के फल लाएँ। इसी लिए परमेश्वर और अन्य विश्वासियों ने नए विश्वासियों की देख-रेख की थी, क्योंकि वे नहीं चाहते है कि वे फिर से पुराने अविश्वास के जीवन की ओर लौट जाएँ। मत्ती 13 में लिखे बीज बोने वाले(किसान) के दृष्टान्त के अनुसार कुछ मसीही 100 गुना, कुछ 60 गुना और कुछ 30 गुना फल लाते हैं। कुछ मसीही दूसरों से अधिक फल लाते हैं इसके नीचे दिए 3 कारण हैः-

1. वे परमेश्वर के वचन के प्रति परिश्रमी, वे भरोसा करने वाले, वफादार, सावधानी से लगातार कोशिशों से प्रतिउत्तर देते रहते हैं।
2. वे अपने सुसमाचार के प्रचार में अधिक फलदायक होते हैं। वे दूसरे मसीहों से अधिक चेले बना लेते हैं।
3. उनको भिन्न-भिन्न तरह के व्यक्तित्व दिए गए हैं और अलग-अलग तरह के आत्मिक वरदान भी जो जीवन की उन परिस्थितियों के लिए हैं जो परमेश्वर ने ही दी हैं। और इन सब का देने वाला केवल परमेश्वर है वो ही एकमात्र जज है।

15:9-12
<u>प्रश्न 11. मसीही लोग कैसे एक दूसरे से प्रेम कर सकते हैं?</u>

नोट्सः पद 1. से 11 कहते हैं, "मसीह और उसके प्रेम में बने रहो।"और पद 12-17 कहते हैं,
"एक दूसरे से प्रेम रखो."
इस लिए यह एक योजना है कि मसीही लोग एक दूसरे से तभी प्रेम कर सकते हैं जब वे मसीह में और उसके प्रेम में बने रहेंगे। केवल तभी जब मसीही लोग लगातार पूरी कोशिश से मसीह की शिक्षाओ का पालन करेंगे तभी यीशु मसीह उनको योग्यता देगा कि वे एक दूसरे से प्रेम कर सकें। मरकुस 12:30-31में यीशु मसीह ने यह आज्ञा दी थी कि मसीही

लोग एक दूसरे से प्रेम करें और यह भी आज्ञा दी कि वे अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखें। लेकिन रोमियो 5:5 परमेश्वर पवित्र आत्मा के द्वारा मसीहों के दिलों मे प्रेम उँडेला है। जब परमेश्वर किसी बात के लिए आज्ञा देते हैं तो वह उसे करने के लिए योग्यता भी दते हैं। परमेश्वर प्रेम करने की आज्ञा देते हैं पर वे अपना प्रेम भी प्रदान करते हैं।

15:10,14

<u>प्रश्न 12. आज्ञाकारी होने ओर प्रेम के बीच क्या सम्बन्ध है?</u>

लिख लेः व्यवहारिक रूप से मसीह में बने रहने या उसके प्रेम में बने रहने और मसीह की दोस्ती में बने रहने का अर्थ है उसकी आज्ञाओं का पालन करना। लेकिन हमारी आज्ञाकारिता पहले नहीं आई थी। सबसे पहले यीशु मसीह परमेश्वर की विश्वासियों को बचाने की योजना के प्रति आज्ञाकारी हुए थे। यीशु मसीह ने पहले हम से प्रेम किया और हमारे लिए मारे गए थे। फिर यीशु मसीह ने किसी को सुसमाचार का प्रचार करने भेजा था। जब हम ने विश्वास कर लिया तब उसने पवित्र आत्मा को और अपने प्रेम को हमारे दिलों पर उँडेला था। अब जब मसीह का प्रेम हमारे दिलों में है हम चाहते हैं कि हम मसीह की आज्ञाओं का पालन करें। और हम मसीह की आज्ञाओं का पालन कर सकते हैं और हम मसीह की आज्ञाओं का पालन ज़रूर करेंगे।

मसीह की आज्ञाओं का पालन करने के कारण यीशु मसीह हमारे दिलों में उसके प्रति और भी प्रेम उँडेल देते हैं। और इस तरह से एक बेहतर प्रेम करने का चक्र चालु हो जाता है। हमारा प्रेम आज्ञाकारिता की ओर ले जाता है। और हमारा यह प्रेम देख कर यीशु मसीह हमारे दिल में और अधिक प्रेम उत्पन्न करता है। और तब हमारा अधिकाई का प्रेम अधिक आज्ञाकारिता की ओर ले जाता है और यह सब चलता ही रहता है।

15:13

प्रश्न<u> 13. महान प्रेम का क्या अर्थ है?</u>

नोट्सः पद 12-13 में हम पढ़ते हैं, "मेरी आज्ञा यही है, एक दूसरे से वैसा ही प्रेम रखो जैसे मैं ने तुम से किया है। इससे बड़ा कोई प्रेम नहीं है कि कोई किसी मित्र के लिए अपनी जान दे दे।" सबसे महान प्रेम यही है कि कोई अपने मित्रों के लिए अपनी जान दे दे। यीश मसीह ने हम से ऐसा ही महान प्रेम किया था और उसने हमारे लिए क्रूस पर अपनी जान भी दी थी। उसका प्रेम निस्वार्थ था। वह तो निज का बलिदान देने वाला प्रेम था। यह वह प्रेम था जिसने हमें बचा लिया है। यह वह प्रेम है जो वैसा बना देता है जो हम स्वयं से नहीं बन सकते हैं और यही सर्वोत्तम प्रेम है। यही महानतम प्रेम है।

और अब यीशु मसीह आज्ञा देते हैं कि मसीही लोग एक दूसरे से ऐसा ही महानतम प्रेम रखें। मसीहों को एक दूसरे से निस्वार्थ प्रेम करना चाहिए जो निज का बलिदान करने को तैयार हो, और वे सदा ऐसे ही प्रेम के साथ दूसरों की सहायता करें कि वे परमेश्वर और लोगों के सामने आपका सर्वोत्तम प्रेम माना जाए। यह सच है हम क्रूस पर दूसरों के लिए अपना जीवन नहीं दे सकते हैं पर हम अपना जीवन एक निस्वार्थ रूप से निज का बलिदान दे कर जी सकते हैं। यही वह महानतम प्रेम है।

15:16

प्र<u>श्न 14. प्रार्थना और फलवन्त होने में क्या सम्बन्ध है?</u>

नोट्सः 16 पद में हम पढ़ सकते हैं, "मैं ने तुम को चुना है और तुम्हें नियुक्त किया है ति तुम फलवन्त हो और तब जो भी तुम मुझ से मेरे नाम से माँगो उसे पिता मेरे नाम से तुम्हें दे देगा।"एक सच्चा मसीही फल के लिए फ्रार्थना करेगा और उस प्रार्थना के उत्तर में फलवन्त हो जाएगा। जब यीशु मसीह मसीहों के भेजते हैं कि जा कर अनन्तकाल

तब हम जान लेते हैं कि हम वह केवल उसी की सामर्थ, बुद्धि-ज्ञान और प्रेम के द्वारा कर सकते हैं। इस लिये हम मसीहों को हिम्मत और आज्ञाकारिता के लिए प्रार्थना करनी चाहए जिससे हम लोगों के पास जाकर उसकी सामर्थ, ज्ञान और प्रेम से उनकी सहायता कर सकें जिससे वे अन्तकाल के फल बन जाएँ। यीशु मसीह का वायदा है कि वे प्रार्थना करें और अनन्त फल पाने के लिए कार्य करें और वह उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा।

चौथा तरीका **लागू करना**

ध्यान देनाः इस लेखाँश में कौन से ऐसे सत्य है जो मसीही लोग अपने जीवन में लागू कर सकते हैं? **विचार बाँटें और लिख ड़णः**आईए हम एक दूसरे के दिमाग में तूफान ला दें और उन सब सच्चाईयों को लिख कर रख लें जो हमें युहन्ना 15:1-17सेजीवन में लागू करनी हैं।

ध्यान देः कौन सी ऐसी बात हमें लागू करनी है जो परमेश्वर चाहते है कि हम निजि रूप से अपने जीवन में लागू करें?

लिख ले:यह निजि लागू करने का सत्य जो आप अपने जीवन मे लागू करने वाले है उसे अपनी कापी पर लिख लें। अपने इस निजि चुनाव को दूसरों के साथ बाँटें।

(याद रहे हर व्यक्ति भिन्न सत्य का चुनाव कर सकता है या किसी सत्य को अन्य रीति से अपने जीवन पर लागू कर सकता है। नीचे कुछ उदाहरणों की सूची है।

1. उदाहरणों की सूची जो युहन्ना 15:1 – 17 से कायल होने के बाद लागू किए जा सकते हैं।

15:1 यह जान लें कि यीशु मसीह के इलावा कोई और उद्धारकर्ता नहीं है। वही सच्ची दाखलता है

15:2 माली, अर्थात परमेश्वर पिता को अनुमति दें कि वह आप को निरन्तर का-छाँटता रहे जिससे आप अधिक अनन्तकाल तक रहने वाले फल उत्पन्न कर सकें।

15:3 सुसमाचार पर विश्वास रखें और विश्वास द्वारा न्याय पाएँ। मैं बाइबल के और अधिक वचनों पर विश्वास करता हूँ जिससे मेरा जीवन के और अधिक भाग धर्मी और पवित्र बन जाएँ।

15:4-5 याद रखे कि जब आप मसीह के साथ लगातार एक जीवन सम्बन्ध बनाए रखते हैं और यीशु मसीह आप में बसे रहते हैं तभी आप अनन्त काल के फल उत्पन्न कर सकते हैं।

15:6 उन लोगों की सहायता करें जो कलीसिया में नए आए हैं कि वे यीशु मसीह को अपने दिल और जीवन में कबूल करें (2 कुर. 13:5)

15:7 बाइबल के वचनों को अपने जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित करने दें कि वे मुझे बदल डाले और मुझ पर नियन्त्रण रखे।

15:7 इस बात को जान लें कि परमेश्वर के लिए दो महत्त्वपूर्ण परिस्थितियाँ हैं जब वह प्रार्थनाओं के उत्तर देता है पहला कि हमारा यीशु मसीह के साथ एक जीवित सम्बन्ध हो और दूसरा कि हम बाइबल के वचनो को हमारे जीवन पर नियन्त्रण करने दें।

15:8 जान लें कि एक चेले का यही गुण है कि वह फलवन्त होगा। और वह सदा इस बात के लिए समर्पित रहेगा कि वह मसीह के लिए फलदायक हो।

15:9-10 लगातार उसके वचनों का पालन करके यीशु मसीह के साथ प्रेम के सम्बन्ध में बने रहें। (युहन्ना 14:21,23)

15:11 इस संसार में मसीही आनन्द विजय और खुशी का नतीजा नहीं होता है वरन उस आनन्द का कारण तो यीशु मसीह के साथ सम्बन्ध और बाइबल वचनो का पालन करने, और प्रार्थनाओं का उत्तर पाने से होता है।

15:13 अधिक प्रेम दिखाएँ कि आप अपने जीवन को अपने मित्र के लिए बलिदान कर दें।

15:14 यीशु मसीह की आज्ञाओं को मान कर उसका का मित्र बन जाएँ। (याकूब 4:4)

15:15 उन बातों को जो हम ने यीशु मसीह से सीखी हैं अपने मित्रों के साथ बाँट लों।

15:16 इसका बीड़ा उठाएँ कि दूसरे लोगों तक और दूसरे राष्ट्रों तक जाएँ और यीशु मसीह के चेले बनाएँ। (मत्ती 28:18-20)

15:16 विश्वास करें कि जब मैं एक महान मिशन को पूरा करने में लगा हूँ (मत्ती 28:18-20) तो मसीह मेरी अनेक प्रार्थनाओं के उत्तर देगा।

2. निजि रूप से युहन्ना 15:1 – 17 की सही धारणा को लागू किया जाना।

मैं परमेश्वर से उसका अनुग्रह माँग रहा हूँ कि मैं उसके साथ एक निजि सम्बन्ध स्थापित कर सकूँ और उसे और अधिक बढ़ा सकूँ। मैं चाहता हूँ कि उसके साथ हर दिन और अधिक समय बिता सकूँ। जिससे उसके वचन को पढ़ कर उस पर मनन कर सकूँ कि कैसे उनका पालन कर सकता हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि मसीह के वचनों का पालन करने से मैं मसीह के लिए और अधिक प्रेम और भरपूरी की ओर बढ़ चलूँगा।

मैं परमेश्वर से उसका अनुग्रह माँग रहा हूँ जिससे मैं और अधिक फलवन्त हो सकूँ और ऐसे फल ला सकूं जो अनन्तकाल तक बने रहें। मसीह ने मुझे बचाया है और मुझ को एक हरी और दाखलता की एक जीवित डाली बनाया है। उसका ही जीवन पवित्र आतमा बन कर मुझ में बहता है और यह ही मेरे जीवन को फलवन्त बनाएगा। मेरी इच्छा है कि मैं बहुत सा फल लाऊँ। मैं ऐसा फल चाहता हूँ जो लम्बे समय तक बना रहें। इसलिए मैं लगातार यीशु मसीह की आज्ञाओं का पालन करने, प्रार्थना और उसके अन्य बच्चों से प्रेम करने के दवारा उससे अपना निजि सम्बन्ध विकसित करता रहूँगा।

<u>पाँचवाँ तरीका प्रार्थना करो</u> **प्रतिक्रिया**

आईए हम एक सत्य के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें युहन्ना 15:1-17में हमें सिखाया है। (अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें कि बाइबल अध्ययन के दौरान आपने क्या सीखा है? और केवल एक या दो वाक्यों में ही प्रार्थना करें। और याद रखे कि दल के अन्यलोग भिन्न विषयों में बात करेंगे।)

5.	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***मध्यस्थता*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

निरन्तर 2 या 3 लोगों के दल बना कर एक दूसरे के लिए और संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करे

6.	**तैयारी** (2 मिनट)	***निर्धारित कार्य*** **अगले पाठ के लिए**

दल के अगुवेः दल के सदस्यों को घर पर तैयारी का काम करने के लिखित रूप से दे दें।

<u>1.समर्पणः</u> किसी एक सत्य के प्रति जो आपके लिए सम्भव है स्वयं को समर्पित कर दे।

<u>2.परमेश्वर के साथ निजि समयः</u> युहन्ना **15:1 – 18:27** अध्यायों में से हर दिन आधे अध्याय का अध्ययन करें। और इसका अध्ययन करने के लिए अपने मनपसन्द सत्य का तरीका इस्तेमाल करें।

<u>3.मुँह ज़ुबानी याद करना</u> अपनी यह आदत बना लें कि हर दिन बाइबल के 5 वचनो जो आपने पिछे दिनों में याद किए थे उनकी जाँच करें कि वे याद हैं या नहीं।

4. प्रार्थनाः इस सप्ताह किसी विशेष विषय पर प्रार्थना करें और देखें परमेश्वर इस सप्ताह आपके लिए क्या कर रहे हैं। (भजन 5:3)

5. अपनी सपताह के नोट्स की कापी को पूरा करें। आपने कितने नए चेले बनाए हैं उनकी सूची पूरी करें। अपने नोट्स में परमेश्वर के साथ अपने निजि समय में आपने क्या सीखा है उसे भी जोड़ लें। जो वचन आपने याद किए हैं उनको भी लिख लें। साथ ही आपके बाइबल अध्ययन के नोट्स भी जोड़ लें। यही आपकी तैयारी गिनी जाएगी।

अतिरिक्त लेख - 1	*शान्त समय* तरीकाः चुनिन्दा पद या मनपसन्द सत्य का तरीका

क. परमेश्वर के साथ संगति करने का निजि समय (शान्त समय)

1. परमेश्वर के साथ संगति करने का निजि समय।

परमेश्वर के साथ निजि समय बितानें का अर्थ है कि आप सुनें और कहें। यह परमेश्वर की आवाज़ को सुनना है वह जो बाइबल केवचनों के द्वारा हम से कह रहा है उस समय जब उसकी आत्मा आपके दिल में है। और यह आपका उससे प्रार्थना में बातें करना भी है।

2. हर दिन एक विशेष समय निर्धारित करें।

परमेश्वर के साथ संगति करने के लिए एक विशेष समय नियुक्त करें। हर दिन बाइबल का एक अध्याय या अगर अध्याय बहुत बड़ा है तो उस का लेखाँश पढ़ें। इसके लिए देखें "दैनिकबाइबल पढ़ने की सारिणी"जो नियम पुस्तिका 1 के अतिरिक्त लेख में दी गई है। यह प्रशिक्षण पाठ्यक्रम निर्धारित करता है कि सप्ताह के सातों (7) दिन के लिए एक लेखाँश दिया गया है। जो अगले अध्याय से पहले हैं। इससे दल के लिए आसान हो जाता है कि वह बाइबल में लिखे हर लेखाँश को पहचान सके और गवाही के समय मं एक दूसरे के दृष्टिकोण से सीख सकें।

3. अपने सारे नोट्स को एक कापी में लिख लें।

सब कुछ आपने सीखा है उसे अपनी कॉपी में लिख लें। और हर संगति के समय के विचार भी लिख ले।

ख. मनपसंद सत्य का तरीका (या चुने पद के अनुसार)

परमेश्वर के साथ संगति के अनेक अच्छे तरीके हैं। "मनपसंद सत्य का तरीका"के पाँच कदम हैं। इस अन्तर को नोट कर लें जो मनपसन्द तरीके और चुने पद के अनुसार बाइबल का अध्ययन करना।

पहला तरीका - प्रार्थना .

परमेश्वर के साथ अपने निजि समय की शुरुआत प्रार्थना से करें जिसके द्वारा आप परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करते हैं। परमेश्वर से माँगे कि वह आपसे निजि रूप से बाइबल के वचनों और पवित्र आत्मा के द्वारा बात करें। आप उससे माँग ले कि वह आपके जीवन को बाइबल के वचनों के द्वारा आपकेक जीवन में एक नई सामर्थ से भर दे। उदाहरण के लिए यह प्रार्थना करें, "हे प्रभु, मेरी आँखें खोल दें जिससे मैं आप के वचनों में अदभुत चीज़ों को देख सकूँ।"(भजन 119:18)

2. पढ़ेः

हर दिन बाइबल से निर्धारित 7 लेखाँशों में से एक पढ़ें।

3. अपना मनपसंद सत्य चुनें।

आपका मनपसंद सत्य एक पद हो सकता है, कुछ पद हो सकते हैं, या फिर बाइबल का लेखाँश हो जो आपने पढ़ा है उसमें लिखा एक सत्य हो सकता है। यह वह विचार है जिसके विषय में परमेश्वर आप से बात कर रहा है और उस विचार से आपके सोच को उत्तेजित किया है या आपके दिल को छू लिया है।

4. अपने मनपसंद सत्य पर मनन करें।

आप परमेश्वर के वचन पर मनन करते हैं क्योंकि आप उस सत्य का अर्थ समझना चाहते हैं। आप उसके द्वारा नया बन कर एक नई सामर्थ चाहते हैं। और उसे अपने जीवन में लागू करना चाहते हैं। मसीही मनन करने के 4 हिस्से हैं।

1. विचार करें - अपने मनपसंद वचनों के भिन्न शब्दों पर विचार करें।
और स्वयं से प्रश्न पूछें जैसे कि कौन? क्या? कहाँ? कब? और कैसे?

2. प्रार्थना करें - जब आप विचार कर रहे हैं तब परमेश्वर से प्रार्थना करें और परमेश्वर से कहें कि वह आप के दिल और मन से बातचीत करे और शब्दों के अर्थ आपको समझाए या आप पर प्रकट करे कि वह आप को क्या समझाना चाह रहा है, आपको किस बात पर विश्वास करने को कह रहा है, क्या बनने और करने को कह रहा है। और तब जो परमेश्वर कह रहा है उसके अनुसार कार्य करें।

3. सम्बद्ध रहें - अपने मनपसंद सत्य का सम्बन्ध अपने जीवन और इस संसार से बनाए रखें। अपने से ये प्रश्न करें, "सच्चाई की रौशनी में मेरी ज़रूरत क्या है? या यह सत्य मुझे नया कैसे बनासकता है और यह कैसे मुझे सामर्थ देगा? परमेश्वर मुझ से क्या चाहते हैं कि मैं क्या जान लूँ, या किस बात पर विश्वास करूँ या फिर क्या बन जाऊँ?"

4. लिख लें - परमेश्वर के साथ बिताए समय में अपने मन में उठने वाले विशेष विचारों को जिन पर आप मनन कर रहे थे उन्हें लिख कर रख लें।

तरीका 5 . अपने मनपसन्द सत्य के लिए प्रार्थना करें।

उस मनपसन्द सत्य के लिए जिस पर आप विचार और मनन कर रहे थे उसे फिर से परमेश्वर के सामने रख कर उसके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

1, अपने लिए और अपने मनपसंद सत्य के लिए प्रार्थना करें।
2. अपने मनपसंद सत्य के विषय के अनुसार अपने परिवार के लोगों के लिए प्रार्थना करें।
3. अपने मनपसंद सत्य के अनुसार किसी पड़ोसी के लिए प्रार्थना करे। जैसे किसी पड़ोसी के लिए, कलीसिया के लिए या उसके लिए जो आपके कार्य क्षेत्र में काम करता है।
4. अपने मनपसंद सत्य के अनुसार किसी दूर रहने वाले व्यक्ति के लिए प्रार्थना करें जैसे किसी अन्य शहर में रहने वाले व्यक्ति के लिए या किस अन्य देश में रहने वाले के लिए प्रार्थना कर सकते हैं।

ग. अपने शान्त समय की गवाही दें

1. गवाही बाँटने का समय -

हर अध्याय के बाद एक गवाही बाँटने का समय होता है। दल के हर सदस्य को अवसर मिलता है कि वह 7 दिन के बाइबल के लेखाँशों में से किसी भी सत्य पर जिस पर उसने अपन परमेश्वर के साथ शान्त समय में मनन किय था उसकी गवाही बाँटे कि उसने क्या सीखा था। हर सदस्य की गवाही दो मिनट से अधिक की नहीं होनी चाहिए।

2. किसी एक व्यक्ति से गवाही बाँटना -

अनेक बार दो व्यक्ति नियमित रूप से मिलते रहते हैं कि एक दूसरे को उत्साहित कर सकें। उनके पास भी गवाही बाँटने का समय होता है। वह जो आपने अपने बाइबल पठन या अध्ययन से या परमेश्वर के साथ निजि समय बिताते समय सीखा है। (शान्त समय)

3. प्रश्नों के उत्तर देना -

हर अध्याय के अध्ययन के समय दल अगुवा पसन्द करता है कि वह दल के हर सदस्य के उन कठिन प्रश्नो का उत्तर दे जो पठन या अध्ययन के समय अनुभव किए गए थे।

अतिरिक्त लेख - 2

बाइबल
बाइबल पढ़ने के नियोजित कार्यक्रम की सारिणी

समपूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है, और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।

बाइबल पढ़ने के नियोजित कार्यक्रम की सारिणी जिसे 1 से 3, साल में पढ़ा जा सकता है

क्रम से अपनी बाइबल को पढ़े। एक नियोजित कार्यक्रम सारिणी का प्रयोग करें। नीचे दी गई कार्यक्रम सारिणी आपको अपनी बाइबल को 1 साल, 2 साल या फिर 3 साल में पूरा पढ़ने में सहायता करेगी।

- एक साल में समाप्त करने के लिए हर दिन तीनों विभाजित भागों को पढ़े।
- दो साल में समाप्त करने के लिए हर दिन पहले साल में नए नियम के भाग के साथ बाएँ हाथ में लिखे पुराने नियम के भाग को पढ़े और दूसरे साल में नए नियम के भाग के साथ दाएँ हाथ के पुराने नियम के भाग को पढ़े।
- यदि आप तीन साल में समापत् करना चाहते हैं तो हर दिन केवल एक ही भाग को पढ़े।

बाइबल की नियोजित सारिणी को कैसे प्रयोग करें।

जो भाग अपने पढ़ लिए हैं उन पर निशान लगा दें। आप बाइबल को उस समय पढ़ सकते हैं जब आप शान्त समय में परमेश्वर के साथ संगति करते हैं, या जब आप परिवार के साथ आराधना करते हैं या केवल रात को सोने से पहले पढ़ सकते हैं। आप अपनी बाइबल को कलीसिया की सभा में भी पढ़ सकते हैं। जो पढ़ नहीं सकते हैं, या जिन्होंने कभी बाइबल के वचनों को पहले नहीं सुना है, उनके लिए ऊँचे स्वर में बाइबल पढ़ कर सुनाएँ।

अपनी बाइबल को कैसे पढ़े

जब आप हर दिन बाइबल पढ़ते हैं तो निम्न बातों का प्रयोग करें।

- **प्रार्थना करें -** परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह जो भी आप पढ़ते हैं उसे समझने पाएँ।
- **पढ़े -** हर लेखाँश को ध्यान से पढ़े।
- **निशान लगाएँ -** जिन वचनो ने आपको प्रेरित किया है उन पर निशान लगाएँ। इसके अतिरिक्त लेख 3 के सुझावों का प्रयोग करें।
- **प्रतिक्रया -** परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको उत्साह बढ़ाने वाले वचन दे जिन के द्वारा आप वह कर सके जो परमेश्वर चाहते हैं।
- **मनन करें -** जो भी आपने पढ़ा है उस में से एक विचार जो आपने सीखा है उसपर पूरा दिन मनन करें।
- **उसे दूसरों में बाँट दें -** जो भी आप ने सीखा है उसे दूसरों को बता दें।
- **लागू करें -** उस सत्य को आज ही अपने जीवन में लागू करें।

©2009DOTA

तिथि	पुराना नियम	नया नियम	पुराना नियम
जनवरी			
1	**उत्पत्ति 1**	**मत्ती 1**	**एज़्रा 1**
2	2	2	2:1-35
3	3	3	2:36-70
4	4.5	4	3
5	6	5:1-26	4
6	7	5:27-48	5
7	8	6:1-18	6
8	9	6:19-34	7
9	10,11	7	8
10	12	8:1-17	9
11	13,14	8:18-34	10
12	15,16	9:1-17	**न्हेमियाह1, 2**
13	17	9:18-38	3
14	18	10:1-25	4
15	19	10:26-42	5, 6
16	20	11	7:1-38
17	21	12:1-21	7:39-73
18	22,23	12:22-50	8
19	24:1-33	12:1-30	9:1-15
20	24:34-67	13:31-58	9:16-31
21	25	14	9:32-10:27
22	26	15:1-20	10:28-39
23	27	15:21-39	11
24	28	16	12:1-26
25	29	17	12-27-47
26	30	18:1-14	13
27	31	18:15-35	**एस्तर** 1
28	32	19	2
29	33	20	3
30	34	21:1-22	4,5
31	35	21:23-46	6,7

फरवरी	उत्पत्ति	मत्ती	एस्तर 1
1	36	22:1-22	8
2	37	22:23-46	9:10
3	38	23	**अय्यूब** 1
4	39	24:1-31	2
5	40	24:32-51	3
6	41	25:1-30	4,5
7	42	25:31-46	6,7
8	43	26:1-13	8
9	44	26:14-35	9
10	45	26:36-56	10
11	46	26:57-75	11
12	47	27:1-10	12
13	48	27:11-26	13
14	49	27:27-44	14
15	50	27:45-66	15
16	**निर्गमन 1**	28:1-20	16
17	2	**प्रे.के काम1:1-26**	17
18	3	2:1-21	18
19	4	2:22-47	19
20	5	3	20
21	6	4:1-22	21
22	7	4:23-37	22
23	8	5:1-16	23
24	9	5:17-42	24
25	10,11	6	25,26
26	12	7:1-22	27

तिथि	पुराना नियम	नया नियम	पुराना नियम
फरवरी	**निर्गमन 1**	मत्ती	एस्तर 1
27	13	7:23-60	28
28	14	8:1-25	29

मार्च	निर्गमन	प्रे.के काम	अय्यूब
1	15	8:26-40	30
2	16	9:1-19	31
3	17	9:20-43	32
4	18	10:1-23	33
5	19	10:24-48	34
6	20	11	35
7	21	12	36
8	22	13:1-12	37
9	23	13:13-25	38
10	24	13:26-52	39
11	25	14	40
12	26	15:1-21	41
13	27	15:22-41	42
14	28	16:1-10	**भजनसंहिता1-3**
15	29	16:11-24	4-6
16	30	16:25-40	7-9
17	31	17:1-15	10,11
18	32	17:16-34	12-15
19	33	18	16,17
20	34	19:1-20	18
21	35	19:21-41	19-21
22	36	20:1-16	22,23
23	37	20:17-38	24,25
24	38	21:1-16	26,27
25	39	21:17-40	28-30
26	40	22	31,32
27	**लैव्यवस्था 1, 2**	23	33,34
28	3	24	35,36
29	4	25	37
30	5	26	38
31	6	27:1-26	39,40

अप्रैल			
1	7	27:27-44	41-43
2	8	28	44
3	9	**मरकुस** 1:1-28	45
4	10	1:29-45	46,47
5	11,12	2	48,49
6	13	3	50,51
7	14	4:1-20	52-55
8	15	4:21-41	56,57
9	16	5:1-20	58,59
10	17,18	5:21-43	60-62
11	19	6:1-29	63-65
12	20	6:30-56	66,67
13	21	7	68
14	22	8	69
15	23	9:1-29	70,71
16	24	9:30-50	72
17	25:1-22	10:1-31	73
18	25:23-55	10:32-52	74,75
19	26	11	76,77
20	27	12:1-17	78:1-31
21	**गिनती1**	12:18-44	78:32-72
22	2	13:1-13	79,80

तिथि	पुराना नियम	नया नियम	पुराना नियम
अप्रैल			
23	3	13:14-37	81-83
24	4	14:1-26	84,85
25	5,6	14:27-52	86-88
26	7:1-47	14:53-72	89
27	7:48-89	15:1-20	90,91
28	8	15:21-47	92,93
29	9	16	94
30	10	**रोमियो 1:1-17**	95,96

मई			
1	11	1:18-32	97,98
2	12	2:1-16	99-101
3	13	2:17-29	102
4	14	3	103
5	15	4	104
6	16:1-35	5	105
7	16:36-50	6	106
8	17,18	7	107
9	19	8:1-17	108,109
10	20	8:18-39	110-112
11	21	9	113,114
12	22,23	10	115-117
13	24:1-33	11:1-24	118
14	24:34-67	11:25-36	119:1-32
15	25	12	119:33-64
16	26	13	119:65-104
17	27	14	119:105-144
18	28	15:1-13	119:145-176
19	29	15:14-33	120-124
20	30	16	125-128
21	31	कुर.1:1-17	129-133
22	32	1:18-31	134-135
23	33	2	136,137
24	34	3	138,139
25	35	4	140-142
26	36	5	143,144
27	**व्यवस्था विवरण**.1	6	145
28	2	7	146,147
29	3	8	148-150
30	4	9	**नीतिवचन** 1
31	5	10	2

जून	व्यवस्थाविवरण	निति वचन	1 कुरन्थियों
1	6	11	3
2	7	12	4
3	8	13	5
4	9	14	6
5	10	15:1-34	7
6	11	15:35-58	8
7	12	16	9
8	13	**कुरन्थियों 1**	10
9	14	2	11
10	15	3	12
11	16	4	13
12	17	5	14
13	18	6	15
14	19,20	7	16
15	21	8	17
16	22	9	18

तिथि	पुराना नियम	नया नियम	पुराना नियम
जून			
17	23	10	19
18	24,25	11	20
19	26,27	12	21
20	28:1-37	13	22
21	28:38-68	**लूका1:1-25**	23
22	29	1:26-56	24
23	30	1:57-80	25
24	31	2:1-21	26
25	32	2:22-52	27
26	33,34	3	28
27	**यहोशु** 1	4:1-30	29
28	2	4:31-44	30
29	3	5:1-16	31
30	4	5:17-39	**सभोपदेशक** 1

जुलाई			
1	5	6:1-19	2
2	6	6:20-36	3,4
3	7	6:37-49	5,6
4	8	7:1-17	7
5	9	7:18-50	8,9
6	10	8:1-21	10-12
7	11,12	8:22-39	**श्रेष्ठगीत 1-3**
8	13,14	8:40-56	4,5
9	15	9:1-17	6-8
10	16-18	9:18-45	**यशायाह 1**
11	19	9:46-62	2,3
12	20,21	10:1-20	4,5
13	22	10:21-42	6,7
14	23	11:1-26	8,9
15	24	11:27-54	10
16	**न्यायियों** 1	12:1-34	11,12
17	2	12:35:59	13
18	3	13:1-17	14,15
19	4	13:18-35	16,17
20	5	14:1-14	18,19
21	6	14:15-35	20,21
22	7	15	22
23	8	16:1-13	23,24
24	9	16:14-31	25-27
25	10,11	17:1-19	28
26	12,13	17:20-37	29
27	14	18:1-17	20,31
28	15	18:18-43	32
29	16	19:1-27	33
30	17,18	19:28-48	34-36
31	19	20:1-18	37

अगस्त			
1	20	20:19-47	38,39
2	21	21:1-19	40
3	**रूत 1**	21:20-38	41
4	2	22:1-23	42
5	3,4	22:24-53	43
6	**1 सैमुएल 1**	22:54:-71	44
7	2	23:1-25	45,46
8	3	23:26-56	47,48
9	4	24:1-35	49
10	5,6	24:36-53	50,51

तिथि	पुराना नियम	नया नियम	पुराना नियम
अगस्त			
11	7,8	**गलातियों** 1	52-54
12	9	2:1-10	55,56
13	10	2:11-21	57,58
14	11,12	3	59
15	13	4:1-20	60,61
16	14	4:21-31	62-64
17	15	5	65,66
18	16	6	**यर्मियाह** 1
19	17	**इफिसियों** 1	2
20	18	2	3
21	19	3	4
22	20	4:1-16	5
23	21,22	4:17-32	6
24	23	5:1-20	7
25	24	5:21-33	8
26	25	6	9,10
27	26,27	**फिलिपियों** 1	11
28	28,29	2:1-11	12,13
29	30,31	2:12-30	14,15
30	**2 सैमुएल 1**	3	16
31	2	4	17

सितम्बर			
1	3	**कुलुसियों** 1	18,19
2	4,5	2	20,21
3	6	3	22
4	7	4	23
5	8,9	1 **थिसलुकियों** 1	24
6	10	2	25
7	11	3	26
8	12	4	27,28
9	13	5	29,30
10	14	2 **थिसलुकियों** 1	31
11	15	2	32
12	16	3	33,34
13	17	तिमुथियुस 1	35
14	18	2	36,37
15	19	3	38,39
16	20	4	40,41
17	21	5	42,43
18	22	6	44,45
19	23	2 तिमुथियुस 1	46,47
20	24	2	48
21	**1 राजा** 1	3	49
22	2	4	50
23	3	**तीतुस 1**	51:1-35
24	4	2	51:36-64
25	5	3	52
26	6	**फिलेमोन** 1	**लैवय्वस्था** 1
27	7:1-26	**युहन्ना1:1-28**	2
28	7:27-51	1:29-51	3
29	8:1-26	2	4,5
30	8:27-66	3	**यहेकेल** 1, 2

तिथि	पुराना नियम	नया नियम	पुराना नियम
अक्तूबर			
1	9	4:1-26	3
2	10	4:27-54	4,5
3	11	5:1-23	6,7
4	12	5:24-47	8,9
5	13	6:1-21	10
6	14	6:22-40	11
7	15	6:41-71	12
8	16	7:1-13	13
9	17	7:14-36	14,15
10	18	7:37-53	16
11	19	8:1-30	17
12	20	8:31-59	18,19
13	21	9:1-23	20
14	22:1-28	9:24-41	21
15	22:29-53	10:1-21	22
16	**2 राजा** 1	10:22-42	23
17	2	11:1-27	24
18	3	11:28-57	25
19	4	12:1-19	26
20	5	12:20-6	27
21	6	12:37-50	28,29
22	7	13:1-20	30,31
23	8	13:21-38	32
24	9	134	33
25	10	15:1-17	34,35
26	11	15:18-27	36
27	12	16:1-15	37
28	13	16:16-33	38
29	14	17	39
30	15	18:1-18	40
31	16	18:19-40	41

नवम्बर			
1	17	19:1-22	42,43
2	18	19:23-42	44
3	19	20	45
4	20	21	46
5	21	**इब्रानियों** 1	47
6	22	2	48
7	23	3	**दानिएल** 1
8	24	4	2:1-23
9	25	5	2:24-49
10	**इतिहास1**	6	3
11	2	7	4
12	3	8	5
13	4	9	6
14	5	10:1-18	7
15	6:1-48	10:19-39	8
16	6:49-81	11:1-22	9
17	7	11:23-40	10
18	8	12	11:1-20
19	9	13	11:21-45
20	10,11	**याकूब** 1	12
21	12	2	**होशे** 1,2

तिथि	पुराना नियम	नया नियम	पुराना नियम
नवम्बर			
22	13,14	3	3-5
23	15	4	6,7
24	16	5	8,9
25	17	**1 पतरस** 1	10,11
26	18	2	12-14
27	19, 20	3	**योएस**
28	21	4	2
29	22	5	3
30	23	**2 पतरस** 1	**आमोस**

दिसम्बर			
1	24	2	3,4
2	25	3	5
3	26	**1 युहन्ना** 1	6,7
4	27	2	8,9
5	28	3	**ओबध्याह** 1
6	29	4	**योना** 1,2
7	**2 इतिहास 1,**2	5	3,4
8	3-5	**2 युहन्ना** 1	**मीका 1,2**
9	6	**3 युहन्ना** 1	3,4
10	7	**यहूदा**1	6,7
11	8	**प्रकाशितवाक्य 1**	8,9
12	9	2	**नाहूम** 1
13	10,11	3	2,3
14	12,13	4	**हबक्कूक**
15	14,15	5	3
16	16,17	6	**सपव्याह 1**
17	18,19	7	2,3
18	20	8	**हाग्गै** 1, 2
19	21,22’	9	**ज़कर्याह**
20	23	10	2,3
21	24	11	4,5
22	25	12	6
23	26,27	13	7
24	28	14,15	8
25	29	16	9,10
26	30,31	17	11
27	32	18	12,13
28	33	19	14
29	34	20	**मलाकी 1**
30	35	21	2
31	36	22	3,4

अतिरिक्त लेख - 3

बाइबल
बाइबल में निशान लगाना

अपने निजि निशान चुने जो आप बाइबल पढ़ते समय विशेष लेखाँशों पर लगाना चाहेंगे।।
ये निम्न कारणो से लाभदायक होते हैं -

1. यह आप के ध्यान को केन्द्रित करने में प्रभावशाली होता है।
2. इनके द्वारा लेखाँशों को जिन्हें आप पढ़ना चाहते हैं उन्हे आसानी से बाइबल में ढूँढ सकते हैं।
3. इनके द्वारा आप पूरी बाइबल में लिखे विषयों का आसानी से अध्ययन कर सकते हैं।

(क)यह निशान को एक शीर्षक दें। बाइबल के हर अध्याय को एक शीर्शक दे दें। जैसे भजन संहिता 1 का शीर्षक है **दो रास्ते**

(ख) एक गोलाकार जिन पदों को आप विशेष 11 समझते उन आगे लिखे अंक पर गोला लगा दे। भजन ① पद ③

(ग) रेखाँकित करना महत्वपूरणशब्दो को रेखाँकित करना। उदाहरण जैसे पद 2 <u>दिन और रात मनन करें</u>

(घ)चित्रों या चिन्ह लगा कर हाशिए में चिन्ह महत्तवपूर्ण विषय़ों के लिए चिन्ह या चित्र बनाएँ।

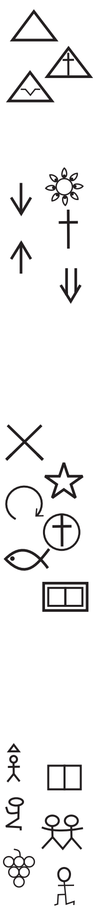	**परमेश्वर** चरित्र + परमेश्वर के कार्य चरित्र + यीशु मसीह के कार्य चरित्र + पवित्र आत्मा के कार्य **मसीह के कार्य** सृष्टि की रचना + प्रकृति मसीह की पहली आमद, अवतार मसीह की मृत्यु पुनर्जीवित होना + पुनरोउत्थान मसीह की मसीह के दूसरे आगमन का मूल्याँकन करना **सुसमाचार** पाप + पाप के परिणाम वर्तमान न्याय + भविष्दकाल का न्याय पुनर्जन्म, पश्चाताप्, परिवर्तन, सुधार विश्वास, भरोसा उद्धार, क्षमा, न्याय वाचा **मसीही जीवन** सम्बन्ध +परमेश्वर या यीशु से संगति बाइबल, परमेश्वर का वचन, प्रेरणा, गलत नही होने वाला शैतान , दुष्यात्माएँ, दुष्टआत्माओं के वश मे बढ़ना, परिपक्वता शुद्ध करना, मसीही चरित्र प्रार्थना और आराधना मसीही लोगो के साथ संगति झूठे भविष्यद्वक्ता,, झूठे शिक्षक	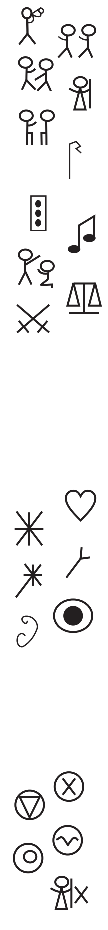	**मसीही सेवकाई** सुसमयाचार प्रचार + गवाही देना स्थापित करना, चेसे बनाना लैस करना + प्रशिक्षण देना अगुवो, भविष्यद्वक्ता, प्रेरितो, प्राचीनों आदि की अगुवाई करना। सलाह देना अनुशासन योजना बनाना, सुव्यवस्थित (अगुवाई) करना, स्तुति आराधना करना, संगीत की रचना करना चँगाई सामाजिक न्याय, इमानदारी आत्मिक भलाई, आत्मिक शस्त्र **मसीही बुद्धि-ज्ञान (भला + बुरा)** दिल, व्यवहार मन, विचार, विवेक ज़ुबान, शब्द, बोलना हाथ, कर्म आखें, देखना, और अवलोकन करना कभी कान, सुनाई देना, सुनना **शत्रु** ओकल्टिज़म, आत्माओं से सम्बन्ध बनाना, जादु-टोहना, शगुन-अपशगुन की विद्या दुनियादारी, पापमय और भ्रष्ट संसार

फलवन्त और प्रभावशाली होना
आज्ञाकारिता, और मसीह के समान जीना
बढ़ना, परिपक्व होना
शुद्ध होना, मसीही चरित्र
सेवकाई
प्रेम
आशा दुख,सताव और परीक्षाएँ
विवाह, लड़की और लड़के के सम्बन्ध
बाइबल की महिलाएँ
माता-पिता और बच्चों का समबन्ध
काम, पेशा, व्यवसाय
पैसा, दान

बपतिस्मा
चर्च, कलीसिया, घर की संगति

मृत्यु, पुनरुत्थान, शरीर+प्राण /आत्मा

पुराना नियम

प्रकाशन
इस्राएल
अन्यजाति के राष्ट्र
कानून(नैतिक, रस्मी,, नागरिक + परमेश्वर की माँग
मन्दिर
बलिदान

बाइबल की व्याख्या

साँस्कृतिक नज़रिया, प्रसंग सहित व्याख्या
आलंकारिक वचन बोलना
भविष्यद्वाणियों का पूरा होना

अतिरिक्त लेख - 4	***बाइबल*** **बाइबल अध्ययन का एक तरीका - 5 कदम का तरीका**

नोट करेः बाइबल अध्ययन और परमेश्वर के साथ निजि समय बिताने के तरीकों में अन्तर नोट करें।
उद्देश्यः एक दल में बाईबल अध्ययन का उद्देश्य है कि हम सब एक साथ एक दल में यीशु मसीह से सम्बन्ध को विकसित कर सकें और उन सत्यों को जीवन में लागू कर सकें।इस लिए यह ज़रूरी है कि दल का हर सदस्य एक दूसरे को उत्साहित करे कि वह बाइबल के अध्ययन के विचार-विमर्श में भाग लें। दल के हर सदस्यों का निज भाग जोड़ा जाए। किसी को भी दल से अलग नहीं किया जाए विष्य कर यदि वह कुछ ऐसा बोले जो बाइबल के धर्मशास्त्र के अनुसार नहीं है। हर सदस्य को अनुभव होना चाहिए कि सारा धल सुन रहा है जब व कुकछ बोलता है। उसकी बात को गम्भीरता से ले और उसे ग्रहण करे। दल का बाइबल के शिक्षा या ज्ञान प्राप्त करते समय किसी भी सदस्य का दूसरे के साथ कोई मुकाबला नही है। इसके स्थान पर एक दूसरे से प्रेम करना, एक दूसरे को उत्साहित करना और एक दूसरे में आत्मविश्वास जगाना है।
दल के अगुवेः दल के अगुवे को बाइबल अध्ययन के दौरान शिक्षक बनने की ज़रूरत नही है। इसके स्थान पर उसे दल के एक सदस्य के समान रहना चाहिए। से दल के सदस्यों को उत्साहित करना है कि वे विचार विमर्श करके बाइबल को सत्य को खोज निकालें।
लाभः पाँच कदम तरीके को प्रयोग करने से निम्न लाभ मिलते हैं।

- यह बाइबल अध्ययन का एक आसान तरीका है और इसे आसानी से दूसरों तक पहुँचाया जा सकता है।
- यह बाइबल अध्ययन का ऐसा तरीका है जिसके द्वारा अकेले या एक छोटे दल में प्रशिक्षण दिया जा सकता हैं।
- यह बाइबल का एक ऐसा तरीका है जिसमें दल के सभी सदस्य हर स्तर पर भाग ले सकते हैं।
- दल के सदस्य पहले जो वे जानते हैं उसका आनन्द उठाते हैं इससे पहले कि वे अपना प्रश्न पूछें और उसे समझने की कोशिश करें।
- दल के सदस्य वही प्रश्न पूछते हैं जो उनके जीवन से जुड़े होते हैं।
- अधिक से अधिक सदस्य उत्तर को खोजने में भाग लेते हैं।
- दल के सदस्य सच का सम्बन्ध प्रतिदिन बाइबल से और अपने निजि जीवन के साथ बनाए रखे और से कि उनको कैसे अपने वन में लागू कर सकते हैं।
- दल के सदस्य आसानी से किसी एक सच को चुन कर अपने जीवन में लागू कर सकते हैं।
- दल के सदस्य सदा दो परमेश्वर उनको सिखाता है अपनी प्रार्थना में उसका प्रतिउत्तर देते हैं।

पहला तरीका. पढ़ेः **परमेश्वर का वचन**
पढ़ेः आईए हम इस बाइबल संदर्भ को मिल कर एक साथ पढ़ें।
आईए हम बारी-बारी से इस लेखाँश को पढ़े जब तक इसको पूरा न पढ़ लें।

दूसरा तरीका. खोज निकालें **अवलोकन**
ध्यान देः इस लेखाँश में ऐसा कौन सा प्रश्न है जो आप के लिए महत्त्वपूर्ण है? या ऐसा कौम से लेखाँश है जिस ने आपके दिल को छू लिया है?
लिख लेः एक या दो सत्य वचनों को खोज निकालें जो आप क समझ में आ रहे हैं। उन पर मनन करें और अपनी कापी में उनको लिख लें।
गवाही देः(दल के दो मिनट तक मनन करने के बाद बारी-बारी सब अपनी गवाही दें कि उन्होंने क्या खोज निकाला है।)

(याद रहे एक छोटे दल मे हर व्यक्ति की गवाही भिन्न होगी।)

तीसरा कदम. **समझाना**

ध्यान दे: इस लेखाँश के विषय में आप दल से कौन सा प्रश्न पूछना चाहेंगे?
आईए हम कोशिश करें इस सत्य को जानने की जो ____________________ में लिखे हैं और प्रश्न पूछें उस सब के विषय में जो अब तक समझ नहीं आया है।
लिख ले: लिख ले: अपना प्रश्न पूरी स्पष्ट रीति से पूछें और उसे अपनी कापी में लिख लें।
गवाही बाँटें: (जब सभी दल के सदस्य 2 मिनट तक विचार कर चुकें और कापी में अपने विचार लिख चुके हों तब बारी-बारी सब अपने विचारों को दूसरों के साथ बाँटें।
विचार-विमर्श करे: (फिर इन में से कुछ प्रश्न चुन कर उन के उत्तर पर दल के साथ मिल कर विचार-विमर्श करें और उनका उत्तर खोजने की कोशिश करें।)

चौथा तरीका **लागू करना**

ध्यान देना: इस लेखाँश में कौन से ऐसे सत्य है जो मसीही लोग अपने जीवन में लागू कर सकते हैं?
अपने विचार बाँटें और लिख ले: आईए हम एक दूसरे के दिमाग में तूफान ला दें और उन सब सच्चाईयों को लिख ले जो हमें उत्पत्ति 1:1 – 2:4अ से जीवन में लागू करनी हैं।
ध्यान दे: कौन सी ऐसी बात हमें लागू करनी है जो परमेश्वर चाहते है कि हम निजि रूप से अपने जीवन में लागू करें?
लिख ले: यह निजि लागू करने का सत्य जो आप अपने जीवन मे लागू करने वाले है उसे अपनी कापी पर लिख लें। अपने इस निजि चुनाव को दूसरों के साथ बाँटें।
(याद रहे हर व्यक्ति भिन्न सत्य का चुनाव कर सकता है या किसी सत्य को अन्य रीति से अपने जीवन पर लागू कर सकता है।

तरीका 5 प्रार्थना करो **प्रतिक्रिया**

आईए हम एक सत्य के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें ________________ में हमें सिखाया है।
(अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें कि बाइबल अध्ययन के दौरान आपने क्या सीखा है? और केवल एक या दो वाक्यों में ही प्रार्थना करें। और याद रखे कि दल के अन्यलोग भिन्न विषयों में बात करेंगे।)

अतिरिक्त लेख -5	***बाइबल*** **बाइबल को मनन व याद करने का तरीका**

क. बाइबल के पदों को याद करने के लिए प्रोत्साहित करना

1. <u>याद किए बाइबल के पद आप को दुष्ट शक्तियों पर विजय पाने में सहायता करेंगे।</u>
   पढ़ेः इफिसियों 6:11,16;मत्ती 4:2-4
2. <u>याद किए बाइबल के पद इस दुष्ट और सदाचार से विमुख संसार में आप की सहायता करेंगे कि आप एक सच्चा, शुद्ध और पवित्र जीवन बिता सकें।</u>
   पढ़ेः भजन 119:9,11
3. <u>याद किए बाइबल के पद आपको इस योग्य बना देंगे कि आप मनुष्य के प्रश्नों के लिए परमेश्वर के उत्तर दे सकेंगे।</u>
   पढ़ेः मत्ती 19:3-6; लूका 10:25-26
4. <u>याद किए बाइबल के पद आपको योग्यता देंगे कि आप झूठी शिक्षाओं को उखाड़ फेकेंगे।</u>
   पढ़ेः मत्ती 22:23-33, 41-46
5. <u>याद किए पद आपकी सहायता करेंगे कि आप अपने परिवार को बाइबल में विश्वास के प्रति सही धारणा दे सकेंगे और बाइबल के अनुसार आदतों का निर्माण करेंगे।</u>
   पढ़ेः व्यवस्थाविवरण 6:409
6. <u>याद किए पद आपकी शिक्षाओं को अधिकार पूर्ण और ज्ञानवान बना देगा।</u>
   पढ़ेः मत्ती 5:27-28; 7:28-29; कुलु. 3:16
7. <u>याद किए पद आपके लेखन और बाइबल की घोषणाओं को बहुत ही सामर्थी बना देगा।</u>
   पढ़ेः यर्मियाह 23:29; इब्रानियों 2:12; 2 कुर. 10:3-5
8. <u>याद किए पद आपकी पूरे आत्मविश्वास से परमेश्वर की उस इच्छा के अनुसार प्रार्थना करने में सहायता करेंगे जो उसने पहले से आप पर प्रकट की गई है।</u>
   पढ़ेः उत्पत्ति 32:9-12; निर्गमन 32:9-14

ख. बाइबल के पदों पर मनन करने का तरीका

मसीही रीति से मनन करने में निम्न बातें शामिल हैः-

1. <u>विचार करें</u> - अपने मनपसंद वचनों के भिन्न शब्दों पर विचार करें।
और स्वयं से प्रश्न पूछें जैसे कि कौन? क्या? कहाँ? कब? और कैसे?

2. <u>प्रार्थना करो</u> - जब आप विचार कर रहे हैं तब परमेश्वर से प्रार्थना करें औप परमेश्वर से कहें कि वह आप के दिल और मन से बातचीत करे और शब्दों के अर्थ आपको समझाए या आप पर प्रकट करे कि वह आप को क्या समझाना चाह रहा है, आपको किस बात पर विश्वास करने को कह रहा है, क्या बनने और करने को कह रहा है। और तब जो परमेश्वर कह रहा है आप उसके अनुसार कार्य करें।

3. सम्बद्ध रहें - अपने मनपसंद सत्य का सम्बन्ध अपने जीवन और इस संसार से बनाए रखें।
अपने से ये प्रश्न करें, "सच्चाई की रौशनी में मेरी ज़रूरत क्या है? या यह सत्य मुझे कैसे नया बना देगा? कैसे करेगा और कैसे मुझे सामर्थ देगा? परमेश्वर मुझ से क्या चाहते हैं कि मैं क्या जान लूँ, या किस बात पर विश्वास करूँ या फिर क्या बन जाऊँ?"

4. **<u>लिख लें</u> -** परमेश्वर के साथ बिताए समय में अपने मन में उठने वाले उन विशेष विचारों को जिन पर आप मनन कर रहे थे और उन्हें लिख कर रख लें।

ग. बाइबल पदों को याद करने का तरीका

बाइबल में से पदों को याद करने के लिए (उसके अध्याय या पुस्तकों के नाम) निम्न तरीका है।

1. **चुनावः**
   बाइबल के वचन याद करने के लिए कोई एक तरीका चुन लेः- जैसे बाइबल का पद लिखे हुए कार्ड या कॉपी में लिख कर याद करें।
2. **मनन करेः** जो पद याद करना है पहले उस पर मनन कर के उसे समझ लें, फिर उस याद करें।
3. **लिख लेः** बाइबल के पद को किसी कार्ड या कॉपी के पन्ने पर इस तरह से लिख लें

- पहली पंक्ति में शीर्षक या विषय का नाम लिखें
- दूसरी पंक्ति में बाइबल के पद का प्रसंग लिखें।
- फिर एक रेखा खींचकर उसके नीचे बाइबल का पद लिखें।
- अन्त में सब से नीचे बाइबल के पद का प्रसंग फिर से लिखें। और कार्ड या कापी के पन्ने के पीछे पन्ने के पीछे भी पद का प्रसंग लिख दें।

उदाहरण के लिए

उद्धार निश्चित है युहन्ना 10:38	
मैं उनको अनन्त जीवन दूँगा और वे कभी भी नाश न होंगे, उनको कोई भी मेरे हाथों से छीन नहीं सकता है। युहन्ना 10:38	युहन्ना 10:38

4. **<u>याद करेः</u>** बाइबल के पद को सही रीति से याद करें।

- सदा उसके शीर्षक से शुरू करें। फिर पद का प्रसंग और फिर पद की पहली पंक्ति याद करें।
- जब आप इसे बिना किसी भूल के कह सकते हैं तब दूसरी पंक्ति को जोड़ लें। और फिर शुरू से शीर्षक, प्रसंग तथा पहली और दूसरी पंक्ति को दोहराएँ।
- जब आप इतना बिना किस भूल के इस सब को दोहरा सकते हैं तब तब तीसरी पंक्ति को जोड़ लें और फिर शुरू से अन्त तक दोहराएँ। शीर्षक, प्रसंग, पहली, दूसरी और तीसरी पंक्ति।
- बाइबल के पद को कभी भी अलग-अलग, तोड़-तोड़ कर याद न करें क्योंकि ऐसा करने से उसकी कड़ी नहीं बनी रहती है। हर बार जब आप पद को दोहराते हैं तो हर बार उसे शुरू से अन्त तक दोहराएँ।
- पद को दोहराने के बाद हर बार बाइबल के प्रसंग को दोहराना न भूलें क्योंकि प्रसंग याद रखना सबसे कठिन होता है।
- इसलिए बाइबल का पद याद करने का सब से सही तरीका है शीर्षक, प्रसंग और बाइबल के पद की पंक्तियाँ और अन्त में एकबार फिर से संदर्भ को बोल कर याद करना।

घ. बाइबल के याद किए पदों का पुनरावलोकन

पहले से याद किए बाइबल के पदों का पुनरावलोकन करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना हैः-

1. पुनरावलोकनः

बाइबल के पदों को याद करते समय कम से कम 5 पदों को जो आप हर दिन याद करते हैं उनका पुनरावलोकन करें। बार बार दोहराना याद करने का सबसे अच्छा तरीका है। इस लिए हर दिन 5 पदों को दिन में एक बार पाँच दिनों तक दोहराएँ। इस रीति से आप हर पद को कम से कम 35 बार दोहरा लेते हैं इससे पहले कि आप उसे पिछले पुनरावलोकन के स्थान पर छोड़ देते हैं।

2. पिछला पुनरावलोकनः

इसका अर्थ है उन वचनों हर तीन हफ्ते बाद देखना जो आपने अतीत में बाइबल में से याद की थीं। यह सर्वोत्त्म तरीका है पुराने पदों याद रखने का। इसलिए पिछले 100 दिनो में जो पद आपने याद किए हैं उन में से 5 पदों का हर दिन पुनरावलोकन करें। इस रीति से आप इन सारे पदों को जो आपने याद किए हैं उनको हर तीन हफ्ते बाद फिर से देख लेते हैं कि वे आपको याद हैं या नहीं।

3. साथ लें:

अपनी याद करने की पुस्तिका या कार्ड सदा साथ लेकर चलें। जब आप काम पर जाने की यात्रा कर रहे हैं तो दिन के उस समय को उन वचनों का पुनरावलोकन करने के लिए का उपयोग करें। और उस समय पर पिछली अन्य पदों पर भी नज़र डाले कि वे पद आपको याद हैं या नहीं। उस समय में आप 3 पदों में क्या लिखा है उन पर मनन करके प्रार्थना भी कर सकते हैं।

4. जाँच लेः

एक दूसरे की जाँच कर के देखें कि आप को अभी भी बाइबल के पहले याद किए वचन याद हैं। हर बार दल की सभा में दल को दो-दो लोगों के दल में बाँट कर जाँच करें कि सब को बाइबल के वचन याद हैं। और फिर कभी कभी बाइबल के पिछले 5 पदों की भी इसी तरह से जाँच करें। एक दूसरे की जाँच करें कि जान लें कि आप को सभी पद याद हैं। इसकी भी जाँच कर लें कि क्या आपको वचन के साथ-साथ उस वचन का विषय और उससे जुड़े संदर्भ वचन भी याद हैं या नहीं। साथ ही यह कि आपको बाइबल का पूरा पद बिना कोई भूल किए याद है या नहीं। जाँचने के लिए कभी-कभी एक संकेत देकर जैसे कोई विषय देकर, या बाइबल का संदर्भ वचन देकर या फिर कभी-कभी पद के पहले कुछ शब्द दे कर देखें कि सब को पद याद हैं या नहीं।

ङ. डोटा के पदों को याद करने की सूची

क. मसीही निश्चय 1. उद्धार निश्चित है- युहन्ना 10:28 2. प्रार्थना के उत्तर निश्चित है युहन्ना 16:24 3. विजय निश्चित है1 कुर. 10:13 4. क्षमा निश्चित है1 युहन्ना 1:94. 5. परमेश्वर का मार्गदर्शन निश्चित है	**ख. मसीह में नया जीवन** 1. मसीह 2 कुर. 5:17 2. वचन मत्ती 4:4 3. प्रार्थना युहन्ना 15:7 4. संगति 1 युहन्ना 1:7 5. मत्ती 10:32 नीति वचन 3:5-6
ग. सुसमाचार 1. पाप का स्वभाव रोमियो - 3:23 2. पाप की सज़ा सभोपदेशक - 12:14 3. पाप के लिए पश्चाताप् रोमियो - 5:8 4. उद्धार एक वरदान है इफिसियों - 2:8-9 5. उद्धार केवल विश्वास के द्वारा युहन्ना 1:12	**घ. चेला बनाना** 1. प्रभुता - रोमियो 12:1-2 2. इन्कार करना - लूका 9:23 3. सेवा - मरकुस 10:45 4. दान देना - 2 कुर. 9:6-7 5. चेले बनाना - मत्ती 28:18-20
ङ मसीही चरित्र 1. मसीह के समान बनना - 2 कुर. 3:18 2. पवित्रता - 1 पतरस 2:11 3. प्रेम - मरकुस 12:30-31 4. विश्वास - रोमियो 4:20-21 5. नम्रता - फिलिपियों 2:3-4	**च. मसीह विवाह की तैयारी** 1. दोनो विश्वासी - 2 कुर. 6:14 2. समान उद्देश्य - आमोस 3:3 3. आत्म-नियन्त्रण - 1 थिसु. 4:3-5 4. सही समय - सभोपदेशक 8:5-6 5. सहीप्राथमिकताएँ - मत्ती 6:33
छ. मसीही विवाह 1. छोड़ना और लिपटे रहना उत्पत्ति 2. प्रेम और अगुवाई -इफिसियों 5:23-25 3. प्रेम औप समर्पण - तीतुस 2:4-5 4. मतभेद सुलझाना - मत्ती 5:23-24 5. विश्वासयोग्य बने रहो - नीतिवचन 3:3-4	**ज. मसीही माता-पिता** 1. खर्च करके प्रेम दिखाना - 2 कुर 12:14-15 2. हर क्षेत्र में निर्माण- नीति-वचन 22:6 3. परमेश्वर के वचन की शिक्षा दो- व्य.विव.6:6-7 4. परमेश्वर में लालन-पाल करो - इफिसियों 6:4 5. अनुशान द्वारा प्रेम दर्शाएँ - नीतिवचन 13:24
झ. परमेश्वर का राज्य 1. परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करो - युहन्ना 3:3,5 2. बच्चों को राज्य में स्वागत - लूका 18:16-17 3. राज्य के सुसमाचार का प्रचार - मत्ती 24:14 4. राज्य की सेविकाई में मुड़ कर न देखना - लूका 9:62 5. राज्य की विजय - दानिएल 2:44	**ञ. मसीही कलीसिया** 1. कलीसिया का प्रभाव- 1 पतरस 2:5 2. कलीसिया की गति-विधियाँ-प्रेरितों. के काम 2:42 3. कलीसिया की सेविकाइयाँ - इफिसियों 4:12-13 4. चर्च के अगुवों के काम प्रेरितो.के काम 20:28 5. कलीसिया में महिमा - इफिसियों 3:20-21
ट. परमेश्वर की महानता 1. परमेश्वर अतुल्य है य़सायाह 40:25-26 2. परमेश्वर महिमय है -1 इतिहास 29:11 3. परमेश्वर राजा है - इफिसियों 1:11-12 4. परमेश्वर सर्वज्ञानी है - इब्रानियों 4:13 5. परमेश्वर सर्वशक्तिमान है - यर्मियाह 32:17	**ठ. परमेश्वर के स्रोत** 1. परमेश्वर की उपस्थिति - इब्रानियों 13:5-6 2. परमेश्वर का वचन - भजन 119:105 3. परमेश्वर की सामर्थ - यशायाह 40:10 4. परमेश्वर का ज्ञान - याकूब 1:5 5. परमेश्वर की चंगाई - 2 इतिहास 7:14

अतिरिक्त लेख - 6	अगुवाई दल अगुवों के लिए निर्देश

निर्देश जो हस्थ-पुस्तिका में मोटे अक्षरो में लिखे हैं वे दल के अगुवो के लिए हैं जिससे वे विद्यार्थियों को सम्मिलित होने के लिए उत्साहित कर सकें।

1. **आराधना का संचालन**

- दल के सदस्यों को बाइबल के लेखाँश को पढ़ने दें। दल के अगुवे को परमेश्वर के किसी एक गुण का मनन करते हुए दल की की अगुवाई करने में उनका साथ दें।
- बारी-बारी से एक या दो वाक्यों में परमेश्वर की आराधना करें। या फिर दल को दो या तीन लोगों के दल में बाँट कर धीमी आवाज़ में आराधना करें।

2. **गवाही देने के समय का संचालन**

- **तैयारी करने का कार्य -** क्योंकि घर परकाम करने के लिए बाइबल के लेखाँश दिए गए हैं उन के साथ हर सदस्य नियमित रूप से परमेश्वर के साथ एक निजि संगति का शान्त समय बिताएगा।
- हर सभा के दौरान दल के सदस्य बारी बारी से अपनी गवाही देंगे कि गुज़रे हफ्ते में उन्होंने परमेश्वर के साथ अपनी निजी संगति के समय में क्या सीखा था। उन सब को 2-2 मिनट का समय दें। उनको उत्साहित करें कि वे अपने लिखित नोट्स का सहारा ले सकते हैं।
- विद्यार्थियों की सहायता करें कि वे हर सदस्य की गवाही को ध्यान से सुनें और उसे गम्भीरता से लें। और जो वह कहता है उसे ग्रहण कर लें। विद्यार्थियों को याद दिलाएँ कि किसी की गवाही पर कोई प्रतिक्रिया न करे और उसके विषय में कोई टिप्पणी करें जिससे किसी के आत्मविश्वास को ठेस पहुँचे।
- दल के नेता निम्न प्रकार की गवाहियों को अपने प्रशिक्षण के कार्यक्रम में सम्मिलित कर सकते हैं।
  - जीवन के अनुभव की कठिन या सकारात्म गवाही।
  - एक गवाही।
  - एक प्रार्थना के उत्तर की गवाही, या एक प्रार्थना विनती की गवाही।
  - उस क्रिया की जिसके द्वारा आत्मिक जीवन में उन्नति पाई हो या चरित्र का विकास हुआ हो।

3. **शिक्षाओं का संचालन**

- शिक्षाओं को अच्छी तरह से तैयार करना और निर्णय लेना कि आप उस शिक्षा को देने के लिए कितने समय की ज़रूरत होगी या आप कितना समय लेना चाहेंगे।
- जब आप दल का अगुवा बन कर शिक्षा देते हैं तब आपके संचालन की शैली एक शिक्षक की होती है। एक अच्छा दल का अगुवा सच की शिक्षा स्पष्ट रूप से, और उसकीसही धारणा को पूरे अधिकार से देता है। यह सत्य केवल भिन्न लोगों का दृष्टिकोण नहीं होता है। यह और बात है कि यह सच समझदारी और बाइबल के विषय में अपने अर्थ को स्पष्ट करने के सही सिदान्तों पर आधारित होना चाहिए। दल का अगुवा शिक्षाओं के विषयों पर विचार-विमर्श का भी मार्गदर्शन करता है। वह विद्यार्थियों की खोज करने मे, विचार करने में, निर्णय लेने में, और शिक्षाओं को स्वयं पर लागू करने में भी मार्गदर्शन करता है। उनका उद्देश्य यही होता है कि विद्यार्थी सत्य के विषय में विकसित होकर निजि रूप से सही धारणा बना सकें और इन सत्यों को अपने जीवन में लागू करने के लिए समर्पित हो जाएँ।
- केवल बाइबल का ही अपने मानव विचारों और व्यवहार में और मसीही सिद्वान्तों को अपने जीवन पर

सम्पूर्ण अधिकार से प्रयोग करें।

- विद्यार्थियों को बाइबल के लेखाँशों को पढ़ने दे जो आप अपनी शिक्षा के दौरान प्रयोग करते हैं। (**पढ़ें**)
- विद्यार्थियों को अपने लिए सत्य की खोज खोज करने दें। (**खोज**) सही सिद्धान्तों का प्रयोग करके समझाएँ और समझदारी से बाइबल के अर्थ को स्पष्ट करें।
- विद्यार्थियों को विचार विमर्श में सम्मिलित करें। विद्यार्थियों को अवसर दें कि वे स्वयं विचार-विमर्श करें और निजि प्रश्न पूछें। (**विचार-विमर्श**)
- प्रश्नों के उत्तर तैयार करें और उन पर विचार-विमर्श करें। फिर संक्षेप में सारी शिक्षाओं का संक्षिप्त वर्णन करें।
- विद्यार्थियों को उसाहित करें कि वे जो कुछ भी वे बाइबल से या एक दूसरे से सीखते हैं उसके अपने निजि नोट्स तैयार करें।
- शिक्षा देने का प्रशिक्षण जितना सम्भव हो सके उतना व्यवहारिक बनाएँ। शिक्षाओं को छोटे दल के बीच तथा घरेलु जीवन में लागू करें।
- विद्यार्थियों को घर का काम पूरा करने और अगली शिक्षा के लिए तैयारी करने के लिए कहें।

4. <u>याद कराने का संचालन</u>

- विद्यार्थियों को बाइबल से लिए अच्छे कारण बता कर निरन्तर प्रेरित करें कि वे बाइबल के पद याद करें।
- बाइबल के हर नए पद के अर्थ के विषय में मिल कर मनन करें।
- हर बार एक नए विद्यार्थी को याद कराने का अगुवा बनाएँ। नियम पुस्तिका 2 से 12 में लिखे हर नए बाइबल पद को दल बना कर याद करें। बाकी के पद घर पर याद करें।
- हर सभा के दौरान पूरे दल को दो-दो के दल में बाँट दें और एक दूसरे को जाँच लें कि उनका बाइबल का पाद याद हुआ है या नहीं।
- कभी-कभी दो-दो का दल बना कर जाँच के पहले याद किए गए 5 पद याद है या नहीं।

5. <u>बाइबल अध्ययन का संचालन</u>

- बाइबल अध्ययन की तैयारी भली प्रकार करें।
- जब आर एक दल के अगुवे हैं तो आप ही बाइबल अध्ययन की अगुवाई करें तो यहाँ पर आप का संचालन करने का तरीका एक मार्गदर्शक के समान होगा। दल के अगुवे को शिक्षक नहीं बनना है। एक अच्छा अगुवा अपने विद्यार्थियों को खोजने, सोचने, नतीजे निकालने और उन्हे जीवन में लागू करने का केवल प्रशिक्षण देता है।वह उन खोजों को बाँटने में, प्रश्नों के विचार-विमर्शमें, दिमाग़ में तूफान उठाने में कि कैसे उनको जीवन में लागू किया जा सकता है, इन सब में मार्गदर्शन करता है। उसकी कोशिश रहती है कि हर बाइबल अध्ययन के समय जिस में सत्य की खोज करनी है (प्रेरितों के काम 17:11) सत्य को समझने के लिए (2 तिमु.2:15) सत्य को लागू करना (मत्ती 7:24-27) और सत्य को दूसरों को सिखाने के लिए (मत्ती 28:19-20) सत्य लोगों के किसी भी दृष्टिकोण से, बाइबल के अर्थ बताने के जो नियम के अनुसार है उन से अधिक है उस सत्य से जो परमेश्वर ने बाइबल में कहा था और हम से करने को कहा था। इसलिए बाइबल को उन नियमों के अनुसार जो बाइबल में समझाए गए हैं, सही से समझाना ज़रूरी है। यह दल के अगुवों की ज़म्मेदारी है कि वह अपने दल को सही राह पर ले कर चले। उसे पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन को समझने में अति संवेदलशील रहना होगा।
- दल के सभी विद्यार्थियो को सभा में शामिल रखें। विद्यार्थियों से कहें कि वे बारी-बारी से दल के सामने बाइबल में से ऊँचे शब्दों में पढ़ें। उनको उत्साहित करें कि वे सत्य को स्वयं खोज निकालें और उसे सही रीति से समझ सकें

और अपने जीवन में लागू कर सकें। और फिर अपनी खोज, उससे क्या समझा है, और कैसे उसे अपने जीवन में लागू किया है खुले दिल से दल के साथ बाँट सकें। उनको उत्साहित करें के वे अपने विचार के साथ साथ अपनी भावनाओं को भी दल के साथ बाँटें। उनको इस बात के लिए भी उत्साहित करें के वे उन सत्यों के विषय में बाइबल अध्ययन के समय विचार विमर्श करें और अपने मन में उठने वाले प्रश्न पूछें।

- दल के विद्यार्थियों को उत्तेजित करें कि वे बाइबल अध्ययन के निजि नोट्स तैयार करें और यह भी लिखें कि दल के बाइबल अध्ययन और विचार विमर्श के दौरान उन्होंने अन्य लोगों से क्या सीखा था।

6. <u>प्रार्थना समय का संचालन</u>

- हर सभा में घेरे में बैठ कर बारी बारी एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करें।
- कभी-कभी दो या तीन लोगों के दल बना कर प्रार्थना करें।
- विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करें कि कैसे परमेश्वर के वचन की शिक्षा, गवाही और बाइबल अध्ययन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना करते हैं। और कैसे मध्यस्त की प्रार्थना करते हैं। या फिर बाइबल के वचन का प्रयोग करके कैसे प्रार्थना करते हैं।
- विद्यार्थियों को सिखाएँ कि वे दूसरों की प्रार्थनाओं की सूची बना ले जिनके लिए प्रार्थना करनी है।

7. <u>दल के अगुवों की शैली का संचालन</u>

- दल की शैली अगुवाई करना या संचालन करना है उस पर प्रभुता करना नहीं है। (मत्ती 20:25-28)
- अगुवाई करना या संचालक करने का अर्थ है दूसरे के सामने निम्न क्षेत्रों में एक उदाहरण रखना। (1 पतरस 5:3)

  - परमेश्वर के साथ अपने निजि सम्बन्ध और दूसरे लोगों के साथ आपके सम्बन्ध (1 तिमु. 4:12)
  - अपने निजि विकास, व्यवहार, और दृड़ सिद्धान्तों का संचालन। (1 तिमु. 4:15-16)
  - अपनी दृड़ शिक्षा का संचालन (1 कुर. 4:6; 2 तिमु. 1:13-14; तीतुस 2:7-8)
  - बाइबल का सही रीति से प्रयोग करना। (2 तिमु. 2:15)
  - जो सिखा रहे हैं उसे खुद पर भी लागू करना। (मत्ती 23:3; एज़रा 7:10)
  - प्रेम से निर्देश देना नकि झगड़ा करना। (2 तिमु. 2:23-26)

- अगुवाई करना या संचालन करने का अर्थ है बड़ी सभाओं में प्रचार करना, या छोटे दल में प्रचार करना या फिर घर पर प्रचार करना है। (प्रेरितों के काम 5:42)जो कुछ परमेश्वर ने आप पर बाइबल से प्रकट किया है जो सहायता कर सकता है कि लोग आत्मिक रीति से आगे बढ़ सकें। (प्रेरितो के काम 20:20,27)
- अगुवाई करने या संचालन करने का अर्थ है विद्यार्थियों को प्रेरित करना, समझाना, चुनौती देना, सहायता करना, सावधान करना, डाँटना, सुधारना और प्रशिक्षण देना है। (2 तिमु. 3:16-17) और सब से ऊपर अपने विद्यार्थियों से प्रेम करना और उनके लिए उत्साह बढ़ाने वाला बनना है। (इब्रानियों 3:12-13; 10:24-25)
- अगवाई करना या संचालन करनें का अर्थ है एक अच्छा श्रोता बनना। (नीतिवचन 13:17) अपने विद्यार्थियों को गम्भीरता से लें, उन्हें जैसे वे हैं वैसे ही कबूल करें। (रोमियो 15:7) अपने विद्यार्थियों को गलती करने की अनुमति दें।
- अगुवाई करना या संचालन करने का अर्थ है अपने विद्यार्थियों के लिए प्रार्थना करना, उनकी सामर्थ और ज़रूरतों को जान लेना, जान लेना कि परमेश्वर उनके वन में कैसे कार्य कर रहा है और उनके विकास के लिए आप कैसे सहायता कर सकते हैं।

अतिरिक्त लेख - 7 संगति
घर की संगति सभा की अगुवाई करना

घर में की गई संगति का दल या एक छोटे दल में 10 विश्वासी एक साथ कम से कम हफ्ते में एक बार मिलते हैं जिस से वे एक दूसरे को विकसित कर सकें।

1. घर की संगति सभा, या एक छोटे दल की सभा के लिए व्यवहारिक सुझाव

घर की संगति की सभा के लिए अपनी परिस्थितियों के अनुसार एक दल तैयार करें। कुछ घर की संगति की सभा के निम्न गुण पाए जाते हैं।

- वे सप्ताह में एक बार मिलते हैं।
- वे हर सप्ताह एक ही सदस्य के घर पर मिलते हैं। या फिर हर सदस्य बारी बारी से सभा अपने घर पर रखते हैं। वे ऐसे स्थान पर मिलते है जहाँ पर कोई उनकी शान्ति भंग नहीं करता है। और जहाँ पर आपका ध्यान दूसरी ओर नहीं भटकता है।
- जब दल 10 से अधिक सदस्यों का बन जाए तो उसे दो भागों में बाँट ले और दो भिन्न स्थानों पर सभा के लिए मिलें।
- आते समय सभा के घर पर एक या दो लोग एक साथ आएँ एक साथ भीड़ न लगाएँ। ऐसे ही जाते समय भी ऐसे ही जाएँ।
- किसी नए सदस्य को तभी सभा में आने का निमन्त्रण दें जब सभा के सभी सदस्य ऐसा मान लेते हैं.।
- साथ मिल कर फैसला करें कि आप लोगों से अपने घर की संगति के विषय में क्या कहेंगे।
- दल के नेता के पास एक सहायक होना चाहिए और उसे प्रशिक्षण देकर तैयार करना है कि वह एक नया दल बना कर उसकी अगुवाई कर सके।
- केवल दल के अगुवे के पास ही नियम पुस्तिका होती है। दल के अन्य सदस्य अपने निजि नोट्स बनाते हैं।
- घर पर संगति के दल का उद्देश्य है कि इस संगति के द्वारा एक दूसरे को विकसित कर सकें। जिससे हर कोई सभा में भाग ले सके।

2. घर की सभा के कार्यक्रम

दल के अगुवों की नियम पुस्तिका कुछ कार्यक्रमों का सुझाव देती है। (सूचीपत्र को देखें)
2 से 15 लोग इस छोटे दल में एक घर में हर हफ्ते मिलते हैं।

केवल चेला बनाने के लिए

चेला बनाना (क) महीने के पहले और तीसरे सप्ताह (ख) चेले बनाना हर दूसरे और चौथे सप्ताह
एक सप्ताह में वे स्तुति आराधना और शिक्षा पर ज़ोर देते हैं और दूसरे सप्ताह में वे बाइबल अध्ययन और वचन के पद याद करने पर समय बिताते हैं।

या फिर चेले बनाने और सेविकाई करने की सभा

हर तीन हफ्ते बाद चेले बनाने के लिए (क और ख और सेविकाई ग) विशेष कर पहले हफ्ते में आराधना और बाइबल शिक्षा, और दूसरे सप्ताह में विशेष रूप से पद याद करने और बाइबल अध्ययन में समय बिताते हैं। तीसरे हफ्ते में

चेले बनाना (क)	चेले बनाना (ख)	घर में संगति (ग)
• आराधना 1 गीत के साथ (20मिनट) • गवाही और शान्त समय (20 मिनट) • शिक्षा देना (70 मिनट) • प्रतिउत्तर की प्रार्थनाएँ (8मिनट) • घर के काम की तैयारी (2 मिनट) • चाय और संगति (शान्त रीति से)	• याद करना (20 मिनट) • गवाही व शान्त समय (20मि.) • बाइबल अध्ययन (70 मिनट) • मध्यस्थ की प्रार्थनाएँ (8 मिनट) • घर के काम की तैयारी(2 मिनट • चाय और संगति (शान्त रीति से)	• गीत गाना (45 मिनट) • प्रचार 15 मिनट • प्रार्थना (30 मिनट) • प्रभु भोज, बपतिस्मा, (भोजन की संगति) जब भी उसकी ज़रूरत हो। (30 मिनट)

3. एक बुद्धिमान के घर में संगति

कई स्थानो पर पड़ोसी शायद शत्रु के समान हों। पर यीशु मसीह विश्वासियों को उत्साहित करते हैं कि विशेषकर कठिन परिस्थितियों में वे बुद्धिमान बनें। इस रीति से कभी न मिले जिस से पड़ोसी लोग बुरा मान लें।इस बात पर ध्यान दे कि क्या यह ज़रूरी है कि किसी संगति सभा में भजन या गीत गाना बुद्धिमानी होगी। घर की संगति में ज़ोर-ज़ोर से प्रार्थना न करें धीमें शब्दों में प्रचार और प्रार्थना करें जिससे कोई जो द्वार के बाहर खड़ा है वह आपके दल की बातों को सुन न सकें। इस लिए अभ्यास करते रहें कि एक बुद्धिमान दल बन जाएँ।

4. एक ज़िम्मेदार जवाब देही दल बनें

घर की संगति भी मसीह की देह का एक यथार्थ भाग है।(उस एकमात्र कलीसिया का जो मसीह की है।)
पढ़ेः 1 कुर. 12:12-28

- यदि घर की संगति किसी कलीसिया का हिस्सा है तो ऊपर दिए कार्यक्रम का पालन करें।
- पर यदि घर की संगति किसी कलीसिया का भाग नहीं है तो भी ऊपर दिए कार्यक्रम का पालन करें पर इस बात पर विचार करें कि बपतिस्मा, प्रभु भोज, विवाह, बड़ों की अगुवाई, और यदि ज़रूरी है तो अनुशान के विषय पर भी विचार करें।
- जो लोग घर की संगति में भाग लेते हैं वे अपनी घर के संगति को नियमित रूप से मिलने वाली सभा मानते हैं जो घर पर मिलती है। जिसकावर्णन इब्रानियों के 10:24-25 पद बताते हैं। (पढ़े इब्रानियो 10:24-25)
- घर की संगति में आने वाले लोग इस बात पर दृड़ है कि वे घर की हर संगति में आएँगे।
- घर पर संगति करने वाले लोग हर अगली सभा के लिए तैयारी करते है। इसके लिए वे प्रतिदिन परमेश्वर के साथ निजि समय बिताते हैं। और उस निजि समय में जो सीखते हैं उसके नोट्स बना कर कापी मे लिख देते हैं।
- घर की संगति में भाग लेने वाले लोग वायदा करते हैं कि वे जो भी सीखते हैं उसे अपने जीवन में लागू करेंगे।
- घर की संगति के लोग हमेशा एक दूसरे की मदद करते हैं और एक दूसरे को उत्साहित करते हैं और साथ ही साथ एक दूसरे की ज़रूरतें भी पूरी करते हैं।
- घर की संगति में जाने वाले लोग हमेशा अपने संघर्ष के विषय में बताने के लिए तैयार रहते हैं और साथ ही यह भी कि वे किस तरह से उन्नति कर रहे हैं।